प्रथमावृत्ति : सं १९७२ – २०००
द्वितियावृत्ति : सं १९९३ – १२५०
कुल प्रत : ३२५०

धी वीरविजय प्रींन्टीग प्रेसमां, शा. मणिलाल छगनलाले
छाप्युं. सागरनी खडकी-अमदावाद.

उपोद्घात
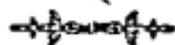
भावसिन्धु–भावनानो समुद्र–समुद्रनी ओळखाण करावचानी जरूर रहेतीज नथी. जेम कुंदनने कसवानु होय नहि, सोनाने रसवानुं होय नहि तेम आ भावसिन्धुने ओळखाववानुं रहेतुज नथी परतु प्रासगिक जणाववु पडे छे केः—

श्रीमद् गोस्वामी श्री गोकुलनाथजी–मालाप्रसगवाळाए पोते कृपा करी ८४ ने २५२ वैष्णवोनी वार्ता वैष्णवोना हित–कल्याणने माटे प्रगट करी–लखावी छे. पोताने वैष्णवो उपर अत्यन्त वहाल हतु. पोते श्री महाप्रभुजी, श्रीगुसाइजीना सेवकनी कानी राखता, वैष्णवना स्वरुपनी भावना समजता. तेमणे आधुनिक जीवो उपर परम कृपा करी चोराशी अने बसोबावन वैष्णवनी वार्तामा जेना भाव अति गूढ छे, जेनी वार्तामा भावनानुं उडु रहस्य रहेलुं छे, ने जे मूळ वार्तामा दर्शाव्युं नथी तेवी वार्ताओना भाव पोते जणावेला ते आ ग्रन्थमा आप्या छे

प्राचीन भगवदीयोना मुखथी श्रवण कर्युं छे के आ ग्रन्थ ते भावसिन्धुनो एक भाग छे आ ग्रन्थनो बीजो भाग हजु अप्रकटित छे ने ते कोइ अनुभवी–महानुभावी भगवदीओ पासे होवो जोइए. साभळ्युं छे के राजकोटना मंदिरमा छे. आ माटे अमारो प्रयास चालु छे, जे प्राप्त थशे तो बीजो भाग छपावीशुं छता पण वैष्णव बन्धुओने विनती करीए छीए के तेमना जाणवामा होय तो अमने खबर आपी आभारी करशो.

आ ग्रन्थमां जे जे वार्ताओ आवेली छे. ते घणे भागे ८४ अने २५२ वैष्णवनी वार्तामां छे ते वार्तानी भावना छे. माटे आ पुस्तक वांचतां ते पुस्तको साथे राखवां. "८४ ने २५२ वैष्णवनी वार्ता" अमारा तरफथी प्रकट थइ छे तेमां अमे केटलीक माहित्ती पण आपी छे तथा आ ग्रन्थमां पण ज्यां ज्यां जरुर जणाइ छे त्यां फुटनोटमां नविन हकिकत आपवा बनतो यत्न कर्यो छे.

परमभगवदीय श्रीमती जातनी वार्तानी वधु माहिती आपी छे. तथा तेमना श्री ठाकोरजी उदेपुरमां विराजे छे तेनी प्राचीन वार्ता अमोए "तीर्थयात्रानो हेवाल" ए पुस्तकना प्र. २० मां आपी छे. त्यां जोइ लेवा विनंती करीए छीए.

बीजा वैष्णवोना श्री ठाकोरजी ज्यां ज्यां विराजे छे ते जणाववा बनतो यत्न कर्यो छे. अस्तु !

ऑफीस-रीचीरोड, नं. ११०
अमदावाद.
ज्येष्ट शुक्ल प्रतिपदा, सं. १९७८

ली. दासानुदास,
वैष्णव. लल्लुभाइ छगनलाल
देसाइना जयश्रीकृष्ण.

आ पु. नी बीजी आवृत्तिमां वैष्णवोना आग्रहने वश थई "दीनता, आश्रय, माहात्म्य, शिक्षा, विरहनां कीर्तनो के जे हालमां अप्राप्य छे, तेवां प्राचीन ग्रन्थोमांथी शोधी लावी तदन नवीन २०० उपरांत कीर्तनोनो संग्रह कर्यो छे. जे वैष्णवोने उपयोगी नीवडशेज.

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा.
स्नानयात्रा,

सं. १९९३

अनुक्रमणीका.

दीनता आश्रयनां कीर्तनो–

॥ વૈષ્ણવોને અલભ્ય લાભ ॥

તમે બ્રહ્મસંબંધ લીધું છે? તેનો અર્થ જાણવાની ઇચ્છા છે? બ્રહ્મસંબંધ રહસ્યનું મનન કરવાની મરજી છે?

સચિત્ર–પાંચ રંગીન ને ૪ સાદાં ચિત્રો નવ ચિત્રો સાથે.

श्री पुष्टिमार्गीय नाम—निवेदन मंत्र निरूपणः

આ પુસ્તકમા નીચેના વિષયનો સમાવેશ છે.

૧ नाममंत्र શ્રી અષ્ટાક્ષર "શ્રી કૃષ્ણ શરણં મમ" એ મત્ર મૂળ, વ્રજભાષા ટીકા તથા શ્રી ગુસાઈજી-કૃત અષ્ટાક્ષર વિવરણ ઉપરથી ગુજરાતી ટીકા સાથે તથા એ મત્ર ઉપરના અન્ય લેખોનો સગ્રહ સાથેનું યાવત્પ્રાપ્ય સાહિત્ય

૧ निवेदनमंत्र-બ્રહ્મસમ્બન્ધનો મહામંત્ર તેના ઉપર (૧) કાશીવાળા શ્રી ગિરિધરજી મહારાજની વ્રજભાષા ટીકા, શબ્દાર્થ, સમુદાય અર્થ ભાવાર્થ અને વિસ્તૃત વિવેચન પૂર્વકની ટીકા પચાક્ષરમત્રનો જપ વિધિ સાથે.

વૈષ્ણવમાક્ષર શિરોમણી **શ્રીયુત મૂલચંદ તેલીવાળા** કૃત ગદ્યાર્થ મત્ર ઉપર લેખ, તથા અર્થ ગદ્યાર્થ સાહિત્યની સમાલોચના આદિ રહસ્

શ્રી ચતુર્થલાલજી શ્રી ગોકુલનાથજીની એ મહામત્ર ઉપરની સસ્કૃત ટીકાનું ગુજરાતી ભાષાન્તર શાસ્ત્રી વસતરામની અનુભવી કલમથી લખાયેલો

શ્રી હરિરાયજી, શ્રી વલ્લભજી, શ્રી વ્રજભૂષણજી મહારાજની સંસ્કૃત ટીકાનુ ગુજરાતી ભાષાન્તર, સાપ્રદાયિક ધુરધર સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વા નોના ગદ્યમત્ર ઉપરના પ્રકીર્ણ લેખોનો સગ્રહ વગેરે.

આ રીતે આ બ્રહ્મસંબધના મંત્ર ઉપરનું યાવત્પ્રાય-સકળ સાહિત્ય સંપ્રદાયમાં સૌથી, પહેલીજ વખત ૩૦૦ વરસે આ પુ છપાયું છે સુશોભીત રેશમી પાકુ પુઠું, છતાં ન્યોછાવર ફક્ત સવા રૂપીયો,

લલ્લુભાઈ છગનલાલ દેસાઈ, રીચીરોડ—અમદાવાદ

॥ श्री कृष्णाय नम । श्री गोपीजनवल्लभाय नम ॥

श्रीमद् गोस्वामि श्री गोकुलनाथजी विरचित

भावसिन्धु.

प्रथम भाग

श्री आचार्यजी महाप्रभुजीके सेवक दामोदरदास हरषानि तिनकी वार्ताको भाव.

आ पुस्तकमा मात्र मूळ वार्तानो भाव-भावना-फल शु छे ए श्री गोकुलनाथजीए जणाव्यु छे पण मूल वार्ता तो चोराशी वैष्णवनी वार्ताना पुस्तकमा छे माटे आ पुस्तक वाचता चोराशी वैष्णवनी वार्तानु पुस्तक साथे राखीने वाचता जवुं जेथी भावना समजाशे

दामोदरदासजीनी वे बेठको छे १ श्री गोकुलमा श्री ठकुराणी घाट उपर, २ श्री वृन्दावनमा वंसीवटमा छे, त्या अवश्य दर्शन करवा जवु [जुओ "श्री व्रजयात्रा वर्णन" ए पुस्तक]

॥ दोहा ॥

श्री श्री वल्लभ अवतरे, पुष्टि सृष्टि के हेत ॥
दामोदर जन आदि निज क्रीडत हे संकेत ॥१॥
गणना चोरासो जना, धैर्य धर्म प्रकाश ॥
द्वादश अंगी अंग सव, गुणातीत निरधार ॥२॥

ए दामोदरदासजी के पिता वहुत द्रव्य संपन्न हते॥ सो ईनके पुत्र-संतान कछू नहि हतो ॥ सो ईनको सदावृत वा नगरमें चलतो हतो ॥ ओर कितनीक धर्मशाला वनवाय राखी हती ॥ सो एक वेर कोई हरिभक्त आये ॥ तिनके दरशनकों दामोदरदासजीके पिता गये ॥ ओर वा हरिभक्तको कछूक दिन अपने घरमें राखे ॥ सो टहल वहुत करी, तव वाने पूछी, जो तेरे कहा ईच्छा हे॥ तुं कछू माँगि, तव वाने कहि, जो महाराज मेरे पुत्र नाँहि हे ॥ तव वा महापुरुपने कही जो तेरे तीन पुत्र होयगे ॥ तामें तीसरो पुत्र एसो होयगो जो गुण शील वाके हरि तुल्य होयगे ॥ एसें कहीके

ये महापुरुष तीर्थयात्राकों चलते भये ॥ सो दो पुत्रतो साधारण रीतसो भये ॥ तीसरे दामोदरदासजी भये ॥ सो दामोदरदासजी प्रगट भये तब स्वतः ही वा स्थानमे प्रकाश होतो भयो ॥ सो दामोदरदासजीके प्रागट्य समे ईतनो चिन्ह प्रगट होतो भयो ॥ लिलाटमें आरक्त तिलक, दीर्घकेश, भुजा वडी लांबी ॥ सब देखि के चक्रत ह्वे गये ॥ जोतसीकों बुलायके लग्न सुधाये ॥ सो स. १५३५ माघ सुदी ४ ब्रह्ममुहूर्त समय दामोदरदासजीको प्रागट्य॥ जोतसीने ग्रह देखिके दामोदरदासजीके पितासों कहि ॥ जो याके ग्रह एसे उच्च पडेहे सो कछू कहिवेमें आवे नॉहि ॥ जो ईनके प्रभावसो कितनेक जीवनको कल्यान होगयो ॥ एसें जोतसीनने ग्रह फल सुनायो ॥ फेरि दामोदरदासजीको स्वरूप सुंदरता कछू कहिवेमें आवे नॉहि ॥ जिनके शरिरके आगे सोनो हूं मंद दीसे ॥ सो एसो श्री अंगको वरण ॥ ओर ईनकीतो जन्मतॉई दृष्टि नासाग्र रही ॥-

सो काहूके सामे देखे नाँहि जो कोऊ गोदमें लेय, तोऊ काहूके सामे झांखे नाँहि ॥ सो काहेते ॥ जो दामोदरदासजीके नेत्रनमेंतो श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप विराजेहे सो तासों अन्य दृष्टि करेहि नाँहि॥ आपुके स्वरूपमेंहि मग्न रहे आवे सो श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूपईनके हृदयमें तथा बाहिर दरशन देवोहिकरे॥ एसे साक्षात् स्वरूपानंद अनुभवी श्रीदामोदरदासजी ॥ सो न तो भोजनकी सुधि, न तो वस्त्रकी सुधि, न सोयवेकी सुधि, सो एसेहि अवस्थामें रहे ॥ ईनके पिताकों वडी चिंता भई जो दोय वेटातो लौकिकमें चतुरहे ओर एतो लौकिककी गंधवी परसे नाँहि ॥ सो न जाने ए कोनसी रीतिसों वर्तेंगे ॥ सो ईनकी हवेली राजमार्गपें हती सो आपुकी आज्ञा भइ हती जो तोकों राजमार्गमें दर्शन देंयगे॥ जो तुम कछु ओर मति विचारियो ॥ सो तादीन तें नित्य वा गवाखामें वेठिके आपुको मारग देखिवो करते ॥ फेरि कछूक दिनमें

श्रीदामोदरदासजीके पिता श्रीहरिशरण भये ॥ तब उनभाईनने विचार कीयो जो द्रव्य हे सो उपाधिको मूल हे ॥ सो ताते जोंकोत्यों वटि जाय तो क्लेश उपजे नाँहि ॥ सो तब नित्य दामोदरदासजीसो कहे ॥ जो तुम अपने बाँटेको द्रव्य लेऊ ॥ जो हम तीन बाँट करेहे। सो यह बातमें दामोदरदासजी कान देइ नाँहि ॥ फेरि इनके मामा हते सो वैष्णव हते सो इनने दामोदरदासजीको समझाये ॥ तोऊ उत्तर दीयो नाँहि ॥ तब दोऊ भाइनसो कहि दीयो जो तुम अपनो बाँट लेलेऊ ॥ ओर दामोदरदासजीको बाँट हम अपने पास राखेंगे- ॥ सो जब ए इच्छा करेंगे ता ठिकाने हम अंगीकार कराय देंइगे ओर दामोदरदासजी वा गवाखामें बेठे बेठे आपुको विरह करे देह सूकिके अस्थिमात्र रहि गई ॥ तब वाकी माताकों वडो सोच भयो जो याकी देह रहेगी नाँहि॥ नित्य वैद्य बुलावे आछे समझवार- बुलावे ॥ दिखावे ॥ जो कहा रोगहे? जो याकी देह

बचेगीके जायगी? सो याको निश्चय करिके कहो जो कोनसो रोगहे ॥ सो काहूसो निरधारभयो नाँहि ॥ जो सवगामके वैद बुलायचूके ॥ सो फेरि वही महापुरुष भगवद्इच्छाते आये ॥ सो ईनके पिताको इनने वरदानदीनो हतो ॥ सो उनने आयके दामोदरदासजीकी देह देखी ॥ सो भगवद्इच्छाते वाको दामोदरदासजीके स्वरूपको ज्ञानभयो ॥ सो तव कहो ॥ जो या रोगकी औषधि लौकिकमें नाँहिहे ॥ जो परम हित प्राण स्नेहीको दर्शन होयगो तव याके प्राण हरे होयगे ॥ सो यह सव वात उनके मामासो कहि ॥ ओर वे महात्माहू वाहि नगरमें रहे सो वाहिर एकसरोवरपर पर्णकूटि करायके भजन करिवेलगे ॥ नित्य दामोदरदासजीके दर्शन करिके अपने आश्रमकोजाते ॥ फेरि थोरेसेदिनमें प्राणनाथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी पधारे सो दूरिसो देखिके वाहो गवाखामेंसो कूदि परे तव जायकें आपुके श्रीअंगसो लपटिगये ॥ वाहीसमय नौतन-

देह सखोभाव सर्वांग भरिआयो ॥ फेरि आपुके चरणारविंदसंग लगिगए॥ सो जहां वह महापुरुष भजन करतो हतो तहां सरोवरपें आपविराजे। सो वह महापुरुष आपके दर्शनकों दोयों आयो ॥ तबआयकें साष्टांग दंडवत् करी वाही समय साष्टांगदंडवत् करतो करतो आपुके चरणारविंदमें प्राप्ति होइगयो ॥ ओर दामोदरदासजीकों आपके स्थाईभाव स्वानंद रसपात्र संबंध सिद्धिभयो ॥ ॥ दोहा ॥

प्रगट कीयो पथ तोहिं हित हे मम रस को पात्र॥
दोप टरे महा सुख भरे याके स्मरण मात्र ॥१॥
नयन नीर गदगद गिरा कहेत न आवे वेन ॥
कृपा दृष्टि रससिंचि के हार्यो ताप तन मेन ॥१॥
आवो दमला हँसि कह्यो धारे श्रीकर माथ ॥
मारग देखत राज को कीनो आदि सनाथ ॥३॥
दमला मोसों न्यून नाँहि मम रस के अनुकूल॥
श्री मुखतें आज्ञा करी यह मारग को मूल ॥४॥

व्यापि रह्यो सब जननमे जो लों दमला अंस ॥
तो लों श्री महाप्रभूनको दान देत निज वंस ॥५॥
अकथ कथा कहाँलों कहो जाको चरित्र अनंत ॥
परम पुनित सौरभ स्वजस गावत सब मिलि संत॥६॥
नव घन वल्लभ माधुरी बरसे दमला सिच ॥
उमगी हृदय सरोवरी रोक्यो सब जन बीच ॥७॥
दमला श्री महाप्रभुनको सरस स्नेह विलास ॥
जागत सोवत स्वप्नमें मिलि रहेत रस रास ॥८॥
रोम रोम रसना रटूं तोऊ न होत बखान ॥
जानत वे जन विरही जना अनुभव होत प्रमान॥९॥
श्री दामोदरदासको दासी कहुं के दास ॥
अपनी करुणा जानि के करे दास को दास ॥१०॥

श्री दामोदरदासजीको आपु दमला कहि बलरावते । दमला जो दासीभाव स्त्रीभाव सूचीतभयो। सो ताते दमलापद स्त्रीवाचहे । जो दमला तेरे लीए या मार्ग प्रगट कीयो हे ॥ सो रससमुद्र आप सो ताके

स्थाइभाव श्रीदामोदरदासजी ॥ जो पहेले उनमें आवे तव ओर जीवनमे आवे ॥ सो यासुं तेरेलीए कहि ॥ सो दासनके लीए मारग प्रगट कीयो ॥ तातें "स्त्रीशूद्राद्युध्धृतिक्षमः"॥ सो या नामकी सूचनका भई ॥ जो दमला वडीवेर भइ भगवद्वार्ता करे ॥ सो ताको यहभाव ॥ जो दमला जो दासीवाचक तासों तद्दानार्थ या श्री दामोदरदासजीके स्नेहकी अधिकताहे ॥ सो वा स्नेह संवंधी रससिंचन सव आप अंतरजामी जानिकें दामोदरदासजीको नवीन नवीन रुचि उपजावतहे ॥ ओर आपकीवार्ता अष्टप्रहर अलौकिकहे ॥ परंतु जेसो जाको वरण विचार्यो तेसी भांति ताको आप वचनामृतसो सिचतहे ॥ जो प्रभुतो एकहीहे ॥ भक्त अनेकहे ओर ताते जेसो जाको भाव तेसो ताको फल ॥ ताते दामोदरदासजीको या भावमें रसकी सिंचनता जतायवेकेलिए आपने यहआज्ञा करी जो दमला वडीवेरभइ भगवद्-

वार्ता करे सो यह भाव जाननो ॥ जो दमला आ-धीगादीपर वेठते ॥ ताको यहभाव । स्त्रीहे सो पुरुष-की अर्धांगनाहे ॥ तातें गादीपें श्रीठाकुरजी श्रीस्वा-मिनीजी दोउ विराजेहे ॥ तासों आधीगादी कही ॥ सो दोउ मिले रसपूर्णहोय ॥ तासों आधीगादी भाव सूचनकाभइ ॥ रसरीतिसों नतुलोकवत्. यह-वार्तामें लिख्योहे जो मेरे अगारि दामोदरदासजीकी देह न छूटे ताकोहेत यह जो दामोदरदासजीकी देह अलौकिक ओर श्रीमहाप्रभुजी सर्वसामर्थ युक्त तातें "पतिव्रताः पतिः पारलौकिकैहिकदान कृत्" सो तातें यहवात माँगिवेकी सूझेनाँहि ॥ ओर श्रीठाकोरजीहुं आपकी इच्छासो एकवातन्यारोकरे नाँहि ॥ सो ता-सो कीर्तनमें लिख्योहें "दासचत्रभूज प्रभुके निजमत चलतलाल गिरिधरन" सो तासो यहभाव पदहे ॥ सो ताते ओरजीवनको हित विचार्योहे सो ए कोइ काल दर्शनदेंईगे ॥ सो आधुनिक जीवनको भावसि-

द्धि होयगो ॥ यह भाव विचारनो ॥ ओर वार्तामें लिख्योहे जो दमलाकी देह मेरेअगारि न छूटे ॥सो यह वात तिन्यो ओर सो रहे नॉहि ॥ ताते यह मांग्यो ॥ श्रीदामोदरदासजीने श्रीठाकोरजीसो, केसें नित्य लीलामें प्राप्ति होय ॥ सो एसी इच्छा मनमें करी ॥आपु अंतर्यामी जानी गये॥ सो श्रीमहाप्रभुजीने यह जानी जो यहअवी जायगो ॥ तोअगारि जीवनको भक्तिरस प्राप्ति केसें होयगो॥ ताते ओर जीवनके हितकी विचारिके यह आज्ञा करी ॥ जो मेरे आगे मेरे भगवदी तिनको दामोदरदासजीकी इच्छाको पीछी मॅागिके आपनें भगवदीनको सौभाग्य सिद्धि कीयो ॥ ताते मरणादिक दोष दामोदरदासजीको संभवे नॅाहि ॥ ताते दामोदरदासजीको मन पीछो मॅागिके भगवदीनको दिखायो सो निरोध सिद्धि कीयो आज तॅाइ ॥

॥ प्रसंग २ जो ॥

ओर-एक समय श्रीगुसॅाइजीने आज्ञा करी जो

श्री महाप्रभुजीको स्वरूप कहा करि जानो हो ॥ तब दामोदरदासजीने आज्ञा करी ॥ जो जगदीश जो श्री ठाकुरजी हेता सें अधिक करी जानेहे ॥ ताको यह भाव ॥ जो उभय सौंदर्यरूप आप कृपाके निधि "अदेयदानदक्षश्च महोदार चरित्रवान्" सो वा समय एसो भाव अधिक दिखायो ॥ जो कलिमल दुष्ट जीव अपराधी साधनरहित सो ताको महान् फलदान दीयो ॥ जो योग्यता अयोग्यता कछू विचारी नाँहि ॥ एसे कलिकालके अतूल प्रभाव अनुभव करि पूर्ण पुरुषोत्तमरूप फलरूप आपने सबनको भाग्य सिद्धि कीयो ॥ सो ताते दान दाताको ओर भाव नाँहि विचारनो ॥ जो यहां दानदातामें दाताबी आपुही हे सो ताते यहां न्यून अधिक भेदबुद्धि नाँहि करनी ॥ जो दान दाताते न्यून भेदबुद्धि तो अन्य संप्रदायमें हे ॥ यहां नाँहि ॥ ताते भगवदीय गायेहे ॥ "दाता भुक्ता ओर न दूजा साचा त्रिभुवन राय वहां ॥ भ-

क्तन प्राण आधार वहां " ॥ ओर श्रीगुसाँइजीने हूं आज्ञा करी हे "यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता" सो ताते भोक्तापद पहेले धर्योहे ॥ सो तातें यज्ञभोक्ता ही यज्ञ करत भये ॥ ओर संभावना यहां नाँहि विचारनी॥ यहां तो दानदाता उभय परमानंदरूप हे॥ एसे स्वरूपको चितन करनो, लोपनो नाँहि ओर श्रीगुसाँइजीने वाललीलामें श्रीअंकाजीसों आज्ञा करी ॥ जो दामोदरदासजीको प्रभाव वढायवेके लीये आज्ञा करी ॥ नहि तो आप सर्व सामर्थ युक्त हे ॥ जो आपको पूछनो कहा ॥ तासो श्रीअंकाजी द्वारा यह आज्ञा भइ ॥ जो या मार्गको सर्व सिद्धान्त दामोदरदासजीके हृदयमें स्थाप्यो हे ॥ सो ए वात महान् स्नेही अनुभवीकी हे ॥ ताको प्रसंग यह हे ॥ जो जाको आपने स्नेह रसको दान दीयो होय, सोइ आपको स्वरूप स्नेह रस दृष्टिसो देखे॥ सो तातें कीर्तनमें लिख्यो हे ॥ "जीन जेसा देख्या तिन तेसा पे-

ख्या भक्तन प्राण आधार वहां"॥ सो आपुको स्वरूप अनुभव वेध्य हे ।। सो ताहिते श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप सर्वोपरि अधिको अनुभव करी श्रीदामोदरदासजीने आज्ञा करी ॥ श्रीगुसाँइजीने हूं यह आज्ञा करी ॥ जो "वस्तुतः कृष्णएव" " निखिल बुधजना गोकुलेशं भजन्ते" इति भाव ॥ सो पहेले दामोदरदासजी द्वारा प्रगट करायके अपने सेवकको आपने वाही रसको दान दीयो ॥ सो ताते यह भाव सूचन भयो॥ ओर श्रीठाकुरजीने ब्रह्मसंबंधकी आज्ञा दीनी ॥ सो ता समय श्रीमहाप्रभुजीने दामोदरदासको पूछयो जो दमला तेनें कछु सुन्यो तव दामोदरदासने विनती करी जो राज सून्यो तो सही परन्तु समझ्यो नाँहि ॥ सो ताको यह भाव ॥ जो समझि जाय तो स्वाम्यता होय जाय, दास भाव फल फलित न होय ॥ तासों आपको इच्छाते सून्यो तो सही ।। परि समझ्यो नाँहि ॥ फेरि आपने दामो-

दरदासजीको न्हवायके आत्मनिवेदन भाव जो स-
र्वात्मना भाव श्रीदामोदरदासजीके हृदयमें अखंडित
स्थापित करी दीयो ॥ फेरि ओर जीवनको भाग्य
सिद्धि भयो तासो यह भाव विचारनो ॥

॥ प्रसंग ३ जो ॥

एक समय श्रीगुसाँइजी अपने सेवकनसों हास्य
रस प्रगट करि रहेहते ॥ तासमय श्रीदामोदरदास-
जी आप देखिके विनती करिके कहे॥ जोराज ! यह
मारग हाँसीठठाको नाँहिहे ॥ यह मारग तो ताप
क्लेशकोहे ॥ तातें दामोदरदासजीद्वारा मार्गको सि-
द्धान्त दिखायो ॥ यद्यपि आप पूर्णपुरुषोत्तमहे तोऊ
आप शिक्षा अंगिकार करतभए। फेरि यह आज्ञा करे
जो तुम्हारे द्वारा श्री महाप्रभुजी आज्ञा करेहे ॥ ता
ते श्रीदामोदरदासजीके वाक्यहे सो श्रीमहाप्रभुजीके
वाक्यहे ॥ हास्य रस हे ॥ सो श्रृंगाररसको एक
रस हे । अंग हे । श्रृंगाररस, संयोगरस, विप्रयो

गरस दोऊमिले तब पूर्णहोय सो तातें तापक्लेश विप्रयोगहे ॥ सो जीवनप्रति दानदीयो आपुने, तब पूर्ण पात्र भए॥ ताते हास्यसंयोगरस ॥ ताप विप्रयोगरस ॥ दोऊ श्रृंगाररसके अंगहे अथवा हास्यकीर्तनमें लिख्योहे "पाछे वंक चिते मधुर हँसि घात करी उलटी सुथानसों॥ चत्रभुजदास पीर या तनकी मिटे न औषधि आन सों" ताते पहेले हास्यकरिकें पाछें चित्तकोंचोरनो॥ पीछे तरसावनो॥ सो यह स्नेही की विपद् रीतिहें॥ सो स्नेही होयगो सोइ जानेगो.॥

॥ प्रसंग ४ थो ॥

ओर श्रीदामोदरदासजीको श्रीमहाप्रभुजी नित्य दर्शन देते ॥ सो जा दिन दर्शनमे विलंब होतो सो ता दिन पेटमें पीडा होतो ॥ सो पेटको तो एक उपलक्षहे ॥ जो सर्वांगमे–रोमरोममे पीडा होय आवती फेरि आप दरसपरस करि जीवनसंपादन करते ॥ तातें दामोदरदासजी तथा आपको असाधारण

स्नेह परम्पर दिखायो ॥ सो यह वार्तामे चले ॥ सो ताको स्नेहको स्वादहे॥ सो संसारी जीव मायाको कछू लायक नहिं ॥ सो आधुनिक जीव हित करिवे लगे ॥ ताते दामोदरदासजीको स्वरूप रोमरोममें रसना होती ॥ सो तोऊ कह्यो नाँहि जाय॥जो दामोदरदासजी हरपानिहे ॥ सोताको यह भाव॥ परम परमानंद अनुभवयुक्त मुखारविंदसो दर्शन देते ॥ सो याते हरपानि नाम प्रगटे हे ॥ परम सौंदर्य मुखारविंद श्रीदामोदरदासजीकोहे ॥ सो यासो यह सूचनका भइ ॥ एक समय श्रीदामोदरदासजीको पूछी ॥ जो तुम श्रीगुसाँइजीको कहाकरि जानोहो ॥ एसी आज्ञा भइ ॥ तव दामोदरदासजीने कही ॥ जो आपके लालजी करि जानुहुं तव आपने आज्ञा करी जो नाँहि, तुम मेरोही स्वरूप जानियो ॥ सो यामें दामोदरदासजी द्वारा श्रीगुसाँइजीको स्वरूप आप तुल्य दिखायो ॥सो तादिनसो जेसें रसरीतिसुं

श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपमें भजन करते ॥ तेसेही श्री गुसाँइजीके स्वरूपमें रस रीतिसुं भजन करिवेलगे ॥ सो श्रीमहाप्रभुजी निजानंद रसको दान देते तेसेही श्री गुसाँईजी निजानंद रतिरसको दान करिवे लगे ॥ सो यामे पतिव्रताखंडन न भयो ॥ देखिवेमें दोऊ स्वरूप, मूल एक ही स्वरूपहे ॥ ओर श्रृंगाररस ग्रन्थ आपसिद्धि कीयो ॥ सो तामें आज्ञा लिखो जो दामोदरदास चाचाहरिवंश सहायभूत ॥ सो ताते यह जतायो जो श्रृंगाररसमंडन ग्रन्थको स्वाद दोऊ आपके सेवक श्रीमहाप्रभुजीके सेवक दोउनको स्वाद चखायो ॥ सो यामें यह भाव सिद्ध भयो ॥ जेसे श्रीमहाप्रभुजीके सेवक आपके सेवकनकी सामर्थ जताइ ॥

प्रसंग ५ मो

एक समय श्रीगिरिराजकी तरहटीमें छोंकरके नीचे श्रीदामोदरदासजीकी गोदमें श्रीमहाप्रभुजी श्रीमस्तक धरिकें पोढे हते ॥ ता समय श्रीनाथजी पधारे

॥ सो दामोदरदासजीने वरजे ॥ ताको यह कारण हे जो ॥ एक स्वरुप सो तो पोढेहे ॥ ओर एक स्वरुपसो पधारे ॥ सो यामें यह कारण जताये ॥ जो स्वरुप तो दोनो एक ही हे तथापि श्रीदामोदरदासजीको परम उत्कर्ष दासरस प्रकट कीयो ॥ सो ता कारण यह कौतुक दिखायो ॥ ओर दुसरो भाव यह हे जो एक श्रृंगाररसमें दुसरे स्वरुपकी संभावना होय सो रसाभास होयजाय सो तो यहां नाँहि। तथापि जा स्वरुपसो रससंबंध होयरह्योहे ॥ तासों वरजे ॥ सो आप उहांइ ठाडे होयगये ॥ ताही समय आप अपनी इच्छासो जागे ॥ उतमें श्रीनाथजी ठाडे होयरहेहे सो दोउनके विचमें दामोदरदासजीको अधिक प्रभाव वढायो ॥ नहींतो श्रीनाथजी एसे पोढिवेके समें काहेको पधारते॥ ओर आपहु काहेको जागते। जो दामोदरदासजीको अति उत्कर्ष प्रगट करिवेको यह कौतिक रच्यो सो अंतर भावतो केवळ रससंबंध

हे। सोतो कृपा साध्यहे। सो लिखिवेमें आवे नाँहि. ॥

॥ प्रसंग ६ ठो ॥

ओर एक समय श्रीगोकुलनाथजी कथा कहेत हते ॥ तासमय भगवदी सब वेठहते ॥ तासमय आप दामोदरदासजीको प्रसंग आज्ञा करिवेलगे ॥ तांहां काहूने एसी कही जो आज कथा रही ॥ सो तब आपने श्रीमुखतें आज्ञा करी॥ जो आज कथा नाँहि॥ आज कथा को फलकहेतहे॥ श्रीदामोदरदासजीको प्रसंग हे सो महा फलरुपहे ॥ सो काहेते जो श्री गोकुलेशप्रभुने श्रीमुखारविंदसो फल कह्यो ॥ एक तो मधुर आंम श्री दामोदरदासजीको प्रसंग ओर दुसरे श्रीगोकुलेश प्रभुनको मुखारविंद मधुरमिष्ट ॥ सो ता संबंध करिके आंमको विलसारु व्हे गयो ॥ सो जा पर कृपा भइ ताको आपने स्वाद चखायो॥ तातें श्रीदामोदरदासजीको स्वरुप परम फलरुप जाननो॥ इतिश्रीदामोदरदासजीकी वार्ताकोभाव संपूर्ण।

श्री आचार्यजी महाप्रभुजीके सेवक *कृष्णदास मेघन क्षत्री तिनकी वार्ताको भाव,

सो जिनने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके श्रीअंगकी खवासी करी। सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम अनुभव करी स्वरूपानंदको सेवन करत भए॥ सो कृष्णदासजी दस वरसके घर छोडीके निकसिआए॥ हृदयमें पूर्ण वैराग्य मूल कारण आपने विचारीके आकर्षन कीयो॥ सो पहले सोरमजी—श्रीगंगाजीके तीरपेंआए॥ सो यहाँ मर्यादामार्गीय [1]वैष्णव-स्वामि भजन, स्मरण करते॥ सो प्रथम मर्यादा रीतिसो वाको शरण आये। सो गुरुकरिके मानें। सो वाको योगसिद्धि हतो॥ दोयवरस पीछे ये संवत १५३५ कीसाल वैशाख वदी ११ ब्रह्ममुहूर्त समय योगा-

---

* आ कृष्णदास मेघननी वार्तानो भाव-फळ छे. मूळ वार्ता चोराशी वैष्णवनी वार्ताना पुस्तकमां छे आ वार्ता वांचती वखते य पुस्तक साथे राखवुं.

१ केशवानंद नामना त्रिकाळ ज्ञानी पंडित सोरम पासे सुकर क्षेत्रमां रहेता.

भ्यास साधत हतो ॥ वा समय कृष्णदास पास बेठे हते ॥ सो ता समय मंगल शूकन होयवे लगे ॥ सो दसो दिशा परम शोभायमान होयवे लगी ॥ सूर्य-उदय भयो सो ताको प्रभाव अलौकिक प्रकाश भयो ॥ कृष्णदासजीके हृदयमें परमानन्द अनुभव होतो भयो ॥ उदित एकादशीके दूसरें जाममें चंपारण्यमें देव दंदुभी ओर पुष्पनकी वर्षा होयवे लगी ॥ सो वाही समय गुरु बोले ॥ जो अहो ! या समय कहुं भगवद अवतार भयो हे, विना भगवद् अवतार अलौकिक मंगल होय नाँहि सो एसें गुरुनने तीनबेर कृष्णदासजीके अगारि कही ॥ सो वा गुरुकी कृपातें साक्षात् कृष्णदासको वाही समय अनुभव होयवे लग्यो ॥ सो आपके प्रागट्य उत्सव स्वरूपको अनुभव भयो। जो गुरुननेतो इतनो अनुभव कीयो ॥ ओर कृष्णदासजीकों तो गुरुनकी कृपातें कोटानुकोटि अनुभव होतो भयो ॥ सो यह अनुभव हृ-

दयमें धारणकरिकें गुरुनकों जताइनाँहि ॥ ओर रात्रदिन कृष्णदासजी परम आर्तिसों मन आपके चरणाविंदमें लग्योरहे ॥ सो गुरुनसों वेरवेर विनती करें जो आज्ञादेऊ तो वद्रिकाश्रम होय आवें। जो मूल कारण आपके दर्शनको ॥ फेरि गुरुनने नाँहिकरि जो अवी तू वालकहे ॥ जो कहां जायगो, फेरि कछूकालपीछें गुरुनसों आज्ञामाँगी सो गुरुनने प्रसन्नतासों आज्ञा दीनी। तव गुरुनकी आज्ञा माथेधरिके चले। सो वार्तामें दोय प्रसंग लिखेहें जो एकमेंतो एसोहे। जो काशीमें यज्ञोपवितके समय दर्शन भयो ॥ ओर दूसरे एक प्रसंगमें श्रीगोकुलमें दर्शनभयो सो दोउप्रसंग प्रमानहे ॥ सो आपके दर्शनकरत मात्रहि सर्वात्मना स्वरुप ज्ञान होय गयो ॥ सो प्रथम गुरुनकी कृपातें अनुभव भयो सो स्वरुप एहीहे ॥ फेरि आपके सन्मुख साष्टांगदंडवत् करि ॥ तव आज्ञा करी । जो आवो कृष्णदासमेघन । आप कृष्णदास कहेते । सो आपके चरणारविंदको दास व-

नायो ॥ ओर दास ओर घनमें दोय पद कहे ॥ सो यह नाम मेघनसो एसें अर्थ सूचन भयो ॥ पहेलें इनको नाम मर्यादारीतिसो गुरुनको दीयो हतो ॥ फेरि आपने रसरूपदासत्व सिद्धिकरिकें कृष्णदास-मेघन नामसिद्धि कीयो। सो पुष्टिमार्ग रीतिसो धर्यो ॥ जो पहेले गुरुनसो आज्ञा लीनी सोवचन सत्य-करनार्थ आप बद्रिकाश्रमपधारे ॥ सो कृष्णदास सर्व श्रीअंगको टहलकरे । सो जादिनसो आपको संबंध भयो तादिनसों अलौकिक सामर्थसिद्धि होयगई॥ क्षुधा, प्यासा, निद्रा, देहाध्यास सब निवृत्त होय-गयो । जो रात्रिमें पोढे तव इनकीगोदमें आप चर-णारविंद धरिकेपोढे ॥ जो चारिप्रहररात्र पंखाकरेसो निद्रा वाधा न करे ॥ ओर श्रीअंगकोटहलको सौ-भाग्य कछू लिखिवेमें आवे नॉहि। जो इनको साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम निरावरण दर्शनदेते सर्व कालविषे। सो

अगारि बद्रिकाश्रमपधारे। सो आपके चरणारविंदकें पिछारीपिछारी चलेजाय ॥ ओर आपको वात्सल्यताकेलिये इनकीदृष्टि आपके श्रीअंगमें लगी रहे ॥ सो प्रथम आप किरनिनामापर्वत के समीपहोयकें पधारे ॥ पर्वतकेसो ऊंचो सो सूर्यकी किरन वा पर रे ॥ फेरि जगतमें प्रकाशकरे, इतनो उंचो हतो ॥ तातें इनको नाम किरनिनामा पर्वत धर्यो॥ सो वाके उपरसों एक महान् शिलागिरी सो कृष्णदासजीने अपने हाथसों थांभिलीनी। वे शिला अकस्मात् क्यों-गेरी जो कछू घात करिवेको नाँहिगिरी। केवल कृ-ष्णदाजीके हस्त स्पर्श करके उहांकी उहां बेठिगई। सो वा पर्वतको भगवदीयके संबंध ते सनाथकीयो। सो कायिक सेवा कृष्णदासजी को सिद्धिभई। एसी असाधारण सेवादेखिकें आप प्रसन्नतापूर्वक आज्ञाकरी॥ जो कृष्णदास कछूमाँगि ॥ तव विनती करी ॥ जो राज पहेले गुरुनके घर पधारिके दर्शनदेऊ ॥ व

उद्धार करो ॥ तव आपनें श्री मुखसोंआज्ञाकरी ॥ जो तथास्तु ॥ सो यह कायिकताप निवृत्तभयो ॥ [जुओ श्रीवल्लभाष्टकनी टीका.]

प्रसंग २ जो

फेरि आप अगारि पधारे जहां व्यासजीको आश्रम हतो सो तहां जीवकी गम्यनॉहि ॥ सो आप भीतरपधारे ॥ ओर कृष्णदासजीकोंआज्ञादीनी जो तुम यहांइ ठाडेरहियो ॥ सो तिनदिनतांइ कृष्णदासजी ठाडे के ठाडेई रहे ॥ ओर भीतर व्यासजीको ओर आपको मिळापभयो ॥ सो व्यासजी आपकों सॉमे आयके पधरायलेगए ॥ पाछे आपकों नमस्कारकरिकेकहे ॥ सोश्लोककह्यो "कृष्णस्तु भगवान् स्वयं" तवआपने तत्सूत्र भाष्यकी आज्ञाकरी आनंदभयो॥ सोयाको व्याख्यान व्यासजी सुनिके चक्रतहोयगए॥ ओर भ्रमर गीतमें आधोश्लोककमतिहतो सो ताकी सुबोधिनीजी आपनेपहेलेंही करी हती ॥ सो मूल

श्लोक व्यास मर्यादा राखिवेके लीए नाँहि कीयो सो
व्यासजीसों पूरोकरायके लाए॥ सो श्लोकः "आत्म-
त्वाद्भक्त वश्यत्वात्" सो यह व्यासजीद्वारा भाग-
वतमें भ्रमर गीतमें आपने आरोपन कीयो ॥ ओर
कृष्णदासजी तीनदिनतॉंइ वाहिर ठाडेहीरहे सो देहा-
ध्यास कछू वाधाकीयोनाँहि॥ तथापि आपके स्वरूप-
केवियोगको दुःख हृदयमें वहुत उलटगो ॥ तवमन-
मेंकही जो भीतर जायवेकी आज्ञा हे नाँहि ॥ ओर
या लोकमें आपके चरणारविंद विना जीवनमेरोकहांहे
॥ सो तो या देहसो आप मोको दर्शन देई, नाँहि
तो या देहको ठाडेकोठाडा वृक्षकीनाँइ सुकायदेऊंगो
हटूंगोनाँहि सो यह प्रतिज्ञा मनमें करि दुःखको स-
मुद्र मनमें ऊमग्यो ॥ सो आप भक्तनकी आर्त्ति स-
हिशकेनाँहि ॥ सो तव आप तुरत वाहिरपधारिके द-
र्शनदीए ॥ ओर श्रीमुखसों आज्ञा करी॥ जो कृष्ण-
दास तूं कवकोठाडो हे ! तव विनतीकरि॥ जो राजनें

आज्ञाकरि ताहीसमयको ठाडोहूं ॥ तब आपप्रसन्नतापूर्वक आज्ञाकरि जो कृष्णदास तू कछू माँगि ॥ तव विनतीकरि जो राज मुखरतादोष जाय ॥ तव आपनेआज्ञाकरि जो तथास्तु ॥ सो यामें कृष्णदासजीने वाचिक सेवा करीसो आपने वाचिक ताप निवृत्त कीयो ॥

प्रसंग ३ जो

फेरि अगारि गंगासागरकोसंगमहे ॥ तहां आप पधारे ॥ गंगासागरको एसोप्रभावहे, जो जीव अपने दोषप्रगटकरि गंगासागरमेंपरे, तो मच्छवाको भक्षण करे ॥ ओर मुक्तिहोयजाय ॥ ओर दोष प्रगट न करे, ओरगिरे तो मच्छवाको छीवेनाँहि ॥ सो एसो वा तीर्थको प्रभावहे ॥ तहां वहुत सघनवनहे सिंघ व्याघ्रको वडो डरहे ॥ जासमय आप वा वनमेंपधारे सो वाके प्राचीन द्रुमलता सव लीलामें प्राप्त भए ॥ सो वाहीसमय सव नवीनवन होतोभयो ॥ सो उहांके सिंघ व्याघ्र स्वस्वभावछोडिके गैयाकोनाँई चरतेभए सो आपके दर्शनकरिके सव कृतार्थभए ॥ वा वनमें

आप कछूककाल विराजे ॥ सो एक दिन पाकादिक-
सिद्धि न भइ ॥ ओर कृष्णदासजीने वा वनमेंसों फल-
लायकें आपको अरोगाए ॥ सो वाकेफल एसे अलौ-
किक जो वाकेअगारि पाकादिकनकी अपेक्षा नाँहि
एसें स्वादिष्ट ॥ सो कृष्णदासजीनेहूं आपके अरोगे-
पीछे फलाहारलीयो ॥ सो मनमें यह ताप रह्यो जो
कछू अन्नादिक अरोगें तो मनकोताप निवृत्त होय ॥
यहताप निवृत्तिकेलिए कृष्णदासजीको मनोरथ पूर्ण-
कीयो ॥ सो आपपोढहे, सो कृष्णदासजीके उपर च-
रणारविंद धारणकीएहे ॥ ओर कृष्णदासजी एसी·
रीतिसों बेठेहे जो श्वासवजेनाँहि, शरीरहलेनाँहि ॥ सो
एसी सुखसीमा सेवाकरिरहेहे ॥ सो आपके स्वरूपा-
नंदको अनुभवकरिरहेहते ॥ सो यहां लिखेनाँहि ॥
फेरि आप कृष्णदासजीकी मानसीसेवाकोमनोरथ
पूर्णकरिवेकों इच्छा अंतरमेंकरी ॥ जो या समय धाँ-
नके मुरमुराहोयतो अरोगे ॥ सो वा अंतर्यामीके म-

नकी कृष्णदासजी जानिगए ॥ जो आपको धाँनके मुरमुरा अरोगवेकीइच्छाभई जो आपकों छोडिके जायवो कठिनपर्यो ॥ जो एसें में कहुं आपजागे ॥ जो मोकों न देखे तो हमारोकीयोवृथाहे ॥ ओर आपके मनोर्थ इच्छाकीसेवा न वनी तो हमारोजीवनहुवृथाहे॥ सो दोउओरसों धर्मफाँसी आयपरी ॥ एसें क्षणक्षणमें विचारकरेहे ॥ जो मन अतिअकुलायरह्योहे ॥ सो आप लोकवत्तलीला वाहो श्री अंगमें अत्यंत आलस निद्रा दिखाई ॥ फेरि कछू मनमें आई ॥ जो कहांतो प्रभु मनोर्थसिद्धिकरेंगे ॥ नहींतो गंगासागरमें देहको मिलाय देउंगो ॥ सो एसे आपके चरणारविंदको चिंतनकरि आपके चरणारविंदकेनीचे वस्त्र समेटिकें नेंकसहारेसों वस्त्रकेउपर आपके चरणारविंद पधराए॥ फेरि नेक विलंवकरिवाहिर वेठेरहे ॥ तवजांनी जो आप सुख रीतिसों पोढेहे ॥ सो तव आपके चरणारविंदकों दंडवत्करिके चलिदीए ॥ सो वा वनतें वाहिर

निकसे ॥ सो देखेतो पार दीवा वरतो देख्यो, तव जानि जो कोइ गामहे ॥ तव कपडातो माथेसोंवांधि लीए ॥ ओर छोटेसे अंगोछाको कच्छमार्यो ॥ ओर श्री गंगाजीको नमस्कारकरिके प्रभाववेमेंपेठे, ओर विनतीकरी जो अहो श्रीगंगे ! या समय तू धर्मराखेगी तो रहेगो ॥ सोइतनो कहेतही पार उतरिआए ॥ कछू हू श्रम जलनें जतायो नाँहि ॥ फेरि कपरासूकेपेहेरिकेगाममेंगए ॥ सो भगवद्इच्छासों एक घरमें कोइ मनुष्य जागतहतो, सोवाकेपासजायके वासों कही, जो में अष्टप्रहरकोभूख्योहूं ॥ सो या वनमें गंगासागरकी यात्राको आयोहूं ॥ सो श्रीगंगाजी पेरिकें तुमारेपास आयोहूं ॥ मोकों कछू अन्नादिक चहिए ॥ सो तव वाने कही ॥ जो तू भोजन करे तो तोको भोजनकरायदेउं ॥ तव कृष्णदासजीने कही ॥ जो तुमारेघरको पाक हमारे काम आवेनाँहि ॥ जो धाँनके हरे मुरमुरा होय तो हमको खेतमेंते लिवाय देऊ

केमुरमुरा वाही छन्नामें सिद्धिकरीराखे ॥ फेरी आ-
कों दंडवत्करि चरणारविंदनेकनेकसहारेसों गोदमें
तरकायलीए ॥ ओर मनमें ताप करेजो कोइरीतिसों
आप याही समय अरोगे ॥ ओर एक डर यह लागे
जो मैंने नेककार्यके लिए आपकों जगाए ॥ सोवी-
धर्मनांहि ॥ इतने में नेंकदेरीमें आप भक्तइच्छापूरक
कृष्णदासकों आज्ञाकरतेभए जो कृष्णदास रात्रि कित-
नीगइ ॥ तब विनतीकरी जो राज अवी अर्ध रात्रि-
तोनांहिहे॥तब आपने आज्ञाकरी जो या वनमें धांन-
केमुरमुरा प्राप्तहोय तो अरोगें तब कृष्णदासजीनेवि-
नतीकरी जोराज आज्ञाहोयतो कहा यह वडीवातहें
यह देह आपकीहेजो राजकेसुखवास्ते जहांहोइ तहांसो
लायकें अर्पणकरुं ॥ इतनी विनती सुनिके आप वि-
राजमान होतेभए ॥ देखेतो अगारि छन्नापें दोंनाम
मुरमुरा साजिधरेहे॥ चंद्रमाकेप्रकाशकी उजेरी हे रही
हे ॥सो देखिके कृष्णदाससोंकही जो ए मुरमुरा कोंन

धरिगयो ॥ कहांसोआए ॥ सो डरसों बोलेँनाहि ॥ तब आपनेआज्ञाकरी ॥ जो वनमें हमकों अकेले छोडिके क्यों चलेगए ॥ ताते कंपायमान हे गए॥ तब नेत्रनमेंसों आँसूनकीधारा वहिवे लागी ॥ सो आप कृष्णदासके हृदयकी जांनिगए ॥ सो आपकोहृदय-कृष्णदासहे कृष्णदासकोहृदयआपहे॥ सो वा समय परस्पर स्नेहको अत्यंतसंबंध जतायो ॥ जो जगतको अंतरयामी में मेरो अंतरयामी तू॥ सो मेरे अंतरकी जांनिके या समय एसी सेवाकरी॥ सो आप दोउ-भूजानसों पकरी छातीसों लगायलीए सो एसो चोंटायों सो तीनोंताप वाहिसमय दूरिकरतेभए॥ ओर श्रीमुखसोंआज्ञाकरि जो कृष्णदास माँगि ॥ कृष्ण-दासने विनतीकरी ॥जोराज यहमांगतहों जो आपके-मारगकोसिद्धांत निसवासर मेरेहृदयमें रह्यो आवे ॥ सो मारगको सिद्धांत यह जो स्वामिसुखीरहे सो ताही सुखसोसुखी ॥ सो तो कृष्णदासजीने याहिसमय

करिदिखायो ॥ फेरिआपने प्रसन्नतापूर्वकआज्ञाकरी॥ जो हमारेमारगकोसिद्धांत अनुराग निरंतर तेरे हृदयमें दृढरह्योआवेगो ॥ और वामेंसों क्षनक्षन अनुरागकीवृद्धि अधिकहोयगी॥ सो तीनवेर उरसोंलगाय स्नेहामृतसोंसिंच्यो ॥ सो वासमयकोसुख अनुभव लिखिवेमेंआवेनाँहि॥ जो मानों निकुंजमंदिरमें प्रीतमप्रीयाकों सौभाग्यप्रगट होतोभयो ॥ फेरि आप प्रसन्नतापूर्वक मुरमुराअरोगे॥ यह मानसीसेवा सिद्धिभई वा समय मुरमुरा एसेअरोगे जो वाके अगारि सबविंजन वारिकें डारिदीजें ॥ फेरिआपने कृपाकरि अपनेसन्मुखही कृष्णदासकोलिवायो बहुतस्नेहपूर्वक ॥ सो वा मुरमुराकोस्वाद कछूकहेतेंआवेनाँहि ॥ जो एकतोकृष्णदासकोस्नेह दूसरोअधरसुधाकोसंबंध॥सो ताहीकी कहाँताँइ प्रशंसालिखे ॥ जो कृष्णदासजी यारीतिकीसेवाअसाधारण केइ प्रकारकोकरते. ॥

प्रसंग ४ थो
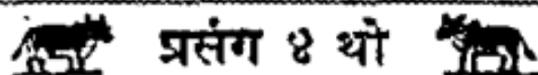
फेर कृष्णदासजीने चरणारविंदद्वाविके पोढाये ॥ फेरि चारिमूहुर्त्तपाछें आपजागे ॥ सो देहकृत्यकरि वा स्थलको सनाथकरि अगारिचरणाविंद धरतेभए॥ फेरि कृष्णदासने प्रश्नपूछ्यो॥ जो प्रभुनकोप्रियकहा ओर अप्रियकहा ॥ तब आपनेआज्ञाकरि । जो मूल-तो प्रभुनकोंस्नेहसहित उत्तम वस्तु आपकोंप्रिय हे॥ आप उत्तमवस्तुके भोक्ताहे॥ जो कृष्णदासजीने दोड या समय करिदिखाइ ओरअप्रिय जो भक्तनकोद्रोह तथा धूंआ॥ सो कृष्णदासजीने वा सामग्रीमें न तो धूंआकीयो ओर न काहुको चित्त दुःखायो। सो दो-उपक्ष दोष निवृत्तकरिकें सेवाकरी ॥ फेरिआज्ञाकरी ॥ जो प्रभुनकों गोरस अत्यंतप्रिय हे ॥ सो गो श-ब्दकरिके अनेकअर्थहोंयहें ॥ सोतामें मुख्य तो गो शब्द ईंद्री वाचकहे ॥ सो रस कृष्णदासने सर्वात्म-नाभावकरिकें अंगिकारकरायो ॥ सो यह रस संबंधी-

वातहे ॥ सो रसिकहोयगो सोअनुभवजांनिजायगो ॥ जो लोकविषे इनको तो यहां गंध वी संबंध न विचारनो ॥ ओर फेरिविनतीकरी॥ जो वैष्णवहोयकें प्रभुनकीलीलाको भेदनाँहिजाने, ताकोकारणकहा॥तव आपनेआज्ञा करी॥जो विधिपूर्वक आत्मनिवेदन करे नाँहिहे॥करे तो अवश्य लीलाकोभेदजाने ॥ कृष्णदासजीने सर्वात्मनाभावसिद्धिकरि आत्मनिवेदनकीयो॥जो लीलाकोस्वरूपतो कृष्णदासजीको स्वतः ही सिद्धिहोयगयो॥सो साक्षात्लीलात्मकस्वरूपसों आपदर्शन दे रहेहे ॥ पाछे ओर हूं बात कही जो श्रीरघुनाथजी सर्वअयोध्याकों वैकुंठ लेकेपधारे ओर दशरथकों स्वर्गवासदीयो॥नांतर दशरथको नर्कमें वी ठिकानो न हतो ॥जो रघुनाथजी सरिखो पुत्र धर्मी तीन कों वनवास ॥ ओर लौकिकधर्मकेवास्ते धर्मीकोंछोडिके केकैइको धर्म सत्यकीयो तातें आपनेकृपाकरिके स्वर्गमेंवासकरायो ॥ ताको दोहा ॥ राम भजे

ते रामको ताको साखी राम॥ अवधि गई वैकुंठकों भूप गये सुर धाम ॥ १ ॥ तातें धर्मीस्वरूपकोसेवन-करनो॥सकलधर्म छोडिकें॥जोभगवदआज्ञाहे "सर्व-धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणंव्रजेत्" सो कृष्णदास-जीने साक्षात्धर्मीरुप आपकोसेवनकीयो ॥ सो श्री-गोकुलनाथजी श्रीवल्लभाष्टककीटीकामें पूर्णपुरुषो-त्तमको साक्षात्अनुभव कृष्णदासजीने कीयो हे एसो लिखेहे ॥ जो आपकेस्वरुपकी केसी असाधारणसेवा करी॥ जो आपसों तीन वस्तुमाँगि ॥ जो पहेलेतो गुरुनकेघरपधारिकें वाकोदर्शनदेउ, दूसरो मुखरतादोष-जाय, तीसरो मारगको सिद्धांत हृदयमें आवे ॥ सो आपनेतीन्योदीनी ॥ सोआपने टीकामें कृष्णदास-जीको प्रसंगलिख्योहे "त्रयमपिदत्तम्" "अदेयदान-दक्षश्च महोदार चरित्रवान्" फेरि कछूकालपाछें श्री-महाप्रभुजिके पधारेपहेलें कृष्णदासजो गुरुनके आश्रम-कोंगए॥ सोकाहेतें॥ जो आपके स्वरुपको ओर जीव-

नकों पूर्णपुरुपोत्तमको ज्ञानकरायवेकेलीए गुरुनके आश्रमगए ॥ नहींतो आपके चरणारविंद छोडिके केसेजाते ॥ जोगुरुनको मिस मात्र हे॥ यामें अनेक-कारण सूचनहोयहे॥ सो जायकें उहां गुरुनकेंअगारि प्रणामकरिके बेठे ॥ तब गुरुने तर्क करी ॥ "मावि-हायतबअनुगुरुकृतं" तब कृष्णदासजी बोले "मा-गुरुस्तएवअतःगुरुप्रसादमां पुरुषोत्तमएवप्राप्ति" तब गुरुबोले "आचार्याणांकथंमन्यते" तबकृष्णदासजी-बोले "आचार्याणांविजानीयात् नामन्येत्कर्हिचि-त्" इतनोकह्यो तोवी गुरुनको संदेह नाँहिमिट्यो ॥ तब कृष्णदासजीने जानि जो वक्ताप्रमाण अनेकदें-इगे तोवी वाको विश्वास नाँहि आवेगो॥ अबइनको साक्षात्अनुभव करिदिखायोचहिए ॥ जो गुरुनके-अगारि अंगिठी प्रज्वलित होयरहिहती सो वा अग्नि-मेंसो अंजुलिभरिके उठाइ॥ सो एक मुहूर्त्त लों हाथ-मेंराखी, ता समय यह वचनकह्यो जो "श्रीमदा-

चार्यपुरुषोत्तम एवमांजालीत्थंनोचमांजालीत्या "
एसोवचन कहेतोभयो वा समय वे गुरु कृष्णदास-
जीको एसोप्रभावदेखिके महाभयभीतहोतोभयो ॥
ओर पूर्णज्ञान श्रीमहाप्रभुजीकेस्वरुपकोभयो॥ ओर-
कह्यो जो कृष्णदास तू धन्यहे ॥ सो एसे तीन वेर
कह्यो ॥ जो तुमने पूर्णपुरुषोत्तम प्रभुपाए॥ यह वात
सत्योक्तं सत्योक्तं सत्योक्तं॥ फेरि अपनेहाथसों कृष्ण-
.ासजीकोहाथपकरिकें नीचेभूमिमें अग्निस्थापन करते-
भए॥सो वा भूमिमें अग्निपरी सो वा अग्निकीज्योति
ऐसी वृद्धिभई, सो गुरुनसों देख्यो नाँहिगयो ॥ कृष्ण-
दासजीकी अंगुलिखोलिके देखे तो हस्त अत्यंत सी-
तलहे॥सो गुरुनने वा अग्निकी तीन परिक्रमा करिके
वा अग्निकेसामे साष्टांगदंडवत् करी ॥ सो गुरुनको
ब्रह्मांडफूटयो सो वा में सो दीवा की सी लोय नि-
कसिके वा अग्निमें प्रवेशकरतीभई॥ सो या रीतिसों
गुरुनको श्रीमहाप्रभुजीकेस्वरुपकोज्ञानकराय उद्धार-

करि फेरि आपके चरणारविंदपास आयकेबेठे ॥ साष्टांगदंडवत् करी ॥ तब आपने आज्ञाकरि ॥ जोगुरुनको स्वरुपज्ञानभयो ॥ तब विनती करी, सबव्यवस्था जा प्रकार गुरु आपकेचरणारविंदमे प्राप्तिहोतोभयो सोकही ॥ आपने कृष्णदासजीकी बहुत प्रशंसा करी ॥ जो गुरुतो सत्पात्रहतो परंतु कोइ साधारणजीव होय, ओर तुमारो संबंध होयसो ऊ परमगतिको पावे ॥ सो वासुदेवदासछकडा कृष्णदासकेसंबंधसो प्राकृत गर्व निवृत्त करिकें कृष्णदासजीकीकृपातें श्रीमहाप्रभुजीकी शरणआय परमकृपापात्र होतेभए ॥ एसे कृष्ण दासजीके अनेक चरित्र हे ॥ यहां लिखे तो ग्रंथको बहुत विस्तार होयजाय ॥ ताते कछूकछू मुख्यचरित्र लिखेंहे ताते कृष्णदासजी कीवार्ताको पारनाहि ॥ सो कहांताई लिखिए ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक कृष्णदेवराजा विद्यानगरके वासी तिनकी वार्ता

सो कृष्णदेवकोपिता श्रीगोपीजनवल्लभके चर-
ारविंदमें अनन्य भावहेजाको ॥ सो जाकेघरमें अ-
ारेपुराण चारोंवेद ओर खटशास्त्र पुस्तक तहखानों
ार्योरहे ॥ ताकेउपर ग्यारहपंडित (११) ग्रंथनकी सं-
ाररराखे सो राजवडोप्रवल चक्रवर्ती ॥ ओर मलेच्छ
ाके नामसों भाजिजाय ॥ तिनकेयहां कृष्णदेवको
न्मभयो ॥ तासमय सुवर्णकीहुंडेंवरसी एकमुहूर्तलों
सो प्रजामें नगरमें वडोमंगलभयो ॥ राजानेंहूं पु-
कोउत्सव देखिकें वडोआनंदपायो ॥ फेरि जोतसी
शास्त्रीनकोंबुलायकें ग्रहलग्नदिखाए तवउन ब्राह्मण-
नेकही जो यह तुमारेंपुत्रभयो हे सो मनुष्यनाहिहे
ा इनकेग्रह देवतानकेसे पडेहें ॥ ताते कोई भगवद्-

१ आ कृष्णदेवराजानी वार्तानो पुरो इतिहास जाणवानी इच्छा-
ाळाओए " श्रीवल्लभाचार्यजीनुं जीवन चरित्र " वांचवुं.

लोकको देवताआयोहे ॥ तब राजानेसुनिकैं बहुतही
बधाइबाँटी ॥फेरि जन्मकर्मभये ॥पाछें ब्राह्मणनसों
पुछो, जो यापुत्रकोकहानामधरे ॥ तब ब्राह्मणने
कही, जो शंकरदेवधरो, कोऊकहे रामदेवधरो, कोऊ
कहे लक्ष्मनदेवधरो ॥ तब राजानेपूछो जो याकी
राशीनक्षत्रमें कहानामआवेहें ॥ सो बताओ ॥ तब
ब्राह्मणननेमिलायो सो कृष्णपदआयो ॥ तब राजा
सुनिकें बहूतप्रसन्नभयो ॥मनमेंकही जो में चाहतहतो
सोइ प्रभुननेबातमिलाई॥ फेरि ब्राह्मणकीआज्ञालेवें
पुत्रकोनाम कृष्णदेवधर्यो ॥ सो पुत्रकोप्रकाश सूर्य
सरीखोभयों ॥ फेरि बडोभयो,सो श्रीकृष्णावतारमें
व्रजमंडलमें, इनकीप्रीति बहुत ॥ फेरि दोयपंडित रा
जाने पुत्रकेपढायकेलीये करिदीए॥सो राजाकीबुद्धि
तेजबहुत सो चारिवरसमें न्याय ओर व्याकरण ओ
वेद वेदांत पठित होयगयो ॥ एक दीन राजानें अ
पनेबेटे कृष्णदेवकी परिक्षाकेलीये पंडितनकी सभा

करी ॥ तासभामें राजाकृष्णदेव मृगराजकीसीनाँई
गर्जिवेलगें पितासुनिकें वहूत प्रसन्नभयो ॥ तव सब
पंडितनने राजाके उपर पुष्पवृष्टिकरी ॥ राजानें सव-
ब्राह्मणनकों पांचपांचमोहोरदे विदाकीए॥ फेरिकृष्ण-
देवराजाकोपिता कछूकदिनमें हरिशरण भयो ॥ तव
कृष्णदेवराजा सिंघासनपरवेठे सो एसीरीतिसोंराज्य-
कीयो जो याकेराज्यमें चोर विपयी कुचालचलन
नांहिपावे ॥ कोई जीवहत्या करननांहिपावे ॥ एसी-
रीतिसों राजा राज्यकरतोभयो॥ सो निरंतर श्रीभा-
गवतश्रवणकरतो, ओर व्रजकेमाहात्म्यकोग्रंथ नित्य-
सुनें ॥ सो एकदिनं पुराणिने कथाकही ॥ तामें श्री-
गिरिराजको माहात्म्यवर्णन करवेलगे सो श्रीगिरिरा-
जकोस्वरूप रत्नमयवर्णनकीयो ॥ ओर गोविंदकुंड
दूधसोंभयों वर्णनकर्यो ॥ सो सुनिकें राजाको वडी-

१ श्रीगिरिराजजीनी संपूर्ण भावना श्रीगिरिराजजीना स्वरूपनुं वर्णन वगेरे जाणवा माटे वांचो "श्रीगिरिराजभूपणग्रन्थ त्यां मळे छे. ग्यो. ०-१०-० तथा "श्रीमजयात्रा वर्णन".

अभिलाषावढी ॥ जो दोउवस्तुको में यहांमंगायके दर्शनकरुं तवअपनेप्रोहितसोंकही जो तुम व्रजकोजाओ ॥ सो एक थेलीमें श्रीगिरिराजके दशपांचस्वरूप पधरायलावो ॥ एकलोटामे श्रीगोविदकुंडकोजललावो ॥ एसे वा प्रोहितको खरचदेकें व्रजकोपठायो ॥ सोप्रोहितश्रीगिरिराजजायपहोच्यो प्रोहितकीतोलौकिक दृष्टि हती ॥ सोवाकोतो श्रीगिरिराज श्रीगोविद कुडकेदर्शन लोकवत्‌भए॥ तव वा प्रोहितनेकही ॥ जो देखो पंडितनें राजाको केसो|भरमायोहे ॥ जो रत्नमय श्रीगिरिराजकहाँ ॥ओर दूधसोभर्यो कुंडकहां ॥फेरिमनमें कही॥ जो हमतो राजाके पठाएआयेहे॥ सो दोउ वस्तु ले जांउगो ॥ अगारि झुंठीसाचीवातहोयगी ॥ सो कथाव्यासको कठिनपरेगी ॥ एसेकहीके एकथेली में तो श्रीगिरिराजकेटूकभरे ॥ एक लोटामे श्रीगोविंदकुंडकोजलभर्यो ॥ सो भरिके लेआयो ॥ तव कछूकदिनमे विद्यानगरमें जायपोहच्यो॥

सो राजाको खबरिकराइ ॥ राजा प्रातःकाल न्हाय कथाव्यासको बुलायो ॥ ओर पंडितनकोंबुलायो ॥ तब व्यासतो मनमें बहूतहीकांप्यो॥जो राजसभामें शास्त्रकीबात प्रभुराखेंगे तो रहेगी ॥ सो एसे बहुत-सोचकरत भगवद्स्मरण करवेलग्यो ॥ फेरि राजाने प्रोहितको बुलायो ॥ सो सिंघासन गादीतकीयानपें तो श्रीगिरिराजजीपधराए ॥ ओर सुवर्णकेकटोरामें कुंडकोजलठलायो ॥ सो जलतो साक्षात्अलौकिक दूध व्हेगयो॥ओर श्रीगिरिराजकेस्वरूप साक्षात् रत्न-मयव्हेगये ॥ तब राजा दर्शनकरि बिवसव्हेगयो ॥ ओर सभा सब चक्रतव्हेगइ॥ राजाने कपूरकी आर-तिउतारी नैवेद्यभोगधर्यो ॥ एसो राजा कृष्णदेवको भावहतो ॥ फेरि श्रीगिरिराजकेस्वरूप जहाँहते तहां श्रीगिरिराजमें पधराए ॥ कृष्णदेवराजाकें लक्ष्मीको महा प्रकाशहतो जो सुवर्ण तोलामें न तोलतो ब्राह्म-णनकों दक्षणादेइ सो सुवर्णकीदेतों कृष्णदेवराजाकी-

खडाऊंमें मोतीहते ॥ ओर खूंटीपें आंमरा वरावर मोती हते ॥ नगरमें कोडीकेठिकाने पैसा चलते ॥ ओर पैसाकेठिकाने चांदीचलते ॥ चांदीकेठिकानें सोनोंचले ॥ जो नगरकोनाम विद्यानगरहतो ॥ सो तहां अविद्याकीतो संभावनाँनाँहि ॥ जो शैव–शंकर-मतवारेकोंतो सुहायोनाँहि सो उननें द्वंद उठायो ॥ ओर राजाकेयहाँ सभाकरी ॥ सो तहाँ वैष्णवसंप्रदायवारे सामनेंपरेनाँहि तातें शैवमतवारे–शंकरमतवारेनको वडो अभिमानचढीगयो ॥ राजसभामें नित्यसभाहोय सों तोउ राजामूलमेंदैवीजीव ॥ सो उनकी-वात श्रवणतोकरे परंतु हृदयमें धारणनाँहिकरे ॥ फेरि उनमें शाक्तमत ओर वाँमको सवको मिलावे " प्रच्छन्नवौध निरविशेष जगतअसत्य ॥ एसे मतवारेननें ओर महाशैवसो शिवकों परब्रह्मकहे ॥सो एसे श्रुतिनको विरुद्धअर्थकरिके उपद्रव उठायो ॥ सो तिनकेसंगमें सातसोंमतवारे लडिवे तैयारभये ॥ तवराजाको वडी-

चिताभइ ॥ जो यह धर्मक्लेश ब्रह्मक्लेशकोनिश्चे केसे-होयगो ॥ तवराजाको रात्रमें भगवद्आज्ञाभइ ॥जो तूँ सोचमतिकरे ॥ जितने मतवारेहें ॥ तिनसवनको वुलायले ॥ कोइरहेन न पावे ॥ आजसों अट्ठाइसमें दिन मेरोस्वरूप श्रीवल्लभाचार्यजी नामसों तेरोसभामें पधारिके विजयकरेंगे ॥इतनेमें राजाकीआँखि खुलि-गई ॥ सो रोमरोम पुलकित होयआए ॥ ओर हरि रस वीर्यरस प्रगटहोयगयो ॥सो सवारे भए राजाने वडीभारीसभाकरी ॥ ओर देशदेशमें हलकारा दूत पठाए ॥ जो जिनको विवादकरनोहोय सो हमारे नगरमेंआवों॥फेरि एसे कोउ न कहेजो हम वा सभा-मेंनाँहिगए ॥ एसे खवरहोतेही देशदेशांतरके ब्राह्मण आयके जुरे ॥ सो लक्षावधि ब्राह्मणनकीभीरजुरी॥ राजा सवकोसन्मान नित्यकरे ॥ सो तामें तीनउप-मादोनी जो झगराकेप्रसंगमें अन्यमार्गीयनमें महा-भारथसों रच्यो सो राजानेतो पांडवनकोसो अश्वमेघ

करिदिखायो ॥ ओर तिसरी स्वयंवरकीउपमादीनी जो जाकों जिते ताको कनिकाभिषेकहोयगो ॥ तब कल्लूकदिनमें आप राजा को अंगीकारकरिवेकों पधारे ॥ फेरि मँामँाकेयहाँ पहेले पधारे ॥ सो मँामँासमर्थ-हतो ॥ सो कल्लूवासों आपुको उपकारवन्योनाँहि ॥ जो न आपनेंवाके हाथकोभोजनकीयो ॥ जो आप-नेंतो नगरके वाहिर जलसरोवरपें रसोइ करी ॥ राजा-कोसभामें वैष्णवसंप्रदाय वारेतो निर्वल होयरहेहते ॥ उन दुष्टनकेअगारि छोटे मोटेनकी कोंनचलाइ ॥ सो राजाकों आज्ञाभइहती ॥ सो दिनगिनिरह्योहतो सो वा दिन अट्ठाइसमो दिन हतो ॥ सो राजा प्रातः-कालउठिकें आज्ञाको स्मरणकरतोभयो ॥ मनमेंयही-विचारकरे जो आज्ञासत्यहें ॥ तो मेरो धर्मरहें ॥ एसो विचारकरिरह्योहें ॥ इतनेमें आपको मँामँादानाध्यक्ष-हतो ॥ ताकोनाम विद्याभुषन, सो ताने जायकें रा-जाकेद्वारपालनसों कहिदिन्ही ॥ जो आजकोइ नयो-

ब्राह्मण आयवे पावेंनाहि ॥ सो आपतो वाही समय तत्काल राजद्वारकों पधारे ॥ सो वा राजकेद्वारपर चरणारविंद धरतेंही शंख विनावजाये शंखधुनि होयवे लगिगइ ॥ ओरहूं सीगी पत्र वजिवे लगिगए ॥ सो एसो स्वतःही मंगल होयवेलग्यो ॥ सो राजाने ओर सव सभानेसुनी ॥ सो सव चक्रतहोयगए॥ जो कहा कौतिकभयो ॥ ओर राजाकोतो सुनीकें मनमें निश्चें धिरजभइ ॥ जो प्रथमआज्ञाभइहे॥ सो स्वरुप पधारे हें ॥ ताको मंगलशब्दभयो हे ॥ इतनेमें द्वारपालनें आयकें राजासो कही ॥ जा महाराज कोइ सूर्यको-सोप्रभाव ग्यारहवर्षके वालक पधारे हे सो वेगि आप-पधारिकें दर्शनकरो ॥ तव मॉमॉ यहवातसुनीकें वडो लजातो होयगयो ॥ ओर राजातो ततक्षन दोरिकें सामनेंगयो ॥ सो दर्शन करतेंही गदगदकंठ होयगयो ॥ चरणारविंदमें गिरि पर्यो ॥ सो शरिरकी शुद्धि न ही ॥ फेरि आपने दोउ चरणारविंद याके मस्तकपर

धरिदीए ॥ सो वाकोंतो चेत नहीं सो राजाके परि-
करनें जेसेंतेसेंठाडोकोयो ॥ जो नेत्रनमेंसो धारा वही-
जाय ॥ ओरमुखसो बोलआवे नाहि ॥ सो आपनें
श्रीहस्त राजाके मस्तकपर धरतेंही राजा सावधान-
होयगयो ॥ ओर आपने आज्ञाकरी॥ जो राजा का-
यरमतिहोउ ॥ तेरो सकलताप निवृत्तहोयजायगो ॥
ओर अनिष्टदूरिहोयगो ओर इष्टप्राप्तिहोयगो ॥ यह-
वचनामृत सुनिके राजाकों सिधकेसो पराक्रमशरिरमें
होयआयो ॥ ओर कहिवेलग्यो जो या नगरके ओर
मेरे अहोभाग्यमहोभाग्यं ॥ जो हमसरिखेजीवनकों
करुणाकरिकें आपनेंसनाथकीये ॥ फेरिआप कृपादृष्टि-
करिके सामें चितये॥ फेरि राजा आपकेसन्मुख उलटे-
पाँयन अगारि पधराय ले गयो ॥ सो हुकमकर्यो जो
जितनेफुलहोय तिनकीवृष्टि आपकेउपर होतीजाय ॥
सो वाहीसमय फुलनके टोकराचले आए॥ सो राजा
ओरराजाको परिकर आपकेउपर फुलनकीवृष्टिकरे जाय

॥ ओर आपकोंपधरावतेजाय ॥ फेरि जहां शास्त्रकी-वेदी रची हती तहां आपको पधरायकेलेगए॥ तहाँ आपको सोनाके सिंघासनपर पधराए ॥ सो तापर सुवर्णकोछत्र ओर सुवर्णमयचमर ओरपंखाहोतेजाय ॥ सो आपु सिंघासनपर विराजतेही अन्यमार्गीयनके सबमत अस्तहोयगए॥ जो मानों सूर्यकेउदयतें खद्योत —तारागण तथा चंद्रमा अस्तहोयजाय तेसे सबनको तेज अस्तहोयगयो ॥ फेरि राजाने यह डोंडी पिट-वायदीनी जो नगरमें कोई वादी रहेन न पावे ॥ जो कोईआयके प्रतिपक्ष करे॥ सो आपकोनाम सर्वोत्तम-मेंलिख्योहे ॥ " स्वदासार्थकृताशेपसाधनः सर्वशक्ति-धृक् " ॥ सो वासमय आपने अनंतशक्ति प्रगटकरि-लिनी ॥सो विशेपतोकहा लिखे जो जितनेवादीहते ॥ तितने प्रतिपक्षकरिवेको आपकोशब्द अनलहोतेही प्रतिपक्षक्षयहोतेंही चल्योजाय ॥ सो लक्षावधि ब्राह्मणनको एसोज्ञानहोतोभयो ॥ के वे जानें मोसों-

आज्ञाकरे वे जाने मोसोंआज्ञाकरे ॥ सो सवब्राह्मण तुष्णोभावकों प्राप्तिहोतेभए ॥ जो एकवेरतो उनने सूंड दंत हलाए ॥ फेरि आपने मृगराज गर्जनाकी-नाँई मस्तक नमरीभूतहेगए ॥ सकलसभामें जेजेशब्द होतोभयो ॥ फेरि राजानेंकहो जो कोई विद्यमान आचार्य पीछारी एसोनाँहिकहे जो हमारेमनमें यह-रहिगई ॥ यासमय जोशास्त्रको पराक्रमकरनोंहोय सो दिखावो ॥ सो अग्रणीआचार्यहते, सोई आपकी स्तुति हाथजोरिकें करिवेलागे ॥ ओर यहविनतीकरे ॥ जो कोईजीवहोय तासों हम वादकरे ॥ आपतो साक्षात्-परिब्रह्महें सकलवेदधामरुप या सभामें आपपधारेहें ॥ सो हमारो वी या निमित्त या सभामें दर्शनकरिकें उद्धारभयो ॥ सो सवनकेमुखतें जेजेहोतभइ ॥ ओर हजारनटोकरा पुष्पनके आपकेउपर वरसनलागे ॥ ता-समय राजा तथा वैष्णवसंप्रदायवारेनकें तो देहमें वहूत प्राणआयगए ॥ सो मानों सूर्यकेउदयतें तमको

नाशहोय ओर चौर भूत सब छिपि जाय ॥ ओरक-
मलनको प्रकाश होयजाय॥ सो साधु ब्राह्मण भज-
नमें तत्परहोयजाय ॥ एसोआपने वासमय परमानंद
प्राप्तकीयो ॥ फेरि राजानें कैनकाभिषेक करायो ॥
ओर सबननें मीलोकें आचार्यतिलक कर्यो ॥ फेरि
कनकथारमें कपूरकीआरतीउतारि ॥ ओर कितनीक
सुवर्णकी मोहोर राजानें आपको न्योछावरकरि ॥ सो
वासमयकी शोभा कछूकहिवेमें ओर लिखिवेमें आवे
नाँहि ॥ सो अनिष्टदूरिकीयो, ओर इष्टप्राप्तिकीयो ॥
अनिष्टदूरियहकीयो जो ब्रह्मक्लेश,धर्मक्लेश मिटायदीयो
॥ ओर इष्टप्राप्ति यह, जो राजाकों शरणलीयो. ओर
परमानंदको दानदीयो ॥ सो राजाने ब्राह्मणनको लौ-
किकद्रव्यको दानबाँट्यो ॥ ओर आपनेतो राजाकों
अलौकिक स्वरुपानंदको दान दीयो ॥ फेरिराजानें
सब द्रव्य कनकाभिषेकको, वाकी विनतीकरी ॥ सो

१ जुओ "श्रीकनकाभिषेकनो इतिहास" ए पुस्तक.

आपनें वाद्रव्यपें नेकहूं दृष्टि न करी ओर ॥ आज्ञा-
करी ॥ जो स्नान द्रव्य हमारे कामकोनँाहिहे ॥ तव
राजाने अगणित मोहोरनकेथार आपकेअगारिधरे, सो
तामें [१]दैवीद्रव्यहतो सो कछूक आपने अंगिकारकीयो
ओर सव पीछोफेरिदीयो ॥ यहप्रताप वासमय लक्षा-
वधि व्राह्मणननेंदेख्यो सो देखिकें चक्रतहोयगए ॥
वाही समय आप वासभामेंसों विजयकीए ॥ सो राजा
तथा प्रजा सव जेजेशब्द करतेजाय, ओर सव पुष्प-
नकी वर्षाकरतेजाय ॥ ओर नगरमें पधारेजायहें ॥
फेर वा नगरसों एकयोजनपें जायकें आपने मुकाम-
कीयो ॥ तहाँताइ पुष्पनकी वृष्टि ओर जेजेधुनि चली-
आई ॥ सो एकरात्रि वा स्थलपर आपविराजे ॥ फे-

---

[१] कृष्णदेव राजाए सात हजार मोहोरनो थाळ भेट कर्यो पण आचार्यश्रीए ते द्रव्यमाथी दैवीद्रव्य-मात्र सात मोहोर के जे दीनदास नामना क्षत्रिनो आवेलो हतो ते लीधो अने तेना श्री नाथजीने नूपुर कराव्या छे ते हाल सुधी पण श्री नाथजी अंगी कार करे छे अने ते द्वारा आचार्यश्रीए द्रव्य प्रत्येनो पोतानो वैराग्य गुण दर्शाव्यो

रिआपनें राजासों आज्ञा कीनी जो ए ब्राह्मणआएहें सो विमुख न जाय ॥ सवनको सन्मानकरो ॥ ओर हम यहाँसों पुंढरपुर–श्रीविठ्ठलनाथजी पधारेंगें ॥ तव राजानें विराजीवेकी वहूतविनतीकरी ॥ तव चाररात्रि वाही गाममें ओर विराजे ॥ सो सवब्राह्मणनकों आपके स्नानको जोद्रव्यहतो सो दानदीयो ॥ सो ब्राह्मण आपकेनामकी जे जे वोलत अपनेदेशकों गए ॥ आपको जे शब्द सव जगतमें छायरह्यो ॥ फेरि पांचमेंदीन राजाआपकों विदाकरिवेकों आयो ॥ आयकें विनतीकरी ॥ जो आपकीआज्ञाप्रमान ब्राह्मणनको सन्मानकरि विदाकीए ॥ सो आप सुनिकें वहूतप्रसन्नभए, फेरि आपकेनामकी जय पताका–ध्वजा आपकीभेटभइ ॥ सो आपने राजाकृष्णदेवकेद्वारपें आरोपनकरवायदीनी ॥ आपनें अपनेसंग न राखी ॥ फेरिराजाने निर्विघ्नतासों आपको पूजनकीयो ॥ जो कितनेकआभरण, कितनेक वस्त्र भेटकीए ॥ फेरि राजाकों

आपनें विदाकीयो ॥ सो राजाकोमनोरथयह ॥ जो कोइकाल आपमेरेयहाँ विराजें परंतु आपकीइच्छानहीं ॥ सो राजाकोंविदाकरिदीयो ॥ तव राजानेंविनती-करी जो मेरोमनोरथ वहूत हे सो आपकृपाकरि कव पूरनकरेंगें ॥ तव आपने आज्ञाकरी जो कोइकालपीछें तुमारे मनोरथ सिद्धि करेंगें॥ सो एसें आपनें राजाको वहूतसमाधानकीयो, श्रीकंठकीमालापेहेराइ, श्रीह-स्तसों राजाकीपीठिथापी, विरहको कछू कह्योनजाय ॥ जो दर्शनकोंआयो तो पाँवनसो आयो॥ फेरि चा-रिपांच मनुष्यनने लेजायके मेहेलमें वेठायो ॥ फेरि आप उहाँसो श्रीविठ्ठलनाथजीको पधारे॥ सो राजा-वारेआभरण वस्त्र सव श्रीविठ्ठलनाथजीको समर्पण करि दीए. ॥

प्रसंग २ जो

अव राजाकृष्णदेव अपने स्थानमें सोए ॥ सो आपके स्वरुपको विरह वहुत ॥ सो घरी घरीमें वेठे

ओर सोवें नेत्रनमेंसों जलकीधाराचले ॥ ओर मनमें कहे ॥ जो एसीनिधि मँाथेपधारि सो में विलस्यो नँाहि ॥ यह शास्त्रकेझगरामें मेरो व्यर्थकालगयो ॥ अव नजानें मोकों कव दर्शन देंइगें॥ एसेकरतकरत महा विकलदिसा होयगइ ॥ यासमय एसोअनुभव भयो॥ जो शास्त्रशालाकोवेदीहे, तापर आप विराजेहे ॥ तव आपने श्री मुखसों आज्ञाकरी जो राजा तूं चिंताक्लेश क्यों करेहें ॥ जो में तुमारी शास्त्रवेदी सिंघासनपर नित्यविराजुंहुं ॥ सो तूं संदेहमतिकरे ॥ इतनोंसुनतही राजासावधान होयआयो ॥ चेव्योहोयगयो ॥ वाही समय अपनें परिकर सवनकों जगाए ॥ हुकमकीयो ॥ जो दुंदुंभी भेरी सव वजावो ॥ ओरहूंवाजेवाजें ॥ राजास्नानकरिकें दिव्यवस्त्रपेहेरिके आपके स्वरुपको ध्यान करिवेलाग्यो ॥ इतनेमें प्रातःकालभयो ॥ तव राजाने आपके विराजिवेकी वेदी सिंघासनको वस्त्रधराए ॥ पुष्पनकीमालाधराइ ॥

तिलककर्यो ॥ कपूरकी आरती वारी ॥ वहुत न्योछावर करिके द्रव्य मागध, सूत, गुणी, गंधर्वनको वाँट्यो॥ तादीनसों राजा अपनें हाथसों, दोउसमय वास्थलकी आरती करतो ऐकवेर एकादशीकोसंदेह ब्राह्मणनने डार्यो ॥ सों राजावैष्णवहते ॥ सो दशमीवेधाकरतेनाँहि ॥ काशीके पंचांगमें ओर राजके जोतसीनके पंचांगमें फेरनिकस्यो ॥ फेरि राजाकोवडोविचारपर्यो ।। तव राजाको आपकीकृपासों यहसूझी जो दोउ पत्रलिखिके आपको वेठकमें भीतरधरिदीए ॥ ओर विनतीकरी ॥ जो राज कृपाकरिके निश्चे जतावो ॥ तादिनको निर्णयकरे ॥ यहविनतीकरी राजा किवाँर लगायके वाहिर आयगयो ॥ वासमय पांचपचीस पंडित राजाकेपासहते। वे सवननें मनमेंजानी ॥ जो यहकहा निश्चय होयगो ॥ ओर राजातो आपकोकृपापात्र, तातें राजाकोतोसंदेह आयोनाँहि ॥ सो एकमहूर्तपाछें राजाने

किवाँर खोले ॥ तो राजाकेजोतसीनने जोनिर्णयकीयो हतो ॥ सो पत्रआपके सिंघासनपरहे ॥ ओरपंडितनने जो निर्णयकीयो हतो, सो पत्र आपके सिघासनपास आयगयो ॥ यह प्रताप राजाकी सभापंडितनने देख्यो ॥ सो राजाको सब धन्य धन्य कहेते भए ॥ तादिनतें वानगरके लोगनकों एसी प्रतीत भइ ॥ सो जो जीवशरण आपकी आए हते ॥ सो वास्थलके दरशन नित्य करते ॥ वेहस्थल अजहु विद्यमान हे ॥ सो राजा आपकी शरण आए ॥ तासमय हजारन जीव आपकी शरण आए ॥ आपको माँमाँतो प्रतिछाकेमारें आपकी शरण नाँहि आयो ॥ सो अपने घरकेनकों आपको नाम श्रवण करवायो ॥ सो माँमाँने बहुत विनती करी ॥ अपराध क्षमा करवायो ॥ ओर कही ॥ जो मैंने आपको स्वरुप जान्यो नाँहि ॥ ओर आपने हमारि भगिनिकेग्रहमें अवतारलीनोहे ॥

१ विद्यानगर ते हालनुं विजयनगर. अहीं आचार्यश्रीनी बेठक राजाना महेलमां छे. हाल महेल नथी पण बेठकनु स्थळ छे.

सो हमसरिखें जीवनको उद्धारकरोगे॥ ओर राजाने वहुत विनती करी ॥ सो संगमें सो पचास मनुष्य ओर दसवीस पंडित ओर खर्चकरिवेको द्रव्य ए ती-न्योमनोरथ आप मेरोआडीसो संगराखें ॥ सो आपने तीन्यो वातनकी नाँहि करी ॥ ओर आप यहांसो कूचभये ॥ तव राजाको वडो दुःख भयो ॥ जो आप कोऊ देशमें पधारेंगें ॥ सो तहाँ आपको श्रम होय-गो ॥ सो मेरो दासपनो कहाँ रह्यो॥ सो तासों रा-जानें गुसरोतिसों अपने दूतआपके चरणारविंदके पाछें लगायराखे॥ सो जहाँजहाँ देशमें आपको दिग्विजय होय॥ तहाँतहाँसो ए दूत कृष्णदेवराजाको वधाइदे तव राजा सुनके वहुत पुन्यकरे ॥ एसो राजा कृष्ण-देवको आपके चरणारविंदमें अनन्यभाव हतो ॥ सो आप दशोंदिशामें दिग्विजय करि चूके ॥ ओर श्री-पुरुषोत्तमक्षेत्र पधारे ॥ उहाँ आठ प्रहर महाप्रसाद लीए श्रीजगन्नाथरायजीके मंदिरमें ठाडेरहे ॥ तव

एवात दूतनने जायके कृष्णदेव राजासों कही॥ तव सुनिकें राजाको वडो खेद भयो ।। तव राजाने अपने वारिपंडितओर परमाना श्रीजगन्नाथरायजीके राजाको पठायो ॥ तामें लिखि जो इतनो श्रम आपको कहाकारन करायो॥ तव श्रीजगन्नाथरायजीकेराजानें पीछो उत्तर लिखिपठायो ॥ जोयहां आपको सब प्रकारसों जय भईहे ।। ओर हमको सबनको परमानंदभयोहे॥ ओर एक ब्राह्मण म्लेच्छके वीर्यको हतो ॥ ताको हमनें कारो मोंहोडो करिके पुरिते वाहिर काढिदीयो ॥ ओर सववात आपकी प्रसन्नतापूर्वक भइ ।। सो आपकाहुवातको संदेह करेंगे नाहि॥ यह परमाना दूतनने जायके कृष्णदेव राजाको दीयो तव राजाने सुनिकें वडो उत्सव मान्यो ।। ओर कितनेक आभरण भेट पठाए ।। सो श्रीमहाप्रभुजीने श्रीहस्तसों अंगीकार कराए ॥ फेरि आप उहांसो विजय कीये तव श्रीइलंमागारुजीको अडेलमें पधराए,

ओर आपने उहाँ दृढ वास कीयो तादिनसों राजके उहाँके पंडित ओर चाकर आपके पास रहिवे लगे ॥ ओर क्षनक्षनको चरित्र विद्यानगरजायकें दूतकहे ॥ एसे राजाने सो पचास मनुष्यकी अपने गामतें अडेलताँइ चोकी करि राखी॥ सो तब राजाको दर्शन की मनमें वडी आर्ति वाढी जो आप विवाह अंगीकार करे तो में युगलस्वरुपको मनोरथ करुं ॥ सोतब कछूकदिनमें आप विवाह अंगिकारकरी श्री महालक्ष्मीजीको संग ले के अडेलमें आप सुखविलाससे विराजेहे ॥ तब यहबधाइसुनिके राजाकृष्णदेवने बहु तही उत्सव मॅान्यो ॥ फेरि मनमें कही ॥ जो स भक्तकेभाव उदय भए॥ फेरि राजाने आपके दर्श नार्थ अडेल चलिवेकी तैयारीकरी ॥ तब कितने आभरण, कितनेकवस्त्र सिद्धि करवाए ॥ ओर य मनोरथ उठायो जो पहेले आपको सतमन सुवर्ण स्नानकरायो सो वामेंतो आनंदआयोनाँहि ॥ :

अवउहांजायके परमउत्साह सहित आपको सुवर्णस्नानकराउं ॥ वासमयमें मुहूर्तसूधायों ॥ सो वा संवतमे दोयज्येष्ठहते ॥ तब पंडितननें राजासों विज्ञप्तिकरी ॥ जो आपज्येष्ठाभिषेक पुरुषसुक्त पूर्णमासीकेदिना आपको स्नानकरावो ॥ तब वह सुनिकेराजा वहुतप्रसन्नभयो ॥ ओर सबनकों दक्षणावाँटी । फेरि राजानें सवालक्षमोहोर सोनेकी आपकेस्नानकेलीए सिद्धिकरवाई ॥ ओर सिंघासन आदि सब सुवर्णके सिद्धिकरवाए ॥ विद्यानगरसों राजानेंकूच कीयो ॥ सोसंगमें लश्करवहुत हतो ॥ सो राजाने मनोरथविचार्यो ॥ ओर विज्ञप्ति पत्र दूतनकेहाथपहेलेपठायो ॥ सोपत्र आपको पोहोंच्यो ॥ तव आप वांचिके वहुतप्रसन्नभए ओरसववैष्णवनको वडोआनंद भयो॥ जो ए दर्शन हम यहाँकरेंगें यह सुनीकें॥ काशी, प्रयाग, कनोज, कडा, मानिकपुरके सबवैष्णव या उत्सवपेंआए वहुतभीरभइ ॥ सो नित्यआपको वैष्णव केसरस्नान

करावे ॥ सो युगलस्वरुपको नित्यनएआभुपन वस्त्र-
धरावे एसोआनंद अडेलमें नित्यनयोमनोरथ दोय-
मास ताँइरह्यो ॥ फेरि आपनेविचारी जो राजा लक्षा-
वधिफोज लेके आवेगो सो वैष्णवनको सुखनहींहो-
यगो हमारेतो वैष्णवनकोंसुखकरनोहे ॥ ताकेलीए
यहमनोरथ प्रगट कीयो ओर वैष्णवनकी सहस्रावधि
भीडजुरी ॥ सो वासमयकी अडेलकीशोभा कछूकही-
नजाय ॥ फेरि आपनें वैष्णवनकेलीए राजाकों पत्र-
लिखिपठायो ॥ जो तुमारि फोज एकमजल अडेलसों
दूरराखियो ॥ ओर तुम सो पचास मनुष्यसंगलेकें द-
र्शनकों आइओ जो बहुतभीरमें तुमकों उद्वेगरहेगो ॥
तातें तुमयारीतिसों दर्शनकोंआवोगे तवतूमकोबहुतही
सुखआवेगो ॥ तव राजापत्रवाँचिकेबहुत प्रसन्न भयो
ओर यह मनमेंविचारो ॥ जो आपनेमोको बहुतसुख-
देनो विचार्यो हें ॥ तातें कृपाकरि पहेलेंहीपत्र दीए
॥ सो पत्रमाथे चढायके राजाताहीरीतिसों दर्शनको-

आयो॥ तव आपकेदर्शनकरिकें चरणारविंदमेंगिरि पर्यो गदगद कंठहोयआयो ॥ दोऊचरणारविंद राजानेअपनेमस्तक परधरे ॥ सो आपने वासमय कोटिकंदर्पलावण्यके दर्शनदीए॥ सो राजादर्शनकरिके रोंमरोंम रससों भरि गयो ॥ साक्षात् दासीभाव हृदयमें आविर्भावहोय आयो॥ ओर राजानेंविनतीकरी जोराज युगल स्वरुपसों आपसेहराधरिकें विराजों॥ मेरेमनोरथसोंव्याहउत्सवकरो ॥ सो ज्येष्टवदी ११ केदिन प्रथम व्याहउत्सवकीयो॥सो भारीभारीपीछवाइ चंदोवा वनवाए॥ ओरआपयुगलस्वरुपसों श्रीमहालक्ष्मीजीसों गांठिजोरिकें विराजें ॥सो दोउस्वरुपननें सेहराधराए ॥राजाने अमोलआभरण, अमोलवस्त्र, दोउ स्वरुपनकोंधराए ॥ ओर रजो आदिसहचरी मंगलगानकरनलागी ओरवैष्णव श्रीदामोदरदासजी आदि मंगल वधाइ गावनलागें ॥ ओरराजाहुं अपनोरजोगुणछोडिकें केवल दासदासीभावहोयकें वैष्णवनमें

आनंद करतो भयो॥ओर राजानें गुणीगंधर्व काशी: प्रयागके बुलाए ॥ सो राजा सहस्त्रावधिद्रव्य आपकीन्योछावरकरि सबनकोंदेतोभयो ॥ वासमयकी॰ शोभा जोमहान्भगवदीय भाग्यवानहुते सो तिननेहीं दर्शनकीए ॥ सोसब वैष्णवनकेमुखसों यहनिकसे जो राजाधन्य राजाधन्य.॥ ओरराजा दोऊज्येष्टमास अडेलमेंहीरह्यो॥ सो नित्यनएउत्सव मनोरथकरे॥ फेरि छेल्ले, ज्येष्टमासकोपक्ष आयो तब राजानेविनतीकरी॥ जोमेरोमनोरथ ज्येष्ट शुदी १५ के दिन सुवर्णस्नान पुरुषसुकसोंकराऊं एसोहे ॥ तब आपसुनिकें बहुतप्रसन्नभए ॥ ओर आज्ञा करी ॥ जो हमआज्ञाकरे तारीतिसोंमनोरथकरो तब सुखआवेगो॥ तब राजानेकही ॥ जो आज्ञा ॥ तब राजासोंआपआज्ञाकीए ॥ जो यह सुवर्णस्नानमें वैष्णवनकों सुखआवेनाहि यामें रजोगुणसो दीसेंहे॥ तातें तुम ओर सबवैष्णव श्रीयमुनाजल अपनेकांधेपर लायकें ज्येष्टाभिषेककरावो

तामें सबवैष्णवनकों सुखहोयगो ॥ ओर तुम सुवर्णकीमोहोरलाएहो ताकों चोतराकरि तापर हमकों पधरावो॥सो तुमारोमनोरथ सिद्धिहे जाय॥ तव राजा वाहीप्रकारसों करतोभयो ॥ सो तव मोहोरनकों चोतराबनवायो तापर सुंदरवस्त्रविछाए तापरआपकों पधराए ॥ सो ब्राह्मण पुरुषसुक्तबोलतें जाय, ओर वैष्णव राजा सवमिलिकें आपको न्हवावतेजाय सो ता जलमें मृगमद, कपूर, केसर, फूल, चंदन, सवसुगंधी मिलायकें आपकोन्हवाये॥ओर भगवदीसव कीर्तनकरते जाय ॥ परमानंदभयो ॥ फेरि दोऊस्वरुपनकों नवीनवस्त्र, आभरणधराए॥कपूरकी थारीसों आरतीकरी ॥ राजाने वहूतन्योछावरकरी, ओर भेटधरी ॥ फेरिराजाने तीनदिनताँइ सववैष्णव गामकों महाप्रसाद लिवायो सवनकों वस्त्रउढाए॥ दोयवधाई मॉनी जो एकतो व्याहकी, एक ज्येष्टाभिषेककी ॥ तासमय अंडेलमें साक्षात् लीलात्मकसृष्टिको .

होतोभयो ॥ सो राजाहूं दर्शनकरि कृत्यकृत्यहोतोभयो ॥ फेरिराजानें आपसोंविनतीकरी॥ जो राजए मोहोर ओर सिंघासन छत्र इनको कहाकर्तव्यहैं ॥ तबआपनें राजासो कही जो तुमतोजानोहो जो यह जल हमारे स्नानजलहैं सो हमारेकामनाँहिआवे ॥ तासों हमकहें तारीतिसों ब्राह्मणनकों बाँटिदेऊ॥ सो आपनेतो एकसोनेकोसाज संध्याकरिवेको अंगीकार कीयो ओर सबब्राह्मणनकों बँटवायदीए॥ ओरआपको सुवर्णको सिंघासन छत्र ज्ञातिकेभटनकों दिवायो ॥ ओर सवालक्षमोहोरही, सो आप त्रवेनिपेंजायकें पंडितनकी सभाकरी ॥ सो प्रयाग काशी आदिदेकें सवालक्षब्राह्मणभए॥ तामें एकएकमोहोर सर्वब्राह्मणनकों दक्षनादिवाइ ॥ सो सबसभामें आपको जेजेशब्द भयो ॥ एसीरीतिसों आप स्वजशप्रगटकरिकें अडेल पधारे॥ सुखसोंवासकरतेभए॥ फेरिराजाने गाम परगनाकी बहुतविनतीकरी ॥ तब आपनेंनाँहिकरी॥

जो यारीतिसोंहम द्रव्यअंगीकार नाँहि करेहे॥ जव-
हमारी इच्छाहोयगी, तव हम लिखिपठावेंगे तवभे-
जियो ॥ ओर राजानेंकहो जो श्रीयमुनाजीकोघाट
पक्के कोसकोसतांइ वंधाउं ॥ तव आपने नाँहिकरी॥
जो एसी सर्वथा मतिविचारियो जो यहाँतो श्रीयमु-
नाजो अलौकिकरीतिसो विराजेहें ॥ तोउराजाको मन
मान्योंनही ॥ सो अडेलकेचारोंआडी चारोदिशानमें
चारि वडेवडे भारी वुरजवनवाए॥ तापर सातसोमनु-
ष्य राजाकी आडिसों रहेआवे ॥ फेरी राजाकों आ-
पनेविदाकीयो ॥ सो राजाकोमनतो आपकेचरणार-
विंदमें गडिगयो ॥ सो चलिवेकोंमनकरेनाँहि॥ ओर
संगकेमंत्रि वहुतउतावल करें ॥ तव आपनें राजासों-
आज्ञाकरी ॥ जो राजा तुमारेघरमें हमारो वेदिपेंवि-
राजिवेको चोतराहें तापर हम तुमकों दर्शन देईगें सो
उहां तुम सवमनोरथपूरनकरियो॥ एसीरीतिसों वहुत-
समाधानकरि अपने श्रीकंठकीमाला राजाकोपहेराइ

विडादीए ॥ यारितिसों राजाकृष्णदेवकोंविदाकीए ॥ तव कृष्णदेवराजा आपको स्वरुप हृदयमेंधरिकें विद्यानगरकोंगयो ॥ सो उहां जायकें आपकीवेठकको स्वरुपअनुभव करतोभयो ॥ सो मनमेंजोमनोरथउपजे सो आप उहाँपूरनकरें ॥ एसीएसी कृष्णदेवराजाके भावकी वार्ता सबलिखेंतो लक्षावधिग्रन्थ होयजाय ॥ सो तातें मुख्यमुख्यचरित्र लिखेंहें ॥ वार्ता संपूर्ण. ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक दामोदरदास संभलवार तिनकी वार्ताकोभाव

एक समय श्री आचार्यजीमहाप्रभुजी आपने दामोदरदास संभलवार कनोजकेवासीपें अत्यंत कृपा विचारी जो पूर्णनिरोधकरि पूर्णफलदेनों ॥ एसेंविचारिके आपके अंतरंग दामोदरदासहरषानिकों इनके घर पठाए ॥ सो मॉनो उद्धवजिपधारे ॥ सो इनके घर भीतरगए ॥ तासमय श्रीद्वारिकानाथजीके दर्शनकोसमयहतो ॥ सो जायकें जेश्रीकृष्णकरी ॥ तव

इनकोबोलसुनतही दामोदरदासजी बाहिर दोयेंआए। सो भुजापसारिकैं छातीसोंछातीलगायके परस्परमिले ॥ सो दामोदरदासजीको परसहोतेही इनकेप्राण अत्यंतहरे होतेभए ॥ तासमयकोसुख कछूलिखिवेमें आवेनाहि ॥ जो मॉनो श्रीमहाप्रभुजि साक्षात् आपही पधारेहे ॥ जहॉ भगवदीयपधारे, तहॉ भगवान निश्चेंपधारेहे॥ सो दामोदरदास संभलवारेतो रोमांचप्रेमांचहोयगए॥ अपनो महान्भाग्य मानतभए॥ घरमें महान्उत्सवमॉन्यों ॥ ओर बालभोगमें दोयवैष्णव अधिकीन्हवाए ॥ सामग्री अधिकीभोगधरी शृंगारमें राजभोगमें जन्मदिवसतॉइकी बधाइगाइ॥ ओर गॉमकेवैष्णव अधिकीमें महाप्रसादलेवेकोबुलाए ॥ आरतीकरी दंडवत्करी ॥ तारामंगलकरि बाहिरआए ॥ सो दामोदरदासको अपने हाथसों तेलअभ्यंग करि न्हवाए॥ नवीनवस्त्र, धोती उपरना धराए ॥ तिलकमुद्राकरि नित्यग्रन्थ पाठकरि पाछेंकही जो

पोतनाकरो ॥ वैष्णवनकोंपोतनाकरि पातरधरी ॥ सं
बालभोगकोमहाप्रसाद सबपातरमेंधरे ॥ श्रीठाकुर
जीके आरोगिवेकोनेग भारीहतो ॥ जो मेंदाकीपुरी
धरी, खासापुरीधरी, सेव, थपडी, शाक, सबतरहको
दोचारतरहकोरायता, ॥ दोयचारितरहकोविलसार
ओग खिर, बासोंधि, मलाइ, मांखन, शिखरन, सा
दादहीं, बांध्योदहीं, नग, न्यारे इतनोंपातरमेंधरे
दूसरिपातर सखडीमें लावनलागें॥ तब नाँहिकरी॥ जं
में सखडी न लेउंगो ॥ उतनेंहीमें त्रसहोयगये॥ तां
सखडीनेकहूंनलइ॥तामें यह कारनहे जो प्रथम प्रभुनं
विप्रयोगमेंसखडीनाँहिलइजाय ॥ सो ए नित्यअडेलं
आपकेथारकीसखडीलेतेहते ॥ ओर मूलकारणयह
जो में सखडीलेंउंगो तो आपकेदर्शन इनकोंनहींहो
यगें ॥ तातेंअडेलजायकें आपकेदर्शनकरेगें ॥ तब आ
पूर्णफलदानकरेंगे यह हेतविचारिकें सखडीनहींलीनं
॥ ओर दामोदरदाससंभलवारनेंहूंसखडीनलीनी ॥ जो

स्त्रीपुरुष दोनों शाकपुरीलेकें उठिगए ॥ओर कछू न लीनों ॥ मनमें दोउनकेवडोखेद॥जो न जानेहमारे हाथसों प्रभु सखडीआरोगेहेकेंनाँहि॥ओर सबवैष्णवनकों सखडीअनसखडीलिवाइ ॥ वडोउत्सवभारि माँन्यो ॥ रात्रमेंवैष्णवमंडलीभइ॥ सबकोंतिलककरे, महाप्रसादबाँटे ॥ फेरि वेदोउ भगवद्वार्ताकरवेलगें ॥ फेरि दामोदरदाससंभलवारनेंयहपूछी॥जो भाइजी तुमतोआपकेचरणारविंदकेपासनित्यरहोहों ॥ सो आपने कछु संबंधअनुभवकीयो ॥ सो कृपाकरिकें मोकोंसुनावो ॥तव दामोदरदासजिनेजानी ॥ जो अव इनकों योग्यता भइ सो दामोदरदासजिकहिवेलगे ॥ सो रसावेसहोयगए ॥ शरिरकीसुधिनरही ॥ ता समय श्री महाप्रभुजि इनकेमुखमेंविराजिकें आपहीकहिवेलगें ॥ ओर आपहीसुनिवेलगे ॥ सो ताको प्रमान “ एतंनिशम्यभृगुनंदनसाधुवादं वैयासरकीसभगवानथविश्नुरातं ” सो

ताकीसुबोधिनीजोमें आपनेंआज्ञालिखी हें सो वा समय श्रीभगवानहीवक्ता ओर श्रीभगवानहीश्रोताहें एसोकरत सवेरोहोयगयो ॥ सो एसें महान् अद्भूत चरित्रसुनिकें चक्रतहोयगए ॥ रोंमरोंम रसमेंभरिगयो ॥ एसें रात्रदिन दोनोंनको काल वीत्यो॥ यहवात लिखिवेयोग्यनाँहि ॥ जो रसिकजन अनुभवीहोय सो जाने॥ संवारेभए स्त्रीने हाथजोरि दोउनकोदेहकृत्यकरवायो न्हवाए सेवामेंदोउन्हाए ॥ सो राजभोगसोंपोहोंचिके तारामंगलकरि बाहिरआए ॥ ॥ फेर वैष्णवनकोपातरधरी॥ अपनीपातरधरी दामोदरदासनेंतो अनसखडीमहाप्रसादलीयो ॥ एसे जादिनमिले सो तादिनसों दामोदरदासजि जितनेंदिनरहें तितनेंदिन अनसखडीमहाप्रसादलीयो, फेर विचारी॥ जो ओर कामतो इनको सिद्धिहोयगयो ॥ ओर पूर्णयोग्यपात्र सिद्धिभयो ॥ अब याको दर्शन फलरुपदिखायोचहिए ॥ एसेंविचारिकें दामोदरदास-

जीनें अडेल जायवेंकीआज्ञामाँगी सो ए आज्ञादेइ नाँहि ॥ इनकेआग्रहसों दोयतीनदिन ओररहे ॥ फेरि इननेआज्ञामाँगी सो फेरिहूंइननें नाँहिकरी, तव दामोदरदासजिनेंकही ॥ जो भाइ अब तुममोकों मतिराखो ॥ अबमोसों रह्योजायगोनाँहि ॥ ओर अबतुमारेराखिवेमें हमकोंखेदहोयगो ॥ तवजानी जो अब ए रहेंगेनाँहि तव वस्त्रसुंदर कितनिकमोहोर आपकीभेटदीनी ॥ ओर दामोदरदासजिकों भली भांतिसों विदाकीनों ॥ ओर राजद्वारतें मनुष्यपोंहोंचायवेकों संगदीए ॥ सो कनोजतेविदाहेकेंचले ॥ सोअडेलपोंहोंचे तासमय आपगादीतकीयानपें विराजेहते ॥ सो वस्त्र मोहोर आपकीभेटधरी, साष्टांगदंडवत्करी ॥ एक अपनी दूसरी दामोदरदासजीकी, पाछें हाथजोरिठाडेभए ॥ तव आपने बेठिवेकी आज्ञादीनी ॥ फेरि आपनें दामोदरदाससंभलवारके समाचारपूछे ॥ सो तव सुनिकें आपवहुत प्रसन्नभए ॥ ओरकही, जो तुमनें

नित्यमहाप्रसादलीयो ॥ तव उननेंकही ॥ जो राज में तो नित्य अनसखडी लेतो ॥ तव आपजाँनिगए ॥ जो उनकों बुलायकें अब फलदानदीयोचहिए ॥ तव आपने नाव्य रच्यो ॥ इनके बुलायवेकेलीए ॥ सो दामोदरदासजि कनोजमेंजानिगए ॥ जो त्रिलोकिके अंतरयामीतोआप ॥ ओर आपकेअंतरयामीभगवदी ॥ सो एसो अंतःकरन अलौकिकसिद्धिहेगयो, अलौकिकदृष्टिहेगइ ॥ तव स्त्रीसोंकही ॥ जो श्रीठाकुरजीकीसेवा आछीरीतिसोंकरियो में अडेलजाऊंहूं ॥ तव थोरेसेदिनमें अडेलजायपोंहोंचे ॥ उहांजायकें आपकेदर्शनकीये ॥ सो तासमय आपभोजनकरिकें वीडाआरोगीरहेहते तासमय साष्टांगदंडवत्करी ॥ मोहोरभेटधरी ॥ तव हाथजोरिके ठाडेहोयरहे ॥ जो आप सन्मुखदृष्टिकरिदेखेनँाहि ॥ सो कछूविलंवभयो परिदेखेनँाहि तव चित्त अतिव्याकुलभयो ॥ तव कांपिवेलाग्यो गदगदकंठहोयआयो ॥ नेत्रनमेंसों अश्रुपात-

गिरवेलगे ॥ तव हाथजोरिकें विनतीकरी ॥ जो हे नाथ ! एसो कहाभारीअपराधपर्योहे, जो आप दृष्टिभरीदेखोनहीहो ॥ जीवतो दोषभर्योहें ॥ सो आपजतावो तो जोवजांने ॥ तव आपआज्ञाकरें ॥ जो भीतरकोअभिप्रायकछूओर ॥ सो तो फलदेवेको ॥ जो उपरसोंलौकिकनाट्यदिखायो ॥ सो यहआज्ञाकरि ॥ जो मेरोअतरंग दमला सो ताकों तेनें सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायो ॥ तवविनतीकरी ॥ जो राज उनसोंहीपूछे ॥ जो सखडीमहाप्रसादक्योंनलियो ॥ तव दामोदरदासनेविनतीकरी ॥ सो सुनिके आप समझिगए ॥ फेरि आप हँसिके वचनामृतसोंसींचे ॥ अधरामृत आपनेंदीयो श्रीहस्तमाथेपरधरे ॥ ओर वेठिवेको आज्ञाकरी ॥ सो वेठे चरणपरसकरे ॥ झूंठिन महाप्रसादधरायो, ओर कृपाकरिकें कछूकदिन यहां राख्यो ॥ श्रीअंगकीसेवादोनी ॥ जो पूर्णफलनिरोधसेद्धिभयो ॥ सो काहेते ॥ जो प्रथमयाकोअंगिकार

अलौकिकरीतिसोंहैं ॥ पहेलें तांबेकोपत्रपठायो सो तामे सवसंकेतलिख्यो ॥ जो उनकों जीवनसंप्रदानभयो ॥ ओर आर्तिवहुतहीभइ ॥ ओर यह विचारीके आपकवपधारे ॥ ओर कवमोकोंदर्शनदेइ ॥ कव मोकों शरणलेइ॥ सो वादिनसो अन्नछोडिदीयो फलाहार लेवे लगें ॥ सो आपकोनामहे "स्मृतिमात्रार्तिनाशनः" सो फलदेवेकों आप जलदीकनोजपधारें सो आपतो वाहिरवगीचामेंविराजे ॥ दामोदरदास भगवदी आपके संगहुते ॥ओर कृष्णदासजीकों सामानलेवेकोंगाममें पठायो ॥ ओर यहआज्ञाकरी ॥ जो काहूसोंकछूकहियोमति ॥ सो भीतरतोअभिप्राययह जो जाकेलीये॥आप पधारेहैं ॥सो तो विनाकहेही ॥ चल्योआवेगो सो यहीवाक्यहैं सो वलपरिक्षार्थहैं ॥ जो जेसें रासमें भक्त आए सो आपनेंनाँहिकरी सो यह अभिप्रायविचारनों॥ तेसें यहाँहूंपहेलेपत्रपठायो ॥ पाछें नाँहिकरी ॥ यह भाव॥ओर दामोदरदासजीनें

सखडीनाँहिलीनी ॥ ताको दोउनको एकहीअभिप्रायहे ॥ फेरि दामोदरदास तो कृष्णदासकों देखतेंही संगलग्योआयो ॥ ओर कृष्णदाससोपूछो जो आप पधारे ॥ तवकही ॥ जो आज्ञानाँहि ॥ तवजांनिगए जो आपपधारे ॥ फेरि आप जहाँविराजते तहाँजायकें साष्टांगदंडवत्करी ॥ फेरि आपनें नामनिवेदन दीनो सो यारीतिसो इनको अंगिकारभयो ॥ सो जीवनपरकृपाकरे सो यामें आश्चर्यकहा फेर आपने आज्ञाकरि ॥ जो तुम घर जायकें श्रीठाकुरजीको सेवाकरो ॥ तथापि याकोमन चरणारविंद छोडिवेको होय नही ॥ फेरि आज्ञाभइ ॥ जो तूँ कनोजजा, जोउहाँ तोको फलफलितहोयगो ॥ तव दूसरिआज्ञा शीरधरिकें घरको चले ॥ सो मारगमें शरिरकीसुधिरहिनाँहि ॥ संगकेवैष्णव जेसेंतेसें लिवायलाए ॥ घरमेंगए ॥ पूछयोजो कहासमयहें ॥ सो श्रीठाकुरजीकेयहाँ राजभोगकोसमयहतो ॥ तहाँ भीतरन्हायकें मंदिरमेंगए ॥

सो तहाँ भीतरतो अलौकिक निकुंजहे ॥ ओरश्रीद्वारिकानाथजी अलौकिक रसरुप कोटिव्रजभक्तनकेयुथमें लीलाकरेहे एसें अलौकिकदर्शनभए ॥ सो यारीतिसों स्त्रीकोंभए ॥ सो दामोदरदासजीतो दसमोअस्थाकों प्राप्तभए ॥ सो अलौकिकदेहधरी वाहोलीला में प्राप्ति भये ॥ तब लौकिकदेहकोंछिपाइ राखी ओरमंदिरमें तें एंचिकेंबाहिरलाए ॥ सो बाहिर लावत केवल खोखावत् देहरहीगइ ॥ तब गामकेवैष्णवबुलाए ॥ ओरकही, जो यहाँतो यहलीलाभइहे ॥ सो तुम सबमिलोकें श्रीठाकुरजी ओर सबवस्तुतिनकापर्यंत सबअडेलपोंहोंचावो ॥ तब सबवैष्णवननें वेसेहोकरी ॥ पाछेंजानी ॥ जो नाव दसवीसकोसपेपोहोंचीगइ ॥ तब ज्ञातिमेंखबरकराइ ॥ स्त्रीनेहूं देहतीनदिनराखी ॥ अन्नजलकछूनलीनो ॥ सो तीसरेदिन लीलामें प्राप्तिभइ ॥ सो उनकीवार्ता रोमरोंमरसनाहाय ॥ तोउ न लीखीजाय ॥ यहप्रसंग महाफलरुपजाननों ॥ इतिश्रीदामोदरदासजीकी वार्ताको भाव प्रसंगसंपूर्ण. ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके सेवक

⊛पद्मनाभदासजो तिनकी वार्ताकोभाव.⊛

कनोजशहेर चतुरयुगीव्यास आजताँइविद्यमान याखंडमेंहे ॥ पहेलेसूर्यवंशीक्षत्रीनको राजहतो फेरि म्लेच्छकोउपद्रवभयो ॥ पाछें सूर्यवंशीराठोरनें पश्चिममेंजायकेंराजकर्यो सो ए कनोजनगरपरमपुनीतहे ॥ तामेंइनभगवदीयनकोप्रागट्यभयो ॥ओर पद्मनाभदासजीके पिता वडेप्रतिष्ठावानूहते श्रीभागवतकोवृत्तिसोंनिर्वाहकरते ॥ सोइनकेपरंपरासों व्यासगादिचलीआइ ॥ सो मूलरुपीइनकेकनोजमेंहते ॥ सो आजताँइइनकोकूलकनोजमेंहीआयरह्यो ॥ सव कनोजियाब्राह्मणनमें मुख्यपूज्यइनकोंघरहतो ॥ आसपासकेगामनमें इनकी आज्ञामें सवचले श्रीभागवतकोइनकेंइष्ट-

---

* आ पद्मनाभदासजी तथा तेमना कुटुंबनी वार्ता अमारा तरफथी "चोराशी वैष्णवनी वार्ता" नुं पुस्तक वहार पड्युं छे तेमां विस्तारथी आपी छे. आ वार्ता वांचतां ए पुस्तक साथे राखवा विनंती छे.

हतो एकमंदिरघरमेंहो तामेंश्रीभागवतकीपोथीविराजती ॥ सो सिंघासनपर दोयबेर श्रीभागवतकीआरतीउतारते, नैवेदादिकभोगधरते, फुलकीमालापहेरावते, फेरि इनकेपिताकेसंततिनाँहि हती ॥ सो मनमें दुःखवहुतरहें ॥ सो एकसमय नैमिष्यारण्यकीयात्राकोंगये ॥ तहाँरात्रिकोंआज्ञाभइ ॥ जो यहांतुम श्रीभागवतकीसप्ताहकरो, ओरदुधकोआहारकरियों ओरकछूमतिलीजों ॥ तुमारे ग्रहमें हरिभक्तहोयगो ॥ सो प्रातःकालकोसमयहतो सो ए जागिगए॥ मनमेंवडो आनंदभयो ॥ सो मनमें जानीकें निश्चयकरिकें सप्ताह श्रीभागवतकी वाहीरीतिसोंवांची ॥ फेरि श्रीभागवतकीसप्ताहपूर्णभइ ॥ पाछें सूतजी सोनकादिकनके आश्रमकोंदंडवत् करी अपनेगामकनोजमेंआए ॥ थोरेसेंदिनमें पद्मनाभदासजीकोप्रागट्यभयो ॥ सो यागाममेंवडो आनंदभयो ॥ एवालपनेसों श्रीठाकुरजीकी सेवाहीकर्योकरते, फेरि पिताने पढाए ॥ एसेपढे

जो सर्वशास्त्रज्ञहोयगए ॥ सो पितासो कोटिगुणीप्र-
भाववढ्यो ॥ फेरि थोरेसेदिनमें पिता हरिशरणभये
॥ पाछे ए श्रीभागवतकीव्यावृत्तिकरिवेलागे ॥ सो ह-
जारनश्रोताश्रीभागवतसुनिवेकोआवते ॥ सो राजद्वा-
रमें ठोरठोर इनकोमाहात्म्यफेल्यो ॥ सो श्रीपुरुषोत्त-
मअधिकमासआवतो । यामहिनामें श्री भागवतकी-
वृत्ति न करते ॥ सो विनावृत्ति श्रीभागवत एकमहिना-
भर सवनकोसुनावते ॥ सो एकसाल जो वैष्णवआए।
सो पद्मनाभदासजीने सप्ताह दूधआहारकरिकेंकरी ॥
सो जा दिनसप्ताहपूरणभई ॥सो ता रात्रिको श्रीमथु-
रांनाथजीने सवारेजताइ ॥ जो हमदोउस्वरुपसोंतुमा-
रेगाममेंआएहे ॥ सो इनकोनाम श्रीवल्लभाचार्यजी-
श्रीमहाप्रभुजी ॥ सो तुमसवारे आयके आपकोसाष्टां-
गदंडवत्करियो ॥ जो तुमारेगाममेंपधराइयो, ओर आ-
पकीशरणआइयो ॥ सो तुमारेमाथेमेंपधारुंगो ॥ सो
तुमसोंसेवाकराऊंगो ॥ जोमेंमथुरामंडलकोराजा हूं ॥

इतनीआज्ञाकरिकें आप पधारे ॥ सो इनकीआँखिखुलेगइ ॥ तबफेरिइनकेमनमें चटपटीलागी ॥ ओरश्रीमहाप्रभुजीव्रजसों अडेलपधारतहते ॥ सो सबभगवदीयनकोसमाजसंगहतो ॥ सो आपने पहेलेकृपाकरिकें जताइ ॥ सो एआपके अनन्यभक्तअंतरंगहे ॥ तातें आपनें निगूढआशयजतायो ॥ सो ए न्हायधोयके जितनेउनकेसंगीहते, ब्राह्मण क्षत्री आदिसबनकोंलेकें आपकेसामनेगए ॥ सो एककोसपें आपकेसमाजको दर्शनभयो ॥ फेरि पासजायकेंदर्शनकरिकें रोंमरोंमपुलकितहोयकें चरणारविंदमेंगिरिपरे ॥ शरिरकी सुधिरहीनाहि ॥ फेरि आपनें चरणारविंदमाँथेधरे, ओर श्रीहस्तसों पकरिकें ठाडेकीए ॥ नेत्रनमेंसोंआँसूनकीधाराचले, मुखसोंबोलआवेनाँहि ॥ फेरि आपने श्रीहस्तमाँथेधर्यो तब कछूकछूचेतभयो ॥ तब विनतीकोनी ॥ जो प्रभु आज जनमधारेकोफलप्राप्तिभयो ॥ तब आपनेंआज्ञादीनी ॥ जो अगारिगाममेंसबचलो ॥ तब ए आपके

अंगारि गावतेवजावतेपधरायलेगए ॥ सो आपवाहिरबगीचामेंविराजे ॥ तव पद्मनाभदासजिआपकी सकुटुंवशरण आए ॥ ओर पद्मनाभदासजिकेसंग हजारन जीवशरणआए ॥ फेरि विनतीकरी जो राज मोकोंकहा आज्ञाहे तव आज्ञाकरी ॥ जो श्रीठाकुरजीकी सेवाकरो ॥ सो इनकेमाथे श्रीमथुरांनाथजीकीसेवापधराए ॥ फेरि कछूकसेवाआपकरि रीतिभाँतिवताइ ॥ फेरि आप अडेलकोंविजयकीए फेरि दुसरिवेर दामोदरदासजीकों आज्ञाभई सुपनेमें ॥ सो आपनें कनोजपधारिकेंशरणलीए ॥ सो श्रीद्वारकांनाथजी दामोदरदासजीकेमाथेपधराए ॥ सो उहाँ आपने निवंधप्रकरणआज्ञाकरी ॥ केवल पद्मनाभदासजीकेलीए

*अथवा सर्वदा शास्त्रं श्रीभागवत मादरात् ।

---

* अर्थः—अथवा हमेशां श्रीमद्भागवत शास्त्रनो प्रयत्न करीने कोइपण हेतु रहित (इच्छा विना) आदरपूर्वक पाठ करवो. १ कंठे प्राण आवे तो पण श्रीमद् भागवतनो वृत्ति (उदरपोषण) ना अर्थे उपयोग न करवो, तेना अभावमां जे रीते बनी शके ते रीते निर्वाह करी लेवो. २.

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतु विवर्जितम् ॥ १ ॥
वृत्त्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः कण्ठगतैरपि ।
तदभावे यथैव स्यात्तथा निर्वाहमाचरेत् ॥ २ ॥

सो यहश्लोकसुनिकें पद्मनाभदासजीनेंसंकल्पकीयो ॥ जो आजपाछें श्रीभागवतकी वृत्तिँनाहिलेनी । भिक्षावृत्तिकरनी, वैश्यवृत्तिकरनी, फेरिकेवल अनायासप्राप्ति होयसो लेनो ॥ ओर इनकोवेटीतुलसाँ महान्भगवदीय ॥ सो श्रीमथुरानाथजिकी रसोइकीसेवा-आपकरती॥सो इनसोंछोटीवहेंनीओरहती ॥सो विवाहयोग्यभइ ॥ तव पद्मनाभदासजीकेमनमेंवडीचिंता: भइ ॥जो मेरेघरमें अन्यमार्गीयकोसंवंध न होइ ॥ जो मेरेप्राणरहेंगे॥ तो सर्वथा वेटिको संवंध न कराउंगो ॥ सो एकदीन दामोदरदासजीकेयहाँ वेष्णवमंडलीभइ ॥ सो वेष्णववहुतभेले भए ॥ तासमय पद्मनाभदासजीकेमनमेंआइ ॥ जो श्रीमहाप्रभुजीकोसेवक कोउवतावो, सो ताकोंमेरीवेटीदेउं ॥ तव भगवद्इ-

च्छासों कोइवैष्णवबोल्यो ॥ जो अमुकाको वेटाभलोवैष्णवहैं ॥ तुमारीवेटीतोवाकेलायकहैं ॥ सो वा वैष्णवकोविजातिकोखवर्गिँनाहि ॥ सो पद्मनाभदासजीनेतो केवलवैष्णवभावमें वा वैष्णवकेवेटाकोतिलककीयो ॥ फेरि तुलसाँनेंसुनि, चित्तमेंवडीचिंताभइ॥ जो लोकविरुद्धवातभइ॥ सो प्रभुराखेंतोधर्मरहें, फेरि पिताघरमेंआए ॥ सो परिक्षाकेलिए पिताकीदृढतादेखिवेकेलिए पितासोंकहो ॥ जो सगाइ फेरो॥ तवइननेंकही ॥ जो अंगूठाकाटो ॥ तवकही अंगूठाकेंसेंकाट्योजाय? तवकही जो सगाइकेसेंफेरें? सो भीतर कोअभिप्रायकहा ॥ जो प्राणजाय तोहु सगाइनफेरे॥ तव तुलसाँनेजांनी जो पिताकेभीतरधर्म दृढहैं॥ सो एकाहूलेडिगाएडिगेनँाहि॥ फेरि तुलसाँकेमामानेंआयकेंकहो ॥ जो वा वैष्णवकीजातिमें वाकोवेटिमिलेहैं ॥ सो आपआज्ञादेऊतो वाकोवासोंव्याहहेजाय॥ तव पद्मनाभदासजीनेकही जो वहुतआछो, जो वा वैष्णव-

वके दोनोंव्याह में करुंगो ॥ जो एक बेटिमेरी ओर एक वावैष्णवकीज्ञातिकीवेटी ॥ सो आपुन सुखेनसगाइकरो ॥ जों व्याह वा वैष्णवके दोऊ मेंहीकरुंगो ॥ सो मोकोंदूनो लाभप्राप्तिहोयगो ॥ सो यहवातसुनिकें मॉंसॉंचुपव्हेरह्यो ॥ सो घरकोंचल्योगयो ॥ फेरि ज्ञातिवारेझगरायकेवेठिरहे ॥ जो व्याहवावैष्णवकेसंगकर्यो ॥ सो काहूकीकछूचलीनॉंहि ॥ यह वीर्यगुणकोंप्रागटयदिखायो ॥ फेरि पद्मनाभदासजी आपके चरणारविंदकेपासअडेलमेंरहें ॥ सो श्रीसुवोधिनीजी वचनामृत आपके श्रीमुखतेंवहुतसुनें ॥ सो श्रीसुवोधिनीजी हृदयारुढहोयगई सो पद्मनाभदासजीकों सर्वमार्गको सिद्धान्त हृदयारुढव्हेगयो॥ सो श्रीमहाप्रभुजीकेहृदयरुपी व्हेगए॥ सो पद्मनाभदासजीसों कछूवातगोप्यराखीनॉंहि ॥ सो एकदीनआपप्रयागपधारे ॥ तहॉं वैष्णवकेघरमेंआपविराजे, सो वैष्णवनकोसमाजसंगहतो, रात्रमेंकथाकहिकेंआज्ञाकरी ॥ जो अडे-

लसों श्रीमहालक्ष्मीजीकों पधरायलावे एसोकोंनहे॥ तासमयरात्रवहुतगइहती ॥ सो काहुवैष्णवकेमनमें आइनाँहि॥ सो पद्मनाभदासजि वाहीसमय दंडवतकरिकेंचलिदीए ॥ सो तीरपेंजायकें देखेतो एक दसवरसकोलरिका डोंगीलीएठाडोहे ॥ तिननेपूछी जो तुम पार जाओगे ॥ तव पद्मनाभदासजिनेंकही जो तुमपारजाओगे ॥ तव पद्मनाभदासजिनेकही जो जाउंगो ॥ सो उतरिके पारगए ॥ तव फेरि वा लरिकानेकही ॥ जो फेरिआओगे ॥ तवकही ॥ जो हाँ आउंगो ॥ डोंगीराखुंगो ॥ तव अडेलमेंजायकें विनतीकरिकें श्रीमहालक्ष्मीजीकों पधरायलाए ॥ तव सवव्यवस्थाकही ॥ तव सवननेकही ॥ जो तुमनेवहुतअनुचितकार्यकीयो ॥ जो श्रीठाकुरजीकों श्रमकरवायो तव आपनेआज्ञाकरी ॥ जो कछूभयोहे सो सव मेरीइच्छासोंभयोहें ॥ इननें श्रीठाकुरजीको श्रमनाँहिकरवायीहे॥ जो श्रीठाकुरजीकोश्रमदूरकीयोहे ॥ जो श्री-

महालक्ष्मीजीकोंवियोगहतो ॥ सो आपकोंश्रमहोतो ॥ सो पद्मनाभदासजीनें संयोगकरायो ॥ परमसुखकी-सेवा करी ॥ ओर पद्मनाभदासजिकी जीजमानक्षत्राणीहती ॥ सो नित्यदर्शनमें तुलसाँकेपासआवती ओर कहेती जो पद्मनाभदासजीसों मेरीविनतीकरो ॥ सो मोकों एक संततिदेइ ॥ सो पहेले वाने कितनेकजोतसो ग्रह अन्याश्रयकीए ॥ सो बेटाभयोनाँहि ॥ फेरि काहूमहापुरुषनेंकही ॥ जो यागाममें पद्मनाभदासजी सरिखे भगवदीयहें तूँ इनकेपासजा, जो तूँ माँगेगी सोइदेइगें ॥ एसेंसुनिके याकेमनमें निश्चेंआइ ॥ सो नित्यतुलसाँद्वारा पद्मनाभदासजीसोंविनती करावे ॥ सो एतोभगवदीयहें ॥ इनकोंदयाआइगइ ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीकोस्वरुप हृदयमेंधरिकें वासोंकही, जो मेरे अंगुष्टकोचरणामृतलेजा जो तेरेबेटाहोयगो ॥ ताको नाम मथुरांदासधरियो ॥ सो पद्मनाभदासजीकीकृपातें वाकोंपुत्रभयो ॥ सो एसोएसोमाहात्म्य पद्मनाभदास-

ज़ीको कितनेकलोगननेदेख्यो ॥ तातें अतूलजशवान-
गरमेंभयो तातें महाजशगुणकोमाहात्म्यदिखायो ॥
ओरकोइपंडित पद्मनाभदासजीकेसामें अन्यमार्गीय-
आवे ॥ सो वादनाँहि करीशके, जो आवे सो वाको
जशहीगावे ॥ एकवेर श्रीमहाप्रभुजीव्रजसोंअडेलजा-
तहते ॥ मारगमें एक व्योंपारी आपकेसंगलग्यो ॥सो
आपकेसंगलग्यो, तहाँ ताँइतोवेवच्यो॥ जब आपको-
संगछूटयो, तव लूंटिगयो ॥ तातें आपकेचरणारविंद-
मेंलगिरह्योहे सो तो वचे ॥ आपकेचरणारविंदछोडे सो
या संसारमेंलूंटे सो ताहीकारणसों व्यापारीलूंटयो॥
फेरि आपनेकरुणाविचारी जो याकी कृतीतोयानेभोगी
परंतु हमारोंविरदतो एसोनही ॥ जो भूले वी वीशना-
मलेवे तोउ आप वाके पक्षपातीहेजाय ॥ एसोआप-
केविरदहे ॥ सो यहतोआपकेसंगलग्यो ॥ सो एसोवि-
रदविचारिकेंआपवाको द्रव्यदिवायकें दुःखनिवृत्तकीयो
तो भक्तभावकरिकें आपकेचरणारविंदमेंलगेहें ताको-

आपकहाफलदेतेहोंयगें ॥ सो ताहीकारणसों व्योपारीआपकोनामपूछतोपूछतोफेरिआयो ॥ तब पद्मनाभदासजीनेसुनी॥सो सुनतही मनमेंआइ जों आपभोजनकरेहे ॥ जो भोजनकरतें याकोबोलसुनिलेंइगे, तो भोजनमेंविलंबहोयगी ॥ तो मेरोधर्मजायगो ॥ सो बाहिर आयके बासों पूछी ॥ जो तेरोकीतनोद्रव्यगयोहे तब वानेंबतायो ,तितनों द्रव्य एकबनियाकीदुकानसोंदिवायदीयो ॥ तब बनियानेकही, जो ओरजित नोचहिए तितनोलेजाओ ॥ तबकही जो इतनोही चहिए ॥ ओर अपनोधर्मगँहेनेंधरिदीयो ॥ सो यातें अलौकिकधर्म अगारि लौकिकधर्मकहावातहे॥ तथापि इनबनियानने पद्मनाभदासजोको अलौकिकधर्मराख्यो ॥ तातें लौकिकधर्मगँहेनेधरिदीयो सो पद्मनाभ दासजीको बाधानाँहि जो याधर्मीकेसंबंधते अपनो लौकिकदेह गॅहेनेधरिआवते तोउ कछूबडीबातनाँहि॥ यह दासधर्महे ॥ सो धर्मीतूल्यहोहे ॥ फेरि पद्मनाभ

दासजीने एकराजाको महाभारतसुनायो ॥ सो यहाँ साक्षात्वीर्यरसप्रगटभयो ॥ फेरि जेलेतेलेपूरोकीयो ॥ फेरि राजावहुतसोद्रव्यदेवेलाग्यो ॥ सो नाँहिकरी, जितनोद्रव्य वा वनियाकोदेनोहतो तितनोलायकेचूकतोकरिदीये ॥ सो यहाँ श्रीगुणकोप्रगटदिखायो ॥ श्री जो लक्ष्मी सो आपकेचरणारविंदकी दासी सो दासीकोएसोधर्महे जो स्वामीकेसुखकोसेवाकरे ॥ सो पद्मनाभदासजीने करिदिखाइ ॥ एकसमय रामदासजि श्रीनाथजीकेभितरीया अपनेसेव्यस्वरुप पद्मनाभदासजीके माथेपधरायके श्रीनाथजीकीसेवामेंरहे ॥ पाछे केतेकदिनपाछें मुगलआयो ॥ सो कनोजमेलुँटकरि ॥ सो श्रीठाकुरजीकोलूँटमेलेगए ॥ सो वाकेपीछे सातदिनअन्नजलनाँहिलीयो डोल्योकरें ॥ पाछें याके स्त्रीकेद्वारा प्रेरणाकरायके वा मुगलकेहाथसों श्रीठाकुरजीप्राप्तिभए ॥ सो घरमेंलाय पंचामृतकराय बेठाए ॥ तव वडोउत्सवकीयो वैष्णवनकोप्रसादलीवायो

।। सो रामदासजिने श्रीजीद्वारबेठे यहबात जाँनी ॥ सो सातदिनअन्नजलनाँहिलीयो ।। सेवा सब ज्योंकी-त्यों करते रामदासजिकेंखेदभयो ।। सो बात पद्मनाभदासजीने घरबेठेजांनी ॥ सो याकोसमाधानकरिबेकेलीए पद्मनाभदासजी श्रीजीद्वारआए ॥ दोउपरसपरमिले ॥ तब रामदासजीनेकही ॥ जो भाइजीतुमकोवडोहीश्रम भयो ॥ तब पद्मनाभदासजीनेंकही जो भाइजी हमकोश्रम भयोसोतोठीकहे ।। परि तुमने सातदिनताँइ अन्नजलनाँहि लीयो, सो तुमने इतनोश्रमक्योंकीयो ।। सो तब रामदासजिनेकही ।। जो इतनेदिन मेंनें प्रभुनकीसेवाकरी ॥ सो तातें ओरबाततो हमसोंदूरिभइ ॥ परंतु इतनोसंबंधतो हमकोंविचार्यो चहिए ॥ सो श्रीठाकुरजीलुंटमेंपधारे तासों एसो वैराग्यअंगिकारकीयो ॥ सो अन्नजलकछूनाँहि लीयो। फेरि निरधारकीयो ।।जो श्रीमथुरांनाथजीको झारीभ । तो श्रीठाकुरजीप्राप्तिहेजाँयगें नातः

श्रीठाकुरजीकेसंग प्राणदेउंगो ॥ जो अपनोआत्मा प्रभुनकेसंगकोसुखविचार्यो ॥ तातें यहाँ केवल वैराग्य गुणकोप्रागत्यदिखायो ॥ सोकाहेते ॥ जो सकल अर्थ पूर्ण श्री ठाकुरजी ॥ सो तिनकोवियोग फेरि अर्थकी इच्छाचाहे ते दासनहीं ॥ तातें सकलअर्थपूर्ण श्रीप्रभु सों तामें पटगुणसंपन्न आपकेचरणारविंदकीसेवामें चारिपदारथ ओर छेगुणआयगये ।एकवेर श्रीपद्मनाभदासजी श्रीमथुरानाथजीको पधराये ॥ सकुटुंव अडेलमें आए ॥ ओर वास कीयो ॥ सो आपके वचनामृत लावण्यामृतकोपानकरते ॥ सो घरकेसकुटुंव आपकेचरणारविंदकीसेवामेंरहेते ॥ ओर इनकी स्त्रीजन श्रीअंक्काजीकीसेवामेंरहे ॥ फेरि आपनेंविचारी जो कनोजमेंइनविना भावसिथिलहोयजातहें तातें वेगि पठावे ॥ सो तातें इनकेघरमें द्रव्यकोसंकोचदिखायो ॥ सोतातें ओरसामग्री तो लों करी, सो तासो श्रीमथुरेशजी नाँहीआरोगे ॥ जो केवल

सबसमय में समर्पे ॥ फेरि एककोइवैष्णव दर्शनको आयो ॥ सो वाने भोगसरावतमें लोकदृष्टिसोंदेखे ॥ सो वाकीदृष्टिलौकिकहती ॥ सो देखिके आयकें श्रीमहाप्रभुजीसोंकही ॥ जो राज पद्मनाभदासजिकेयहाँ दर्शनकोगयो ॥ सो छोलाहीछोलादेखे॥ ओरकछू देखेनँाहि ॥ सो आपतोअंतरजामी सो जॉनीगए ॥ फेरि दूसरेदिन राजभोगकेसमय पद्मनाभदासजिकेघर आप पधारे ॥ सोतब भीतरमंदिरमेंपधारें ॥ सो देखेंतो श्री ठाकुरजीकेअगारि थारमें छोलानकोढेरीदेखी तब आपने पूछी जो पद्मनाभदासजि ए ढेरीकेसोकेसीहें ॥सो तबकही ॥ जो राज यहदारिहें, यह भातहें, यह रोटी हें, यह खीरहें, यह पूरी, साक, सँधाना,यह रायतो, सो एसें सबढेरिनके नामबताए ॥ सो सुनिके आपको हृदयभरिआयो ॥ तबआपकहे जो धन्यहे पद्मनाभदासजिकेइतनोसंकोचहे ॥ परि काहूवैष्णवकोंजताइ नॉहि ॥ फेर जानी जो श्रीमहाप्रभुजीकों इतनोश्रम

देखिकेभयो ॥ तातें अवयहाँरहेनोंउचितनाँहि ॥ सो शेठपुरुपोत्तमदासनेपत्रलिख्यो ॥ जो आपअडेलवास करो ॥ जो द्रव्यकोसंकोचमतिकरो ॥ सो यहपत्रवाँचिके पाछोजुवावलिख्यो जो तुमवडेभगवदीयहो सो आप-कों एसेंहीचहिए ॥ जो हमने एसीरीतिसोंनिर्वाहक-योनाँहि ॥ तातें एसें नइरीतिसोंनिर्वाहकछूकरावेंगेनाँ-हि ॥ फेरि मारगमेंखरचकोंवंदोवस्तकरिकें नावमेंश्री-ठाकुरजीकों पधरायकें आपसोंविदाहोयवेआए ॥ तव आपनेकही जो श्रीठाकुरजीकहाँविराजेहैं ॥ तव कही जो नावमें पधारें ॥ तवआपजाने जो अव यह रहेगो-नाँहि ॥ तव चित्तमेंदुःखतोवहुतभयो, तव आपकेचर-णारविंदमेंगिरिपरे ॥ फेरिचलें फेरिगिरिपरें फेरिचलें फेरि-गिरिपरें सो एसीदिसादेखी तवआपने आज्ञाकरी ॥ जो पद्मनाभदासजी खेदमतिकरो जो हमकनोजपधारेंगें ॥ सो तैयारीकरीराखीयो ॥ जो हम तुमसोंएकक्षनदूर-नाँहि हें तुमतोहमारो हृदयहो तातें तुम खेदमतिकरो

॥ श्रीमथुरेशजी नावमें अकेलेविराजेहें ॥ तातेंतुम वेगि सँभारकरो ॥ एसें आप बहुतधीरजबधायकें दिनकरदाससेठकों संगकरीदिए॥ सो इनकेसंगजायकें नावमें बेठायआए ॥ ओर दीनकरदासनेंअडेलकेमलहासोंकही ॥ जो इनकोंआछोरीतिसोंपोहोंचायआइयो । जो में इनामदेउंगो ॥ एसेंकहिकें पद्मनाभदासजीसों छातीसों छातीलगाय मिलिकें चलिवेलगें ॥ फेरि पद्मनाभदासजीकीछातिमें दुःखकोसमुद्रउमग्यो ॥ जो भगवान भगवदी दोउनकोवियोगभयो ॥ सो जहाँतांइ दिनकरदासजीचले, तहाँतांइतोसुधिरही ॥ जो पाछें सुधिहीनव्हेगए ॥ सो रात्रभरनाव चली ॥ पाछेंसवारोभयो ॥ तब तुलसाँने चरणारविंददाबे, ओर श्रीमहाप्रभुजीको स्मर्णकरायो तबचेतभयो ॥ तबपूछी जो अडेलकहांहे ॥ तब तुलसाँनेकही ॥ जो अडेलपासहीहे ॥ एसेंकहिके बेठकीए ॥ फेरि श्रीगंगाजीकेतीरपें गामआयो ॥ जब नावतीरपेंलगाइ ॥ तब खबरि-

भइ जो मारगमें आयगएहें ॥ एसीरीतिसोंकनोज आयगए॥ सो पहेलें एकमलहाकोंगाममें दोरायो। सो अपनी छोटी बेटिकोदुल्हा बहुतहीवैष्णवहतो॥ ताकोंखवरिकराइ॥ सो सुनतही गामकेपचाससाठि- वैष्णवनकोसंगले लेवेको सामने आए नावपासठाडे- भए॥ तव सववैष्णव पद्मनाभदासजीसोंमिले, जमा- इपांवनपर्यो ॥ पाछेंनावमें जोचीजहती सो सवउठा- यकेघरपोंहोंचायदीनी ॥ सो सववैष्णवसेवामेंसहाय- होयगए ॥ समयपरराजभोग आयगयो ॥ सवगामके वैष्णवनमें आनंदकोपुंजछायरह्यो ॥ सो काहेतें॥ जो पहेलें श्रीदामोदरदासजीकेमाथे श्रीद्वारिकांनाथजी विराजते॥ इतनेमेंश्रीमथुरांनाथजी विराजते पुरवकी- दिसामांऊ श्रीद्वारिकांनाथजीकोराजहतोसो या सम- यकी कनोजकीशोभा कछूवर्ननमेंनआवें॥ ओरवैष्ण- वनकोंसमूहवहुतहतो ॥ फेर श्रीदामोदरदासजी चर- णारविंदमेंपोहोंचे ॥तव श्रीद्वारिकांनाथजी अडेलप-

धारे ॥ सो वहदिशातो शून्यहेगइ ॥ फेरि श्री मथुरांनाथजी बहुत दिनविराजे ॥ सो उत्सवमहोत्सवमें सववैष्णव पद्मनाभदासजीकेघर दर्शनकोंआवतें॥ ओर दामोदरदासजी चरणारविंदमेंपोहोंचे ॥ पाछें श्रीमहाप्रभुजीकेदर्शन सववैष्णव अडेलमें आयकेंकरते ॥ सो वीचमें पद्मनाभदासजीकेघर उतरते ॥ओर छोटी वेटिकोदूल्हा वहुतहीवैष्णवहतो ॥ सो परदेशीवैष्णव आवे तिनकोटहलपरमप्रीतिसोंकरतो ॥ ओर पद्मनाभदासजीकीछोटीवेटीहुं परमभगवदीयहती॥सो वाके घरमेंश्रीमथुरेशजी पद्मनाभदासजीकेघरसोंपधारिकें इनकेयहाँ भावात्मकस्वरुपसों नित्यआरोगते ॥यहवात तुलसाँकेवेहेंनि वहेनेऊजानते ॥ ओरपद्मनाभदासजीको जमाइ परदेशीवैष्णवनके आयवेके लीए दोय गाडाँ ओर मनुष्य एकमजलसामनेरहेआवे ॥सो वामेंबेठायकें अपने घरकनोजमें पधरावते ॥ सो जितने दिना रहेते तितने दिना वहुतस्नेहपूर्वकसेवाकरते। फेरि

कनोजसों नावमें बेठायकें अडेलपोहोंचावते ॥ ओर खरचसबदेते ॥ एसीरीतिसों वैष्णवनकीटहलकरते ॥ एकदिन पद्मनाभदासजीकेमनमेंआइ॥ जो छोटीलालीकेघर श्रीठाकुरजी तो विराजेनहीहें ॥ जो कहा भोग धरतेहोंयगें ॥ सो आज जायकेंदेखुं ॥ एसोविचारकरिकें छोटीलालकेघरगए ॥ तहाँजायकेंदेखें तो टेरालग्योहे, भोगआयोहे ॥ तब पूछीजो बेटा कहा समयहे ॥ तब छोटीलालीनेंकही, जो समयतोआपकेयहाँहें ॥ हमतो आपकोध्यानकरिकें पेटभरिलेइहे॥ तब पद्मनाभदासजी टेरासरकाए ॥ देखेंतो घरके सेव्यस्वरुप साक्षात् छोटीलालीकेघर आरोगिरहेहें ॥ तब पद्मनाभदासजी गदगदकंठहोयकें गिरिपरे ॥ ओरकही जो बेटी तोपर एसीभारीकृपा कहाँसोंभइ ॥ तबविनती करी जो मूलकृपातोआपकीहें फेरि वैष्णवनकीटहलसों भलीबुरी श्रीठाकुरजीहमारीमानीलेहें॥सो वासमय पद्मनाभदासजीने बेटीकेघरको चारिकोर

महाप्रसाद लीयो ॥ तवकही जो! वेटी तूँ धन्य हेतूँ धन्यहे ॥ में तो जानतो जो वेटी तुलसाँपे कृपाहें ॥ परंतु तुलसाँसो अधिकी छोटीलालीपेंकृपाभइ ॥ सो यहवात एसी हें जो हरिजनकीटहलमेंरहें सो ताके हरिवसरहे तो कहा वडीवातहे ॥ तादिनसों पद्मनाभदासजी छोटीलालीके घर नित्यआवते ॥ सो तातें छोटीलालीकीवार्ता कछू लिखिवेमेआवे नाँहि ॥ सो तातें यह केवल खटगुण धर्मीप्रसंग दिखायो ॥ फेरि कछूकदिनमें पद्मनाभदासजीको वेटा चरणारविंदमें प्राप्ति भयो ॥ तव पद्मनाभदासजीनें अपनीस्त्रीको श्रीमथुरानाथजीकेअनोसरमें वेटाको पंखाकरतदिखायो ॥ तव माताको दुःखदूरभयो ॥ फेर थोरेसेदिनमें पद्मनाभदासजीकी स्त्री चरणारविदपोंहोंची ॥ तव वेटाकोवहू पारवती सेवामें अनुकूलहेगइ ॥ फेर कछूकदिनमें पद्मनाभदासजीको देह अशक्तहेगइ ॥ तव श्रीमथुरानाथजीसों विनतीकरी जो राज इच्छाहो-

... एसीदिशा हेर-
हे ॥ तब श्रीमथुरानाथजीनें भीतरसोंआज्ञाकरी॥
ो तुम सुखेनमेरो लीलामेंआवो ॥ तुमारेकुटुंबपें पा-
ती, तुलसा तथा रघुनाथदास तीनसों सेवाकराउं-
ो ॥ फेरि मेरीप्रसन्नतासों श्री महाप्रभुजीकेघरपधा-
गो ॥ जो तुमनेहमारी एसीसेवाकरिहे ताकोमें क-
तकप्रशंसाकरुं ॥ जो कहाँ तो मैं श्रीयशोदाजीके-
रसुखपायो कहाँ तुमारेघर सुख पायो ॥ फेरि अगारि
मारेकारणसों भूतलपें सेवा भोग नेग सुखरुपसों
रोगुँगो ॥ सो वासमय श्री मथुरानाथजिको ली-
ासामग्रीको दर्शनभयो ॥ तव दर्शनकरतेकरते वाही
ोलामें प्राप्त भए ॥ फेरि इनके वंशमे सेवा आछी-
तिसोंकराइ ॥ पाछेश्रीमहाप्रभुजीकेघरपधारे ॥ तव
ामकेवैष्णवनकों वडोही क्षोभ भयो ॥ सो श्रीठा-
रजीकेपधारेपीछे कनोजमें मलेच्छको उपद्रवबहुत-
यो ॥ तव लोक वैष्णव उहाँसो उठि गए ॥ सो

आसपास शहेरमें जायवसे ॥ तातें कनोजमें थोरीवस्तीरही ॥ सो पद्मनाभदासजीके चरणारविंदके प्रभावसों सवकनोजमें सुखकोप्रभावरह्यो ॥ सो एश्री महाप्रभुजीकेसेवक पद्मनाभदास एसेभगवदीय हते ॥ इनकीवार्ता दिनदिन क्षनक्षनकी एसीहे ॥ सो कहाँ ताँइलिखिए ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक पद्मनाभदासजी-कीवेटीतुलसाँवाईकी वार्ताकोभाव

तिनकेसेव्य श्रीमथुरेशजी सो तिननें परमफल देवेकों कौतिकरच्यो ॥ सो लिखेहें ॥ जो तुलसाँसवारेंजागी सो सामग्रीमेंन्हाय श्रीठाकुरजीकोंजगाय ॥ मंगलभोगधरे ॥ ताहीसमय एकवैष्णव घरआयो सो आयकें जेश्रीकृष्णकरी ॥ तुलसाँ आनंदसहितवाहिरआइ ॥ तब सन्मानकरिकें वेठाए ॥ सों मनमें अतिउत्साहभयो ॥ जो आज हमारें अचानकवैष्णवआयो ॥ सो आज वडेनकोकाँनिसों श्रीमथुरांनाथजिनें

में अपनी करी॥ सोतातें वैष्णवहमारेघरआये॥ ओर सामग्रीमें अधिकोपोंहोंची ॥ तब उत्साहमनमेंसमा-यनाँहि॥ सो राजभोगधरे, समयानुसार भोगसराय, आरतीकरि, किवाँरलगाय, दंडवत्करी बाहिरआय वैष्णवनसोंहाथ जोरिकें बीनतीकरी ॥ जो न्हाओ॥ ओर भोजनकरो॥ तब वाकेमनमें ज्ञातिव्यवहारआयो ॥ जो यहतो कनोजीयाकीवेटी हे ॥ ओर वह सरव-रियाहतो सो नाँहि करिकेंचल्योगयो॥ सो इनकी एक विनती मानीनांही ॥ सो वाकोतो जानोंभयो, सो तुलसाँतोठाडीगिरिपरी ॥ ओर हृदयसोंदुःखकेसमु-द्रउमग्यो ॥ वाहिरआय हाँनाथ ! हाँनाथ ! करिकेंपु-कारी जो हे नाथ ! मेरो कोंनसोअपराधभयो सो वैष्णव मेरे यहाँसो भुख्यो गयो ॥ ओर सखडीमहाप्रसाद गायनकोंखवायदीयो ओर आपने जलहूँ न लीयो॥ छाती भरिभरिआवे सो तुलसाँकी विवस्था कछु लि-खिवेमेंनही आवें॥ जेसेंतेसें न्हायके सेनपर्यंतपोंहोंची

श्रीठाकुरजीकोंपोढायके वाहिरआइ ॥ सेनभोगहतो सो हु गैयनकोंदेदीनो आपकछुलीयोनाँहि ॥ सो रात्रभरि भूमिमेंपरीरही ॥ आँखिनमेंनींदआवेनाँहि ॥ जो वेरवेर दुःखकरि अपनों अपराधविचारे ॥ एसेंकरत सवारो होत नेकसीआँखझूकी ॥ तव घरके श्रीमथुरेशजीनें जताइ ॥ जो तुलसाँ तुमदुःखमतिकरो सवारें यहां वैष्णवआयके महाप्रसादलेयगो ॥ सो तूं जलदीन्हायकें सामग्रीकर ॥ एसें श्रीठाकुरजीकेम... वचनसुनिकें चोंकिउठी ॥ सो सव दुःखभूलिगइ ॥ जो पहेलोउत्साह हतो तासों कोटिगुणो उत्साहभयो। सो मनमेंजानि जो प्रभुननें मैं अपनीकरी ॥ तव सव सामाननिकास्यो कही जो कालि वानें ज्ञाति व्योहार केलीए नहोलीयोहोयगो सोकहाभयो ॥ आज अन सखडीमहाप्रसाद अधिकीधरी लिवाउंगी ॥ सो मेंदछान्यो, बुराननिकास्यो, सँधानोनिकास्यो, दही, शिखरन, सिद्धिकोयो ओर सेवामेंन्हाइ ॥ अव वा वै

[illegible] कैंजताइ ॥ जो अरे मु-
[illegible] यो, जों तुलसाँने आ-
ठप्रहरभए जल पर्यंतहूं नहींलीयोहे ॥ एसोअपराध
तेनेंकीयोहें ॥ सो अब तूँ भलोचाहे तो तुलसाँकेघर-
जायकें, सखडीमहाप्रसादले ॥ मेरीआज्ञाहे ॥ ओर
अपराधक्षमाकराइओ ॥ इतनीआज्ञाकरी श्रीमथुरेश-
जीतोपधारे ॥ ओर यह वैष्णव वाहीसमयजागीपर्यो
॥ ओर अपनेमनकों वाहीसमय धिक्कारकरनलाग्यो ॥
ओर यहकहे जो कब सवारोहोय ओर कब तुलसाँको-
दर्शनकरुं ॥ सो अत्यंतदुःखहृदयमेंभरिगयो जो हाय
मेंनें बहुतहीबुरोकरी ! एसेंकरत देहकृत्यकरि घरमें-
न्हायो, तिलकमुद्राधरि, चरणामृतलेकें पाठ करिवे-
लग्यो ॥ इतनेमेंसवारोभयो ॥ सो तुरतही तुलसाँके-
घरगयो सो जायकें, हाथजोरि तुलसाँसों जेश्रीकृष्ण-
करी, तब तुलसाँसुनतहीवाहिर आइ ॥ सो वैष्णवन-
कोंदेखिकें नाचिवेलगि ॥ ओर कहवे लगी जो

कृपाकरि जो आपने मोकों अपनीजानी ॥ गइनिधि-फेरपाइ ॥ बहुत सन्मानकरि आदरसहितबेठाए ॥ सो आप सामगोप्रेमसों उत्साहसहित करवेलगी ॥ फेरि सामग्रीसोंपोहोंचिकें श्रीठाकुरजीकोंजगाय मंगलभोगधरायो, श्रृंगारधरायो ॥ राजभोगमें सखडीअनसखडी अधिकीभोगधरि ॥ बाहिरआइ, तब विनतीकरी जो भाइ न्हाओ जो अपरसतैयारहे पेहेरो ॥ तब वैष्णवन्हायो, अपरसपेहेरी ॥ तब तुलसाँनेकही जो आज वधाइबोलो ॥ तब वैष्णव वधाइगायवेलाग्यो ॥ सो तुलसाँनें राजभोगसराय, आरतीकरी, दरपनदिखायो ॥ तब श्रीठाकुरजी अतिप्रसन्नतापूर्वक अतिप्रफुल्लित दर्शनदीए ॥ सो वासमयकीशोभा कछुलिखिवेमेंआवे नाँहि ॥ फेरि दंडवत्करि किवाँरवंदकीए ॥ सो वाहिरआय पोतनाकीयो ॥ सो या वैष्णवकेपोतनामेंतो अनसखडीधरी ॥ ओर विनतीकरी ॥ जो आओभाइ पातरियें वेठो ॥ सो जायकें देखेंतो अनस-

खडीमहाप्रसादहैं ॥ तब या वैष्णवनेकही जो मैं तो सखडी लेउंगो॥ तब तुलसॉनेकही जो ज्ञातिव्यवहारहे, तुम अनसखडीलेउ ॥ तब वैष्णव वहुतरोयो ओरकही जो कालि मैंने ज्ञातिव्यवहारकीयो॥सो मोसो तुमारोअपराध वन्यो ॥ सो रात्रमें स्वप्नमें तुमारे श्रीमथुरेशजीनें मोसोआज्ञाकरी॥ जो सबारे तुलसॉकेघरजायके सखडीमहाप्रसाद लीजो॥ ओर अपराधक्षमाकरैयो ॥ एसीआज्ञाभइ ॥ यहसुनिकें तुलसॉ चक्रतहोय गइ॥ओर कही॥ जो हाय मैंने क्यो हठकीयो ॥ सो श्रीठाकुरजीको वहुतहीश्रमकरनोपड्यो ॥ जो तुमारे घरपधारे॥ जो मैं हठनाँहिकरत्ती तो प्रभुनको इतनोश्रम काहकोंहोतो ॥ तवतो वहवैष्णव वहुतही घिघायकेंरोयो ॥ ओर तुलसाँसो वारवारकहे जो मैं तुमारोअपराधीहों॥ मोसो तुमारो वडोअपराधवन्योहैं ॥सो इतमें तो तुलसाँरोवे॥ओर इतमें वह वैष्णवरोवे तव श्रीठाकुरजीसों दोउनकोंदुःखसह्यो न गयो॥ तव

श्रीठाकुरजीनें भीतर् मंदीरमेंसो आज्ञा करी॥ जो हम् तुम दोउनपें प्रसन्नहें ॥ तुम सुखेनमहाप्रसादलेऊ ॥ ए वचनामृत दोनो जनेंननेंसुनें ॥ तब बानेकही ॥ जो चुपभाइ ॥ वानें वासो कही जो चुपवाइ ॥ सो सबदुःख वाहीसमयदूरिभयो॥ तब दोउननें सखडी अनसखडी हिलिमिलिकें प्रसादलीयो ॥सो ताप्रसादकोस्वाद कछुलिखिवेमेंनहीआवे ॥ जो साक्षातुअधरामृतहिहतो ॥ फेरि महाप्रसादलेतेजाय ओर श्री महाप्रभुजीकेमारगको धन्यधन्यकहेंतेजाय॥ सो इनको परस्परसुख लिखिवेमें आवेनाँहि॥सो या मारगमेंचले अनुभव करे सोइजाने सो एसो पुष्टिमार्गकोविलासहें ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक बाई रुक्मिनी तिनकी वार्ताको भाव.

शेठपुरुषोत्तमदासकी बेटी रुक्मिनी,तिनकेसेव्य श्रीमदनमोहनजी ॥ सो साक्षात् श्रीमहाप्रभुजीको

१ आ श्रीमदनमोहनलालजी श्रीजोधपुरमा बिराजे छे

स्वरुप ॥ जो ब्रह्मचर्यस्वरुपसों शेठजीकेघरविराजे सो आपके श्रीहस्तमें पंचदिसा, यज्ञोपवीत, माला खडाऊँ चरणारविंदमें ॥ सो शेठजीकोआसक्ति श्रीमहाप्रभुजीके चरणारविंदमेंहती ॥ सो शेठने आपकोस्वरु विनतीकरकेपधराए ॥ सो साक्षात् आप शेठजीके घरमेंविराजते ताकीमहिमा कहाँताइवर्ननकरे ॥ जो महादेवजीकेभक्त शैवीब्राह्मण सो शेठजीके मुखते नामश्रवणकरते ॥ ओरहुंजीवनकों शेठजीनामदेते ॥ एसोमाहात्म्य श्रीमहाप्रभुजीनें शेठजीमें स्थापन कीयो ॥ सो वा शीवकीपुरिमें मायावादी कोइ शेठजीकेसामे झांखतोनाँहि ॥ सोवडेवडेउत्सवमें श्रीमहादेवजीशेठजीके घर दर्शनकोंआवते ॥ सो एसो श्रीमहाप्रभुजीकेसेवकको अतूलप्रताप तिनकेवेटागोपालदास ॥ सो तिननें फागकी दोयधमारि ललनाकीगायकें लीलामेंप्राप्तभए ॥ ओर वेटी रुक्मिनी सो जीननें लौकिक माया जनमसों परस करी नाँहि ॥ जो पाँव-

नचलिवेलगी तव सों पांचवरसकीवयमें श्रीठाकुर-
जीके फूलनके हार पोहती ॥ सात वरसकी भइ तव
मोतीनकेहार जडावके पोहिवेलागी ॥ सो श्रीमदन-
मोहनजीकेस्वरुपमें रसकटाक्षसों दर्शनकरती ॥ सो
श्रीमदनमोहनजी साक्षात्‌रसरुपसोंदर्शनदेते जो लौ-
किकवाञ्छनाकीगंधवी मनमें नाँही ॥ जो केवळ
भाव श्री मदनमोहनजीमें सिद्धिहेगयो ॥ सो स्वरुप
वहुतहोसुंदर जो विना आभरणहो आभरणसेंदरशन
देते ॥ ताकोभावअलौकिक ॥ श्रीमदनमोहनजीमें सि-
द्धिहेगयो ॥ सो कन्नूकल्लू शेठजोकेमनमेंज्ञानभयो ॥
सो दर्शनकेसमयठाडीरहेंतो ॥ सो नेत्र एकटक श्रीठा-
कुरजीके सांमेजाय फेरि टेराआवे तव ॥ स्वरुपवियो-
गसह्योनाँहि जाय ॥ जो नेत्रनमें आँसूनकीधाराचले ॥
सो जीननें श्रीमदनमोहनजोकों एसेंवसकीए ॥ जेसें
व्रजभक्तनकेअगारी श्रीठाकुरजीरिणिव्हेगए सो एसो
भीतरसों नाना प्रकारसों लाडलडावे ॥ सो शेपजी

हजारमुखसोंकहे तोऊ रुक्मिनीकीमहीमा कही न-जाय ॥ फेरि लौकिकसंकोचकेताँइ इनकीसगाइ ज्ञातिकेलरिकासोंभइ॥ सो शेठजीकोवहेनहती ॥ याकों लौकिकमेंचित्तवहुतहतो ॥ यानें ए सवकरिकें जब रु-क्मिनीनें सुनी ॥सो सुनीकें वा खेदसो शरीरमें ज्व-रव्हेआयो भीतरवडोखेदपायो ॥ जो हाय मेरे कोन-सोपापलग्यो ओर एसोकोनसोअपराधभयो जो नरक-केकीडासो जीवको संबंधकरायो॥ कहाकरे जोलौकिक गुरुजनपास जोरनहो जो बालक अवस्था फिर अवला ओर ज्ञातिकेपास जोरचलेनाहि॥ सो सुसरारसो वस्त्र कछू गहेंनापहेरायवेकोआयो॥सोतादिनकोमुहूर्त्तहतो ॥ सो शेठजीनें प्रसादीवस्त्र प्रसादीफुलनकीमाला शेठजोके हाथमेंदोनी ॥ जो तुम इनकोपहेरायदेउ प्रसादीरोरीसोतिलककरिदेउ॥ओर कही॥ जो आज इनकोशरीरआछो नाहिहें॥ तातें आज तुम मुहूर्त्त-साधिदेउ ॥ एसेंकहीकें उनकोसमाधानकरि

॥ सो वाइरुक्मिनीकों प्रसादीसंवंधसो वाकोचित्त-आनंदमेंरह्यो॥ फेरि एक दो दिनमें नीकीभइ ॥ सो नित्य श्रीठाकुरजीके उत्थापनकी सेवा अपनेंहाथसों-करे॥ सो शेठजीकोंवडोविचारपर्यो ॥ जो वाके वि-वाहलग्नमें श्रीठाकुरजी केसेंकार्यसिद्धिकरेंगें ॥ जो श्रीमहाप्रभुजीधनीहें ॥ जो मेरेजनमकीआपलाजरा-खेंगें ॥ जो वेटीरुक्मिनीतोमहाअलौकिकहें ॥ सो उ-नकों लौकिकसंवंधकेसेंघटे ॥ सो वा शेठजीकीवहे-नींनें व्याहकोवेगोकरी लगनसुधायो दिननिश्चेकरी-लीनां ॥ शेठजीनेंनाँहिकरी सो वहेनीनें मानीनाँहि तासमय रुक्मिनी नववरसकीहती॥ सो शेठजीनग-रशेठवाजें ॥ सो प्रतिष्ठागाममेंवडीभारी॥ सो वाहि-रनिकसे तो पालिकीमें वेठिकेंनिकसें ॥ ओर अलौ-किकमें प्रताप एसोभारो ॥ जो रात्रमें कालभैरव इ-नकेघरकीचोकीपेहेरादेंनआवे श्री महादेवजीकीआ-ज्ञासों ॥अव व्याहकेथोरेसेदिनरहें ॥ तव शेठजीने

वहेनीसोंकही ॥ जो हमारे इतनों द्रव्य खरचनोंनहीहैं ॥ जो हमारोतोद्रव्य श्रीमदनमोहनजीकोहे ॥ तातें इतनेंमेंव्याहकरनोहोय तो जा समंधीसोंकहि नातर बीजेठिकानेंसगाइकरुं ॥ तव समंधिनेकही जो हमारेकछूनाँहिचहिए जो आपकोवेटोकहाँपरीहे ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीकों व्याहकेसमयमेंपधराए, ओर विनती कीनी ॥ जो राज आप वा छोराकोंनामसुनावो ॥ तो रुक्मिनीवाकोहाथपकरे ॥ नातर रुक्मिनीहठमेंहैं सो हाथ पकरेगोनाँहि तव आपनें कृपाकरिकें वा छोराकोंनामसुनायो गरेमेंकंठीवाँधी फेरि लगनकेसमयमें वह छोकराचोरीमेंआयो ॥ सो आपकोसंवंधवाकोंभयो तोउ रुक्मिनी आँखिभरीवाकों झांखीनाँहि ॥ जो श्रीमदनमोहनजीको चित्रउतराय अपनीगोदिमेंपधरायलीयो ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीकी कृपासों श्रीमदनमोहनजीरुक्मिनीनेंदूल्हेकरीमानें ओर वाइरुक्मिनीकी लौकिकओरदृष्टिगइनाँहि ॥ एसी महा भाग्यरुप श्री

मदनमोहनजीकीपरमप्यारी फेरि विशेष द्रव्य शेठ-
जीकोवहेंनिनेंखरच्यो ॥ जो शेठजीनेतो श्री मदन-
मोहनजीकी आज्ञानुसारखरच्यो ॥ सो रुक्मिनीतो
सुसरारिकोघर एक दिन देख्यो ॥ फेरि जनमभरिदे-
ख्योनाँहि ॥ सो काहेते जो एकमहिनाभरिपीछें छोरा
श्रीमदनमोहनजीके चरणारविंदमेंपोंहोंचिगयो ॥ यह
वाततें शेठजीकीवेहेनि ओर घरकेनकोंदुःखभयो ॥ फे-
रिलौकिकसंकोचकेलीए रुक्मिनी वाहिरकीसेवा फुल-
पोहिवेकीकरिवेलागी ॥ ओर अधीकारतो श्रीमदन-
मोहनजीके स्वरुपमें सर्वागव्हेगयो ॥ तथापि लौकि-
कवैदिक मर्यादा आमन्याकेलीए जो इतनोंआवरण-
राखनोंपर्यो ॥ नातर जगतमें अपकीर्ति होय जो को-
इजीव मारगकीनींदाकरे ॥ तो वाकोविगारव्हेजाय
॥ सो तोकेलीए मर्यादा लौकिकहोराखी ॥ फेरि वाके
पतिको वरसदीनहेगयो ॥ पाछें रुक्मिनीकों नामनी-
वेदनतोहतोही ॥ सो इतनोलौकिकप्रतिवंधदूरिकीयो

।। सो केवलगुणातीतहेगइ ।। सो शेठजीको मनोरथयह जो श्री ठाकुरजीकृपाकरे तो रुक्मिनीकोसेवामेंन्हवाउं ।। सोयह इच्छा शेठजीकी जानिकें श्रीमदनमोहनजीनें शेठजीको मनोरथपूरनकीयो ॥ एकदीन राजभोगकेसमय रुक्मिनीदर्शनकोंआइ ।। सो दर्शनकरतहती ॥ सो श्रीमदनमोहनजी रुक्मिनीसामें करुणाकटाक्ष रसभरिदृष्टिसोंचितए ।। सो रुक्मिनीकोचित्त आकर्पनकरिलीयो ॥ सो दर्शन करती करतो विह्वलव्हेकें गिरिपरी, शरीरकीसुधि रहोनाँहि ॥ तव शेठजीनेंयहवातजानी ।। सो अनोसर करी तारामंगलकरी रुक्मिनीकोंगोदमेले वाहिरलेआए।।सो वाको भैया भूआ देखिकें वहुतघवराए ।। जो कहाभयो कहाभयो पंखाकरिवेलगे।।ओरजो भइ सोतोशेठजीकोंखवरिहती॥ परिशेठजीनेंजताइनाँहि॥ तव शेठजीनें सवघरकेनकों धीरजवधाइदइ जो गभराओमति जो प्रभुसवआछीकरेंगें ।। सो रुक्मिनीसरीखी-

बेटी सो माताकों धीरजआवेँनाहि सो रुक्मिनीकों छातिसोंलगावे वेरवेरमेंरोवे ॥ सो काहेते ॥ जो रुक्मिनी रुप गुण सील चातुरी एसी अलौकिकवेटी सो जाकेदर्शनसोंही जीव कृतार्थहोयजाय ॥ फेरि वा दिन घरमें महाप्रसादकाहूनें लीयोनाँहि ॥ सो रुक्मिनीकों स्वतःही व्रतव्हेगयो ॥ फेरि शेठजीने रुक्मिनीकेकानमें यहश्रवनकरायो ॥ जो वेटी गभरायमती तोकों उत्थापनसमय श्रीमदनमोहनजीके चरणपरसहोयगें ॥ सो एसीओषधी रुक्मिनीकेश्रवणद्वारापोंहोंचतेही शरीरमें चेनव्हेगयो ॥ जो मानों सँजीवनी बूँटीप्यायदीनी ॥ फेरि उत्थापनकोसमयभयो ॥ तव रुक्मिनीकोआज्ञा दीनी जो तूँ उत्थापनकीसामग्रीसिद्धिकरिफेरिउत्थापनमें शेठजीहूँन्हाए ॥ रुक्मिनीकोहून्हवाइ ॥ प्रसादी वस्त्र अपरसमें पहेराए ॥ आभरन जोईनके पहेरिवेकेहतेसो रेशममें पोए ॥ खासाअपरसमेंहते सो पहेरे ॥ ओर मातानें काजरबेंदी दीनी ॥ ओर घरमें शेठजीकीवहेंनी-

हीं सो वा समय घरमेंनाहिहती ॥ सो घरकेकिँवारबंदकरि लीए॥जो कोउ लौकिकमनुष्यआवेनाँहि॥ सो यासमय रुक्मिनीकेस्वरुपकीशोभा कछूलिखिवेमेंआवे नाँहि ॥ सो मानो साक्षात् कोंइ व्रजभक्तपधारे॥ सो एसो सौभाग्यको दर्शन भयो ॥ फेरि शेठजीनें घंटानादकरि श्रीमदनमोहनजीकोंजगाए॥ सो किँवारखोली भीतरदंडवत्करिवाहिरआय रुक्मिनीकेहाथखासाकरवाय ॥ भीतरमंदिरमेंठाडीकरी ॥ तव श्रीमहाप्रभुजीके चरणारविंदकोध्यानकीयो॥ओर आज्ञामाँगी॥ सो इतनो स्मरणकरतेंही श्रीमदनमोहनजीनें चरणारविंदलंवोकीयो सो रुक्मिनीकेउरपर चरणारविंदजायलग्यो ॥ सो यह लीलाकेदर्शन शेठजीकों भए ॥ तव रुक्मिनीनें दोउचरणारविंद अपने उरसोंलगायलीए॥ सो चरणसंबंधहोतेही रुक्मिनीकेसर्वांगमें अलौकिकसामर्थहोयगइ ॥ सो कछुलिखिवेलायकवस्तुनहीं हे ॥ जो यहवात अनुभवीवेध्यहें॥ सो एसो श्रीमहाप्रभुजीको

अलौकिकरसरुप जागतोमारगहैं ॥ तब श्रीठाकुरजीनें त्रिविधितापरुक्मिनीकेदूरिकरिकैं चरणारविंदमें खेंचि लीनी ॥ शेठजीको दर्शनकरतेकरते नेत्रनमेंसों चोधारावहिवेलागी ॥ सो गदगदकंठहोय रोमाँचहेगए ॥ फेरि उत्थापनभोग रुक्मिनीनें अपनेहाथसोंआरोगाए । फेरि आज्ञाभइ ॥ जो श्रीमदनमोहनलालकीरसोइ रुक्मिनीकरेगी । सो तादीनसोंरसोइ रुक्मिनीकरिवेलागो ॥ सो अपने हाथसोंरसोइवीनें,हाथसोंपीसे ओर अपनेहाथसों सिद्धिकरिके भोगधरिवेलगी ॥ सो रुक्मिनीकेहाथकी एसीसामग्रीआरोगे सो साक्षात् अधरामृतस्वादहोइ ॥ सो नित्य नइनइसामग्रीभोगधरे वैष्णवनकोलिवावे ॥ एसो रुक्मिनीकोस्नेह सो जा दिनसोंरुक्मिनीकोचरणपरसभए ॥ तादिनसों रुक्मिनी खाटविछायकेंसोइनॅाहि ॥ सोरात्रमें रुक्मिनी रात्रभरिसेवाकरती ॥ सो श्रीमदनमोहनलालसोंसह्यो नँाहिजातो ॥ सो कहेते ॥ जो तूं मेरी वहुतसेवाकरेहै

॥ सो अव तो नेक सोजा॥सो आपुकोअज्ञासों घंटा डेढ घंटाचटाइयेंसोवे ॥ फेरि जागीफेरिसेवाकरे ॥सो एसीसेवा कोइआजकालिमें करिसकेनाँहिएसेंश्रीमदनमोहनलालकों लाडलडायकें रीझाए ॥ एकबेरकार्तिककोमहिना आयो ॥ सो शेठजीसोंकही ॥ जो बाबाजी में कार्तिकन्हाउंगी ॥सोइतनोंसामानमोकों अधिकीमेंलिवायदेउ ॥ खांड, बूरा, मेदा, घी, नित्यमें दही, दूध, साक सालन ॥ ओर नित्य रात्रमें तीनवजेंन्हाय सामग्री करी भोगधरे वैष्णवकोंलिवावें ॥ सो परमस्नेहसोंलिवावे॥ यारीतिसों कार्तिकन्हावे ॥ सो एकदिन शेठजीनेपूछी, जो तूँ कार्तिकन्हायवेकहेती ॥ सो कोनसमयकार्तिकन्हायहें ॥ जो मेंने कार्तिकन्हाती देखीनाँहि ॥ तब रुक्मिनीनेंकही ॥जो बावा अपनें ओर कार्तिककहाहे ॥ जो सवारेउठि नानाप्रकारकीसामग्री करी प्रभुनकोंआरोगाय ॥ वैष्णवनकोंलिवावनो ॥ सो यह कार्तिकहें॥ तब शेठ-

जीसुनिकें वहुतप्रसन्नभए ॥ हृदयसीतलभयो॥ एसी रीतिसों कार्तिकमगसिरओरमाघन्हावती ॥ सो शेठ-जीचरणारविंदमेंपोहोंचे ॥ तापाछें गोपालदासकी देहअशक्तिभइ ॥ तव दोयललनाकीधमार सेवाके वि-रहमेंगाए॥ पहेलेललनामेंतोछेलीतुकमेंलिख्योहें॥श्री-मदनमोहनके वारने वलिवलिदास गोपालललना" ॥ ओर दूसरे ललनाकी छेलीतूकमेंयहगायो॥ "गो-पालदास प्रभुलाल रंगीलो हँसिलीनी उरलायलल-ना" यह कीर्तन गायकें साक्षात् श्रीमदनमोहनला-लकोलीलामेंप्राप्तिभए ॥ तापाछेंगोपालदासकीवहु रुक्मिनीकी सहायतामेंरही ॥ सो एसीसेवामेंरसवस भइ ॥ सो घरकेवाहिर चोतराहूदेख्योनाँहि ॥ श्रीगं-गान्हायवे जायसकेंनाँहि ॥ इनकेज्ञातिकेलोग चवा-ऊकरिवेलागे ॥ तव एकदीन रुक्मिनीकोमाँमा सम-झायवेकोंआयो ॥ जो वाइ तूँ गंगाजीनहींजायहें ॥ सो यहाँ ज्ञातिकेलोग वहुतचवाऊकरेहें ॥ एसोकरनो

नाँहि ॥ जो समयपायकें श्रीगंगाजीन्हायवेजानों ॥ सो वाकोतो कहेनोभयो ॥ सो वाहीसमय श्रीठाकुरजीकेअगारि चोकमें श्रीगंगाजीश्रीयमुनाजी श्रीसरस्वतीजी तीन्योनकीधारा वहिवेलगी ॥ सो मैंमां दर्शनकरिकें चक्रतहोयगयो ॥ ओर श्रीमहादेवजीको भीतरदर्शनकरतेदेखे ॥ सो यह चक्रतहोयरह्यो ॥ पाछें रुक्मिनीकेपाँवनपर्यो ॥ तवकही जो मेंनें तेरोस्वरुपज्ञान्योनांहि ॥ आजपाछें जो कोऊ तेरो चवाऊकरेगो ताकोउत्तरमेंकरुंगो ॥ सो एकसमय सूर्य ग्रहणपर्यो ॥ तव श्रीगुसाँइजी मणिकर्णिकापेंअडेलतेंपधारे ॥ सो यह सुनीकें रुक्मिनी आपकेदर्शनकोंआइ ॥ तव आप वहुतप्रसन्नभए ओर आज्ञाकरी जो रुक्मिनी तूँ केतेकदिनमें श्रीगंगाजीस्नानकरनआइ ॥ तव रुक्मिनीने कही ॥ जो राज चोवीसवरसमेंआइहों ॥ जोराजकों पधारेजानीकें ॥ यहसुनीकें आपकोहृदयभरिआयो ॥ ओर आज्ञाकरी ॥ जो इनसों श्रीठाकुरजी अरण

केसैंहोंयगे ॥ फेरि आज्ञाकरी ॥ जो कवी श्रीठाकुर-
जीअनुभवजतावेहैं ॥ तव विनतीकरी ॥ जो राज
नींदभरि सोवेहैं पेट भरि खातहैं ॥ ओरश्रीआचार्य-
जीकेग्रंथदेखेहैं ॥ सो अगारिवाततो आपकृपाकरिदेऊ
तो जीवजाने ॥ तव एसेंसुनिकें आपवहुतप्रसन्नभए॥
ओरकह्यो ॥ जो एसें भगवदीय अपनोंस्वरुपछिपावेहैं
फेरि कविकवि श्रीगुसाँइजी विनाबुलाए रुक्मिनीको
देखिवेकों रुक्मिनीकेघरपधारते ॥ सो रुक्मिनी वहुत
भावभक्तिसोंसेवाकरति ॥ सो रुक्मिनीकोंदेखिकें आ-
पवहुत प्रसन्नभए॥ ओरआज्ञाकरते॥ जो कहाकरें जो
गयेविनाचले नाँहि जो मनतोएसोकेरेहे ॥ जो रात्र-
दिना रुक्मिनीकेपास रहे ॥ रुक्मिनीकेसाथे तीन्यों-
सेवाविराजतो ॥ सो तीन्योसेवा अतोस्नेहसोंकरती !
जो भगवद्सेवा, गुरुसेवा, वैष्णवकीसेवा॥जो वैष्णव
रुक्मिनीकेघरआवे ॥ सो तासमय रुक्मिनीरोंमरोंमप्र-
फलितहोयजाय हृदयमेंआनंद समावेनाँहि ॥ से

वैष्णवविनतीकरते जो रुक्मिनीवाइ तुमहमकोंकछू-
सेवावतावो ॥ तव रुक्मिनीकहेती जो वावा तुमारी-
तोयहीसेवाहैं जो तुम हमारेघरनित्यपधारो ओर दर्शन
देऊ जो तुमारीयही सेवाहे ॥ सो एसें सेवाकरत रु-
क्मिनीकीदेहअशक्तभइ ॥ सो श्रीमदनमोहनलालके
चरणारविंदमेंप्रासिभइ ॥ पाछे कछूकदीन गोपालदा-
सकीवहुनेसेवाकरी तापाछें वाकीदेहअशक्तभइ तव
श्रीठाकुरजी श्रीगुसाँइजीकेघरपधारे ॥ फेरि काहूने-
कही जो रुक्मिनीने गंगापाइ॥ सो सुनीके रोमांचहो-
यआए ॥ ओर आज्ञाकरी ॥ जो गंगानेरुक्मिनीपाइ
॥ सो एसेंभगवदीयकेसंगतें श्रीगंगाजी परमपुनीत-
होनहें ॥ सो जगतकोपावनतीरथकरे ओर तीरथकों
पावनभगवदीयकरे एसो भगवदीयकोविलासहे। फेरि
रुक्मिनीचरणारविंदमेंपोंहोंची ॥ तापाछेंश्रीठाकुरजी
पधारे ॥ सोतव गामके वैष्णवनकों वडो सोचभयो।
तव श्रीठाकुरजीपधारेपीछें सववैष्णवदर्शनकोंआए ॥

सो देखिकेंवडोविरहभयो ॥ सो उनमें कोउताद्रशीकं एसो दर्शन भयो ॥ जो शेठजोकेघरमें साक्षात्श्रीमहाप्रभुजी विराजेहें ॥ ओर रुक्मिनीआदिसेवाकरिरहें ॥ एसो दर्शनभयो सो तादीनसों बेठक आपकीप्रसिद्धिभइ ॥ ओर शेठजीकीवहेनिकेवंशमेंरहें ॥ सो नित्यसेवामेंपोहोंचते ॥ ओर सब वैष्णवमिलिकें मिलापकरते ॥ वासमय सोंधेकीअत्यंतसुगंधआवती ॥ संसवचक्रतेंहोयआवतें ॥ तातें शेठजीकेघरमेंआपबेठ

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक रजोवाई क्षत्राणी तिनकी वार्ताको भाव

सो रजोवाइकोघर श्रीअंकाजीकेपिता जेकिसनजी जो आपकेसुसर तिनकेवाडेमें इनकोघरहतो ॥ ओर श्रीअंकाजिकें ओर रजोकेंपरस्परस्नेहवहुतहतो ॥ सो दोउश्रीगंगाजीन्हायवेनित्यजाय ॥ सो रजोनित्यफूलकिडलियाँ ओरभोग ओररोरी ए सवलेंकेंआवे सो श्रीअंकाजीकेश्रीहस्तसों श्रीगंगाजीको पुजनकरावे ॥ सो श्रीगंगाजीसोंप्रार्थनाकरे जो हे श्रीगंगे ! हमकों अलौकिकश्रीपूर्णपूरुषोत्तमपतिदेउ ॥ सो एसेंअंकाजिनित्य न्हायवेकोंआवे॥ तव पूजन प्रार्थनाकरे ॥ ओर रजोवाइएसीप्रार्थनाकरें जो जहाँश्रीअंकाजिकोंकृपा होइ वा चरणारविंदकिरज हमकों प्राप्तिहोय ॥ एसें नित्यदोउजनीकरे ॥ सो काहूकोखवरिनहीं ॥ रजोको पिता द्रव्यसंपन्नवहुतहतो ॥ ओर एकहीवाकेवेटीभइ ॥ सो पहेलेंरजोकेपिताकेकोइपुत्रपुत्रीभयीनाँहि ॥ ओर

रजोकी माताकेमनमेंबडोदुःखरहे ॥ ओर रजोकेपिताकें श्रीगंगाजी कोइष्टहतो ॥ सो गंगासप्तमीकेदिन श्रीगंगाजीकोउत्सवभारी मानतो ॥ ओर श्रीगंगाजीमें दूधबहुतपधरावतो ॥ भोग बहुतधरावतो ॥जो ब्राह्मणनकीकन्याकोपूजनकरतो ॥ तोऊकछूसंततिभइनाँहि ॥ जब साठवरसकी वयभइ ॥ तव मनमेंआइ जो यह द्रव्य कोंनकामकोहैं॥जो अपनेअगारी सबब्राह्मणनकों पुन्यकरिदेउंगो॥एसो निरधार कीयो ॥ फेरि वा रात्रको सोरहशृंगारसहित रजोकेपिताकों श्रीगंगाजीने दर्शनदीए ॥ जो कछूद्रव्यखरच पुन्यमतिकरियो ॥ तुमारे थोरेसेदिनमेंकन्याहोयगी ॥ सो व्रजभक्तनकोरजरुप साक्षात् आधिदैविकप्रगटहोयगी ॥ सो यहआज्ञाकरिकें श्रीगंगाजीतोपधारे ॥ फेरि थोरेसेदिनमें श्रीगंगाजीकोकृपासें पुत्रीभइ ॥ याकोनाम वाही प्रभावसों रजोधर्यो ॥ सो साक्षात् वही व्रजभक्तनकोरजरुपप्रगटभइ ॥तातें याकोप्रभुवियोगकेसेंसहे ॥

तातें आधिदैविक श्रीमहालक्ष्मीजीको प्रागट्य इन-
केसंगही भयो ॥ सो दोउनकोस्नेहसंबंध फलप्राप्ति-
एकहीभयो॥ जो संगहीखेले संगहीरात्रदीनरहेआवे॥
सो रजो श्रीअंक्काजीकीसेवामेंबहुतहीरहें ॥ फेरि या-
केपितानेविवाहको विचारकीयो ॥ सो ज्ञातिवारे र-
जोकोस्वरुप गुण देखिकेसब पोछेंपरे ॥ ओर माता-
पिताकेमनमें यह जो यह साक्षात्‌रजोहे सो इनकों-
पतिएसोहीमिले तोसगाइसंबंधकरे॥ सो बडोहीदुःख-
रह्योआवे ॥ ओर रजोतो नित्यश्रीअंक्काजीकेघरहींर-
हीआवे ॥ ओर घरमेंसो वस्त्र सामग्री नौत्तननौत्तन
श्रीअंक्काजीकोंअर्पणकरे ॥ तब रजोकेपितानें श्रीअं-
क्काजीको स्वरुपदेखिकें कह्यो जो यहकन्या महाअ-
लौकिकस्वरुपहें॥ सो या कन्याकीकृपासों मेरीबेटी-
कोभाग्यसिद्धिहोयतोहोय॥ सो एकदिन रजोकेपिता
जेकिसनभटजीकेपासगए॥ प्रणामकरी ॥ विनतीकरी
जो आपकीपुत्री श्री महालक्ष्मीजी अलौकिकस्वरुप-

कोअवतारहैं ॥ ओर हमारी कन्याको ओर आपकी-
कन्याको परस्परस्नेहवहुतहैं सो आपनें श्रीमहालक्ष्मी-
जीकेसंबंधको कहाविचारकीयोहे ॥ तब यह सुनिकें
भट्टजीकेनेत्रनमेंसों जलप्रवाहवहिवेलाग्यो ॥ ओर क-
ही जो मेरीलाज श्रीगंगाजीराखेगें तो में यालायक-
पतिसंवंधकरुंगो ॥ नहींतो लौकिकजीवसंवंधतो मे-
रीकन्याको सर्वथा न कराउंगो ॥ वहुतजोअत्यंतलोक-
विग्रहभयोतो अपनीदेह श्रीगंगाजीमेंप्रवेशकरिदेउंगो
॥ यह सुनिकें रजोकेपितानेंकही ॥ जो अवतो तुमारी
हमारी लाज श्रीगंगाजीराखेतोरहे ॥ जो मेंनेतो ए-
सोहीप्रमाणकीयोहे ॥ जो रजोवेटीको जीवसंवंध न-
कराउंगो ॥ सोप्रभुननें इनदोउनकोमनोरथ पूरणक-
रिवेकेलिए आप श्री अंक्काजीको अँगिकारकीयो॥ सो
श्रीअंक्काजीकेव्याहमें रजोकेपितानें वहुत द्रव्यअर्पण-
कीयो ॥ एसेंमानी जो मेरीयेहीवेटीहे ॥ जेकिसनजी-
सों रजोकेपितानेकही जो एसीरीतिसोंविवाह मति-

माथें धरिकें रजोकेपिता ज्ञातिमेंढुंढनलागे ॥ सो कोइगरीव क्षत्रीनिर्धनहतो वाकोलरिकाहतो ॥ सो आछोदेख्यो ॥ वासोंप्रोहितकेहाथकहेवाइ जो तुम श्रीमहाप्रभुजीके शरणहोयजाओ तो तुमारेवेटाकों हमअपनीलरिकीदेइ ॥ यहसुनिकें बहुतहीहरखमानभयो, जो एसें वडेघरकीवेटीहमकोंमिलेहैं ॥ सो वे सकुटुंव श्रीमहाप्रभुजीकीशरणआए ॥ सो आपनें वाकेबेटाकोनामनिवेदनकरायो॥फेरिथोरेसेदिनमें वा लरिकासों रजोकोसंवंधभयो ॥ तव आपकी कृपासों वा लरिकाकी दिव्यदृष्टिहेगइ ॥तव रजोकोंदेखिकें मनमेंकही ॥ जो यहतोकोइ जगतकी स्त्रीनमेंकीतोनाँहिहे याको रुपरंग तेज जगत्सोंन्यारोहैं॥सो मेंतो तासों लौकिकसंवंधमानुगोंनाँहि ॥ जो इनकी कृपासों मेरीहूंमुक्तिहोयगी एसोज्ञान वा लरिकाकोंभयो ॥ यहवात लरिकानेकाहूकों अपनेघरमेंजताइनाँहि ॥ ओर नित्य श्रीमहाप्रभुजीकेदर्शनकोंजाय चरणपरसकरे ॥ फेरि

आपउहाँसोविजयकीए॥ तव श्रीअंकाजीनें रजोद्वारा श्री महाप्रभुजीसोंविनतीकराइ जो हमकों कहाआज्ञा हे ॥ जो हम आपविनाकेसेंरहेंगे ॥ तव आपने आज्ञा करी ॥ जो शेठपुरुषोत्तमदासकेघरमें मेरोस्वरुपविराजे हें ॥ उहाँ नित्यपधारियों ॥ ओर न्हायकेचरणपरसकरिकें घरमेंआयके भोजनकरियो ॥ सो अंकाजी आपकीआज्ञाप्रमान नित्यशेठजीकेघरपधारें, तव शेठजी वडे भावभक्तिसों अपनें घर पधरावे उहाँ आप भीतर न्हाय चरणपरस करि कछू भोग धरि आरोगें ॥ ओर रजो नित्य श्रीमहालक्ष्मीजीके संग शेठजीके घर जाय ॥ सो रजोको हूं आपके साक्षात्‌दर्शनहोय॥ फेरि कछूकदिनमें श्रीमहाप्रभुजी काशीपधारे॥ सो श्रीमहालक्ष्मीजीकों स्वग्रहमें अँगिकार कीयो ॥ श्रीमहालक्ष्मीजीके पितानें जो घरमेंहतो सो सव आपकों अर्पणकरिदियो ॥ ओर घरमें पंचायतनपूजाहती सोऊ आपकेआगेंलायधरी॥ वामें श्रीगोकुलनाथजीको स्व-

रुपहतो ॥ वहस्वरुप श्रीमहाप्रभुजीकोहो ॥ सो केवल श्रीअंकाजीकोपतिव्रतराखिवेकेलीए पहेलेही भट्टजीके घरमेंविराजतेहते ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीने श्रीअंकाजी-कोअँगिकारकर्यो ॥ पाछें वहस्वरुप श्रीअंकाजीकेसंग-पधरायलाए ॥ ओर चारि मर्यादाव्युहस्वरुपहते सो मर्यादारुपश्रीगंगाजीमेंपधारे॥ सो स्वरुप जहाँसोआये तहाँहोलीनव्हेगए ॥ पाछें श्रीमहाप्रभुजीनें अडेलमें-दृढवासकीयो ॥ सो श्रीमहाप्रभुजी श्रीमहालक्ष्मीजी-सों परमरमणसुखकरतेभए ॥ फेरि आपकेसुसर ओर-सास भटजी भव्यानीजी सब आपकी कृपासें वेगिही चरणारविंदमेंप्राप्तभए ॥ फेरि रजोवाइकों वडोविरह-भयो॥जो हे नाथ! अब आपनेमेरीकहाविचारीहे! एसी जो आपनेंविचारीहोयगी तो में या देहकोत्यागकरुंगी ॥ देहराखुंगीनाँहि ॥ देहराखके कहा करुं ॥ जो एसी प्रतिज्ञाकरी ॥ सो श्रीमहाप्रभुजी आप अपनीवस्तुको केसेंत्यागकरें ॥ सो आपको वाकों ब्रह्ममुहूर्त्तके समय

साक्षात्दर्शनभयो ॥ओर आज्ञाकरी॥ जो तूं चिंतामतिकरे ॥ मेरेचरणारविंदपास सदारहेगी॥ ओर तेरे सकलमनोरथसिद्धिकरुंगो॥ इतनीकहिके आपपधारे ॥ फेरि याको सचेतभयो ॥ सो अतिहिहृदयरोमाँच प्रेमाँचहोयआयो ॥ ओर भगवानकीप्रतिज्ञावीएसी हें " एयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहं " यहआज्ञा रजोकेप्रसंगमेंप्रसिद्धदिखाइ सो कृपापात्रहोंयगे तोयहाँ लौकिकसंबंधकी गंधवीन लावेंगें ॥ ओर आधुनिकजीवसाधारणकोंतो यहभावदुराराध्यहें ॥ एसो आपको सर्वोत्तमजिमेंनामहें ॥ फेरि रजोकेपितानेंहुंएसोविचारकियो ॥ जो श्रीमहाप्रभुजिकेचरणारविंदमें रजोवसेतोमेरोजनमसुफलहें ॥ सो भगवद्इच्छासो सवहरिशरणभए ॥ तव रजोकोपिता रजोकोलेकें अडेलमें श्रीमहाप्रभुजिके चरणारविंदमेंवासकियो सो अपनोजन्म महाकृत्यकृत्यमान्यो ॥ सो फेरि अडेलमेंवसे ॥ फेरि श्रीमहाप्रभुजिनेकृपा करिकें श्रीवालकृष्णजिको-

स्वरुप रजोकेपिताकेमाथेपधराय दियो ॥ ओरकहि ॥ जो श्रीवालकृष्णजिकिसेवाकरो ॥ सो स्वरुपसाक्षात् श्रीइलंमागारजिके उच्छंगकोस्वरुपहते॥ सोइभावसों जायविराजे ॥ तवकछूकदिनतो रजोंकेमातापिताने सेवाकरि, फेरि वे हरिचरणारविंदमेंप्रातभए ॥ तव रजोनें धीरजधरिकें दोऊ स्वरुपनकि सेवाकरि ॥ सो श्रीमहाप्रभुजि ओर श्रीवालकृष्णजि दोउनकों तनसों चित्तसों लाडलडावे ॥ जितनों घरमें उत्सवसामग्री श्रीवालकृष्णजिकोकरे सो तितनोंहि श्रीमहाप्रभुजिको वस्त्रआभूपन सामग्रिआरोगावे ॥ कछू रजोके महाभाग्यकिप्रशंसा लिखिवेमेंआवेनाँहि ॥ ओर अडेलमें एकक्षत्राणिज्ञातिकि हती ॥ सो अपनेघरमें सेवामेंन्हवाइ सो सहायतामेंरहि ॥ सो रजोसवारेंतीनवजेन्हायकें श्रीमहाप्रभुजीकेघरमेंजाति ॥ सो श्री महालक्ष्मीजिकि टहलखवासिकरति आपके पेडे में जाती, जगावती ॥ जो आपकोउवटनाकरती, न्हवा-

वतो वेंनीगूँथती॥सो सबशृंगार श्रीमहालक्ष्मीजीको रजोवाइ करती ॥ सो रात्रीमें रात्रको शृंगारधरायकें सुखशैयामें श्री महालक्ष्मीजीकों पधरावती ॥ सो युगलस्वरुपकेदर्शनकरती, पंखाकरती ॥ सोरजोकेभाग्यकोकछुलिखिवेमेंनहींआवे केवलरसमार्गी रजोभक्तहती ॥ सो मर्यादाप्रमाणजिननें छीयोनाँहि ॥ वालपनेंसोंही श्रीमहालक्ष्मीजीकीटहलकरी ॥ फेरि अडेलमें युगलस्वरुपकोटहलकरी ॥ सो श्रीगोपीनाथजी श्रीगुंसाइजीके प्रागट्यसमें श्रीमहालक्ष्मीजीके पास रजोहती ॥सो जेसेंही श्रीरुक्मिनीवहुजीकेपास कृष्णदासीखवासिनीरही ॥ सो श्रीगिरिधरजी श्री गोकुलनाथजीके प्रागट्यसमय कृष्णदासीटहलमेंरही॥ सो ताहूमें रजोके भाग्यकीकछूकहीनजाय ॥ श्रीमहाप्रभुजीसों श्रीमहालक्ष्मीजीने वीनतीकरिके सेनभोगकोपकवान रजोकेहाथसोंआरोगायो॥ तादिनसों सेनभोगकोपकवान रजो अपनें घरसोंसिद्धिकरिकें श्री-

महाप्रभुजीकोंआरोगावती॥ रजो नित्यनयी सामग्री आरोगावे॥ओर पंखा श्रीमहालक्ष्मीजीकरे॥एसो सुख रजोको प्राप्तिभयो॥ओर श्रीमहाप्रभुजीकेश्रीअंगकी- टहल दामोदरदासजीकरे ॥ सो एसैंही रजो श्रीम- हालक्ष्मीजीके श्रीअंगकोटहलसबकरें॥सो एसैंकरते, जो मानों दोउ एकहीधामसोंपधारे ॥ सो बाहीधा- ममेंआयकें सेवामें फेरि तत्परहोयगए ॥ ओर दामो- दरदासजी रजोकेपासजायकें श्रीमहाप्रभुजीकेस्वरुप संबंधी बातकरते ॥ सो एकदीन श्रीमहाप्रभुजीकेरस संबंधीवार्ताकरिबेलागे॥ सो वार्ता करतेकरते दोउजनें मूर्छितहोयगए सो सबारेभएकीसुधिनरही॥ सो घरमें बाईक्षत्राणीरहेंती॥ बानें बिनतीकरिकें सावधानकीए एसीरीतिसों दामोदरदासको ओर रजोबाइको परस्पर स्नेहहतो ॥ओर श्रीअंकाजी प्रयागआदिजहाँपधारें॥ तहाँ रजोबाइ आपकेसंगहीरहें ॥ एसी श्रीमहालक्ष्मी- जीकृपारजोबाइपेंहती ॥ एकदिना अडेलमें लक्ष्मन-

भट्टजीकोश्राद्ध आयो ॥ सो ब्राह्मणभोजनकोबुलाए वामें घीकछूथोरो हतो ॥ सो घीकोतोकछूआपकेयहॉं अटकी नहती ॥ परंतु केवलभक्तिभावपरिक्षार्थ रजो-केइहॉमनुष्य पठायो ॥ जेसेंव्रजभक्तनको रासपंचा-ध्याइमेघर जायवेकी आज्ञा दीनी॥ तेसेही भावसो-रजोकोआज्ञाकरी ॥ सो तीन वेर मनुष्यगयो ॥ सो तीन्योवेरनॉहिकरी ताकोकारणयह जो पहेलेवेदआज्ञा फेरि लोकआज्ञा, फेरि कूलआज्ञा ॥ सो तीनवेरमें रजोनें तीन्योही आज्ञा उलंघनकरिदीनी ॥ सोरजो जो तीन्योआज्ञामानीलेती तो सांजसमें श्रीमहाप्र-भुजी तीन्योहीआज्ञा आदरकरते॥सो वाहीकारणसो रजोनेंतीन्योआज्ञानॉहिमानी॥ताहीते भगवद्वाक्यहें " येयथामां प्रपद्यंते तांस्तथैवभजाम्यहं " सो वाक्य आरोगिवेकेसमय रजोकोमनोरथकीयो॥ फेरि वादिन रजोपकवानसिद्धिकरिकें ॥ आरोगायवेकेलीयें आपके-पासगइ ॥ सो जायकेंदर्शनकीये॥ सो आपनेंदृष्टिचु-

राइ ॥ ओर हास्यअवलोकन करिकें रजोकेसामनेचि- तयेनाँहि ॥ तव रजोकों वडोही क्लेशभयो ॥ तव घडीभरताँइतोमनरोक्यो ॥ फेरि मन रुक्योनाँहि ॥ मनमेंदुःखकोसमुद्रउमग्यो ॥ सो घिघायकें आपकेसा- मेंगिरिपरी ॥ सो मृतकतूल्यव्हेगइ ॥ सो श्रीअंक्काजी- पासविराजिरहेहते ॥ सो झट याकों छातिसोंलगाय- लीनो ॥ सो श्री अंक्काजीकोपरमप्यारि सो श्रीअंक्का- जीइनकों देखिकें आपकोहृदयभरिआयो ॥ नेत्रनमेंसों श्रीअंक्काजीकेप्रभाववहिवेलाग्यो॥ ओर श्रीअंक्काजीनें श्रीमहाप्रभुजीके चरणारविंदपकरिलिए ॥ ओर माँथो- चरणारविंदमेंधरिलियो ॥ सो नेत्रनमेंसों एसोजल- वह्यो सो आपकेचरण ओर गादि सवभिजिगइ ॥ फेरि आपकरुणावान् सो श्रीअंक्काजीको आपनेंचिवुकगहि उठाय वेठाए ॥ तव श्रीअंक्काजीनें, अचरापसारिके- माँग्यो जो रजोकेप्राणकोदानमोकोंकरो ॥ जो अव- मोकों रजोकोंदेखिकें सहेननाँहिहें ॥ फेरि श्रीअंक्का-

जिकों श्रीमहाप्रभुजिनें धिरजवधायकेंकहि ॥ जो कायरमतिहोऊ ॥ जो प्रभुसवआछीकरेंगें ॥ सो श्रीअंक्काजिकों धिरजआवेंनाँहि ॥ जो रजोकोंवेरवेर छातिसोंलगावे ॥ हिलगि वधिगइ ॥ फेरि श्रीअंक्काजिनें गाढेभूजानसों हृदयसोंहृदय लगायो ॥ सोकाहेतें ॥ जो श्रीअंकाजिकेहृदयमें श्रीमहाप्रभुजिविराजेहें ॥ सो वास्वरुपकोसंवंधरजोकोंभयो ॥ तव रजोकोंचेतभयो ॥ तव श्रीअंक्काजिनेंरजोकेआँसुपोछें सारिसंभारिवेठाइ ओरकहि ॥ जो रजो यहककहाभयो ॥ तव रजोसावधा नंहोयकें श्रीमहाप्रभुजीसों प्रार्थनाकरतिभइ ॥ जो राज आजमेरोकानसोमहत्‌अपराधहें सो आप करुणादृष्टिभरि मेरेसामेंचितयनांहि ॥ हे प्राणनाथ ! हमारेतो यह लोक परलोकमें आपहिजिवनहो तव आप आज्ञाकरतेभए ॥ जो आजहमनें घृतकेलिए मनुष्यपठाए ॥ जो लक्ष्मनभट्टजिकेश्राद्धकेलिये ॥ सो तेनें क्योंनहीदियो ॥ तव विनतिकरि ॥ जो नाथ मेंनेंतोलक्ष्मणभ-

इजिके संबंधसो संबंधराख्यो नाँहि ॥ मेरें घरमें जो वस्तुहे सो राजके उपयोगि हें ॥ आज्ञाहोयतो त्रण पर्यन्त सबवस्तुलायकें अर्पणकरुं ॥ सो माँगनों ओर मंगावनों जहाँ परघरगिने तो माँगनोचाहिए ॥ जो घरकि वस्तुमेंमाँगनोमँगावनों कहा ॥ इच्छाहोय तब अँगिकारकरें ॥ यहदेहकोंनकि यहघरकोंनको एसे आपदुरावोहों ॥ जो हमकेंसंजिवे फेरि आपमुसिकायकें रजोकेसामनेंदेखिवेलागे ॥ तबविनतिकरि ॥ जो राज आरोगिए ॥ तबआज्ञाकरि ॥ जो श्राद्धकेदिना दोयबेर नहिआरोगे ॥ जो जहाँस्नेहभाव भक्तिसंबंधिहोइ ॥ सो तहाँतो सर्वात्मनाआरोगिचाहिए ॥ नहितो भक्तिपक्षकेवचन मिथ्याहोयजायगें ॥ जो राज जीवनदानदेयगें तो जिवेगें ॥ ओर हम कहा लायकहें ॥ सो आपसोविनतिकरेगें ॥ जो आपतो सबकेअंतरतरजामिहो ॥सबजानोहिहों ॥ सो एसिरजोकि निष्कपट निर्विकारविनतिसुनिकें भक्तवत्सल रसप्रगट-

करतभए ॥ फेरि आपरजोकेहाथसों नित्य आरोगते सो ताहीरीतिसों स्नेहपूर्वक आप आरोगतेभए॥ यह प्रसंग लोक, वेद, कूल, तीन्योंनकी मेंडसोंभिन्नहैं ॥ सो एसे तादृशी गुणातीतभक्तहोय ॥ सो या वस्तुकोअनुभवकरे ॥ आधुनीकजीवमें लौकिकबुद्धिवारेमें यहवातघटेनाँहि ॥ जाको स्नेहीहृदय पूर्णकृपापात्रहोय सोइजाने ॥ एसें रजोनित्यनाना प्रकारसोंलाडलडावे ॥ सो अडेलमें एक सुतार आपको स्नेही हतो ॥ सो नित्य रजोके घरआवे ॥ सो रजो नित्य आपको अधरामृतप्रसादलिवावती ॥ सो नित्यरजोको यहनेमहतो ॥ जो वाकोंप्रसादलिवायकेंआप लेती ॥ सो वासुतारकी स्त्रीकों सुहातोनाँहि ॥ सो एक दीनवानें जायवेनहींदीनों॥ सो रजोनेंवादीनप्रसादलीनोंनाँहि ॥ ओर न वा वाइक्षत्राणीनेंलीनों ॥ जो प्रसादगैयनकोंदेदीनों ॥ सों रजोकोवडोदुःखभयो ॥ जो नजानेआज मेरेकेसेंभाग्यहैं ॥ जो आज वैष्णव-

मेरेघरप्रसादलैनकौंनआये॥ एसेहोसेन समयकोंप्रसाद श्रीमहाप्रभुजीको आरोगायकें घरलायधर्यो॥ आपने लीयोनाँहि ॥ पाछें सांझसमयवाक्षत्राणीको वासुतारकेघर पठाइ ॥ जो जेसेंबनेतेसेंलेआओ॥सो वहवोलिवेगइ ॥ सो वासुतारकीवहूने झुंठेहीकहीदीयो ॥ जो घर नाँहिहे ॥ तब वावाईनें रजोसोंजायकेकही॥ तब रजोनें सुनिकें वहुतहीखेदकीयो ॥ जोहायहाय! आज श्रीमहाप्रभुजीको सेवक स्नेही हमारेघरप्रसादलेंवेनहोआयो ॥ सो नजाने आपनेंकहाविचारीहैं! ॥ सो रजोतोआपकेपोढिवेकेसमय श्री महालक्ष्मीजीकीटहलमेंगइ ॥ ओर वावाइसोकहिगइ ॥ जो वैष्णवआवे तो प्रसादलिवाइयो ॥ फेरि रजोतोआपकीटहलकरि श्री महाप्रभुजीकों सुखशैयामेंपोढायकें अपनें घरआइ ॥ सो आयकें पूछी जो वैष्णवआयोके नहिं आयो तब वावाइनेंकही जो नहीआयो॥ यहसुनिकें मनमेंवडो दुःखकियो ॥ ओर वहां वह सुतारवैष्णव

मनमेंबडोदुःख करेंहे ॥ वानेंहूंकछूखायोनाहि ॥ इत-
नेमें वा सुतारकी वहूकोंनिंदआइ ॥ तहाँश्रीमहाप्र-
भुजी अलौकिकरीति सोंपधारिकें वाकीछातिमेंलात,
मारी ओरकही जो कुलक्षणी तेनेंमेरीरजोकोदुःखदी-,
यों ॥ सो सवारेंतोकों दर्शन चरणपरसदेउंगोनाहि ॥
तेरेधनीकोंयाहीसमय रजोके घरपठायदें ॥सो वाही-,
समय थाकीआँखिखुलिगइ सो जायकें पतिकेपावन-
परी ॥ जो मेरोअपराधक्षमाकरो ॥ ओर याहीसमय
रजोकेघरजावो ॥ तव सुतारवाहीसमय रजोकेघरगयो,
सो जायकें रजोसोंभगवद्स्मरण कीयो ॥ तव रजोकें
वाहीसमय प्राणहरेहोयगए ॥ फेरि रजोनेंकही ॥जो
कालितुमकाहेवातसोंअटके ॥ मेंनेतुमारी वाटवहुत-
देखी ॥ अवीताइप्रसादलीयोनाहि ॥तव वानेंकही॥
जो मेरीस्त्रीनेक्लेशवहुतकीयो ॥ सो तातेमेंनाहिआ-
यशक्यो ॥ तवपूछी जो तुमकों केसें आवनदीयो ॥
तवकही ॥ जो अवीदोयघरीकीवातहें ॥ श्रीमहाप्र-

ुजी अलौकिकरीतिसों पधारिकें वाकों लातमारिकें-
जगाइ ॥ ओर आज्ञाकरी ॥ जो कुलक्षणी तेंनेंतेरेप-
तिकोंरोक्यो॥ तासो तेंने हमारीरजोकोंवहुतदुःखदीयो
॥ सो न तो तोकोंदर्शनदेऊ न तोकों चरणपरसदेऊं
॥ इतनी आज्ञाकरिकें आपतोपधारे ॥ तव वानें चो-
किकें आयकें मेरेपाँवपकरिलीए॥ओर॥रोयवे लागी,
कही जो मेनेंतुमकोंरोके सो सवारें श्रीमहाप्रभुजी
दर्शन न देंइगें॥ कहा जानेंकेसी होयगी ॥ तातें तुम
वेगीरजोकेघरजाओ ॥ यारीतिसों मेंतुमारेपासआयोहूं
यहसुनिकें रजोवाइनें वहुतपश्चातापकीयो॥जो हाय!
मेंने एसोहठकाहेकोंकीयो ॥ सो आपकोंइतनोश्रम-
करनोपड्यो ॥ तव विनतीकरी ॥ जो भाइजी आज-
पाछें तुमतुमारीइच्छातेंआयोकरो ॥ हम या वातको-
नेंमनहीराखेंगे ॥ या नेममें प्रेममें कसरिपरेहे ॥ फेरि
तिन्यो जनेननें मिलिकें आनंदपूर्वक सेनभोगकोम-
हाप्रसादलीयो ॥ जलअचवाय हाथधोय वीरीले हा-

थजोरिकें स्यामदाससूतार अपने घर गए ॥ फेरियो-
तनाकरिकें नेंकसोए ॥ इतनेमेंही सवारोभयो ॥ तब
रजोबाइन्हायधोयकें श्रीमहालक्ष्मीजीको ॥ पेंडोक-
रावन सुखसिज्यामेंगइ आपदोउस्वरुपजागे रजोबाइने
श्रीमहाप्रभुजीके चरणपरस कीए ॥ सो वामचरणमें
श्रमसों सूजनहोयआइ ॥ तब विनतीकरी ॥ जो राज
यह श्रम काहेकोभयो ॥ तब आपने हँसिकेआज्ञा-
करी ॥ जो यहतुमारे श्यामदाससुतारकीवहूनेकरायो
है यह वचनसुनिकें वडोखेदभयो ॥ तब इतनेमें सबवै-
ष्णवदर्शनकोंआए ॥ सोआपकेचरणपरसकरिवेलागे ॥
सो देखेतोचरणारविंदमें श्रम सो सूजनव्हेआइहे ॥
सो श्यामदाससूतारकीवहूआइ ॥ वानेहूंचरणपरस-
कीए ॥ तब सबननेंपूछी ॥ जो राज चरणारविंदमें
श्रमकाहेकोभयो ॥ तब कही जो ये सब यह श्याम-
दासकीवहूकोकौतिकहे ॥ सो वानें ठाडेठाडेसुनि ॥
सो सुनिकेचरणारविंदमें गिरिपरी ॥ बहुतरोइ ॥ तब

आपने आज्ञा करी ॥ जो भइसो भइ ॥ आजपाछें अपने पतिसों क्लेश मति करियो ॥ एसी रीतिसों आप अपने दासनके विषे माहात्म्यदिखावतभए ॥ सो वासमयकेभगवदी महाभाग्यवानहूते॥ओर रजो श्री आचार्यजीमहाप्रभुनको एसे लाडलडावे ॥ सो याकीसमता श्रीमहालक्ष्मीजीकरे ॥ओर स्त्री तो याकीवरोवर लिखिवेमेंआवेनाँहि ॥ एसीरीतिसों श्रीमहाप्रभुजीकोंवसकरे ॥ जेसें व्रजभक्तननेंवसकीए ॥सो रजोनेंकरिदिखायो ॥ फेरि श्रीमहाप्रभुजीने कोइकालपीछे चोथोआश्रमकरिवेकी इच्छाविचारी ॥ सो सव वैष्णवनकों वडोहीखेदभयो ॥ ओर रजोकों तो वाही समय ज्वरचढी आयो, सो आपकेविराजतेंही रजो चोथेदिन चरणारविंदमें पहोंचिगइ ॥ पाछें वाके श्री ठाकुरजी श्रीवालकृष्णजीकी सेवा ज्ञातिकीक्षत्राणीनेंकरी ॥ तापाछें वह चरणारविंदमेंपोंहोंची ॥ तव

श्रीठाकुरजी श्रीगुसाँइजीकेघरपधारे ॥ तातें रजोबाइ महाभाग्यवानहती ॥ तातें इनकीवार्ताकोपारनाँहि सो कहाँताँइलिखिए ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक नारायन दास ब्रह्मचारी तिनकी वार्ताको भाव

सो ए महावनमेंरहेते ॥ ए दोयभाइहते ॥ छोटे नारायनदासहते ॥ सो इनकेमातापीता बालपनेंसोंही हरिशरणभयेहते ॥ तातें इनकेवडेभाइने पालनकरी-कें वडे कीये ॥ सो एतोबालपनेंसोंहीत्यागीहते ॥ शरी-रमें कछु वस्त्रधारननाँहिकरते ॥ श्रीयमुनाजीकेतीरपें श्रीयमुनाजीकोध्यानकरिबोकरते ॥ भोजनकेसमयव-डाभाइहाथ पकरिकेंलाये तबभोजनकरते ॥ भोजन करीपाछें श्रीयमुनाजीकेतीरजायकेंसोइरहेते ॥ सो प्रा-

१ आ श्री बालकृष्णलालजी हाल मुंबाइमां, महाराजना मोट-वाडामां "मोट्टुंमंदिर" ए नामे ओळखाय छे, त्यां श्रीमद् गोस्वामी श्री गोकुलनाथजी महाराजना माथे विराजे छे. जुओ विविध धोळ तथा पद संग्रह. भाग २ जो.

कृतवस्तुकोछीवतेनाँहि ॥ एकदीनरात्रकोंतीरपेंआज्ञां-
भइ ॥ जो तूँ तीरपेंनिरावरण सोंवेठेंहे सो हमजव
आवेहें तव लज्यासोआवेंहें तातें एकवस्त्रपेहेरिवेंको
तथा एकवस्त्रओढीवेकोंराख्योकरि॥ यहहमारीआज्ञाहे
॥ सो वाहीसमयघरजाय भाइसोंदोयवस्त्रमाँगे सो
भाइनें दोयवस्त्रवाकों दीयो ॥ औरवहुतप्रसन्न भयो ॥
ओरकहो जो आज ए वस्त्रधारनकरीवेलगे॥ फेरिक-
कछूकदीनमें श्रीमहाप्रभुजोपधारे सो यानेंसूनी ॥ तव
वडेभाइसोंजायकेकही जो में श्रीमहाप्रभुजीकोशरण
जाऊंगो ॥ तुमारीइच्छामेंआवें सो भेटदेऊ ॥ तव वडे
भाइनेकही ॥ जो तुमारीइच्छामेंआवेसोलेऊ ॥ तव
वाने जो दीनो सो लीनो ॥ तव श्रीगोकुलआयकें
आपकों साष्टांगदंडवत्करी ॥ तव आपनेंआज्ञाकरी ॥
जोनारायणदासआये ॥ तव वीनतीकरी ॥ जोराजको
मारग देखतहतो ॥ सो आजजनमधरेंकोफलप्राप्ति-
भयोहे ॥ तव आपनेंनामनीवेदनकरवायो ॥ तव वीन-

तोकरो ॥ जो राज अब कहाआज्ञाहे ॥तब कहीजो भगवानके स्वरुपतोजानतनॉहि हो ॥जोराज बताओ ताकोसेवाकरुं तब आपनें आज्ञाकरी जो कछुकदीन श्रीयमुनाजीकोसेवनकरो ॥ तुमारोसवकार्यसिद्धिहो-यगो ॥ फेरि आज्ञालेकेंघरआये ॥ पाछेंअपनेभाइकों भतीजीकोंसवकोंसेवककराए ॥ तव तो एहू वैष्ण-वभये ओर नारायनदासकेसत्संगतें वहुतसें जीवश-रणआये ॥ जोमहावनके कोइवीरले मंदभागीरहे ॥ ओर सव महावनशरणआयो ॥ तव नारायनदासके-भाइनें नारायनदाससोंकही ॥जो हमारेसंततिहेनाँहि ॥ओर वेटीघरमेंविधवाहे ॥ तातें तुमविवाहकरो ॥ ओर घरसंभारो ॥ तव नारायनदासने कही ॥ जो तुमतो विवाह श्रीगोकुलकरीआयेहें ॥विवाहतोएक-वेरहोयहें ॥ सो सोव्याहथोरेहोयहें! ॥ जो अलौकी-ककल्पवृक्षकोछांडिकें कहा थूअरकोसेवनकरुं !॥ तव वडेभाइनेजानी॥जो याको लौकिकमेंचित्तनेकहुं नाँ-

हिहे ॥ जो मायाकोंलेश गंधहूंपरसकीयोनँाहि ॥ सो
जहाँ माटीपेंहाथडारें ॥ तहाँसुवर्णहोयआवे ॥ एसे
श्रीमहाप्रभुजीकेचरणारविंदकोप्रताप माथेविराजी
रह्योहे॥ जो लौकीकप्राकृतलक्ष्मीतो वाके आसपास
ढेरपरेरहे सो तोऊ छीवेनांहि ॥ एकदीनावडेभाइनें
ढेरदेख्यो तव नारायनदासने वडेभाइसोंकही ॥ जो
तुमारीइच्छाहोय इतनों यामेसोंलेजाओ ॥ तुमारेघ
रमेंधरो ॥ सो वा समयतावडेभाइनेंनांहिकरी ॥ जो
मेरेतोइच्छानांहिहे ॥ मेरेपासतोद्रव्यहे ॥ मे लेकेंक
हाकरुं॥ओर भीतरसोंयह लोभ जो यहवाहिरजायतो
सवद्रव्यउठाय घरमें धरुं,सो याकोंखवरि न पडे॥ सो
नारायनदासजी याकेमनकीजानीगये ॥ सो जागत
हते ॥ सो जानीकरीसोइगये ॥ पाछें भाइघरीभरपी
छेआये खरखरकरी ॥ भाइवोलेनॉहि ॥ जानी जो
वतोयेसोयेहें ॥ सो सवद्रव्यलेजाऊं, सो टोकराला
सो सव द्रव्यटोकरामेंसमेटिकेंभर्यो ॥लेचले ॥सो ना

ायनदासकेपासकेसंबंधतांइ तो सबद्रव्य ज्योंकोत्यों-
ह्यो ॥ फेरि उहाँसोउठायकेंघरलेगये॥ सो कीचहोयकें
ोकरामेंसोवह्यो सो भाइकोशरीरमूँडवीगरे ॥ सब
ीचहेगयो ॥ सो अपनी बेटीजगाइ सो नारायनदा-
जागतेहते ॥ सो वेगीउठीगये सो सवारेकोसमय-
तो ॥ सो घरमेंजायकेंदेखें तो भाइ कीचसोंभयोंहे॥
रमें सबकीचफेलीरह्योहे ॥ टोकराफेंकीदीयो ॥ तब-
ह्यो, भाइ यहककहाभयो ॥ तब वहूतलज्जाआई ॥ तब
नारायनदासकेपाँवनपर्यो ॥ ओरकही ॥ जो तूँधन्यहे
ूँधन्यहे ॥ मेंनेतुमारोस्वरुपजान्योनाँहि ॥ जो मनमें
लोभकीयो ताकोभोगभोगुंहूं ॥ अब एसीकृपाकरो
सो मायामेतेछुडाओ ॥ तादीनसोवडोभाइ नाराय-
दासकी आज्ञामेंरहेतो ॥ फेरि श्रीमहाप्रभुजीश्रीगो-
कुलपधारे ॥ तब नारायनदास श्रीगोकुलआये॥ तब
जायकें दर्शन कीये ॥ साष्टांगदंडवत्करीभेटधरी तब
वीनती करी ॥ जो राज आपकीवाटदेखतहुं ॥ सो

अब आपआज्ञाकरो तेसें निर्वाहकरुं ॥ सो आपआ-
ज्ञाकरें, जो मेरो सर्वस्व श्रीगोकुलचंद्रमाजीहे॥ ता-
कीनीकीभाँतिसोसेवाकरियो ॥ तब आपनेकृपाकरी
श्रीगोकुलचंद्रमाजी नारायणदासकेमाथेपधराये॥तब
महाबनमें अपनेघरमें खासामंदिरकरिकें पधराये॥व-
डोभाइ, वडेभाइकी बहु, भतीजी एउपरकी परचा-
रगीकरते ॥ थोरेसेदिनमें वडेभाइ ओर इनको व
हरिशरणभये ॥ तब भतीजी सेवामें नारायनदासकं
सहायतामेंरही ॥ सो यहभतीजी वनमेंजाय सो घा
सखोदी लावे ॥पतौआवीनलावे लकरीयाँलावे॥ स
चारीप्रकार सों नीत्य सेवाकरे ॥ ओर घरमेंआय
नारायणदासजीको परचारगीकरे ॥सो दोयगैयाँघ
रमेंहती ॥सो ताको दूध दहीं माँखन श्रीठाकुरज
आरोगते ओर घासकीडोढराखते ॥ जो पहेलेदीन
घासकोंधोयकें दुसरेदीना झारिपोंछिके, गैयाँकोंचर
वते सो काहतें जो घासमेंरजनहीं आवें, इतनी व

श्रीमहाप्रभुजी श्रीगोकुलपधारेहें ॥ सो वा हरखमें श्रीप्रभुनकी वात्सल्यताकी खवरिनाँहिरही ॥ सों खीरकोवेला सीरोकरतहते सो सीरोनाँहिभयो ॥ तातोकोतातो भोगधरिकें वाहिर आय भतीजीसोंकही जो तूँ सावधान रहियो ॥ में आपकेदर्शनकरिआऊं ॥ सो वाहीसमय चलिदीने ॥ तव घरीभरमें जायकें आपकेदर्शनकीने ॥ साष्टांगदंडवत्करी भेटधरी तव आपने दोउचरणारविंद नारायनदासकेमस्तकउपरधरे ॥ ओ आज्ञा करी ॥ जो श्रीगोकुलचंद्रमाजीकेयहां कहा समयहें ॥ तव वीनतीकरी जेराजराजभोग धरिकेआयोहुं तव आज्ञाकरी ॥ जो हमतुमारेसंगचले सो वाहिसमय आप अपरसमेंपधारे ॥ सो जायकें टेरासकाय आचमनकरायवेलागें ॥ तव देखें तो खीर पेलीरहीहें तव पुछी ॥ जो वावा खीरकेसेंफेलाइहें । वकही ॥ जो आजनारायनदासनेंतातिखीरधरी ॥ र मेरेओष्ट ओर हस्त लालहोयरहेहें ॥ तासों खीरफें

ई ॥ तब आपनें नारायनदासकोंबुलायो ॥ओरकही जो नारायनदासयहकहाकीयो श्रीठाकुरजीकों ताती खीरसमर्पी ॥ सो प्रभुनकोंश्रमभयो ॥ आजपाछें खीर सुहातीधरनी ॥ सो काहेतें जो प्रभुबालकहे सोखीर दूध अंगारीधरो तो वाहीसमयश्रीहस्तडारे॥ तातेंखीर-सुहातीभोग धरनी॥ पाछेंश्रीगोकुलचंद्रमाजीनें आज्ञा करी॥ जोमेरी आज्ञाहे यहप्रसादी खीरआरोगो॥तब आपने आज्ञाकरी ॥ जो ज्ञातिव्यवहारराख्योचहीये तब श्रीगोकुलचंद्रमाजीनेआज्ञाकरी ॥ जो यहहुंप्र-माणहे ॥ जो " घृतपक्कंपयपक्कं " तातें यह प्रमाण-तेंविरुद्धनहींहे ॥ तासों आरोगो ॥ तासमय श्रीम-हाप्रभुजीआरोगे ओरश्रीगोकुलचंद्रमाजीपरोसे ॥ सो एसोदर्शन नारायनदासकोंभयो ॥ तादीनसों खीरकी सामग्री बालभोगमें होनलागी॥ सो वादीनको खीर-कोमहाप्रसादकछूलिखिवेमेंआवेनांहि ॥ एसोअलौकी कस्वाद ॥ पहेलें श्री चंद्रमाजीनेंआरोगो फेरि श्री

महाप्रभुजोनेआरोगी॥ फेरि झूठनिमेंसों सवगामके वैष्णवनकोंलिवाई॥ सो वा महाप्रसादकोस्वाद अति अद्भूतभयो॥ सो इतनेवैष्णवननें तोलीयो॥ तोउ इतनेकोइतनोंरह्योआयो कछु घट्योनांहि॥सो नारायनदासकेभाग्यकी महीमा कछू लिखिवेमेंआवेनाँहि॥ जव श्रीमहाप्रभुजीश्रीगोकुलपधारते॥ तव महावनजाय, श्रीगोकुलचंद्रमाजीकों शृंगारधराय, चरणपरसकरीकें श्रीगोकुलपधारीभोजनकरते॥ एसोनेम हतो॥ यद्यपि आप पूर्णपुरुषोत्तमहेसर्वसामर्थहें तोउ श्रीगोकुलचंद्रमाजीकी इतनीकानी राखते॥सो नारायणदास यमुनाजलकीगागरी अपने कंधापरलेआवते॥ एकदीना श्री यमुनाजलकीगागरी भरिवेकों जातहुते॥ तव रमनरेतीमें श्रीगोकुलचंद्रमाजी खेलतेदेखे॥ तवकही॥ जो पीछेंगागरीभरिकेंआऊंगो तव यारस्तापें नाँहिआऊंगो॥ काहेते॥ जो श्रीठाकुरजीमोकोंदेखेंगे तो आपकेखेलमेंभंगपरीजाय॥ए

विचारिकें गागरिभरिकें वरहेमेंहेकें लेकें आये।। सो तहाँ अगारीदेखे तो श्रीचंद्रमाजीएकटीलापरठाडेहें ।। तव मनमेंवीचारकीयो ।। जो अवकेसेकरुं ।। यहांहुआप-ठाडेहें ।। पाछें फिरिचले ।। तव श्रीचंद्रमाजीने आ-ज्ञाकरी जो नारायणदासतूँ यारस्ताक्योआयो ।। जो तोकोंश्रमभयो होयगो ।। तव वीनतीकरी ।। जो म-हाराज मोकोंतोश्रम भयो के नाँहिभयो ।। परि मेंने आपकोंश्रमकरवायो ।। जो आपकेखेलमें भंगपर्यो ।। तव आपने आज्ञाकरी।। जोहमारे तो सवस्थलखेलक-रिवेकोहे ।। तूँ चिंतामतिकरे ।। जो तुँ खेलनआयोकरि ।। जो तुमारीहमसोंकछुसकुचनॉहि हे ।। एसिकृपाश्री चंद्रमाजी नारायणदासपरकरते।।सोनारायणदासजी जव भोगधरिवाहिर आय वेठते ।। तव नेत्रमें सो धारावहीजाती ।। ओरवारवारएसें कहेते ।। जो मेरे श्रीप्रभुजीकेसेंआरोगतेहोयगे ।। तव भतिजिवोली ।। जोश्रीमहाप्रभुजीकोसेवककोऊहोयतोताकेहाथकीश्री

ठाकुरजीआरोगें सो तुमतो श्रीमहाप्रभुजीकेकृपापात्र-
ो तो तुमारेहाथकीआरोगें तामेंकहासंदेह हे॥ तब
भतोजीसों कही ॥ जो बेटी जब जानों जब श्रीम-
हाप्रभुजीकोसेवक अचानकआय महाप्रसादलेई तब
जानों जो श्री ठाकुरजीआरोगतहें॥ एसोस्नेह वैष्ण-
वनपरहतो॥सो श्रीमहाप्रभुजीकेसेवक वैष्णवआवतो
तब महावनमें एकदोय दिन नारायनदासकेघररहेते॥
फेरि देशकों जाते॥सो नारायनदासजीजहांसोवते॥
तहां आसपासद्रव्यकेढेरहोय जातें॥तब भतोजीकों-
कहेते॥ जो घरमें वीगारभयोहे निकारीडार॥ सोनिका-
सिकेपोतनाकर्यो ॥ एसेंकहिपोतनाकरते ॥ द्रव्यकों-
वीगारकरिजानते॥सो प्राकृतलक्ष्मीमनोरथकरी आ-
वती ॥ जो मोकों भगवदी श्रीठाकुरजीकेचरणारविं-
दमें अँगिकारकरावे ॥ सो ए छीवतेंनाँहि ॥ एसेंम-
हान्त्यागीहते ॥ सो ब्रह्मचर्यपनोएसोपार्यो ॥ सो
पराइस्त्रीको नेनभरि देखीनाँहि॥ सो इनकी सहजरहे-

निपर सतसंन्यासवारिडारें, एसो नारायनदासजीको-
महान्ब्रह्मचर्य हतो ॥ केवलगुणातीतहते ॥ सो मा-
याकेगुणजीते, छियेनाँहि ॥ एकदीन श्रीगोकुलचंद्र-
माजीकों अद्भूतशृंगारधरायो॥वासमयअद्भूत को-
टिकंदर्पलावण्यदर्शनदीयो॥सो दर्शनकरिकेंचित्त पर-
मानंदकोंप्राप्तभयो॥तबकहि॥ जो एसीअद्भूतघटा
॥ आजकोनपेंबरसेगी ॥ तब आपनेआज्ञाकरी ॥ जो
जहाँश्रीमहाप्रभुजीकोसर्वस्वहे ॥ तहाँ बरसेगी ॥सो
एसेंव्यंगवचनसुनिकें हृद्‌यमेंपहेलेंतो परमानंदभयो॥
॥ फेरि मनमेंविचारी ॥ जो आछीसीघटाकोदर्शनहे
॥ सो मेरेमनकोव्रत यहहे जो यहनिधि सदैवआपके
घरविराजे ॥ सो एसेंकरत नारायनदासनें बहुतदीन-
ताँइसेवाकरी जब देहअसक्तभइ तब इनकीज्ञातिके
कृष्णदास स्वामी श्रीमहाप्रभुजीकेसेवकहते ॥ सो ॥
इनकीसहायतामेंआवनलागे॥ तोऊ इनकोमनमाने-
नाँहि ॥ सो एकदीन श्रीचंद्रमाजीनें इनकीअवस्था-

नदिसादेखिकेंआज्ञाकरी ॥ जो तेनें मेरीएसीसेवाकरी सो मेंप्रसन्नहोयकेंदेतहों ॥ सो तूँ माँग ॥ सो ए वचनामृतसुनिकें एसेंदेहमेंसचेतहोयगये सो देह वा समें एसिनवीनहोयगइ जों फेरि पचासवरसझारी भरि ॥ सो आपकोसुखमांन्यो ॥ जो अपनोसुख नेकहूनहि विचार्यो ॥ फेरिकहि ॥ जो राज में यहमागतहों ॥ जो आप सुखसों सदैव श्रीमहाप्रभुजीकेघरविराजो ॥ सो मूलकारण यह हे ॥ जो आप अनतसुख न पावेंगे ॥ सो यहनारायनदासजीकीवानीसुनिकें आप श्रीगोकुलचंद्रमाजी कायरहोय गये ॥ जो इनभक्तनकोरिण में केसेंउतारुंगो॥ सो ए केसें भक्तहे॥ जो में देउं ॥ सो यावस्तुकों ए लेईनांहि ॥ जो जबमागे ॥ तब मेरोहोसुखमागे तातेंइनको कहादेउं ॥ पुष्टिमार्गकोफलयह ॥ जो ततसुखसोंसुखी ओर एसें सुखकीतो चाहना न राखे ॥ सो वासमयमें कित्तनें श्रीठाकुरजीकेवचनसुनिकें वाहिलीलामेंप्राप्तिभये ॥ फेरि नारा-

यनदासकेपीछारी थोरेसेदिन कृष्णदासस्वामीनेंसेवा-
करी फेरि आपकोमन वासेवामेंरुच्योनाँहि ॥ फेरि शी-
घ्रही श्रीमहाप्रभुजीकेघरपधारे ॥ सो श्रीगुसाँइजीके-
पांचमेलालजो श्रीरघुनाथजीकोपधरायदीये ॥ जब
नारायनदासचरणारविंदमें पोहोचेकिवातसुनीके श्री-
गुसाँइजीरोमाँचहोई आये ॥ तब श्रीमुखसोआज्ञा
करी ॥ जो या कालमें एसे भगवदीयकेदर्शन फेरिक-
हाँ॥ सो या अभीप्रायसो श्रीगोकुलनाथजोने वचना-
मृतमें वहुतहीहरखयुक्त प्रशंसाकीनीहैं जो एसें नारा-
यनदाससरिखेभक्त सो जीननें अंतमें वी आपकेसुख
सिवाय ओरकछूमाँग्योनाँहि ॥ एसे मुखारविंदसो वच-
नामृतसो आज्ञाकरी ॥ तातें नारायनदासब्रह्मचारी-
की दिनदिनकीवार्ता लिखिवेमेंआवेनाँहि ॥ संपूर्ण ॥

---

१ था श्री गोकुलचद्रमाजी ठाकोरजा हाल्मा श्रीमहाप्रभुजीना घरमाज फामवनमा श्रीमद् गोस्वामी श्रीवल्लमलालजी महाराजने माथे विराजे छे

श्री आचार्यजी महाप्रभुनकेसेवक संतदासजी चोपडा क्षत्री तिनकी वार्ताको भाव

सो इनकेपिता मर्यादामार्गीय स्वामी संत वैरागीनकी सेवाबहुतकरते ॥ जब संतदासजीकोजन्मभयो ॥ तादिनसोंद्रव्यकोसंपतिबहुतबढी ॥ सो संतदासजीकोविवाहकीयो द्रव्यबहुतखरचकीयो ॥ संतदासजीके चित्तमें जन्मसोंही वैराग्यरहेतो ॥ फेरि थोरेसे-दिनमें इनकेपिता हरिशरणभयो ॥ पाछें मथुराजीदर्शनकोंआए ॥ तब चारिस्थलकी यात्राकरी ॥श्रीगोकुल आए सो श्रीमहाप्रभुजीकेदर्शन साक्षात्पूर्णपुरुषोत्तमकेभए ॥ सो उहाँहीशरणआए ॥ फेरि विनतीकरी जो राज अबहमकोंकहा कर्तव्यहे ॥ मेरे पास बहुत द्रव्य हें ॥ ताकोकहाप्रकारसोंअँगिकारहोय ॥ सो राज अँगिकारकरो ॥ सो ता प्रकारमेंकरुं ॥ जो लौकिकदुकान गुमास्ता बखेरा बहुत हें ॥जो प्रभुनमें ...केसेंलगे ॥ तब आपसन्नतासो आज्ञादीनी ॥ जो

संतदास तुम चितामतिकरो ॥ तुमारोचित्त संसारतें-निरोधहोयके थोरेसे दिनमेंसिद्धिहोयजायगो ॥ एसें-आपने प्रसन्नतासोंआज्ञाकरी ॥ फेरि श्रीठाकुरजी की-सेवापधरायकें आगरेआए ॥ तव श्रीठाकुरजीकीसेवा करनलागे ॥ थोरेसे दिनमें श्रीमहाप्रभुजीआगरेपधारे ॥ सो संतदासजीके पास वधैयागयो सो सुनीकें अपनें नोकर चाकर गुमास्ता संगलेकें आपकोंपधरायकें अपनेघरलेगए ॥ तव कछूकदिन आप संतदास-जीकेघरविराजे ॥तव स्त्रीपुरुषदोउननें मिलिकें तन मन धनसों आपकीसेवा करी वहुतलाडलडायकेंरिझाए ॥ सो आपने वचनामृत सिंचिके संतदासजीकों रसरुपकरिदिए ॥ स्वमार्गकोसर्व सिद्धान्तहृदयमेंस्थापन-कियो ॥ ओर द्रव्यविशेषहतो सो आपके चरणारविं-दमेंअर्पणकियो ॥ ओर सेवानिर्वाहयोग्य कछूकराखे ओर सव आपकीभेटकीयो ॥ तव कछुकदिन आप आगरेविराजिकें अडेलकोकूच कीयो ॥ फेरिसंतदास-

जीने गुमास्ता दुकान सबबखेराउठायदियो ॥ तब चित्तशांतिसों श्रीठाकुरजीकोसेवाकरवेलागे ॥ फेरि मनमें विचारी ॥ जो आपनेतो द्रव्यअँगिकारकियो ॥ ओर वाकीकोजोद्रव्यहे ॥ सो श्रीठाकुरजीकोंआरोगायकें वैष्णवनकोंलिवावनों॥ तब तो या द्रव्यकी सुफलताहें ॥ एसें नित्यनविनसामग्रीकरिकें भोगधरें ओर वैष्णवनकोलिवावे ॥ रात्रमेंभगवद्वार्ताकरें ॥ सबवैष्णवआवे ॥ तिनकों महाप्रसादवाँटे ॥ एसोरीतिसों वैष्णवनकीटहलकरे ॥ तब एसेंकरत द्रव्यसबनिघटिगयो ॥ तब मनमेंविचारी जो बहुत आछीभइ ॥ जो जहाँकीवस्तु सबतहाँपोहोंचिगइ फेरि चोवीससटकाकीपूंजीसों निर्वाहकरनलागे ॥ सेऊके बजारमें कोडिवेचिवेलागे ॥ सो कोडिनकीढेरीकरिराखे जो आवे सो कोडिलेजाय पैसाधरिजाय ॥ तबगामके सबजनेंजानीगए ॥ जोवे वडेमहात्माहें ॥ काहुसोवोले [illegible]े ॥ सो जो कोउलोगबजारआवे सो पैसाधरिके

कोडीकीढेरीलेजाय ॥ जो आपतो श्रीमहाप्रभुजीके-ग्रंथनकोपाठकरिवोकरते ॥ काहुसोंबोलेनँाहि ॥ जो प्रहरभर तथा चारिघडीवेठे॥ तव अढाई पैसाकमाय॥ पाछें घरचले आवे ॥ फेरिवेठेनँाहि ॥ यारीतिसोंनि-र्वाहकरे॥ जो अन्न गेंहु चना भावमें मंदे वहुत सो ले आवे ॥ पैसाके दोशेर चनाआवे॥ सोलेआवे पैसाकी-सामग्री,अधेलाकीचवेंनी॥पैसाकेडेढशेर गेंहूंआवतेओ-रअधेलामेंजो सामग्रीआवे॥सोउत्थापनसेंनमेंभोगधर-ते जोरात्रमेंभगवद्वार्ताहोई॥सोतामेंजोवैष्णवआवे॥ तिनकोंप्रसादवॉटिदेते॥सो वहदारि चवेंनोएसीअलौ-कीकहोई सो वैष्णवसवसराहनाकरे॥ सो एकदीनए-कशेठ वैष्णव संतदासजीकेंमंडलिमेंआयो सो अपने घरमें वैष्णवनकोंलडवावांटतो॥ओर संतदासजीकेंतो चनाकीदारिकीचवेंनीवटे ॥ सोसवनकोंवँाटी ॥ तव वाशेठकों चवेंनीमहाप्रसाददीयो ॥ सो वाकेमनमें-अभिमॉान आयो॥ जो संतदासजी सरीखेभगवदीय ॥

सो तिनकेयहाँ कहामहाप्रसादवाँटयो एसें महाप्रसादकीअवज्ञाकरिकें पटकिकें चलेगए सो प्रसादभूमिमेंफेल्यो ॥ सो श्रीमहादेवजीवीनिकेंखायवेलागे॥ तव सवननें चोर चोर करिके पकरे॥ तव श्रीमहादेवजीवोले ॥ जो में तो महादेवहूं ॥ जो आज शेठजीमहाप्रसादफेंकिगए ॥ सो आजमोकोंशेठजीकीकृपातें संतदासजीकेघरको महाप्रसाद मिल्योहें॥सोमें तुमारीमंडलीमें नित्यआउहूं ॥सो यह अभिलाषा वनिआवे जो मोको महाप्रसादमिलें॥सो आजमोकों वैष्णवनकी कृपातें महाप्रसाद आयप्राप्तिभयो ॥ सो एसीसंतदासजीकीमहीमा सो श्रीमहादेवजीसरीखे भगवद्वार्तासुनिवेकोंआवतें ॥ओर श्री गुसाँइजीआगरेपधारतें ॥ सो विनाबुलाए संतदासजीके घरपधारते॥संतदासजीकेउपर श्रीगुसाँइजीवहूतप्रसन्न रहेते॥ ओर आज्ञाकरते॥ जो श्रीमहाप्रभुजीके एसेसेवकसो इनकी कहाँतांइवडाइकरें॥ सो आपविराजे तहाँ तांई

दोउ स्त्रीपुरुष तनमनधनसोंलाडलडावे ॥ सो संतदासजीको जस सब वैष्णवगावें ॥ सो गौडदेशमें नारायनदासनेंसुनीके संतदासजीकें द्रव्यको बहुत संकोच है ॥ सो सो महोरकीहुंडी पठाइ ॥ सो आगरेमें कासदलेकेंसंतदासजीकेपासआए ॥ ओर पत्रदीयो॥ सो पत्रवाँचिकें दो पैसाकासिदकोंदीए ॥ ओर पाछोपत्रलिख्यो ॥ सो तामेंलीख्यो जो भाइ आज तुमारीप्रभुतामें हमारे श्रीठाकुरजीकेराजभोगकी नागाभइ ॥ ओर मोहोर अडेलमें श्रीगुसाँइजीकेपासभेजी वैष्णवनकों बुलायकें ॥ पाछें पत्र संतदासजीकोनारायनदासजीकेपासपोहोंज्यो ॥ सो वाँचिकेंचक्रतह्वेगए ॥ ओरकही ॥ जो धन्यसंतदासजी धन्य ॥ ओर मनमें पश्चातापकीयो ॥ फेरि श्रीगुसाँइजी श्रीगोकुलवासकीयो ॥ सो श्रीमहाप्रभुजी केउत्सवमें श्रीगुसाँइजीकेजन्मदिवसमें श्रीगोकुलदर्शनकरवे आवते ओर एकदीन चाचाजीआगरेआए ॥ सो प्रातःकालकोसम-

यहतो॥सो छारछू दरवाजे रुपचंदनंदाको मिलापभयो ॥ सो परस्पर भगवद्स्मर्णभयो ॥ दोऊकोंपरस्पर आनंदभयो ॥ तव रुपचंदनंदानेंविनतीकरी जो चलो घरपधारो ॥ तव कही जो मैं संतदासजीकेघरजाऊंहूं ॥ सो उहाँहीपोंहोंचुंगो ॥ तव विनतीकरी॥जो उहाँ तो जवतव जाओही हों आज मेरोहोघरपावन करो॥ सो रुपचंदनंदाकेअति आग्रह सों चलेगए ॥सो उहाँ न्हाय धोय पोंहोंचे ॥ सो तववे वात संतदासजीनें सुनी ॥ तव चित्तमें वडो खेदभयो॥ जो एसोहमसों कहाअपराधपर्योंहे ॥ सो चाचाजीउहाँचलेगए ॥तव स्त्रीसोंपूछी जो तेनेंकछूसाधारणवचनतोंनाँहिकह्यो॥ सो स्त्रीकों सुनिकेंवडोखेदभयो ॥ काहेतें ॥ जो स्त्रीहूंभगवदीयहती ॥ फेरि राजभोगसों पोंहोंचिके आरतिकरिकें वाहिरआए ॥ सो दोयचारि घडीवाट देखी जो चाचाजी अवआवें अवआवें तव स्त्रीसोंकही ॥ जो मैंतोवजारमेंव्याबृत्तिकोंजाउंहूं ॥ जो चाचाजी-

आवे तो मोकोंबुलाइओ ॥नातर महाप्रसाद ढाँकि-
दीजो ॥ फेरि चाचाजीतोआयेनाँहि॥ फेरिउत्थापन
केसमय संतदासजोघरआये ॥ तव आयकेंपूछी ॥जो
चाचाजीआए के नहींआए॥तव स्त्रीनेंकही जो नहीं
आए ॥ तव उत्थापनमेंन्हाय श्रीठाकुरजीसों सेंनप-
र्यंतपोंहोंचिकें वाहिर आए ॥ सो सांझकोहू स्त्रीपुरु-
पनें महाप्रसाद नाँहिलीयो सो दोऊजनेननें वडोखे-
दकीयो जो न जानें चाचाजीनें अवकें हमारीकहावि-
चारी हे जो अवकें हमारेघर नपधारे ॥ एसेंदोऊनकों
वडोखेदभयो॥सो यहवात ओरकाहू वैष्णवकों जता-
इनाँहि ॥ सो दोऊनकों नीद्राँनाँहिआइ॥सो याही-
खेदमेंपरेंरहे॥वारवारयहीकहे जो न जानें अवकें आपनें
हमारीकहा विचारी हे॥ वारवारयहीपुकारें ॥ सो स्त्री
पुरुप दोनोंनकोंयहीदुःखभयो सो कछूलिखिवेमेंआवे
नाँहि॥सो उहाँ चाचाजी रुपचंदनंदाकेघरसोवतहते॥
सो कछुसोवे कछुजागें॥ एसीअवस्थामेंहतें ॥ सो वा-

समय श्रीगुसाँइजीनेजताई ॥ जो कहातुमनें यह अनुचितकार्यकीयो ॥ जो संतदासजीसरिखेनकोंश्रमकरवायो ॥ सो ऊननें तुमारीवाटदेखतेदेखतेंअवताँइमहाप्रसादनाँहिलीयो ॥ सोश्रीमहाप्रभुजीकेसेवकसंतदासजीसरीखे जीनकेनाम स्मरणतें जीवकृतार्थहोयजाय॥सो सुनतहो वाहीसमय चलिदीए सोरुपचंद नंदासोंकहो॥जो तुमकिवाँरलगावो ॥ जो में जाउंहूं ॥ तवकही ॥ जो कहाँजावोहो तव चाचाजीनेकही ॥ जो मेंतो संतदासजीकेघरजाउंहुं॥ तव कही ॥ जोअवहीरात्रहे सवारेजैओ ॥ तव चाचाजीनें कही जो सवारोकवहोयगो ॥ अवही याहिसमयजाउंहुं ॥ सो रुपचंदनंदा आपकेकृपापात्रहते ॥ सो जानिगए जो कछू कारणहें ॥ तातें रोकेनाँहि ॥ तव वाहीसमय संतदासजीकेघरजाय किवाँरखुलाए ॥ भगवद्स्मरण कर्यो ॥ संतदासजो छातोसोंछातिमिलाई, वहुतआदरभयो ॥ ओर वहुतविनतीकरी ॥ जो आपकोंश्रम

करवायो ॥ यहमेरी भूलभइ अपराध क्षमा करें ओर कही जो मैं भूख्योहुं सो कछूमहाप्रसादलीवावो ॥ तब संतदासजीनेंकही ॥ जो महाप्रसादसवारेकोंवासीहें॥ सो अवमें स्त्रीकोंन्हवाऊंहुं ॥ सो राजभोगपाछें आपुन तीन्यों लेइगें ॥ तबचाचाजीनें कही ॥ जो सवारेकी देखीजायगी ॥ जो यासमयतो हम तुम तीन्यो लेंई ॥ सो हठवहुतकीयो ॥ सो वाहीसमयन्हायकें तीन्योजनेननें वासीमहाप्रसादलीयो ॥ सो तीन्योनकों वडो आनंदभयो ॥ ओर महाप्रसादमें स्वाद एसेकोएसोवन्योरह्यो ॥ सो कछू लौकिकसंबंधभयोनाँहि ॥ सो एसो महाप्रसादमें स्वादआयो ॥ फेरि जलअचवाय वीरीलेकेवेठे ॥ तब भगवद्वार्ताकरत पांचप्रहरवीतिगए ॥ शरीरकीसुद्धि रही नाँहि ॥ सो राजभोगसमयस्त्री आइ ॥ जो विनती करी ॥ सो स्त्रीको सुनोनाँहि ॥ सो एसें रसावेशहेगए ॥ फेरि सांझभइ ॥ तब सबवैष्णवतुनिकें वरआए ॥ सो कछू

वा समयचेतभए॥ तब स्त्रीसोंपूछि जो कहासमयहैं॥ तब स्त्रीनेंकही जो सेनभोगआएहें॥तब कही जो राजभोगसों पोंहोंची तब हमको क्यों जताइनाँहि॥ तब स्त्रीनेंविनतीकरी॥ जो वासमय तुम ओर स्थलपरहतें जो यहाँहोते तो कहती ॥ फेरि दोऊननेनने देहकृत्यकीयो,न्हाए ॥सेनभोगकोमहाप्रसाद तीन्योजनेननेंलियो ॥ ओर वडो आनंद अत्यंतभयो ॥सो यहवात रुपचंदनंदानेसुनी ॥ तब आयके बहुतक्षमाकरवाइ ॥ ओर विनतिकरि॥ जो मेरो यहअपराधक्षमाकरो ॥ जो यामे चाचाजीकोदोपनॉहिहे॥जो यहतोमेनेआपकोश्रमकरवायो ॥ यद्यपि चाचाजो रुपचंदनंदा आपकेकृपापात्रहते ॥ तोऊश्रीमहाप्रभुजीकेसेवकनकी आइतनिकांनिराखिवेलगे ॥वाहिसमय चाचाजीकोआज्ञाकरिकें संतदासजीकेघरपठाए॥ सो तातें संतदासजीकोप्रभाव कछूवर्ननमेंआवेनॉहि ॥ सो आगरेमें ।

। वैष्णवभए सो संतदासजीकेप्रभावसोंभए ॥ ओ

गरमीकेदीननमें सर्ववैष्णवश्रीगुसाँइजीके श्रीअंगमें-
चंदनसमर्पते॥ सो एकवैष्णवकों आपने साक्षात्श्रीवृ-
न्दावनचंदकेदर्शनदोए ॥ सो संतदासजीकोकृपापा-
त्रहतो ॥ सो तार्के केवलसंतदासजीकृपासों आप सु-
र्लभहोयगए ॥ तातें श्रीगुसाँइजी श्रीमहाप्रभुजीकेसे
वकनकी इतनीकांनिराखते ॥ओर श्रीगोकुलनाथजी
हूं दर्शनदेवेकों दोयचारिवार संतदासजीकेयहाँपधारते
॥श्रीगुसाँइजीकीआज्ञालेकें॥सो एसो प्रभावश्रीमहा-
प्रभुजीने संतदासजीकेहृदयमेंस्थापनकीयो॥ सो एक-
दीन रुपचंदनंदा चारिप्रहरराात्र संतदासजीकेघररहे ॥
सो श्री महाप्रभुजीके लीलागुणश्रवण कीयोकरें ॥
सो एसें सींचे सो स्वरुपावेश आपको शरीरमेंहोयगयो॥
फेरि सवारेभए रुपचंदनंदाअपनेघरगए॥ सो वहवात
काहूको जताइनाँहि॥ जो संतदासजीकों घरवेंठे व्र-
जलीलाको अनुभवहोतो ॥ ओरश्रीमहाप्रभुजी श्रीगु-
साँइजीकेस्वरुपकोअनुभवहोतो॥ सो वैष्णवकेभाग्य-

सों संतदासजो वहूतदीनभूतलपर दर्शनदीए॥एसें-
करत कोइ कालमें संतदासजीकोदेह असक्तिभइ ॥
तव सववैष्णवमिलिकेंआए ॥ तव कही ॥ जो आप
आज्ञाकरो तो श्री गोकुललेचले ॥ तवसंतदासजीनें-
कही॥ जो श्रीगोकुलकी सेवातो मोसों वनीनाँहि सो
अव यासमय श्रीगोकुलमेंजायकेंकहा राखउडाउं॥ ता-
समय चांपाभाइआए॥तव कही जो यह घर जो हे सो
चाहेतो दामवेचिकेंलेजाओ ॥जो या स्त्रीकोंरहेंनदेउ
नरहेंनदेऊ सो इच्छातुमारी॥ जो यहघर आपकोहे॥
सो वासमय कोइवैष्णवतो पंचाध्याइकोपाठकरे ॥कोइ
अष्टाक्षरकोपाठकरे॥ फेरि वा समय संतदासजीवोले॥
जो एकमेरी वात सुनों ॥ जो एकसमय हम श्रीगो
कुलगऐ ॥ सो वादीनां आपके जन्मदिनकोउत्स
होयरह्योहतो॥ सो सववैष्णव केसर स्नानकरायरहेहें
ओर वधाइमंगलहोयरह्योहे ॥तव मेंनें जायकें साष्टां
गदंडवत्करी तव आपनेहँसोके श्रीमुखसोंआज्ञाकरी।

जो संतदासजीआए ॥तब मेनें विनतीकरी॥जो राज अबीआयो ॥ सो इतनोंकहेतही लीलामेंप्रातभए ॥ तातें संतदासजीकोलीलाअपार ॥ सो तातेंइनकीवार्ताकहाँताइलिखियें ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभुनकेसेवक गजनधावन क्षत्री तिनकी वार्ताको भाव.

सो गजनधावनआगरामेंरहेते ॥ कपडाकीदुकान करते॥सो पेहेलें गजनधावन मार्यादामार्गमेंप्रवीनहते ॥सो एकादशीव्रतनिर्जलकरते॥रात्रमेंजागरनकरते वादिनदुकाननाँहि खोलते ॥ दिनभरि श्रीभागवतश्रवन करते ॥ एसीरीतिसों रात्रभरि संत वैरागीबुलाय हरिकीर्तनकरते ॥ एसेंकरत थोरेसेदीनमें स्त्री जातीरही॥ तब मनमेंवैराग्यआयगयो ॥ जो अब गृहस्ताइनाँहिकरुंगो॥काहेतें॥जो मूलमें तोवे श्रीनवनीतप्रीयाजीके अंतरंगभक्तहते ॥ सो इतनोंआवरणदूरकरिकें फेरिअंगिकारकीइच्छाविचारी ॥ जो वादिन एकादशीको

पीछलीरात्रकों ॥ कछूसोवेंकछूजागें ॥ तासमयमें ए-
सीआज्ञाभइ॥जो श्रीगोकुलजायकें श्रीमहाप्रभुजीकी-
शरण होऊं॥ तव तेरोजन्मसुफलहोयगो॥ सो वाहीस-
मय आँखिखुलीगइ॥ सो श्रीगोकुलजायवेकी तैयारी
करी॥ओर लोगनसों,कही जो मेरे श्रीमथुरांजानाहे॥
सोआजमेंश्रीयमुनाजी न्हाऊंगो॥ सो मूलवातअनु-
भवकी काहुको जताइनाँहि॥ वाहीसमय एकमनुष्य-
संगलेकें श्रीगोकुलचले ॥ तव गामकेपासआए॥ओर
पूछी जो श्रीगोकुलकितनोंहें॥कितमाँउंहें ॥ तव लो-
गननेंकही ॥जो वे पारमाँऊंश्रीगोकुलकेदर्शनहोतहें सो
वाहीसमय कोयलाघाटकीनाव मेंवेठिकें पार श्रीगो-
कुलआए ॥ फेरिपूछी ॥जो श्रीमहाप्रभुजीकहाँविरा-
जतहें ॥ तव व्रजवासीननेंकही ॥ जो गोविंदघाटपें-
विराजतहें ॥ सो ऊहाँजायकें आपकेदर्शन कीए ॥
साष्टांगदंडवत्करी एकमोहोरभेटकरी ॥ तव आपनेंहँ-
सीकेंआज्ञाकरि ॥ जो गजनआए॥तव विनतोकरी॥

जो राज आगरेसों अवी चल्योआयोहूं ॥ सो वचनामृत आपकेसुनतही रोंमरोममेंआनंदभयो ॥ ओर मनमेंकही ॥ जो अवमेरोकार्यसिद्धिभयो ॥ तव आपने साक्षात्श्रीनवनीतप्रियाजीकेस्वरुपसोंदर्शनदीए ॥ सो काहेतें ॥ जो इनको श्रीनवनीतप्रियाजीकेस्वरुपमें निरोधसिद्धिकरायकें फेरिफलदानदेइगें ॥ तातें आपनें श्रीनवनीतप्रियाजी के स्वरुपसों वाकेमनको-आकर्षनकीयो॥फेरि आपको स्वरुप ज्ञानभयो ॥फेरि आपनेंमनमेंनिश्चेकीयो ॥ जो श्रीयशोदाजीको ओर व्रजभक्तनकोंसुखदीयो ॥ सो यहीस्वरुपहें ॥ सो दर्शनकरत गदगदकंठव्हेगए ॥ नेत्रनमेंसोंआंसूनकी धाराचले ॥ मुखसोवचनआवेनाँहि ॥ फेरि आपनेंकृपाकरिकें आज्ञाकरी ॥ जो कालिकोव्रतहेकेनहीहें ॥तव विनती करी जो राज कालिकोनिर्जलव्रतहें॥ तव आज्ञादीनी ॥ जो जाओ श्रीयमुनाजीमें न्हायआवो ॥ ओर कोरेवस्त्रपहेरिकें आओ काहूकों छूवोमति ॥सो

एसेंहीन्हायकें आपकेपासआए ॥ तव आपनेंनामसुनायो ॥ फेरि श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्मुख निवेदनकोदानदीयो॥तासमय गजनधावनको एसेदर्शनभए॥ जो एकस्वरुपतोसिंघासनपें विराजीरह्योहें ॥ एकस्वरुपतुलसीसमर्पेहे ॥ सो मूलमेएकस्वरुपहें ॥ सो दर्शनदीय एकस्वरुप ॥सो वासमयकोसुख लिखिवेमेंआवेनँाहि ॥ जो गजनधावनसरीकेमहाभाग्यवान् जिनकोंएसेंदर्शनदीए॥ फेरि याहीसमय स्वरुपासक्तिहेगइ फेरि मनमेंयहीनिरधारकीयो ॥जोकोनकी दुकान कोनकोघर मेंतोआपकेचरणारविंदछोडीकें क्षनभर भिन्ननरहूंगो॥ एसें देहकृत्यमेंजाय तोहु शरीरकीशुद्धि रहेनँाहि ॥ सो एसोआपनेंकृपादान गजधावनकोकीयो॥ फेरि आपनेविचारी जो इनकेमाथे श्रीनवनीतप्रियाजीपधरायकें वालरस किशोररस दोऊनकोसुखदेनो॥ तव आपनेआज्ञाकरी॥जो गजनधावन तुमघरजायकें श्रीठाकुरजीकीसेवाकरो ॥ तव गजनधावननेंविनती-

करी ।। जो राज अबमोकों संसारमेंमतिपटको ॥ राजकेचरणारविंदकेपासहोराखो॥ तब आपनेआज्ञाकरी ॥ जो तुमकों अपनेपासहीराखेगें॥ जो ए श्रीनवनीतप्रियाजिको स्वरुप माँथेपधरायकेंसुखसों ॥ लाडलडावो ए साक्षात् मेरोही स्वरुपहें॥ जो मनोरथ तुम विचारोगे, सो ए पूरणकरेगें ॥ फेरिकछूकदिनआपनें चरणारविंदपासराखिकें सेवाकोरीतिसिखाइ ॥ फेरि यांकोमन श्रीनवनीतप्रियाजीमें आसक्तभयो ॥ सो श्रीनवनीतप्रियाजिकों वहूतस्नेह सों अपनमाँथेपधरायकें घरजायकें सेवाकरिवेलागे ॥ सो लौकिक वैदिकमर्यादामें पहेलेमनराखते ।।सो सवछूटीगयो॥केवल पुष्टिमार्गीहोय गए ॥ सोश्रीनवनीतप्रियाजी ईनसों अत्यंतहिलिगए ।। तब आपनेंआज्ञाकरी ॥ जो तूँअष्टप्रहरमेरेपासरह्योकरि ॥ तोविना मोकों कछूसुहायनाँहि ॥ ओर तेरीदुकानव्यावृत्तिकीहें सो सवउठायदे ॥ ओर तुमारेसंगमनुप्यहें सो आपकोसेवकहे सो व-

जारको जोवस्तुमँगावनीहोय सोयाके पास मँगाइयो॥ ओर तुम कहूं वाहिरमतिजाइओ॥ तव गजनधावनने आपकीआज्ञाप्रमाँन प्रनालिकाबाँधिलीनी ॥ कछूक दुकानकोमालहतो सो वेचिके द्रव्य अपनेपासराख्यो ॥ ओर वा मनुष्यकोमहिनाकरिदीयो ॥ जो एकवेरआयकें सबोरं पुछवायजाय ॥ फेरि जो सामग्रीचहिए सो लायदे ॥ ओर कहे जो अवनाँहि आवनो ॥ सो एसो नित्यकोनेंमबाँधिलीयो ॥ ओर गामकेलोगदर्शनकोंआवतें ॥ सो शृंगारकेदर्शन सवनकोंकरायदेइ ॥ फेरि किवाँरबंदकरिकें फेरि खोले नाँहि ॥ ओर गजनधावन अपनेंहाथसों सामग्रीसुंदर करें॥जव सामग्री आधी सिद्धिहोयजाय॥ तव जायकेश्री नवनीत प्रियाजीकोंजगावे॥ सो वालभोगकीसामग्रीमंगलाभोगमें धरे॥फेरिरसोइमेंजायकेंकछूरहि होयसोफेरि सिद्धिकरि थारसाजे श्रीनवनीतप्रियाजीजागें ॥ पाछें वेरवेरखुलावें ॥ जो गजनधावन आव आव में अके-

लोहूं ॥ तब गजन विनती करे ॥ जो राज में आयो जो में आपकेपासहुं ॥ सो एसें गजन बेरबेरविनती- करे ॥ एसी स्वरुपासक्तिहेगइ ॥ सो ब्रजभक्तनकोंतो लौकिकगुरुजननकों प्रतिबधहतो ॥ ओर गजनकोंतो कोइ प्रतिबंधनाँहि जो केवल रसरीतिसें निर्भय वा स्वरुपसें रमणकरिवेलागे ॥ जो कवी बछराकरते कवी घोडाकरते ॥ सो चारिप्रकारकोसुख देते ॥ बालरस, पौगंडरस, तरुणरस, ओर किशोररस सो याप्रकारसें श्रीनवनीतप्रियाजी गजनधावनकेसंगखेलकरते सो ग- जनधावनके घोंटुंघिसिगए ॥ सो घोंटूकोतो एक उ- पलक्षचिन्हकह्यो ॥ रस दुरायवेकेलीए ॥ सो काहेतें॥ जो वा रसकेअधिकारीनाँहिहोय तो रसाभासहोयजा- य ॥ जो चिन्हतो गजनधावनकेशरीरमें ओर बी रहे- आवते ॥ सो वे रससंबंधीहें ॥ सो लोकनमें प्रगट घोंटुँनकेचिन्हगिनाए ॥ सो गजन अपनोंशरीर काहू- केआगें खोलिकें नहींदिखावते ॥ ओर कवी घरसों-

वाहिरनिकसतेनाँहि ॥ जो घरकेकिवाँर लगेहीरहेते ॥ जलघरीया नोकरहतो ॥ सो सवारेजलभरिके न्हवाय सामानदेकें चल्योआवतो ॥ कवी कवी गजनकेघर संतदासजीआवते॥सो दर्शनकरिकें वहुतप्रसन्नहोते॥ ओर कहेते ॥ जो गजन तुँ धन्यहें ॥ एसें वेरवेरआज्ञाकरते ॥ काहुसों अपनेरसकीवार्तानाँहिकरते जो गजनधावन एक संतदासजीकोस्वरुप आछीरीतिसों जानते ॥ सो गजनकेघरमें जो वैष्णवआवते ॥ सो वासमय घरमें सोंधेकीसुगंधफेलीरहेती ॥ सो वैष्णवदर्शनकरिकें चक्रतहोयआवते ॥ एसेंकरतकरत गजनकों पूरणनिरोधसिद्धिहेगयो॥जो श्रीनवनीतप्रियाजी ओर गजनकोपरस्परआसक्तिहेगइ ॥ सो कुंभनदासजीसों गजनकीढिसाके अधिकदर्शनदेते ॥ जो कुंभनदासजीनें गायकें जतायो ॥ ओर गजननें काहुकों जतायोनाँहि ॥ फेरि एक समय श्रीमहाप्रभुजीनेविचारी ॥ जो गजनकों निरोधसिद्धि भयो ॥ जो ओ

कछूकरिवेकीरहीनाँहि ॥ तव आपनें श्रीनवनीतप्रिया-जीसों प्रेरणाकरायकें श्रीनवनीतप्रियाजीने श्रीमुख-सोंआज्ञाकरी॥ जो अव तुम मोकों श्रीमहाप्रभुजीके पासश्रीगोकुल लेचलो॥ यह अभिप्राय गजनधावनने ज़ान्यो तव विनतीकरी जो आपनेहमारीकहाविचारी हे॥आपविना हमकेसेंजीवेंगे॥ तववहूतखेदभयो॥ सो व्याकुलव्हे गए॥जो कोइवातसूझेनाँहि ॥ तव श्री-नवनीतप्रियाजीने भीतरसोंआज्ञाकरी ॥ जो गजन तूँ कोइवातकोखेदमतिकरे॥जहाँ में जहाँ तूँ ॥ जहाँ तूँ जहाँ में ॥ एसें वहूत मधुरवचनआज्ञाकरिकें गज-नकोंधीरजवधाइदई॥सो सवारें राजभोगसोंपोहोंचिकें श्रीठाकूरजीकों झाँपीमें पधरायकें घरमें जो वस्तुहती सो सव त्रणपर्यंत गाडाँमेंभरिकें श्रीगोकुलकों चलतो-कीयों ॥ तव सववैष्णवनकों वुलायकें कही॥जो या घरकोंवेचिकें दामकरिकें श्रीमहाप्रभुजीके यहाँ पोंहों-चायदीज़ो ॥ सो जा समय श्रीनवनीतप्रियाजी गाँ-

मसों विजयकीए तो समय गामकेवैष्णवनकों वडो खेदभयो ॥ सो कछुलिखिवेमेंआवेनाँहि ॥ पाछें संतदासजीनें सवनकोंधीरजवधाइदई॥ केतेक वैष्णव गजनधावनकों पोहोंचावनकों तथा आपकेदर्शनकों श्रीगोकुलआए॥जो वा मोहोल्लामें वहुतही सून्यकाल रहेगयो ॥जो स्वमार्गीय अन्यमार्गीय सवनकोंदुःख भयो ॥ ओर आप रात्रमेंकथाकहिरहेहते ॥ तासमय गजनधावननेंआयकें साष्टांगदंडवत्करी ॥ ओर विनतीकरी ॥ जो राज श्री नवनीतप्रियाजीपधारेहे॥ तव आपनें आज्ञाकरी ॥ जो अचानक केसें पधारे ॥तव गजनधावननें विनतीकरी ॥ जो राज श्रीनवनीतप्रियाजीकीआज्ञाभइहें ॥ तासोंमें पधरायलायोहूं ॥ सो तासमय शैयातोहतीनाँहि॥ सो आप श्रीअंगमें सोंधो लगायकें संग लेके पोढे, सो आप स्वरुपएकहीहें जो देखिवेमें दोयहें ॥ तातें यहाँ लौकिकप्रमानकों मनमेंनाँहिलावनों ॥ लौकिकमें यहवात घटेनांहि ॥अ-

लौकिकमें यह सबसिद्धिहैं ॥ दूसरेदिनाँ शैयाबनवाइ ॥सोशैया कछू छोटि भइ॥ तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें आज्ञा करी॥ जो यापें मोसो सोयो नाँहि जायगो॥ दूसरेदिना आप सोंधों लगायकें फेरि संगलेपोढे ॥ तिसरेदिनाँ बडी शैयाभइ॥ तब ता पर पोढायवेलागे॥ तब श्रीनवनीतप्रियाजीनेंआज्ञाकरी ॥ जो में तोतुमारेसंगहीपोढुंगो॥ तब आपनेआज्ञाकरी॥ जो लोकमर्यादाराखो ॥ अलौकिकमेंसंगहोहो फेरि कछूकदिन श्रीनवनीतप्रियाजी श्रीगोकुलविराजे फेरि अडेलपधारे ॥ तहाँ घरमें भीतरपधराए ॥ सो सबसमयमें गजनधावन मंदिरके किवाँरदेहरीनपर बेठेरहेते ॥ जब इनकोंदेखे तबभोजनकरे ॥ एसी श्रीनवनीतप्रियाजीकी पूरणकृपा गजनपें ॥ सो एकदोन राजभोग आयो ॥ सो गजनको श्रीअंक्काजीने पानलेवेकोपठायो ॥ सो गजनतो एसीरीतिसों थोरिसोदूरिपें जाय मूर्छाखायकेंगिरिपर्यो ॥ तब खबरि श्रीअंक्काजीकोभइ॥ सोतब

ओरमनुष्यपानलेवेकोपठाए ॥ सो मनुष्यपान लेकें-
आए ॥ सो वीडीबाँधिके भीतरभोगसरावनकोपधारे
॥ तब भीतरजायकेदेखे तो श्रीनवनीतप्रियाजी श्री-
हस्तखेंचिकेंविराजेहैं ॥ ओर आज्ञाकरी ॥ जो मेरो
गजनआवेगो॥तब में राजभोगआरोगुँगो॥ यह सुनीकें
दोयवैष्णव गजनधावनकों लेवेकोपठाए॥सो जायकें
गजनकेकाँनमेंकही ॥ जो तोकों श्रीनवनीतप्रियाजी
यादिकरेहैं ॥ सो तूँ जलदिचलि॥ तब इतनोसुनतही
गजन सावधाँनभयो ॥ आयकें मंदिरकेद्वारसोंवीन-
तीकरी॥जो राजमें आयोहुं॥आप सुखेन भोग आरो-

गजनकीदेह असक्ति भइ ॥ तब रात्रकोंसोयो ॥ तब जलकीप्यासबहुतलागी॥ सो श्रीनवनीतप्रियाजीअपनी झारिलेकेंभीतरमंदीरमें सोंआयकेंजलप्यायगये॥ सवारेभए चरणारविंदमेंप्राप्तिभए तासमय श्रीनवनीतप्रियाजीकों बडोश्रमभयो॥ तब श्रीमहाप्रभुजीनें श्रीनवनीतप्रियाजीकों धीरजबधायकें गजनको अलौकिकदेहदेके श्रीनवनीतप्रियाजीकेपास प्रवेशकरायो॥ सो सदाही अलौकिकदेहसों नित्यलीलामें प्राप्तिभए ॥ लौकिकदेहकोवैष्णवननेंमिलिकें अग्निसंस्कारकीयो ॥ पाछें केतेकदिनतांइ श्रीनवनीतप्रियाजीको मुखारविंदउदासरह्यो ॥ एसी श्रीनवनीतप्रियाजीकी गजनपर पूरणकृपाहती ॥ सो एसी गजनधावनकी अनंतवार्ताहे॥सो लिखिवेमें आवेनाहि॥प्रसंग संपूर्ण॥

१ आ श्रीनवनितप्रियाजी हाल श्रीजीद्वारमां श्रीमद् गोस्वामी तिलकायित श्रीगोविंदरायजी महाराजश्रीने माथे बिराजे छे.

ओरमनुष्यपानलेवेकोपठाए ॥ सो मनुष्यपान लेके-
आए ॥ सो वीडीबाँधिके भीतरभोगसरावनकोपधारे
॥ तव भीतरजायकेदेखे तो श्रीनवनीतप्रियाजी श्री-
हस्तखेंचिकेंविराजेहैं ॥ ओर आज्ञाकरी ॥ जो मेरो
गजनआवेगो॥तव में राजभोगआरोगुंगो॥ यह सुनीकें
दोयवैष्णव गजनधावनको लेवेकोंपठाए॥सो जायकें
गजनकेकाँनमेंकही ॥ जो तोकों श्रीनवनीतप्रियाजी
यादिकरेहैं ॥ सो तूँ जलदिचलि॥ तव इतनो सुनतही
गजन सावधाँनभयो ॥ आयकें मंदिरकेद्वारसोंवीन-
तीकरी॥जो राजमें आयोहुं॥आप सुखेन भोग आरो-
गो ॥ यहसुनिकें श्रीनवनीतप्रियाजी प्रसन्नतासों आ-
रोगिवेलागे ॥ आपनें श्रीमुखसो आज्ञाकरी ॥ जो तुँ
मेरेपासरहि॥कहुंजायमति॥ तो विना मोको ओर कछु
सुहायनाँहि ॥ एसीरीतिसों गजनभूतलपररहे ॥जहाँ-
ताँइ श्रीनवनीतप्रियाजीकों गजनकों एसीरीतिसो
प्रीतिप्याररह्यो सो कछुलिखिवेमें आवेनाँहि ॥ फेरि

गजनकीदेह असक्ति भइ ॥ तब रात्रकोंसोयो ॥ तब जलकोप्यासबहुतलागी॥ सो श्रीनवनीतप्रियाजीअपनी झारिलेकेंभीतरमंदीरमें सेंआयकेंजलप्यायगये॥ सवारेभए चरणारविंदमेंप्राप्तिभए तासमय श्रीनवनीतप्रियाजीकों वडोश्रमभयो॥ तब श्रीमहाप्रभुजीनें श्रीनवनीतप्रियाजीकों,धीरजबधायकें गजनको अलौकिकदेहदेके श्रीनवनीतप्रियाजीकेपास प्रवेशकरायो॥ सो सदाही अलौकिकदेहसें नित्यलीलामें प्राप्तिभए ॥ लौकिकदेहकोवैष्णवननेंमिलिकें अग्निसंस्कारकीयो ॥ पाछें केतेकदिनताँइ श्रीनवनीतप्रियाजीको मुखारविंदउदासरह्यो ॥ एसी श्रीनवनीतप्रियाजीकी गजनपर पूरणकृपाहती ॥ सो एसो गजनधावनकी अनंतवार्ताहे॥सो लिखिवेमें आवेंनाहि॥प्रसंग संपूर्ण॥

---
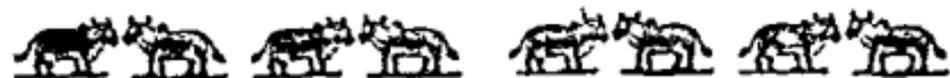
१ आ श्रीनवनितप्रियाजी हाल श्रीजीद्वारमा श्रीमद् गोस्वामी तिलकायित श्रीगोविंदरायजी महाराजश्रीने माथे विराजे छे.

श्री आचार्यजी महाप्रभुनकेसेवक कृष्णदासजी स्त्रीपुरुप तिनकी वार्ताको भाव.

सो वागाममें ए दोऊजनेरहेते ॥ ओरकोऊवैष्णवनॅाहि ॥ सो कृष्णदासजी अतिनिष्कंचन नित्यव्यावृत्ति करिलावे तासोंनिर्वाहकरे ॥ स्त्रीस्वरुपमेंवहुतसुंदर ओर पतिव्रता ओर भगवद्धर्ममें परमनिपुण॥ जो आध शेर अढाइपॅावचून ओर थोरिसीदारि ओर थोरोसोघी एराजभोगमेंधरे ॥ ओर सेनभोगमेंथोरीसीछोकीदारिधरि देई ॥ जो भीतरस्नेहवहुत ॥ सोदोऊजनेंअपनोस्वरुपछिपायके अपनोभगवद्धर्मकाहुकोजतावेनॅाहि ॥ एसीरीतिसो वागाममेंरहे ॥ जिनकेदर्शनकेप्रतापतें कोटिजनमकेपापदूरिहोयजाय ॥ सो एसेंपरमपुनीत दोऊ जने धर्मकेअर्थअपनो शीशदेवेकीजिनकेशंकानॅाहि ॥ परि वा गॅाममें कोइजाने नॅाहि ॥ एसेंरहेते ॥ सो एक वनीयावा गॅाममेरहे ॥ सो वाकेघीखांडदारि मेंदा एसोव्यापार वहुतचले शुद्धदेवी-

जीव तथापिभगवद्भक्तनकोसंगनहीं ॥ सो भक्तनको संगमिलेतो वाकीलौकिकबुद्धिदूरिहोयजाय ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीअपनेजीवकोंछोडेनाँहि ॥ सो वाकोअंतःकरणमेंप्रेरणाकराय वाकी स्त्रीकों लौकिकदृष्टिकरिकें लौकिकदानदेनो विचारे ॥ सो एकदीन कृष्णदासजीकीस्त्रीकोंदेखिकेंआसक्तभयो॥ यासोंयहकहे जो तूँ एकवार मेरेपासआवे तो जो तूँ माँगेसोदेउ ॥ याभाँतिसोंवाकोवापेंमनभयो॥ सो भीतर तोवाकीसत्ताअलौकिकहती ॥ उपरदेखिवेकोंनाट्यमात्र प्रभुननेंलौकिकबुद्धिदिखाइ ॥ सो वाकोंस्वरुपस्मृतिहती ॥ सो भगवद् भक्तनकेसंगतें स्वरुपज्ञानभयो ॥ ताकारणसोंआपने वाकोनामज्ञानचंद धर्यो ॥ सो एकदीन कृष्णदासजी व्यावृत्तिकोंगयेहते ॥ ओर कृष्णदासजीकीस्त्रीघरमेंअकेली हती ॥ तासमयन्हायकेंसामग्रीकरिरहीहती ॥ सो ताहीसमय चारिवैष्णवपाहुनेआये ॥ सो घरमें आयकें सवननें

जेश्रीकृष्णकरी ॥ सो यहसुनिकेंवाहिरआइ ॥ तब हाथ जोरिकेंकही ॥ जो आप विराजो ॥ जो वैष्णवनकों-बेठायकें आपभीतरकोठामेआइ ॥ आयकेंदेखे तो घरमें नित्यकेनिर्वाहलायक आधशेरअढाइपॉवचूनहे सो वडोहीदुःखभयो॥ओर जनमदूंगयों॥ जो हमारे-श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकेसेवक कृपाविचारिकें हमा-रोघरआजपॉवनकोयो सो मुट्ठीचनावी हमारेघरमें इनकेअगारिधरिवेकोनाँहिहे ॥ सो पतिघरआवेगो दे-खेगो तो नजानेवाकोकेसो दुःखहोयगो॥भीतरकेकों-ठामेंजायकें वहुतहीधिधायकें रोई ॥ जो पृथ्वीफटि-जाय तो में चलीजाऊं याजगतमें मोंहोडोकहादि-खाऊं ॥ एसोसंकटधरमको भारीमाथे आयकेंपर्यो ॥ सो नतोसामग्रीकरिसके न भीतरमंदोरसेवामेंजाय-सकें जो विचमेंधिधायकेंरोवे ॥ओर वहुतही दुःखभयो ॥ सो लिखिवेमेंकछूआवेनाँहि ॥ सो भीतरसों श्री-ठाकुरजीसोंदुःखसह्योनगयो ॥ सो जानो जों यह-

दुःख कहाँताँईकरेगी॥नतोहमकोंजगावेहें न सामग्री करेहें ॥ सो याकोसमाधानकर्योचहिए ॥ ओर जोद्रव्यचहिए तो में देऊं ॥ सोतोकछुइनकोचहियेनाहि ॥ वे एसेंनिष्कंचन हे ओर मेरीयारितिकीसेवाहे ॥ सो एप्रसन्नहें ॥ सो आजतोधरमसंकटपर्यो तातें आजकछुउपायआज्ञाकरिचहिए ॥ सो एअपनेनिमित्ततोनहिंलेइहें ॥ परन्तु वैष्णवनके समाधानकेलीए आज्ञा चहिए ॥ सो एसोसमयकवहु भयो नाँहिहे ॥ जो आजहींआयपर्योहे ॥ सो वाकेहृदयमेंआप विराजे ओर वाकोंसुधिकराई ॥ जो ओरतोउपायहेनाँहि॥परंतुएक वनियामोकोंनित्यटोकेहें॥सो आजअपनोशरीर गहेनेंधरिकेसामानलाँऊ तों अपनोधरमरहे, अगारि प्रभुमेरोव्रतराखेगें तो रहेगो आजक्रोपतिव्रतमेनेंवैष्णवनकेअर्थअरप्योहें ॥ एसोमनमेंआवतेही कछुकमनसेधीरजवाँध्यो उठीसो हाथपाँवमेंसतनाँहि जेसेतेसे वा वनियाकीदुकानपेंगइ ॥ तव वनियाने-

देखतेही वाको वहुतसत्कारकीयो ओरकही ॥ जो आजतुमनेवडीकृपाकरी ॥ जो तुममाँगो सों में देऊं तवस्त्रीनेकही जो आजरात्रकोमेंतुमारेपासआऊंगी सो मोकोकछुसामानचहिए ॥ सो तुमआजदेऊ ॥ तव वावनियानेटोकरा लायकेंधरिदीए ॥ चूनकोटोकरा, मेंदाको, बूराको, चोखाको, दारिको, सवनकेटोकरा-लायआगेधरिदीए ॥ ओर घीको चपटाहुधर्यो ॥ ओर कछुरोकरलेआयो ॥ जो तुँमकोंदामचहिए सोलेऊ सो भीतरकेप्रेरकतोप्रभु ॥ सो वैष्णवनकेलीए वैष्णवयहरीतिकरे ॥ सो ताकोधर्मसाँचो सोअगारिआपाचोकरिदिखायदेइगें ॥ तवयास्त्रीनेंकही जो इतने-सोंहमारोकामनाँहि हमकोंतो अढाइशेरचूनदेदे, अढाइ पावदारि, अढाइ पावबूरो, ओर अढाइ पावघी, ओरएकआना रोकदेदे ॥ लूण, मिरच, हींग, हवेज देदे ॥ तव वनियानेवहुतआग्रहकीयो ॥ जो तुं आज तोआइहें वहुतदिननसों ॥ सो इतनोसंकोचक्योंक-

रोहो॥ जो सामान चहिए सो मजुरनकेहाथ तुमारे घर पठाय देऊं॥ तब यानें सबकी नाँहि करी॥जो आजतो मेरे इतनोंही चहिए॥ अगारि कामपरेगोतो फेरि लेजाऊंगी॥ तब वा स्त्रीनें कही ता प्रमान सामानदीनों जो चारिपैसारोक, कछूलोंन, हवेजइतनोलेकें घरआई सो दोयपैसामें पानसुपारी काथोचूनोंसबलेकेंघरआइ॥सामग्रीसिद्धिकरी॥ ओंर आप स्त्रीपुरुषभोगधरते सो ठिकरादारि न्यारी करी जो आप ऊनकोसंसर्ग इनमेंनेकहूंनमिलायो॥ सो वाचूनकेहाथधोयकें वाचूनमेंलगायें॥ सो यारीतिसोंसामगीदोऊसिद्धि करी॥ पाछें श्रीठाकुरजीकोंजगाय मंगलभोग सिद्धि करी शृंगार करि राजभोग धर्यो॥सो दोऊ पोतनानमें अलग अलग सामग्री न्यारी न्यारी धरी॥ भोगधरि तुलसी समर्पि बाहिर आय किवाँरदे रसोइ पोतिवेलगी॥ इतनेमें वाकोपति॥ कृष्णदासजी व्यावृत्ति करि घर आए॥ सो घरमें

आवतही चारि वैष्णवननें उठिकें जेश्रीकृष्ण करी॥ ओर वडे आनंदसोंछातीसों छातीलगायकेंमिले, रोमाँचप्रेमांचहोयआए॥ सो वा समयहरखमेंकछूसुधिरहीनाँहि॥ फेरि घरमेंआए॥ तव यादिआई॥ जो वैष्णवनकोसमाधाँनमेंकहाकरुंगो॥ सो आवतहीं घरमेंगिरिपरे॥ ओरकही॥ जो हाय अवमेंकहाकरुं॥ सो स्त्रीनेभोतरसोदेंख्यो उनकोकायरपनों॥ सो दोरिकेवाहिरआइ॥ ओर समाधाँनकीयो॥ जो दुःख मतिकरो॥ जावातकोतुमदुःखकरोहो सोवातकोतो उपायपहेलेंहीहोयगयोहें॥ तव पूछी जो तेनेंकहा उपाय कीनोहे॥ तव कही॥ जो वावनीयामोकों नित्यटोकतहतो सो आजवनीयाकेयहाँ मेंनेअपनोंदेहगहेनेंधरि सामानलाय भोग धर्योहे॥ सो अगारि भगवद्इच्छाहोयगी॥सो देखी जायगी॥ यासमयतोप्रभुननेंधर्मराखीलीनोहे॥ एसें कहिकेंवहूतधीरज दिवाइ॥ ओरकही॥ जो उठोजलदी न्हाओ॥

वैष्णवबेठेहैं उनकोंन्हवाओ ॥ तब उठिकें श्रीमहाप्रभुजीकें चरणारविंदको ध्यानकरिकें देहकृत्यकरिकें न्हायो ॥। सो अपरसपहेरि तिलकमुद्राधरिकें वैष्णवनकेपासजाय हाथजोरिकेंविनतीकरी ॥ जो भाइजीउठो न्हाओ ॥ वैष्णवनकोंतेललगायो ॥ तातेजलतेंन्हवाए ॥ फेरि वैष्णव तिलकमुद्राकरि चारोंनकोंवेठाए ॥ ओर वहुतविनतीकरी कही जो आज श्रीमहाप्रभुजीकेसेवकनके दर्शनभए॥ सो आजअहोभाग्य हे ॥ सो नजानेंतुमकहा फलदेवेकों पधारेहो॥ तव इतनोंकहिकें भीतरजायकें भोगसरायो ॥ आरतिकरी दर्पणदीखायो ॥ तवपरमबधाइमानी ॥ सो वासमय श्रीठाकुरजीके दर्शनपरमानंदरुप प्रसन्नताके भए ॥ फेरि किवाँरमंगल करि वाहिर आए ॥ चारिपोतनाचारि वैष्णवनके करें ॥ फेरि चारोंपोतनानमें तो वा वनियाके यहाँकी सामग्रीलाइ सोधरी ॥ ओर अपनें पोतनामें जो नित्य व्यावृत्तिमें सो लावते सो

आवतही चारि वैष्णवननें उठिकें जेश्रीकृष्ण करी ॥ ओर वडे आनंदसोंछातीसों छातीलगायकेंमिले, रोमाँचप्रेमांचहोयआए ॥ सो वा समयहरखमेंकछूसुधिरहीनाँहि ॥ फेरि घरमेंआए ॥ तव यादिआई ॥ जो वैष्णवनकोसमाधाँनमेंकहाकरुंगो ॥ सो आवतहीं घरमेंगिरिपरे ॥ ओरकही ॥ जो हाय अवमेंकहाकरुं ॥ सो स्त्रीनेभोतरसोदेख्यो उनकोकायरपनों ॥ सो दोरिकेवाहिरआइ ॥ ओर समाधाँनकीयो ॥ जो दुःखमतिकरो ॥ जावातकोतुमदुःखकरोहो सोवातकोतो

घटाउठी आँधीआइ ॥ तव वैष्णवननेंविनतीकरी ॥ भाइजी अवतुमघर जाओ ॥ वरपाचढिआवेहें जो व-हुतवरसेगो ॥ हमतुमदोऊगेलमें रहेगें ॥ तो हमहुंम-जलपोहोंचेगेंनाँहि जो वीचमेंरहेगें ॥ सो हमतुमदो-ऊनकोश्रमहोयगो ॥ एसें समजायकेंघरविदाकीए ॥ वैष्णवतोवेगिमजलिपेंजाय पोहोंचे ॥ ओर कृष्णदा-सजीनेंजेसेंतेसें अपनोंगामलीयो ॥ फेरि वरपाहोन-लागी ॥ तव वहुतजल वरखिवेलाग्यो सो रात्रहेगइ सो जलथंभेनाँहि ॥ एसो जलवरप्यो ॥ तवकृष्णदा-सजीनेस्त्रीसोंकही ॥ जोतूँअपनो शरीरवेचिआइहें ॥ सो वनियासों अपनों धर्मराखो ॥ जो वाकोंतोप्राण-देनोंहुथोरोहें ॥ सों वासों तूँ वेगीजायकेंमिलि ॥ सो विचारतोवह करिरहीहति ॥ परंतु वहपतिव्रता ॥ सो विना पतिकी आज्ञा पाँव केसें धरे ॥ तातेंपतिके मु-

भोगधरिकेंधरी ॥ तव वैष्णवनकोंपरमप्रीतिसोंमहा-
प्रसादलीवायो॥वैष्णवप्रसादलेकें वहूतही प्रसन्नभए,
जलअचवायकें चारोनको चारिवीरादीए ॥ तापाछें
आज्ञामाँगि दोऊ स्त्रीपुरुषप्रसादलेनवेठें॥सो महा-
प्रसादमेंएसोस्वादभयो, जो उनवनीयानकेयहाँसों
आरोगे तासोअधिकोस्वादभयो ॥ फेरि प्रसादले कु-
ल्लाकरि वीरोले वाहिरआए ॥ फेरि वैष्णवनसोंभग-
वद्वार्ताकरिवेलागे॥तापाछें वैष्णवननें आज्ञामाँगी।
जोभाइजीआज्ञादेऊ तो हमजाय॥ तव इननेंरहिवेकी
विनतीकरी ॥तव उननेंकही॥ जो अवी तो हम नहीं
रहे ॥ हमारेंतो व्रजकों जरुर जानों हे॥ फेरिआवेगें
तव रहेगें॥ तव उनकों कृष्णदासजीथोरीसीदूरि पो-
होंचावनगए ॥ जो दोऊनकेस्नेहसों विछूयोंजाय-
नॉहि ॥ फेरिओरनेकअगारिपोहोंचावनगए ॥ फेरि

घटाउठी आंधीआइ ॥ तव वैष्णवननेंविनतीकरी ॥ भाइजी अवतुमघर जाओ ॥ वरषाचढिआवेहें जो वहुतवरसेगो ॥ हमतुमदोऊगेलमें रहेगें ॥ तो हमहुंमजलपोहोंचेगेंनॉहि जो वीचमेंरहेगें ॥ सो हमतुमदोऊनकोश्रमहोयगो ॥ एसें समजायकेंघरविदाकीए ॥ वैष्णवतोवेगिमजलिपेंजाय पोहोंचे ॥ ओर कृष्णदासजीनेंजेसेंतेसें अपनोगामलीयो ॥ फेरि वरषाहोनलागी ॥ तव वहुतजल वरखिवेलाग्यो सो रात्रहेगइ सो जलथंभेनॉहि ॥ एसो जलवरष्यो ॥ तवकृष्णदासजीनेस्त्रीसोंकही ॥ जोतूँअपनो शरीरवेचिआइहें ॥ सो वनियासो अपनो धर्मराखो ॥ जो वाकोतोप्राणदेनोंहुथोरोहें ॥ सों वासों तूँ वेगीजायकेंमिलि ॥ सो विचारतोवह करिरहीहति ॥ परंतु वहपतिव्रता ॥ सो विना पतिकी आज्ञा पाँव केसें धरे ॥ तातेंपतिके मुखसों कहेआइ ॥ तव विचार कीयो जो जेसेंवानें वैष्णवनकेलीएउत्तमसामग्रीदीनी ॥ सोतेसें तुं उत्तम

भोगधरिकेंधरी ॥ तव वैष्णवनकोंपरमप्रीतिसोंमहा-प्रसादलीवायो ॥ वैष्णवप्रसादलेकें वहूतही प्रसन्नभए, जलअचवायकें चारोनकों चारिवीरादीए ॥ तापाछें आज्ञामाँगि दोऊ स्त्रीपुरुषप्रसादलेनवेठें ॥ सो महा-प्रसादमेंएसोस्वादभयो, जो उनवनीयानकेयहाँसों आरोगे तासोंअधिकोस्वादभयो ॥ फेरि प्रसादले कु-ल्लाकरि वीरोले वाहिरआए ॥ फेरि वैष्णवनसोंभग-वद्वार्ताकरिवेलागे ॥ तापाछें वैष्णवननें आज्ञामाँगी। जोभाइजीआज्ञादेऊ तो हमजाय ॥ तव इननेंरहिवेकी विनतीकरी ॥ तव उननेंकही ॥ जो अवी तो हम नहीं रहे ॥ हमारें तो व्रजकों जरुर जानों हे ॥ फेरिआवेगें तव रहेगें ॥ तव उनकों कृष्णदासजीथोरीसीदूरि पो-होंचावनगए ॥ जो दोऊनकेस्नेहसों विछूर्योजाय-नाँहि ॥ फेरिओरनेकअगारिपोहोंचावनगए ॥ फेरि

घटाउठी आँधीआइ ॥ तब वैष्णवननेंविनतोकरी ॥ भाइजी अवतुमघर जाओ ॥ वरषाचढिआवेहें जो वहुतवरसेगो ॥ हमतुमदोऊगेलमें रहेगें ॥ तो हमहुंमजलपोहोंचेगेंनाँहि जो वीचमेंरहेगें ॥ सो हमतुमदोऊनकोश्रमहोयगो ॥ एसें समजायकेंघरविदाकीए ॥ वैष्णवतोवेगिमजलिपेंजाय पोहोंचे ॥ ओर कृष्णदासजीनेंजेसेंतेसें अपनोंगामलीयो ॥ फेरि वरषाहोनलागी ॥ तब वहुतजल वरखिवेलाग्यो सो रात्रहेगइ सो जलथंभेनाँहि ॥ एसो जलवरष्यो ॥ तवकृष्णदासजीनेस्त्रीसोंकही ॥ जोतूँअपनो शरीरवेचिआइहें ॥ सो वनियासों अपनों धर्मराखो ॥ जो वाकोंतोप्राणदेनोंहुथोरोहें ॥ सों वासों तूँ वेगीजायकेंमिलि ॥ सो विचारतोवह कररिहीहति ॥ परंतु वहपतिव्रता ॥ सो विना पतिकी आज्ञा पाँव केसें धरे ॥ तातेंपतिके मुखसों कहेवाइ ॥ तव विचार कीयो जो जेसेंवाने वैष्णवनकेलीएउत्तमसामग्रीदीनी ॥ सोतेसें तुँ उत्तम

सामग्री वनिकें उनकेपासजा ॥ वहतो अपनेंमुखसों वोलेनँाहि ॥ तव कृष्णदामजीनें अपनें हाथसों उवटनाकीयो पाँवनमेंमहावरलगायो ॥ काजरवेंदीवस्त्राभूषण सव अपनेहाथसों धराए ॥ सो इनकेमनमें विषयकीतोगंधवीनँाहि ॥ जो केवल इनदोऊननें सेवाउपकारको पीछो उपकारकरिवेकों दोऊ चले सोतव पतिनें कही जो जलवहुतवरसेहें ॥ तुमारेवस्त्र भीजेगें तो उनकोग्लानि आवेगी सो ठीकनँाहि ॥ तातें मेरे कंधाउपर वेठा वस्त्र ओढिकें ॥ जेसें तुमारोकछूविगरे नँाहि ॥ जो जेसें उननेसामग्रीउत्तमदीनी तेसें तुमहुं उत्तम वनिकें जाओ ॥ एसेंकहिकें वाको पति कंधापर चढायकें लेचल्यो ॥ तव वाकेद्वारपरजायकें पुकारी कही जो तुमारे पास में आइहो ॥ सो यह सुनतही एककांकनोजोरि एक जलको लोटा हाथमें ले आये ॥ जेसेंवानेंकिवँारखोलें, तेसेंभीतरगइ ॥ पति तुरत चल्यो गयो ॥ अपनोशरीर छिपायो। देखेतोकहे जो कोंनहें।

तासों किंवाँरखोलिकें भीतरगइ के आपभाजीगये ॥ फेरि वह लोटालायो ॥ तबकही जो तुँ पाँवधोइले जो तेरे पाँवकीचकेहेंगे ॥ तब वानेंकही जो मेरेपाँव कीचकेनाँहि हें जो मेरेपाँवसूखे हें सोयह कांकनोले- केंदेखे तो पांवसूखे हें ॥ ओर शरिरमेंकोइ जलकीबूं- दहुंनआइ ॥ जो सूकोआइ ॥ तब वानेंकही जो तुं उडिकेंकेसेंआइ॥ एसोजलबरसे हेसो तेरेबूंदहूंनलागी यहबडोआश्चर्यहे॥ सो तातेंतुंकही॥ सो तातें काम- केवसवहवनीयांहोतो तो पूछतोनांहि ॥ जो भीतर- सों शुद्धदेवीजीव फेरिवाने भगवदीयकेपांवपरसकीए सो पांवपरसतेही वाको कल्यानहेगयो ॥ सो काहेते जो वहस्त्री विषयनीहोती ॥ तो वाकोविषयहोतो॥ जो वाकीआंखिनमेंतो श्रीनाथजीविराजे॥ जो वाकी- देहगुणातीत सो एसेंपूर्णभगवदीयकेसंगते याकोभ- गवद्भावउत्पन्नभयो ॥ फेरि वारवारपूछे जो बताव तुं कोन कारनसों सूखिआइ ॥ तब वानेंकही ॥ जो

इन वातनकों पुछि के तुं कहाकरेगो जो तुं तेरोकार्यकरि ॥ तोवीएमानेंनांहि हठपरचढि गयो ॥ पाछें जानी जो ए कहे विना मानेगो नांहि ॥ सो वाको अतिहित विचारिकें कहिवेलागी॥ जो मेरो धनी कांधेपर चढायकें यहां धरि गयोहें ॥ तवकही जो तेरे धनीकोंएसीकहावातसूझी जो अपनीस्त्रीपराएपुरुपके पास करनआयो ॥ तव स्त्रीनें कही जो तू येवातमति पुछे ॥ तव वा वनीयानेकही तुसवसांचीवातकहे ॥ तव वानेंकही जो देखि हमारेगुरुभाईचारि श्रीमहाप्रभुजीके सेवकआए हते ॥ सो हमारे घरमें सेरचून हतो ॥ सो अवमेंकहा करुं ॥ सो वहुतदुःखभयो ॥ तव तुमारीवातयादीआई॥ जो तुमनित्यटोकते ॥ सो यहदेहगहेनेंधरि तुमारेसोंसामान लेगई ॥ सो तुमनें एसोहमारोंउपकारकीयो हे जो एसी सो देह वनायकेंतुमारे अगारिधरे तोऊतुमारोरिणहमसोंऊतरेनांहि। एसोएतुमारोऊपकारहें॥ सो इतनोंजनतही घिघायकें

चरणारविंदमेंगिरिपर्यो ॥ ओर रोयवेलाग्यो ॥ ओर-
कही जो तूं धन्यहे, ओर तुमारेपतिहुधन्यहे, ओर तु-
मारे मातापिताकोहुधन्यहे॥ सो जीनके कूलमें एसी
कन्याभइ ॥ ओर मोकोधिक्कारहें ओर मेरेजनमको
धिक्कारहे सो मेंनेतुमारे उपर दोषबुद्धिदेखी ॥ सो हा-
थजोरि ठाडोभयो ॥ओर कही॥ जो माताजी मेरी
भूलपरी अव क्षमाकरो॥तव वानेंकही॥एसोकायरक्यों-
होयहे ॥ तव वानें कही॥ जो में देह राखुंगोनांहि॥
मेंनेएसोअनुचित अपराधकीयो॥ तव वास्त्रीनेंधीरज-
वधायकेंकही ॥ जोतुं मोकोमतिकहे, मेरेपतिकेपास-
चलि, ऊनसोकही ॥ तेरोसवकारज वनिजायगो ॥
तव थाकोधीरजआइ ॥ ओरकही ॥ जो माताजी
जेसेंतेरोपतिलायो तेसेंमेरेकंधापरचढि ॥ तव
वानेवहुतेरीनांहिकरी ॥ तोऊमानेनांहि पांव पकरि
लिए ओर रोवेहोरोवे ॥ सो जेसेंपतिनेकंधापर चढाई
तेसेंही कंधापर चढायके कंमरऊढाय घरपोहोंचावन

आयो तव वह स्त्रीपुकारी ॥ जो तूम किंवारखोलो ॥ तव कृष्णदासजीनेमनमें जानी ॥ जो अवही केसें चलिआई ॥ सो कृष्णदासजी अपनी स्त्रीकोंदेखिके खिजीवेलागे ॥ तव स्त्रीनें कही जो मोसोंक्योंखोजोहों कहेनोहोय सो यावनियासोंकहो ॥ तव वनियातो सुनतहीगिरि पर्यो ॥ ओर वहुतही रोयो ॥ ओर भुंमिसों नाक घिसे ओर वेरवेर में कहे जो में तुमारो रोमरोमको अपरोधीहों ॥ तव कृष्णदासकों देखिकें दया आई, सो विचारी, जो अव याको कार्य प्रभुनेंसिद्ध करनो विचार्योहें ॥ तव कही ॥ जो अवतो यासमयरात्रहे सो अवतो घरजाओ॥ सवारें आयमिलियो ॥ तव वनियाने विनती करी ॥ जो आयप्रसन्नता सोंघरपठावो तो घरजाऊं॥ नातर तूमारे द्वारपरपर्योरहूंगो ॥ मोकोंतो तुम विना त्रीलोमें ठिकानोंनाँहिहे ॥ फेरि कृष्णदासजीने वाको वहूत भांति समाधान करि घरपठायो॥ सो घरतोचल्यो ॥ परन्तु

चेरचेरमें याकेमनमें एसी ऊठी भीतरसों हिलोर जो मेरोअपराधक्षमा करि अपनोदासकरें ॥ एसें विचारत विचारत घरपोहोंच्यो ॥ सो रात्रमें नींदपरी नाँहि ॥ स्त्रीपुरुषदोऊनकोविचारत ॥ फेरि जेसेंतेसेंसवेरोभयो ॥ सो नइवुहारिबांधिकें ऊनकेघर वुहारि करिवेलाग्यो तब कृष्णदासजी देखें तो वुहारि करी रह्योहें ॥ तब कृपाकरि भीतर वुलायकें वेठायो ॥ ओर कही जों वुहारी पीछेंकरियो ॥ यहाँवेठिजा सो स्त्रीपुरुषसेवामें न्हाए ॥ श्रीठाकोरजीकों जगाय मंगल भोग धरे॥ मंगला भोगसराय वावनियाको श्रीठाकुरजीके दर्शन करवाए ॥ सो दर्शन करिकें कृत्यकृत्यहे गयो ॥ फेरि विनती करी ॥ जोमोकों अपनोदास करिकें टहलमें राखो ॥ तब कही ॥ जो तुमारेहमारेस्वामी श्रीमहाप्रभुजीहें ॥ सोकछूदिनमें आप पधारेगें ॥ तुमकोंसेवककरावेंगें ॥ तब तुमारोशरीर चित्तसेवा योग्यहोयगो ॥ तब कृष्णदासजीनें धीरज वधाईकें विश्वासराखि,

जो प्रभु तुमारो कार्यसवसिद्धि करेंगे ॥ऐसें समाधान करिकें घर पठायो ॥ तादीनसो वहवनीया नित्य इनके घर आवे ॥ सो नित्यदीनता वीनतीकरे ॥ जो मोकों आपके दर्शन करावो ॥ सो भक्त आर्तिदूरि करिवेको आपकोनामहैं ॥ सो नामप्रसिद्धि करिवेको फलदेवेकों ईच्छा विचारी ॥ तव कछूकदिनमें आप अडेलसोविजय कीए॥सोतव कृष्णदासजीके गाममें पधारे ॥ सो वधैयाने कृष्णदासजीको वधाई दीनी तव कृष्णदासजी सुनिके वाहीसमय वस्त्रपहेरिकें वावनीयाके पास गए ॥ जायके कही॥ जो चलो श्रीमहाप्रभुजी पधारे हें ॥ वधैयाआयोहे सो वनीयासुनतही वस्त्र पहेरिकें दुकान वंद करवायके मेलके दसवीस वनीयानकोसंगलेकें श्रीफलभेट लेके कृष्णदासजीकेसंग चल्यो ओर सवसंगवारेनसोकही जो अपने

॥ ओरवे वनीया तो वहूत दीनता करी चरणारविंदमें गिरिपयों ॥ सो आँसूनकी धारा नेत्रमेंसोंचले ॥ ओर वेरवेर दंडवत् करे ॥ तव आपने हँसीकें कृष्णदासजी-सोंपूछी ॥ जो ए कोनहे ॥ तव कृष्णदासजीने वाव-नीयाकीसवविवस्थाकही ॥ ओर वीनती करी ॥ जो राज इनकोंनामसुनावो ॥ तव आपकृपा करिकें नाम सुनाए ॥ ओर केतेकदैवी जीवहते सो शरणआए ॥ तव आप वावनीयाको नाम ज्ञानचंद धरे॥फेरि आ-पकों गावतेवजावते गाममें पधरायलाए॥ सो वनीया-तो दर्शनकरतेही परमकृतार्थहे गयो ॥ सो वार वार कृष्णदासजीकोस्त्रीको वडाई करे॥जो धन्यमाताजी धन्यमाताजी ॥ सो वानें वा समय एकदोहाकह्यो॥

हीन दीन साधन रहित, पायो पद निर्वाण॥
श्री वल्लभके वाजिके, वाजत गए निजान॥

फेरि वा वनीयाकों आपने नीवेदन करायो ॥सो जि-तने दिन आप वा गाममें विराजे सो तीतने दिन त-

पेलीकोखर्च तथा ओरहुंत्रनपर्यंत सव वावनीयानें पहों-
चायो ओर वहुत सो द्रव्य भेट कीयो ॥ ओर कीत-
नेक जीव शरण आए॥ फेरि अगारी आप श्रीद्वारि-
कांजी पधारे ॥ फेरि वह वनीया ओर कृष्णदासजो
आपके संग एक मजलतॉई पधरावनगए॥ फेरि उनकी
इच्छा एसी हती ॥ जो द्वारिकांतॉइजाय ॥ तव आपनें
नॉहिकरी ॥ सो रुकिगए ॥ फेरि आपने दोऊनकोवि-
दाकीयो॥सो यासमय चरणाविंदकोविरह दोऊनको
कह्यो नॉहिजाय ॥ जेसेंतेसें विदाहोयकें घर आए ॥
ओर वनीया अपनी दुकानको काम सव दीनमें करे॥
रात्रमें कृष्णदासजीको सतसंग करे॥ सो नित्य आपके
स्वरुपकी लीला वार्ता सव पूछे॥ सो कृष्णदासजी कृपा
करिकें नित्यवाको कथामृत प्यावे ॥ वचनामृतसों
प्रेमाँच होय रोमाँच होय आवे ॥ सो शरीरको सुधि
रहे नॉहि ॥ कृष्णदासजीनें एसी कृपा करो ॥ सो
वनीया पूर्ण भगवदीय होय गयो॥ओर नित्यविनती

करे॥ जो सामान चहिए सो लाऊं जो ईतनो संकोच क्यों करोहों ॥ जो मोकों अपनो जानो ॥ मेरो अँगिकार करो॥ तव कृष्णदासजीने कही॥ जो नित्यको कामतो हमारो चल्यो जाय हें॥ जा दीन कोई वैष्णव आवेगें ॥ तादीन तुमारी सत्ता अँगिकार होयगी ॥ सो वनीया कृष्णदासजीके कृपा भावमें जहाँ ताँई जीयो ॥ तहाँ ताँई नित्य आयो ॥ तातें संग करनो तो भगवदी वैष्णवको करनो॥ जो पूरण होय तो ओर कोपूरण करि देय तातें भगवदीनके संगको एसो महान् फलहें ॥ सो प्रभु परम कृपा करे तव भगवदीयनको संग मिले ॥ तातें साधारण वनीयाहतो सो ताकोताद्रशफल कृष्णदासजीनें दिखायो ॥ तातें कृष्णदासजी, इनकीस्त्री तथा वनीयाकी वार्ता अपारहे ॥ सो कछूकआपकी कृपासों भावप्रकाशलिख्योहे सो ईनकी वार्ता कहाँताँइ लिखिए ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक श्यामदास सुतारकी वार्ताको भाव

श्यामदास सूतारके पिताके संतति न हती ॥ सो वेमकरके महिनामें त्रवेणी स्नान करते ओर पूजा करते ॥ सो ऊहाँ रात्रमें सोए ॥ सो आज्ञा भइ जो तुम आजपीछें हर्यो व्रक्षमति काटियों ॥ जो कोऊ सूखो व्रक्ष मिले तासों निर्वाह करियो॥ ओर तुमारे गाममें श्रीयमुनाजी बिराजेहें तिनको पूजन नित्य करियो ॥ तातें तुमारे भगवदीय पुत्र होयगो ॥ यह आज्ञा भइ ॥ पाछें इननें अपने घर आयकें जन्मताँइ हर्यो व्रक्षनहीं काट्यो॥ ओर श्रीयमुनाजीको पूजन करन लाग्यो॥तापाछें थोरेसे दीनमें श्यामदासजीको, जन्म भयो ॥ सो जन्मतहीं रोयोनँाहि वहूतहस्यो॥ मातापिता ओर ज्ञातिके लोगननेंदेखिकें वडो आश्चर्य मान्यो॥सो इनकों वाहीसमय श्रीईल्लंमागारुजीकी गोदमें खेलेहें एसो श्रीमहाप्रभुजीको दर्शन होयवे-

लाग्यो ॥ सो श्रीमहाप्रभुजीके प्रागट्यके छेमहीना पीछें श्यामदासजीको जन्म भयो ॥ सो आपकेदर्शन करत जाय ओर हसत जाय ॥ फेरि वे वडेभये ॥ सो कोइकोइ दीन श्रीमहाप्रभुजीको दर्शन होय ॥ सो ताहीसमयप्राण हरेहेआवे ॥ जो श्यामदासजी केवलस्नेहके पूतला प्रगटभए ॥ सो आपके स्वरुपमें बालपनेंसोंही संपूर्ण सर्वात्म भाव सिद्धिहे गयो हे ॥ नींदमें सोवे ओर जाने जो आप पधारेहें ॥ सो आप कृपा करिकें स्नेह रीतीसों दर्शन देते ॥ सो यह श्यामदासजीसों कोई सकामसों स्नेह भयों नाँहि ॥ जो एंतो केवल सहज स्नेहो हे ॥ जो श्री महाप्रभुजीके जो स्नेहहें अलौकिक सो वा स्नेहकों विलसिवेकी इच्छा भई सोई स्नेहको अवतार श्यामदासजी भए ॥ सो एसें भगवदीयके कारणसोंही आपनें अडेलकों सनाथ करी ॥ तादीनसों श्रीईल्लंमागारुजी तथा आप अडेल वास कीयो ॥ श्यामदासजीकों दर्शन करतें

स्वरुपासक्ति हेगई ॥ सकुटुंब शरण आए ॥ सों एतो जादीनसो आपको दर्शन भयो, सो तादीनसों लौकिककार्य सब छोडि दीयो ॥ सो जा समय आपजागे ॥ ता समय दर्शनकों आवे ॥ सो दर्शन करते करतें एकटकव्हेजाय ऊहाँसोंहटेनाँहि ॥ ओर आपहूंक्षन क्षनकों मंदहास्यपूर्वक चितवे ॥ सो रोंमरोंम रससों भरि जाय ॥ सो आपको लावण्यामृत, हास्यामृत, अधरामृत, तीन्योंनको यह पान करिकरिकें आपमय होय जाय ॥ फेरि देहकी सुधिहु रहे नाँहि ॥ एसें-नित्यप्रति दोऊआडीसों एकरस होय रहेहें ॥ सो इनके घरके उद्यम विना दुःख पायवेलगें ॥ ओर एतो-आपको द्वार छोडे नाँहि ॥ जो आपके दर्शन होई तहाँताँइतो एकटकव्हेजाय॥ ओर जब आपकी पोरिके किवाँर लगी जाय ॥ तबऊहाँई निरास प्राणकीनांई परिजाय॥फेरि ऊनके घरके लोग आवे॥सोंघरलेजाय ॥ सो ऊनको घरमें कहा ठीक चित्त लगे ॥ जो वैष्णव

सब उनको ठीक राखे ॥ ओर रजोवाई इनको वहूत सन्मान करे ॥ भुख प्यासको वहूत खबरि राखे ॥ फेरि इनके घरके आयकें श्रीईछंमागारुजीसों वहूत वीनती करें ॥ जो महाराज मेरो लरका है सो रात्रदीन-आपके पुत्रको दर्शन कर्योंही करेहें ॥ जो हमारे घरमें ऊद्यम नहीं करेहें ॥ ओर ऊनको लरिकीऽ्याहीहें ॥ सीं वहूत दुःखपावेहें ॥ सो महाराज आप अपने पुत्रसों कहो तो समझायकें घर पठावें ॥ तब हमारीगृहस्ताई चले ॥ तब श्रीईछंमागारुजीनें इनकी सब वात समझायकें कही तब श्रीमहाप्रभुजीने आज्ञा करी ॥ जो हम वाकों बुलावन तो जाय नांहि ॥ ओर दर्शनको आवें सो ताको वंदोवस्त तुम करो ॥ फेरि श्रीईछंमा गारुजीनें सब वैष्णवनसों कही जो वाकों समझाय देउ ॥ जो दर्शनकरिकें चल्यो जाय ॥ यहाँ रहे नाँहि ॥ तब वैष्णवननें आपसों विनती करी ॥ जो याके घरकेनमें यामेंचवाउ होय रह्योहें ॥ सो हमारी तो

वेमानें नहीहें॥ तासों आप वचनामृतसों आज्ञा करो तो वह मानेगो॥ तव आपने आज्ञा करी॥ जो इनकों हमारे पास भीतर वुलाय लावो॥ सों आपने सन्मुख वेठायकें आपने वाकी आसक्ति अँगिकार करी॥ तव आपने वासों आज्ञा करो॥ जो तूँ घरजा॥ अव तेरे घर हम पधारेंगे तोकों ऊँहाइ दर्शन देइगें॥ एवचनामृत सुनीकें वाही समय अपने घरकों गयो॥ सो घरमें चित्त तो वाको लगे नाँहि॥ जो कछुकोकछु करिवे लगि जाय जो चित्ततो आपके स्वरुपके पासहें ओर देह घरमें आय पर्योहें॥ सो घरकेननेंयही हरख मान्यो जो घरमें आयो तो सही जोओर कछू मति करी॥ हमारे घरमें रहे आवे तो सव भरि पाँवेगें॥ ओर सव वैष्णव घरकी ठीक राखे॥ ओर श्रीमहाप्रभुजी इनके घर पधारें॥ सो जेसेंपहेलें आपके दर्शन यह करतो सो तेसें अव आप इनकों देखिवेलगिगए सो दोमुहूर्त्ततांई आप इनके घरमें विराजे रहें॥

सो एसें परस्पर आसक्ति दिखाई ॥ एसें आप नित्य ऊहाँ जाये विना चले नाँहि॥जो घर पधारें सो आप-वाकों क्षन क्षन सुमिरण कोयो करें ॥ ओर वैष्णव-वनकों पठावें जो देखो श्यामदास कहा करेहें ॥ एसें वेरवेरमें खवरि मँगावें यह बात श्रीईह्लंमागारुजीकों असह्य लागें जो आपकों एसें नाँहि चाहिए ॥ जो आप इनके घर वेरवेर पधारो हो ॥ सो तव आपनेश्री-ईह्लंमागारुजीसों कह्यो ॥ जो अवएसें करेंगे नाँहि ॥ सो आपने मैयाको आज्ञासों ईतनो कारण माँन्यो ॥ जो एकदीन आपवाके घर पधारें ॥ एकदीन आपके यहां वह रह्यो आवे॥एसें उलटापलटी होय वेलागी॥ एक दीन आपनें एकांतमें वुलायो॥ओर आपने विचा-री॥जो अवयहरीतिहें रस संवंधी॥सो यामेंलोकचवा-ऊहें ॥ सो न राखनी ॥ सो आपवाकों एकातमें वु-लायके आपआपनेनीज अधरामृत अपने मुखमेंसों वा-केमुखमेंप्यायदीए। सो वाद्वाराकेवलआपकोरसरुपस्व-

रुप वाकेहृदयमेंजायविराज्यो॥ सो वाहिरकीआसक्ति अंतरस्वरुपमेंहेगई ॥ सो वाहीसमयआज्ञाकीनी ॥ जो तेने मेरे चरणारविंदमेंआसक्तिकीनी॥ सो मेनें तुमकों महान् फलकोदाँनदोयो ॥ जो अवहमतोकोंआज्ञा-करे ॥ सो तारीतिसोंचल्योकरि॥ जो मेनेतुमकोंदाँ-नदीयो ॥ सो आजतॉई याकालमेंदीयोनाँहि ॥ पहेले यह दाँन व्रजभक्तनकों दीयो ॥ एवचनामृतसुनीकें रोंमरोंममें परमानंद भरिगयो॥ फेरि आपनेंश्रीमुख-सोंआज्ञाकरी ॥ जो तुं मेरे स्नेहकोअवतारहे ॥ सो यह प्रसंगको अनुभव श्रीदामोदरदासजीको, श्रीअं-क्काजीकों, रजोकों तीन्योंजनेनकोभयो ॥ सो श्री-गुसाँईजीने सर्वोत्तमजीमें इनको नाम लिख्योहें "दास दासीप्रियः पतिः" सो प्रसंग यहाँ साक्षात् प्रगटकरिदीखायो ॥ सो ईनचारोनकों एकभावको-वर्णनहें॥ जो श्रीमहाप्रभुजीकीसहचरी रजोही॥ श्री-[illegible]मोदरदासजीकी सहचरी श्यामदास ॥ विशेषखो-

लिकें रसकी वात लिखिनजाय ॥ सो यावातकेरसी-याजोहोयँगे ॥सो जानीजायँगे ॥ तादीनसों श्याम-दासजी जेसें ओरवैष्णवचरणपरस करिजाते तेसें येहूँ चरणपरस करी जाते॥ओर ग्रहको कार्य करिवे लागे॥ सो ग्रहको कारज कहा जो वैष्णवनकी सेवा संवंधी टहल जेकोई पट्टा, चोकी, सिज्या, पलना, हिंडोरा, ए सिद्धि करी देय ॥ ओर काहुसों अपनी मेहेनत-लेयनाँहीं ॥ ओर ता दीनसें रजोवाई प्रसाद अपने घरलीवावती ॥ ओर याके घरकी सव वैष्णव संभार राखते॥ जो आपके विराजीवेकोपट्टा[१] आपके चरणा-रविंदकीखडाउं अवताँई विद्यमानदर्शनदेयहें ॥आप-की सिज्या, हिंडोराखाट, श्यामदासजीके हाथकी सो तापर आप पोढते ॥ तथा विराजते ॥ भीतर श्री-महालक्ष्मीजीके विराजिवेकोपट्टा, चोकी, भोजनके-पट्टा, वगेरे सव श्यामदासजीके हाथकें अँगिकारहोते

१. आश्यामदासजीनो वनावेलो पाटलो तथा खडाऊं-पादुकाजी प श्रीजीद्वारमां विराजे छे.

॥ सो याको अँगिकारतो रात्रदीना चरणारविंदमें रह्यो आवे ॥ सो सिज्यारुप ए पट्टारुप॥ सो आपको ओर श्यामदासको संबंध कछू वर्ननमें नहीं आवे ॥ फेरिआपनें चोथेआश्रमकी ईच्छा विचारी ॥ सो काशी पधारे ॥ जो उतमें तोआपको पधारनों ॥ ईतमें ईनके प्राणनिकसोगए॥ सो आपको स्नेहात्मकस्वरुप श्यादासजीहते ॥ सो आपके लीलात्मक स्वरुपमें प्राप्ति भए॥ सो यहवात दोरिकें वैष्णवननें आपसों विनती करी ॥ सो आप सुनीकें एक मूहुर्तलों श्यामदासजीके वियोगको स्वरुप दीखायो ॥ तव सव वैष्णवनकों वडो पश्चाताप देखिकें जो हाय हमने श्यामदासजीकीवात क्यों करी॥ पाछें एकमुहुर्तपाछें आपने वैष्णवनसों आज्ञा करी॥ जो उनकों एसी चहिए॥ जो उनविना हम नाँहि॥ हम विनावेनाँहि ॥ सो एसें वहुत प्रकारसों उनकी प्रशंसाकीनी ॥ ओर उनकों ओढायोपट्टा तापरश्रीमहाप्रभुजी विराजे सो पट्टा ओर

खडामूँ श्रीगुसाँइजीने न्यारोमंदिरकरीके पधराए ॥ सो आपकी परोक्ष दीशामें श्रीगुसाँइजीनें आपको स्वरुपकरि पट्टा ओर श्रीपादुकाजीको सेवनकीयो ॥ सो एसोसेवासंबंध श्यामदासजीको आपने अँगिकार कीयो ॥ तातें ए भगवदी नित्य आपके पास विराजे हें ॥ एसी एसी श्यामदासजीकी अनंत वार्ता हें ॥ सो लिखिवेमें आवे नाँहि ॥ सो कहाँताँई लिखिए॥ ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

श्रीगुसाँइजीके सेवक वाघाजी रजपूत तिनकी वार्ताको भाव

एकवार श्रीगुसाँइजी परदेश पधारे हते ॥ सो वाघाजीके गाममें डेराभए॥ सो ऊहाँके वैष्णव आपको गाँमतेवजावते पधरायलाए ॥ सो वाघाजी राजद्वारतें आवत हते ॥ सो मारगमें आपके दर्शन भए ॥आपकेसंग जहाँआपके डेराहते, तहाँताँईगए॥ ऊहाँजायकें हाथजोरिके दूरिठाडे भए ॥ भीतरसों

चित्त वहुत अकुलावे ॥ जो कोईरोतिसों आपके चरणारविंदके पास पोहोंचे ॥ सो आर्तिसाँचिहती॥ सो वाघाजोकी आर्ति आपसेंासहो नगई ॥ वाहो समय आपनें एक वैष्णवसों आज्ञाकरी ॥ जो ए वाघाजो रजपूत यहाँ ठाडेहैं इनकों यहाँ लावो ॥ सो वाहोसमय वैष्णव वाघाजीपास गयो ॥ ओरकही जो वाघाजी रजपूत तुमहोहो॥ सो सुनतेंही आनंद ऊमग्यो जो जामाकीतनीसवटूटोगई ढालतरवारके वंदआपहोढटिगए ॥ तव ए जायकें आपके चरणारविंदमेंगिरिपरे ॥ शरीरकी सुधि नरही ॥ फेरि आपने श्रीहस्त माँथेपर धरिकें सावधान कीयो नेत्रनमेंसों आँसूनकी धारावही जाय, मोंहोडेसोंवोलआवेँनाहि तव आपने श्रीमुखसों आज्ञा करी ॥ जो वाघाजी सावधान होयजाओ ॥ सो वचनामृत सुनीकें हृदय सीतलभयो ॥ ओर वीनती करो जो मोकों आपनो दासकरो ॥ सो वाहो समय आपने नामसुनायो ॥

फेरिवीनतीकरी ॥ जो राजमेरीस्त्रीकों लेआऊं ॥ तब आपने आज्ञा करी जो तूमनें सवारेसों कछूखायो नाहि है॥ तब दोऊननें कही॥जो महाराज सवारेसोंजलपर्यंतलीयोनहीहें॥ तब आप कृपाकरिकें दोऊनकों निवेदन करवायो ॥ स्त्रीहूपतिव्रताही सो ब्रह्म संबंधहोतेही दोऊनको अलौकिक बुद्धिव्हेगई ॥ फेरि विनती करी ॥ जो राज हमकों कहा आज्ञाहें ॥ तब आपनें आज्ञा करी जो तुम क्षत्रीनको खानपान करो नांहि तो तुमकों वैष्ण धर्म आज्ञाकरें ॥ तब दोऊनने बीनती करी जो पहेलें भई सो आजपाछे वा वस्तुकोगध बीनलेईगें॥ तापाछें आपने आज्ञाकरी ॥ जो श्रीठाकुरजीकी सेवा दोऊ स्त्रीपुरुष मिलिकेंकरो ॥ वानें कहीजो राज मेरेंराजाकी चाकरीहें सो ताको में गांमपाऊहूं ओर जमीनहें ॥ सो केसें करं

द्वारमें जायो करो ॥ राजभोगतुमारीस्त्रीधरेगी ॥ एक
दोय वैष्णवनकों नित्यमहाप्रसादलीवाईयो ॥ तासों
प्रभुसुखसों आरोगे ॥ पाछें एकदोयदीनमें आपतो
श्रीगोकुलपधारे ॥ फेरि स्त्रीपुरुषपरमप्रेमसों श्रीठाकु
रजीकी सेवा करनलागे ॥ सो नित्य नये दो वैष्णव
नकों प्रसादलीवावे ॥ जो वडे स्नेह सों घरमेंन्हवावे
पास अंगीठीधरे ॥ गरमीके दीननमें सीतल समग्र
प्रभुनको आरोगावते, वैष्णवनको लीवावते, पंखा
करते ॥ सो ईनके सेव्य श्रीठाकुरजी साक्षात् अ
भवजतावते ॥ एक दीन वह रसोई करतहती ॥ अ
वाघाजी शृंगार करतहत्ते ॥ तासमय राजके यहाँ
चोपदार आयो ॥ सो कही जो राजाकी सवारीव
तैयारीहे वेगेआईयो ॥ तव वाघाजी शृंगारकरी च
णपरसकरी वाहिर आये तव स्त्रीसोंकही जो वैष्ण
वेठोहे ॥ ताकों तेल लगाय, न्हवाय, अपरसपेहरा
महाप्रसादलीवाईयो ॥ जो में राजद्वारजातहों ॥

राजभोग तुम धरियो ॥ ईतनो कहीकें घोडासवार होयकें वाघाजी तो सवारीमें चले ॥ तापाछें स्रोनें राजभोग धर्यो ॥ वालभोगमें तवापुरी, शाक, सँधानो, दही कछूथोरोसोघी ईतनोधर्यो ॥ वाहिर आयकें रसोई पोतिवे लागी ॥ ओर तवापुरीकेसंग घोथोरोसोधर्यो ॥ सो श्री ठाकुरजीनें वाघाजीसो ऊहॉ सवारीमेंजताई ॥ जो तवापुरीकेसंग घीथोरोसो धर्योहे ॥ सो मेरो ता गरो खरखरायहें ॥ सो तूं आयके घीधरे तो में तवापुरीआरोगुं ॥ ईतनोसुनतही घोडा असवारीमेंसों निकासिकें घोडाभजायो ॥ सो वेगीघरआय पोहोच्यो ॥ घीकोवटेराधर्यो ॥ ओर मंदीरकोटेरासरकायो ॥ देखें तो श्री ठाकुरजीकेश्रीहस्तमें पुरीहे ओर आरोगे नॉहिहे ॥ सो ईननें झटवटेराघीको धर्यो ॥ वाही बटेरामें पूरीवोरिकें श्रीठाकुरजी आरोगिवे लागे ॥ सो ईतनों वासमय श्रीठाकुरजीकी वात्सल्यतामें कपडा पेहेरिवेकी सुधि न रहो ॥ वे-

सैंही घोडापर चढि असवारीमें चलेगए ॥ सो ता समयवह वैष्णववेठो हतो ॥ तानेंएसव वात देखी ॥ वाकेमनमें लौकिक दोष बुद्धि आई ॥ सो तव वाही समय अपने घर चल्यो गयो ॥ ओर जायकें अपनी स्त्रीसो कही ॥ जो मेरे आगें वाघाजी विनान्हाए जोडा पेहेरे घी धरिकें चल्योगयो ॥ एसें अनाचारमें अपनेसोतोप्रसाद लीयो न जाय ॥ जो आजतो मेनें आँखिनसो देख्यो॥ जो सदाजाने केसे करते होयँगे॥ सो मेंतो आज पाछें प्रसादईनकेघर न लेऊगो ॥ एसें कहि के घरमें प्रसाद लीयो ॥ ओर सोय रह्यो ॥ ता पाछे वाघाजीकी स्त्रीनें भोग सरायो ॥ सोतव आरती करी तारामंगल करो वाहिर आई ॥ देखेंतो वह वैष्णवनाँहिहे ॥ वाही समय वा वैष्णवके घरजाय दोरिकें पुकारी ॥ सोतव वानें अपनी स्त्रीसों भीतरसों कही जो तूं इनको कहीदे जो वे यहाँ नाँहिहे ॥ वाहिर गएहें ॥ वाघाजीकी स्त्रीनें बहूतदीनता करी वी-

नतोकरी ॥ सो तोऊ वास्त्रीनें कछू जुवाव दीयो नाँहि ॥ तव वहूतहीं दुःखपायकें अपने घर आई ॥ आयकें गिरिपरी ॥ ओरकही ॥ जो राजद्वारतें वे आवेंगेतोमें कहाजुवाव देंऊगी ॥ आजप्रभुनने मेरी कहा जानें कहा विचारीहे ॥ जो एसी कवीन भई हे जो आज एसीक्यों भई ॥ जानें आजमेरे हाथसों प्रभु आरोगे हे के नाँहि ॥ सो न जानें आज मेरी सामग्रीमें चूकभई तथा अवारभई ॥ तासों वैष्णवभूखो चल्यो गयो ॥ वेरवेर छाती भरिभरि आवे ॥ ओर कछू ऊपाय चले नाँहि ॥ फेरि ऊत्थापनको समयभयो ॥ तव वाघाजी राजद्वारतें आए ॥ पूछी जो तुमने वैष्णवनकों जिमायो ॥ तव कही जो वहवैष्णव विनापुछे अपने घरचल्योगयो ॥ में वुलायवे गई, वाकीस्त्रीनें कही, जो वेतोघरनाँहिहे ॥ में पीछीआई ॥ सो यह वात वाघाजी सुनीकें, जो आज लेंनें राजभोगमें तवा पुरीमें घ्रतथोरो धर्यो ॥ तातें श्रीठाकुरजीनें में घोडा

पर चढिके जातहतो तहाँ मोकों जताई जो घी थोरोहे सो घी विनातवापुरी मेरेगरेमेंखरखरायहें ॥ सो में वाही समय घोडादाडायकें घरआयो ॥ शरीरकी सुधिकछू रहीनाँहि जो जोडापेहेरेंही घीकोवटेराधरिकें मंदीरकोटेरा सरकायकें देखें तो श्रीठाकुरजीके श्री हस्तमें तवापुरीहें ॥ ओर आरोगे नाँही हे ॥सो में घी कोवटेराधरि टेरालगाय घोडापर सवार होयकें सवारीमें गयो ॥ तातें यहसव कृत तुमारोहें ॥ जो श्रीठाकुरजीकों ऊहाँ पधारनो पर्यो ॥ओर वैष्णवहु भूख्यो गयो ॥ सो इतनों सुनतहीं ऊहाँकी ऊहाँगिरिपरी । जेसें प्राणनिकसीजाय ॥ सो तेसें मृत्युतूल्यहोय गई। सो वाघाजी देखते रहिगए ॥ जो यह कहा कौतुव भयो ॥ फेरि जायकें हाथलगावें सो श्वासनाँहि ॥ त घवराए ॥ जो भइसोतोभई परी अव यह कहाभई। सो दोर्यो आपको चरणामृतलायो ॥ आँखिनमें ल गायो ॥ कंठमेंदीनों छातीमें लगायो ॥ ओर काय

परिकेंरोवनलागे ॥ जो हेप्रभु ! यह अपराध मोसों भा-
रिपर्यो ॥ एसें अक्षर यास्त्रीकों सुनाए ॥ तातें एसी
भई ॥ तातें एसोदुःखित हृदयकरि आपहुँ गिरिपरे ॥
अचेतव्हेगए ॥ दोउनकोखेद श्रीठाकुरजीसों सह्यो
नाँहि गयो ॥ सो वाहीसमय स्त्रीकेप्राणमेंचेतआए॥
तव देखेंतोपतिगिरिपर्योहे जेसेंतेसेंयानें पतिकोंवेठायो
॥ तव पतिको चेतभयो ॥ देखेंतो स्त्रीपासवेठीहे ॥
दोउ रुदनकरनलागें ॥ तव श्री ठाकुरजीने भीतरसों
आज्ञाकरी जो तुमदुःखमतिकरो जो कालितुमारे यहां
विनाबुलाए वहवैष्णव आवेगो ॥ तव इन दोउनने
उठिकें महाप्रसादगेयनकोंदीनों ॥ आपने कछूनलीनों
फेरि न्हाय सेन आरतीकरिकें श्रीठाकुरजीकोंपोढाय
तारामंगलकरि कें फेरि सेनभोगहतो सो गैयनकोंदीनो

॥ तव आपन्हाए श्रीठाकुरजी जगाए ॥ तव कछू सामग्री करिकें भोगधरी ॥ सो श्रीठाकुरजीके दर्शन ऊदासीनतायुक्तभए ॥ सो दर्शनकरि चित्तवदूतदुःखी भयो ॥ फेरि राजभोगसों पोहोंची अनोसर कराय वाहिर आयो ॥ सोतव आयकें स्त्रीकों जगाई ॥ तव थोरोथोरो स्त्रीकोंचेतभयो ॥ तव हाथपकरिकें वेठाई ॥ जो ऊठि तोकुंकहाभयोहे॥ सो वह रोवेंही रोवें॥ मुखसों कछू वोलनीकसे नाँहि ॥ जो तूँ कहितो सही जो तोको कहाभयोहे वास्त्रीनेकहो जो कालि-तुमप्रसादलेवेकों वाघाजीके घरगयेहते सो वाघाजीकी ऊपरकीक्रियादेखिकें विनाप्रसादलीएचलेआयेसो वा-घाजीकों तथाऊनकीस्त्रीकों वडोदुःखभयो ॥ जो ऊन-नेंअवीताँईजलवीलीयोनहोहे ॥ ऊनकोदुःख अपनेश्री-ठाकुरजीसों सह्यो नाँहि गयो॥ सो श्रीठाकुरजीनेंमो सों आज्ञा करी हे जो हमतों श्रीगोकुल जाय हें ॥ सो मनीकेंवडोदुःखभयो ॥ त[illegible]श्री[illegible]जीसोंविनती

करी ॥ तव श्रीठाकुरजीनेआज्ञाकरी ॥ जो तुमारेध-
नीने वाघाजीकोअपराघकीयो ॥सो हमतोरहेगेंनाँहि
॥ सो यहआज्ञासुनीकें मेरेहाथपाँवकोजीवनिकसीग-
यो ॥ अवतुमनेमोकों जगाईहें ॥ सोतव सुधिभईसो-
अवजेसेंतेसें वाघाजीकेघरजाय अपराधक्षमाकरवावो
नहीं तो श्रीठाकुरजी यहां रहेगेंनाँहि॥ सोतव वाको-
धनीदोर्यो,वाघाजीके घरगयो॥ओर वाघाजीनेतोराज
भोगसराय अनोसरकरि महाप्रसादसवगैयनकोंदेदीयो
॥जो वेठे वेठे दोऊस्त्रीपुरुषदुःखकरिरहेहें ॥ जो श्रीठा-
कुरजीने आज्ञाकरीहती ॥ जो सवारेंवैष्णवतुमारेय-
हाँआवेगो ॥ सोनजानेएसोकहाभारीअपराधपर्यो सो
वैष्णवआयोनाँहि ॥ एसेदोऊजने दुःखकरीरहेहें ॥
सोतव ईतनेमेंयहवैष्णव दोर्योआयो ॥ आयकेजेश्री-
कृष्णकरी॥देखतेहीं स्त्रीपुरुपकेप्राणहरेहोयगए ॥ वह-
जायकेचरणारविंदमेंगिरिपर्यो॥ भूमीमेंनाकघिसिकेंवी-
नतीकरी,जोमेरोअपराधक्षमाकरो॥ ओरमोकोंमहाप्र-

सादलिवावो ॥ जो सखडीअनसखडीतोगैयनकोदेदीनी॥ जो लीवावेकहा॥ जो आय दोचारिघरीविराजो,जो श्रीकोन्हवायके सेनपीछें आपुनतोन्योजनेमहाप्रसादलेयँगे ॥ सो तोऊवैष्णववहमानेनॉहि॥ जो तुमारे घरमेंसूकोपाको जो कछु पर्योहोय सो मोको देऊ॥ तव मेरोमनमानें॥ तव श्रीसोकहो ॥ जो कछू लावोभीतरसो॥ श्रीअनसखडीमहाप्रसाद दोनामेंसाजिकेंलाई, तव वावैष्णवनेकही ॥ जो मेंअकेलोकेसेंलेऊ॥ जो तुमदोऊलेऊ ॥ तापाछें मोकोदेऊ॥ सोतव तीन्यो जनेननें हिलिमिलिकेंमहाप्रसादलीयो॥पाछें श्रीन्हाई सेवाकेसमयसखडीअनसखडीभोगधरी ॥ भोगसराय सेनआरतीकरी ॥ श्रीठाकुरजीकेदर्शन आनंदसो महाप्रसन्नतासो तीन्योनकोभए॥ फेरि [1]श्रीठाकुरजी कोपोढाय तारामंगलकरि वाहिरआए ॥ वाहिरआय

१ आ परम भगवदीयना श्री ठाकोरजी श्रीमदनमोहनजी, मुंबइमा मोटामदिरमा श्री गोकुलनाथजी महाराजने माथे, श्री बालकृष्णजीनी साथे विराजे छे

चारिपातरिधरी ॥ एकगैयाकी, एकयावैष्णवकी, दोऊ-स्त्रीपुरुषनकी ॥ सोतब ईनतीन्योननें मिलिकें महाप्रसादलीयो ॥ आचमनकरायबीरादीयो ॥ सोतब हाथजोरिकेंकही ॥ जो कालि प्रसादलेनकोंवेगेआईयो ॥ फेरि जेश्रीकृष्णकरिकें अपने घरगए ॥ सोतब जायकें अपनीस्त्रीसोंसबसमाचारकहे ॥ सो तब स्त्रीसुनीकेंबहुतप्रसन्नभई ॥ ओरकही जो श्रीगुसांईजीकी कानिसों प्रभुननें हमारेजनमकीलाजराखी ॥ सो प्रभुअपनोअपराधसहे परन्तुवैष्णवनकोअपराधसह्योनजाय ॥ तातें वैष्णवनकेअपराधसोसदाडरपतरहेनो ॥ सो एसोपुष्टिमार्गकोविलासहे ॥ सो कछूलिखिवेमेंआवेनाँहि ॥ सो ईनको दीनदीनकीवार्ताबहूतहें ॥ कहाँतांईलिखिए ॥ संपूर्ण ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक चंदाबाई उदेपुरके राणाकीबेटी तिनकी वार्ताको भाव

आपकेचरणपरअनन्यभावजिनकों ॥ इनके मा

थेआपकोचित्रविराजे ॥ नित्यभोगधरिकें महाप्रसाद-
लेई ॥ आठसहेलीब्रह्मसंबंधिनी नित्यसेवामेंन्हवावे॥
तिनकोसगाई जोधपूरकेराजाकेसंगभई, राजाबडोअ-
भिमानीहतो सो राजमेंकोईकोंवदेनाँहि ॥ फेरि जव-
वरातलेकेंव्याहिवेकोंआयो सो चोरिमें वाकोस्वरुपदे-
खिकें चंदावाईकोंमहान्‌दुःखभयो॥सो पिताकेअगारि
वाकीकछूचले नाँहि॥व्याहहेचूक्यो॥तव वाकोंज्वरच-
ढिआयो॥राणाजीनेकछूवातसमझी॥आयके याकोंधी
रजवधाई ॥ ओरकही जो कदाचिततुमारोधरमराजा
विगारे तो पचासहजारसीसोदीयातुमारेपासहे ॥सो
तव एसे कहीकें द्रव्यदेके याकोविदाकीयो ॥ द्रव्य
आभरण वहूत दीए ॥ मनुष्य वहूतदीए ॥ सो ऊन-
केसंगआठसहेलीहती ॥ ओरआठगूजरधायभाईसंग-
लीए ॥ कितनेकमनुष्य नामधारीहते ॥ जलकीकाँ-
वर रेशमकोपटवाँधिकेलावते॥ एसेंरस्तामेंकामचल्यो-
गयो ॥ ओर मारगमेंभगवदइच्छा सो ज्वरआयोकयों

॥ सो राजासोसंबंधभयोनाँहि ॥ फेरि जोधपूरजाय वडोऊंचो महल सो तामेंजाय निवासकरवायो सो महेलसतखनो ऊंचो ॥ सो तामेंजायकें महलखासाकरवायो॥श्रीठाकुरजीकेविराजिवेको सवव्योतकीयो॥ ओर लौकिकवारे नाजर राजा आवे सोवाको व्योतन्यारोराख्यो॥सो तादिनचित्तवहूतहीक्लेशमेंरह्यो॥रात्रमेंजवसोई ॥ तव वाकोआपकोदर्शनभयो ॥ तव यहआज्ञाभई ॥ जो तूँ डरेमति तेरोयहकछूकरिसकेनाँहि ॥ सो ईतनो सुनतही बेठीहेगई ॥ ओर हृदयमेंआनंदभरिआयो रोमांचहोय आए ॥ फेरि आपकोचितवनकरिकेंप्रसन्नभई ॥ फेरि सवारोभयो॥ सो यहवातकाहूकोकछूजताईनाँहि ॥ फेरिराजानेंजोतसीनकोबुलाय मुहुर्तदिखायो ॥ आयवेकोदीन निश्चेकीयो॥ फेरि राजानेंनाजरकोवुलायो ॥ ओर चारिसहेली नाजरकेसंगकरी ॥ तासमय

हतो ॥ ओर राणीजी प्रसादलेवेकुंवेठीहती

थेआपकोचित्रबिराजे ॥ नित्यभोगधरिकें महाप्रसाद लेई ॥ आठसहेलीब्रह्मसंबंधिनी नित्यसेवामेंन्हवावे॥ तिनकोसगाई जोधपूरकेराजाकेसंगभई, राजाबडोअभिमानीहतो सो राजमेंकोईकोंवदेनाँहि ॥ फेरि जब

थेआपकोचित्रविराजे ॥ नित्यभोगधरिकें महाप्रसाद लेई ॥ आठसहेलीब्रह्मसंबंधिनी नित्यसेवामेंन्हवावे॥ तिनकोसगाई जोधपूरकेराजाकेसंगभई, राजाबडोअभिमानीहतो सो राजमेंकोईकोंवदेनाँहि ॥ फेरि जबवरातलेकेंव्याहिवेकोंआयो सो चोरिमें वाकोस्वरुपदेखिके चंदाबाईकोंमहान्दुःखभयो॥सो पिताकेअगारि वाकीकछूचले नाँहि॥व्याहहेचूक्यो॥तव वाकोंज्वरचढिआयो॥राणाजीनेकछुवातसमझी॥आयके याकोंध

महलके गवाखामें आडोचोकपरीहती ॥ ईतनेमेंनाजरनेआयके मुजराकीयो ओरकही ॥ जो तुमारेमहलमें आजहजूरपधारेंगे ॥ ओर चांदीकोथार सहेलीनकेसंगलाए ॥ तामें पान, सुपारी, काथो, चूनो, ईलायचो, तरहतरहकोअत्तर ओरमदिराकोप्याला, सो देखतेंहोत्राकोदुर्गंधआई ॥ सो मोंहोडोढाँपिलीयो ॥ सो देखिकेंवडोजीवजयों॥ ओर नाजरसोंकही जो यहमदिरा–दारुलायोहें सो याकोछींटापरे तो कपराहमारेकामकोनाँहिरहे ॥ सो जायकें अर्जकरि देऊहजुरसों ॥ नाजरतोदुष्ट सों झूंठिसाँचिकहिकें राजाकोंखिजायो ॥ तब रानीनेजांनी जो हमारेमाँथे आपकेचरणारविंदविराजेहें सो यहकहाकरेगो ॥ सो राजासुनीकें वाहोसमय हिरण्यकश्यपकीनाँई क्रोधकरिकेंचल्योआयो ॥ सो वाकेसामें आपकोनामलेकें निंदाकरन लाग्यो ॥ तब वाकों सुनिकें महान्दुःखभयो ॥ सो शास्त्रकोरितिहें जो अपनेप्रभुनकी, अपने-

गुरुनकी निंदाकरे तो वाकिजिभनिकसवायलैंनी ॥ सो तो ए अवला जो ईनकि कछुचलेनाँहि ॥ तव ईननेंजानि, जो अपनेकांनसों अपनेप्रभुनकिनिंदासुनि, तातें यहदेहराखनि नाँहि॥तातें वा गवाखमेंसों चिकतोरिकें सतखनापेसोंनिचेकूदी ॥ सो वा समयपवनवहुतचल्यो ॥ सो लेहेंगावडोघेरकोहतो लेहेंगाफुलिगयो, पक्षीकिनाँइपाँखेहेगयो ॥ सो निचे गिरिवेदेईनाँहि ॥ सो ऊपरहिथांभिराखी ॥ सो ऊननेंअपनों लेहेंगादावीकें जेसेंतेसेंवेठो ॥ जेसेंपक्षीवेठेहें ॥ तेसें वेठिगई ॥ सो आपकोकृपासों वाकोवारहुवांकोनभयो ॥ तव राजावाहीसमय भयखायकें वाहिरभाजीआयो ॥ सो एसोमहलऊंचो जो जहाँसोकोडीपटके तो टूकहेजाय ॥ फेरिराजानेहुकमचलायो ॥ जो मरीकेजीवी सो खवरि देऊ ॥ सो नाजर सहेली सव पठाए ॥ सो महलमेंसहेलीहती सो ऊननेंजानी ॥ जो अव हममहलमेंरहिकेंकहाकरे ॥ वाहीस-

मयन्हायकें कछूआपकोभोगधरिकें झांपीमेंपोढाय रे-
शमीवस्त्रसोंझांपीवांधी॥सेवामेंसोवंटा झारी आभरण
एक रेशमीखडीयामेंवांधे ॥ इतनेमेंवधाईआई ॥ जो
रानीजीवतीवचोगई ॥ जो कछूनाँहिलागो ॥ सो सु-
नीकें चारिसहेलीदोरिकेंअर्जीकरी ॥ जो मैंतो यारा-
जाकोमोंहोडो देखुंगीनाँहि ॥ जो तुमसोंवनेतो हमा-
रेप्रभुनकोपधगयलावो ॥ ओर कछुराजानाँहिकरेतो
न लावो ॥ तासमय चारिसहेली महलमेंगई ॥ दोय
पासरही, सो महलमेंजायकें सवखिलोनां तथाश्री-
ठाकुरजीपधराईलाई ॥ ओर चांदीकेकलसा रानीके
गेहेंनाकोसंदूक सवलिवायलाई ॥ ओर ईनकेसंगके
ऊदेपूरके सवमनुष्य हथीआरलेकें ईनकेपासठाडेरहे॥
ओरकही ॥ जो हम मरेंगे ओर मारेंगे ॥ तव वाईने
कही, जो तुम कछुमतिकरियो ॥ हमवगीचामेंरहेंगे॥
सो राजाकोमनुष्य कोईमनुष्य मेरेपासनआवनपा
॥ फेरि राजानेंनाजर सहेली ओरकनातपठाई ॥ त

रानीनेंनाजरकोंवुलाय समझायकेंकही॥ जो तुमभले आवमिहोऊ तो यहाँसेंचले जाओ नातर सो पचासमनुष्यनकी यहांहत्याहोयगी ॥ ओर मेंतोराजाके-कूआको पानीहुंनपोऊंगी ॥ तव यहतो एक वगीचामेंजायकेंरही ॥ ओर राजाकोएकमनुष्यरहेंननदीयो ॥ फेरि राजाहूंवहूतपछितायो, फेरि चारिमनुष्यपठाए ॥ ओर कही जो मेरीभूलमाफकरो, जो में वा समय नसामेंहतो ॥ सो कछुसुधिनरही ॥ फेरि आपमहलमें आवो ॥ जेसें सेवापूजाकरतहते, तेसेंहीकरो ॥ में दोयचारिगामअधिकीमेंनिकासीदेऊंगो ॥ तव रानीनेंएकहू वातनमानी, कही जो तुमारे कूआको जलवीहमारेकामेको नाहि ॥सवफिरिआए॥ तव राजानें अपने मनकोंवडीधिक्कारदीनी ॥ जो एसेंठीकानेकीवेटी, जो सीसोदियासूनेगो तो कहाकरेंगे ॥ फेरि याकेधाईभाईको वाही समयसाँडियाभेज्यो ॥ सो खवरिलगतेही, सीसोदीयाननें जोरखायो ॥ सो रा-

नीनेसुनी ॥ तव अपनोसाँडिया वापकेपासभेज्यो ॥
सो ता परमानामेंचंदावाईनेंलिखिपठाई॥ जो यावा-
तकोआप कछुविचारोमति॥जो तुमनेंमोकों याकों-
सोंपी ॥ सो राजानेंमोकों वनवासदीयो ॥ सो तूम-
सोंहुंगई वासोंहूंगई॥अव हों तो केवलप्रभुनकीभईहों
॥ जो तुमहमारेसांचेपिताहो तो श्रीगोकुलपोहोंचा-
यदेऊ ॥ ओर जो हमारे प्रभुसत्यप्रतिज्ञहें तो तुमारे
कूलकोंकलंकनलगाऊंगी ॥ यहहमारीअरजहें ॥ जो
आठदिनाँताई आपके समाचारकोवाटदेखुंगी॥ ओर
नोमेंदोन श्री गोकुलचलुंगी ॥ फेरि तुमकहोगे, जो
हमकोंलिखिनाँहि ॥ फेरियहसाँडिया राणाजीकेपा-
सपोहोंच्यो ॥ राणाजीनें चंदाबाईको परमानावाँचि-
के सवभाईबेटानसोंनाँहिकरीदीनी ॥जो तुम यावा-
तकोजोरमतिखाओ ॥ जो पाँनसेमनुष्य, एकडोला,
ऊंट पचीस, ओर तिनके ऊपर पचासहजाररुपैयानकी-
रोकर ॥ ए सब सातमेदोनजोधपूरजायपोहोंचे फेरि

राणाजोनेंसामें परमानालिख्यो ॥ जो बाई तुमनेंवि-
चारी सो आछीहें ॥ जो हमारीपागराखनी तुमारे-
हाथहें ॥ ओर पहेलेगांमहते सो तातें दूनेगामचंदा-
बाईकों निकासी दीनें ॥ फेरि वानें दूसरेदीन श्री
गोकुलकोंकूचकीयो ॥तब जोधपूरकेराजा भाइबेटा-
ननेअरजकरी ॥ सो काहूकीसूनीनाँहि ॥ फेरि कोई-
कदीनमें श्री गोकुलपोहोंची ॥ सो जायकें आपके
दर्शनकीए ॥ तब आपबहूतहीप्रसन्न भए, तब चंदा-
बाईनेविनतीकरी ॥ जो राज या देहपें घातबहुतभई
॥ सो राजकीकृपातें काहुकीचलीनाँहि ॥ केवल रा-
जकेचरणारविंदके प्रतापतें दोऊठिकानें डंका बजायकें
आईहों ॥ सो गदगदकंठहोयकें गिरिपरि देहकिसु-
धीरहीनाँहि ॥ तब आपनेंदोऊचरणारविंद चंदाबाई-
केमाँथेधरे ॥ फेरि संगकीसहेलीननें हाथपकरीकेठा-
डीकरी ॥ तब दंडवत्करिके बेठाई ॥ फेरि वचना-
मृतसों सिंची ॥ तीन्योताप ततक्षननिवृत्तभए ॥तब

वहुत धीरजवधाई ॥ ओर श्रीमुखसोंआज्ञाकरी ॥ जो प्रभूअपनें जनकों छोडेनाँहिहे ॥ संसार विषयसुखमें सोनिकासिके अपनेपासराखे हे "संत्यज्यसर्वविषयान्स्तवपादमूलेंप्राप्ता" इति ॥ सो चंदावाईकोस्वरुप वहुतसुंदरहतो ॥ ओर माँथेपरभगवद्तेज एसोझलमलाय, सो कोइसाँमेझाँकिशकेनाँहि ॥ ओर श्रीगोकुलमे यशोदाघाटकोपेंडो चंदावाईनेंवनवायो ॥ सो अवहीविद्यमानदर्शनदेईहें ॥ ओर अपनेपहेरिवेकोगहेना कितनोकहतो ॥ मोतिनको, जडावको सो सव वहु वेटिनकोअंगिकारकरायो ॥ आपनेंएक नथनाककी ओर कंठकोतिनमनीयाँराख्यो ॥ फेरि श्रीगुसाँइजी श्री गिरिराजकी कंदरामें पधारे ॥ तादीनसों रंगिनवस्त्र हु अंगमें धारणनाँहिकीए ॥ जो श्रीठाकुरजीपीछे मूगकीदारि रोटी लेती ॥ ओर सवछोडीदीयो ॥ ओर एक हवेली श्रीमथुरांजीमें श्रीयमुनाजीकेतीर श्रीविश्रामघाटपरवनवाई ॥ सो कवीकवी

श्रीमथुरांजीजाती सो तहाँऊतरती ॥ एकवेर जहाँ गीरवादशाह आगरेतें श्री मथुरांजीकोआयो ॥ सो काहु दूटचूगलखोरने चूगली कीनी ॥ जों यहाँ राणाजीकोवेटी चंदावाईहें ॥ ताकों पकरिमँगावो तो राणा पाँवनआय परेगो ॥ यहवात चंदावाईने सुनीपाइ, सो संगकेसहेलीलोग वहुतही रोवन लगीगए ॥ जों नजानीए ए दुष्ट कहाकरेगो, तव चंदावाईनें सबनकोंधीरजवधाईकेंकही, जो कोई डरपोमति ॥ ताहीसमय दसहजारमनुष्य जाहांगीरशाहनेभेजे ॥ सो म्लेच्छननें आयकें हवेली घेरिलीनि तव वहुतहल्लाभारीभयो ॥ सो मथुरांजीकेलोग सवकांपे सवननें कही जो आज इनको धर्म गयो ॥ ईनकेमाथे तो त्रिलोकीनाथविराजे हे ॥ सो वह वाहीसमय कच्छवांधिकें एक वस्त्रमांथेसोंवांधिके वाहिरनिकसीआई ॥ ओर कही ॥ जो क्यों हल्लाकरोहो तवमनुष्यननें कही ॥ जो हम तुमकों पकरिवेकों आयेहें ॥

तब चंदाबाईनेंकही जोपकरिवेकोकामकहाहे ॥ तुम कहोगे तहांचलेगें हमभाजेथोरे जायहें ॥ एसेंकहिकें वामनुष्यके संगचली ॥ सोवाकेतेजकेमारें कोईपास-तो आयशकेनांहि ॥ सबदूरिदूरिचले । जोमोनों पर्वत गुफामेंसों सिंघनिकसीकेंचल्यो एसोरुपधारण कीयो ॥ सो जहां जाहांगीरशाहको डेराहतो वाके भीतर चलीगई ॥ सो देखतहीं जाहांगीरशाह कंप्यो ॥ फेरि चंदाबाईनेंयहकही ॥ जो धिक्कार तेरी बाईस-लाखफोजकों, जो तूं लुगाईनकोंपकरिकें मेरे पिताकों जीत्यो चाहेहें तो में जोरहोय तो मेरेपितासों तर-वारलेजायकेलडि ॥ तासमें बहुतलजानोपडि गयो॥ फेरि हजाररुपैयाके दुसालाकी जोडी चंदाबाईको ऊढाई ॥ ओर दोय सुनहरिनारियलसो चंदाबाईकी गोदभरो ॥ ओर बहुत क्षमाकरवाई ॥ ओर पांनसें-घाभूमीदीनी ॥ ओर कही जो तूं मेरीधरमकीवेहे-ं॥ जोवोलि कछुवंदगीकरों तोमेंयहां रह्यो आंऊ॥

तवकही ॥ जो तेरीबंदगीहे ॥ जानें मेरीचुगलीकरी ताको कछूदुःखमतिदीजो ॥ यहसुनीके वहुतहीप्रसन्न भयो ॥ तव यहकही जो याकीभक्तिसांचीहे ॥ जो न तो यानेंवूरोकीयो जो मेरो भलो कीयो ॥ फेरि डोलामेंवेठायके हवेलीताँइ पोहोंचायगयो ॥ एसो-प्रभाव मथुरांवासीननेदेख्यो ॥ सो सवकोदुःख ताप निवृत्तभयो ॥ सो चंदावाईनें भूतलपरदर्शनदीयो त-हाँताँई जाहाँगीरशाह वंदगीमें रह्यो ॥ एसो श्रीवि-ट्ठलनाथप्रभुनको प्रतापजतायो ॥ फेरि श्रीगोकुलमें आपके चरणारविंदमेंप्राप्तिभई ॥ तासमय श्रीगोकु-लनाथजी, श्रीघनश्यामजी दर्शनदेतहते॥सो वाकी-हवेली श्रीघनश्यामजीके वांटेआई ॥ सो एसो चंदा-वाईको चरित्र अनंतहें सो लिखिवेमें आवेनांहि ॥ जो कछुकछु श्रीनाथजीके वचनामृतमेंसों युक्ति क-रिकें लिख्योहें ॥ प्रसंगसंपूर्ण ॥

श्री गुसाँइजीके सेवक दोयभाई कुंभार राजनगरमें रहेते तिनकी वार्ताको भाव.

सो ऊनने एकवेर अवामें आंचलगाई ॥ तामेंभीतर-सब भाजनधरे॥ सो तामेंवलैयानें अपनें वच्चा धरिदीए तासमयवडोभाइतो कछुकार्यार्थिगाममें गयो हतो ॥ ओर छोटोभाई आँच लगायवेमें हतो ताही समय वलैया आई ॥ सो आयके वाहिर वाहिर डोलें॥ओर पूकारे तव वडो दुःख भयो, मनमें कहिवे लाग्यो ॥ जो याअपराधतें केसें वचे जो शरीर कांपिवे लाग्यो ओर रोयवे लाग्यो ॥ तवश्रीगुसाँईजीको ध्यान कीयो ॥ओर विनती करी जो राज यासमय आप वचावो तो वचे॥ एसे कहिके आपकीऑनि अग्निको दिवाई ओर कही जो श्रीगुसॉईजीकी ऑनिहें॥ जो वच्चाके पास मति जैयो ॥ सो ईतनेमें वडो भाई आयो ॥ वाने सव वात कही, जो यामे विल्लीके वच्चाहें सो रोयरोयकें गई ॥ तव वडे भाईनें मनीके वडो

दुःख कीयो॥जो हाय वडी हत्या भई ॥ सो ऊहाँही अवाके पास दोऊ भाई वेठे रहे॥ओर रात्रि भरि नींद करि नाँहि ॥ बिलाईहूं अवाके पास परीरही॥ सवारें भए श्रीगुसाँईजीने छोटेभाईकोजताई जो तूं चिंता मति करे जो ऊन वच्चानको अग्निने परसहूं नाँहि कीयो हे ॥ सो झट वाही समय वडेभाईको जगायो ॥ ओर कही जो भाई आपको एसी आज्ञा भईहें॥ सो वडेभाईनें कही जो अरे ! तेनें आपको कछु श्रमतो नाँहि करवायो ?॥ तव छोटेभाईने कही जो वा समय बिल्लीवच्चानकों देखिकेंरोई, तव मेंने अग्निको आपकीऑनि दिवाई ॥ सो सुनिके वडेभाईनें वडो खेद कीयो जो हाय हाय ईतनीवातकेंताई तेंने वडोश्रम करवायो ॥ जो हाय हमारो कुंभारको जन्मतो पापरुपहे एसी तो कितनीक हत्या हमको अग्नि जरावें तवहोयहें ॥ तातें तेने आपको श्रम करवायो ॥ यह वडो भारी अपराध भयो ॥ फेरि दीन ऊग्यो ॥ तव

अवाकी अग्निसीतल भई ॥ तव सवभाजन ऊठायकें अलग धरते गए ॥ तव मनमें कही जो ए आँचसों कहावचें होयगें॥ माटीके भाजन एसेंपके हे जेसे तांवा होय गएहें॥ तो ए कहा वचे होयँगें ॥ सो वासनकी तहऊठाई ॥ सो तीसरी तह काची नीकसी, ताकों आँचकोधूँआहूँ परस नाँहि भयो हे॥ जो भाजनसव सीरेहाथमें लगिवे लागें सो देखिकें चक्रत होयरहे ॥ फेरि भाजन सव अलग धरे ॥ सो वे विल्लिके वच्चा ज्योंकेत्योंहें ॥ फेरि वे अलगकरे॥ सो विल्लि आयकें तीन्यों वच्चानकों मोहोंडेमें देकेंलेकें भाजि गई तव इन दोऊ भाईनको वडो खेद भयो, जो देखो तुच्छ वातके लीए आपकों हमने इतनों श्रम करवायो ॥ ताही समय दोऊ भाईनके चित्तमें वैराग्य आय गयो सो गामके वैष्णवनकों वुलायकें कही जो हमतो दोऊ भाई श्रीगोकुलजायहें ॥ ओर घरकी वस्तु भावहें ओर .टीके भाजन हें ॥ सो तुम ईनके दाम करिकें श्री-

गोकुलमें श्रीगुसाँईजीके पास भेजिदीजो॥ ओर हम तो श्रीगोकुलजातहें॥ सो आपके चरणारविंदकेपास रहेगें॥ अब यहाँनहीरहेगें॥ एसें कहिकें थोरोबहूत खरचलेके श्रीगोकुलकोचलिदीए॥ सो कछूकदीनमें श्रीगोकुलआय पोहोंचे॥सो श्रीगुसाँईजीके चरणारविंदमें साष्टांग दंडवत् करी श्रीफल दोऊ भाईनर्ने भेट धरे॥ तब आप बहूत प्रसन्न भए॥ अरु करुणा दृष्टिसों दर्शनदीए॥ सो दर्शनकरीकें तीनोंतापनिवृत्त भए॥ तब श्री मुखसों आज्ञा करी॥ जो अब तुम अबाकीजीवका मति करो, यामें हत्या बहूतहें॥ सो सुनीकें विनतीकीनी॥ जो राजकों श्रम तो बहूत करवायो अब याजीवकों आप कृपा करि बचावो तो बचे॥ तब ईनदोऊ भाईनने विचार कीयो जो अब कहा ऊद्यम करनों जो ऊद्यम विना निर्वाह केसें करे॥ सो श्रीगोकुलमें तो कछू ऊद्यम देख्यो नाँहि॥ पाछें श्रीमथुराजी आए॥ तहाँ सब ठिकानें मजूरी करिवेकों

फिरे ॥ ओरतोकछू पायो नाँहि ॥ जहाँ अन्नकीपेंठलगीरहीहती, तहांगए॥ ऊहाँजायकें अन्नकीमजूरीकरिवेलागें सो वादीनतो एक प्रहरभरि मजूरी करी ॥ चारि पांच आना कमाए ॥ फेरि श्रीगोकुलजायकें अपने श्रीठाकुरजीसों पोहोंचिकें रात्रमें कथावचनामृत सुनीवेकों आपके चरणारविंदपास जाते॥ एसो नित्यको श्रम ईननें बांध्यो ॥ सवारे तीन बजे जागें ॥ सो देहकृत्य करी आपके चरणपरस करी घरमेंन्हावें ॥ श्रीठाकुरजीसों पोहोंची महाप्रसाद लेई नववजें श्रीमथुरांजी जाय पहोंचे॥सो अन्नऊठायवेकी मजुरी करे ॥ नीत्य आठ दस आना कमावे, फेरि चारिवजे चले सो पांचवजे श्रीगोकुल आयजायकें घरमें न्हाय श्रीठाकुरजीसों पोहोंचीकें आपके वचनामृत कथा सुनीवेकों जाय॥ यारीतिसों नित्य निर्वाह करे ओर मजुरीको द्रव्य महोनामें जोरे तामेंसों तीन विभाग करे॥ एकभाग तो श्रीगुसाँईजीके चरणारविंदमें धरे॥

दूसरे भागसो आप घरमें निर्वाह करे ॥ ओर तीसरा भागमेंसों वैष्णवनकी सेवा टहल करे ॥ यारीतिसों वैष्णवनकी सेवा करे ॥ कोई जाने नाँहि ॥ जो दोऊ भाई वैष्णवनकी कोटरीमें जाय सो एकभाई तो भगवद् वार्ता करे ओर दूसरो भाई अगलवगल वैष्णवनकी पथारीमें द्रव्य धरि आवे ॥ तापाछें वैष्णव घरमें बुहारी करे ॥ तब पांचछे रुपैया पावे ॥ सो वैष्णवनको बडो आश्रर्य होय जो ए रुपैया कहाँसो आयगए ॥ एसे दूसरे महीनामें दूसरे वैष्णवके घर जाय ॥ यारीतिसों द्रव्य धरि आवे ॥ सो सबनकों आश्चर्य होयवे लाग्यो ॥ जो बुहारी करतें केसें रुपैया पावेहें ॥ तब उनमेंसों कोऊ कृपापात्रनें जान्यों जो ए दोय भाई कुंभार आवे हें सो धरीजायहें ॥ सोतब ईननें सबनकों ज्ञान करायो ॥ एसी रीतिसों श्रीगोकुलवास कीयो ॥ सो ईनदोऊ भाईनकी सेवा सुफल करिवेकों श्रीगुसाँईजीके चरणपरस करिवेको सब वैष्णव आए ॥ सो वे दोऊभाई

आये॥ चरणपरस करिकें गए॥ सो आपनें ओरवैष्ण-
वनसों कही जो ए दोऊभाई अवातो करे नाँहिहें
तो वे केसें निर्वाह करेहें ॥ तव ओर वैष्णवननें कही जो
राज सवारेही आपके चरणपरस करो केअपने घरमें
श्रीठाकुरजीसो पोहोचिके श्रीमथुरांजी जाय अन्नकी
मजुरी करेहें ॥ फेरि अपने घरमें पोहोंचिकें आपके
कथावचनामृत सुनेहें ॥ ओर मजुरीको द्रव्य आवे हे
ताकों जोरिकें ताके तीन विभागकरेहें॥ सो एकभा-
गकीतो आपके भंडारमे सामग्री लायकें धरेहें ॥ एक
भागसों अपने घरमें निर्वाह करेहें ॥ ओर एकभाग
वैष्णवनकों अँगिकार करावेहें सो वैष्णवनकों या रीति-
सों अँगिकार करावेहें जो वैष्णवनकी कोठरीमें जाय
एक भाई तो भगवद् वार्ता करे दूसरो भाई अगल-
वगल पथारिमें धरि आवे॥ यारीतिसों श्रीगोकुलवास
करेहें ॥ यह सुनीकें श्रीगुसाँईजो आपको हृदय भरि
आयो ॥ श्रीमुखसों आज्ञा करी ॥ जो श्रीगोकुल

वास ईननेंही करी जान्यो हे ॥ तब आपने आज्ञा करी ॥ जो ईनकों या रेहेनिपें कहादेई जो मारगकीरेहेनिहें सो ईननें पहेलेसोंही राखीहें ॥ सो आपको वडोहीविचार करनो पर्यो ॥ फेरि आपने आज्ञा करी ॥ जो ए सांझकों आवेगें तो ईनकोंमें देऊंगो ॥ सो, जो ए, कहा मांगे ॥ सो ईनको आशय सब वैष्णव जानेगे ॥ आपतो अंतरजामि सो जानि गए ॥ फेरि सांझकों ए दोऊभाई आपकी कथा सुनीवेकों आए ॥ कथा होय चूकी ॥ तब सब वैष्णव अपनी अपनी कोठरीमें जायवे लागे ॥ सो सब वैष्णव गए ॥ तब ए दोऊभाईजायवेलगे ॥ तब आपनें खवाससोआज्ञाकरी जो तुम इन दोऊभाईनसो कहो, जो अब तुम घर मतिजाओ ॥ आपकी आज्ञानांहिहें सो सुनीकें वडेडरपे कांपिवेलागें हाथ पांवनकेसत निकसीगए ॥ सो मनमेंकही जो आजकोईभारी अपराधपर्योहें ॥ कहाजानें आपनेंकहा विचारीहें ॥ सो

एसें मनमेंकहिवेलागे ॥ फेरि आपने आज्ञाकरी तुमदोऊ जनेंहमारेपास आवो ॥ सो दोऊहाथ जोरिकें आपके सामने कांपते ठाडेभए ॥ तब आपने वचनामृतसों सिंचे ॥ जो वैष्णव कायर मतिपरो हम तुम पर प्रसन्न भए हे ॥ तुम कछू मांगो ॥ सो सुनतेही गदगद कंठ होय गए ॥ नेत्रनमेंसों जलकी धारा चली ॥ मुखसों बोल नीकसें नाँहि ॥ फेरि मनमें कही जो एसी हमने कहा कृत्य करिहे ॥ तापर आप प्रसन्न भए ॥ फेरि आपने आज्ञा करी जो वैष्णव सकूचोमति ॥ में तुम पर प्रसन्नहों तूम कछू माँगो ॥ तब ईनदोऊनने विनती करी जो राज ओर अधीककहामाँगे जो आपकी प्रसन्नताके लीए जीव अनेक साधन करेहें ॥ तो हम सारीके पतितनके ऊपर कृपा करिकें स्वतःही प्रसन्नव्हे गए ॥ वासों अधिक माँगनो कहा हे ॥ तब आपने आज्ञा करी ॥ जो ओरमांगो ॥ तब दोऊभाई विचारे जो

करी ॥ जो ओरमाँगो ॥ तब ए दोऊभाईविचारे जो ओर अधिककहामाँगे ॥ फेरि आपनें इनके हृदयमें विराजिकें यह मगायो॥ जो राज जेसे प्रसन्नभए हो सों एसेंही हमपर सदा प्रसन्नरहे आवें ॥ तब आपनें करुणाभरे वचनामृतसों आज्ञाकरी जोतुमपर प्रसन्न सो हमारे दास ॥ जो तुमपर प्रसन्न नहीं सो वह हमारो दासनही ॥ एसो आपने महान् फल दोंऊभाईनकों दीयो ॥ फेरि आपनें दोऊ चरणारविंद दोऊ भाइनके माथे धरिकें श्रीमुखसों आज्ञाकरी जो तुमपर दोऊ रीतिसों कृपा हमारी तथा हमरे दासनकी रही आवेगी ॥ तुम यारीतिसों श्रीगोकुलवास करो ॥ सो तातेंईन दोऊभाई कुँभारनकोभाग्य कछूलिखिवेमें आवे नाँहि ॥ सो तातें ईनकीवार्ता कहाँ ताँई लिखियें ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥
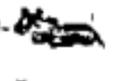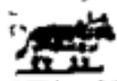
श्रीगुसाँईजीके सेवक दुर्गावती राणी तिनकी वार्ताको भाव

सो यहकडामेंरहेती ॥ याको राज्य वडो प्रवल हतो, सो आप पुरुषके वस्त्र धारण करती ॥ पांचोशस्त्र धारण करती ॥ एसी क्षत्री वीर रसमें निपून हती ॥ तिनके पास षोडश शास्त्री पंडित रहेते ॥ तिनसों धर्मशास्त्र नीतिशास्त्र सिद्धि कराए ॥ सो आप ब्रह्मण्य हती ॥ पून्य वहूतकरती ॥ सो वाको अँगिकार करिवेको श्रीगुसाँइजी अडेलको त्यागकरिकें व्रजपधारत हते ॥ वीचमें ईनको अँगिकार करिवेकोंईनके गाममें पधारे ॥ सो संगवारेनको ईच्छायह के आगेंपधारे॥ परन्तु आपकी ईच्छा कडामें विराजिवेकी हती ॥ तातें आप रात्रमें आज्ञाकरिदोए जो कडामें विराजेंगे ऊहाँ मुकामहोयगो ॥ सो वाई साहेवके विश्नुतालपें डेरा भए ॥ सवारे आपनें भट्टजीसों आज्ञाकोनी जो गामें जायकें अग्निलाओ ॥ तव भट्टजीनें तैलंगी वोली

में 'इस्तु इस्तु' एसे पुछीकें अग्निमाँगो ॥ सो कोऊ समझे नाँहि तासों सबननेनाँहि करीदीनी ॥ सो भट्टजीनें आयकें विनती करी जो राज यहाँ अग्नि नाँहि हे ॥ तब आपने आज्ञाकरी ॥ जो कहा गाममें अग्नि नाँहि हें ?॥ इतनी आज्ञा करतही सबगामकीअग्नि शान्तिहे गई ॥ सब प्रजाकी तथा राजाकी गाममें अगल बगल जोगीवैरागी हते तिनहूंकी अग्नि शान्तिहेगई ॥ जो धूंनिनमें अग्नि रही नाँहि ॥ तासों बडोहाहाकारभयो ॥ ओर आपके खटलामें स्वतःही अग्निप्रगटहेगई ॥ सीतकालके दीनहते सो प्रजाबहूत दुःखीभई ॥ सो यह बातरानीनेंसूनी सो बहूतही व्याकुलभई ॥ सो रानी मूलमें दैवीजीवहती ॥ सो वाको यही बातस्फुरायमानभई जो या नगरमें कोई महापुरुष पधारेहें ॥ ताको अपराध बन्योहें ॥ तासों ताही समयरानीनें दसवीसमनुष्य गामकेबाहिर खबरि करिवेकों पठाए ॥ सो वे दूत नगरके चार्यो ।

सो जहाँ आपकेडेराहते तहाँ आए सो आपके डेरा-
नमें महान् अग्निदर्शनदेरहीहे ॥ सो देखिकेंचक्रतव्हे
रहें ॥ तव पूछी, जो ए डेराकोनकेहे ॥ तव काहू मनु-
ष्यनें कही जो दिक्षितजी—श्रीगुसाँईजी अडेलतें पधा-
रेहैं सो आपके डेराहें ॥ यहसुनतही दूतननें रानीसा-
हवसों जायकें अरज करी ॥ जो नगरके चारों आडी-
फिरे॥ सो साधु वैरागी काहूकी धूनिमें अग्नि नाँहि हे
जो एक दिक्षितजी—श्रीगुसाँईजी—श्रीविट्ठलनाथजी-
के डेराभए हें॥आप अडेलतें व्रजकों पधारतहें॥ तहाँ
सवकेडेरानमें अग्निदर्शन देरहीहें ॥ सो यहसुनतही
रानीनें अपने मनमें विचार कीयो ॥जो यह अपराध
हमारे नगरमें, आपको वन्योहे ॥ ताहीसों अग्निशा-
न्तिभईहे॥ फेरि दुर्गावतीरानी अपनें पाँवनसों आपके
दर्शनकों दोरिआई ॥ सो असवारीको डोलाहू छीयो
नाँहि ॥ संगमें पांच पचास मनुष्यलेकें आपके दर्श-
नकों आई ॥ तासमय आपन्हायकें विराजेहते व्रह्म

यज्ञ करतहते ॥ सो पहेलें वा रानीनें दोयचारिमनुष्य अगारि दोरायकें वीनती कराई ॥ जो दूर्गावतीरानी आपके दर्शनको आवेहें ॥ तव आपनें आज्ञाकरी जो आछो ठीक हे आवनदेऊ ॥ तव दूर्गावतीरानी आपके सन्मुख जायकें आपके चरणारविंदमें गिरिपरी ॥ गदगदकंठ होयगई ओर यह प्रार्थना करी जो राज नगरको अपराध क्षमाकरिकें या नगरको जीवनदान देऊ ॥ तव आपनें मंदमुसकायकें आज्ञा करी जोरानी कहामॉगेहें ॥ तव रानीनें विनतीकरी ॥जो राज आपसाक्षात् कल्पव्रक्ष पधारिकें हमको दर्शनदीए॥ अव प्रथम तोयहकृपाकरो जो सव प्रजाके चुल्हानमें अग्नि हे जाय ॥ तव आपनें आज्ञा करी जो तुमारी प्रजाके चुल्हानमें अग्निभई ॥ तासमय वधाई आई जो महाराज गाममें अग्निसिद्धिभई ॥ प्रजावची ॥ तव रानीनें वाहीसमय आपसो वीनतीकीनी जो राज जेसे प्रजाकों वचाई तेसेंमोकोंया संसारसमुद्रतें वचाईये॥ ओर

आपके चरणारविंदकी दासीकरो ॥ तव आपने वाही समय रानीको नामसमर्पन करवायो ॥ ओर आज्ञा करी जो आज तुमव्रत करो कालि तुमको ब्रह्मसंबंध करावेंगे ॥ तव रानीने वाही समयवहूतही मोहोर भेट करिकें आपके दर्शनकीने ॥ जो वहूतकालतें आतुरता लगिरही हती, सो राजके झगरामें मेरो निकास भयो नाँहि ॥ आपने करुणाकरी मोको यहाँही पधारि सनाथकरि तव आपने आज्ञा करी जो अव या समय तुम नगरमें जाओ ॥ कालि तुमको निवेदनदेईंगे ॥ पहेरिवेको नए पटवस्त्र लिवायलाईयो ॥ तव रानीने अपने मंत्रीनसो कही जो आपको सामग्री त्रनपर्यन्त यासमय आवे ॥ जहाँताँई आप विराजे तहाँताँई राजमेंसो सवसामानऊठे ॥ आप काहू वातको श्रम पावेनांहि ॥ वाही समय सवसामग्री, खांड, साक सालन, चुन, तांबुल, सुपारी, सुगंध, ईलायची, इंधन घासपर्यन्त ढेरकेढेर आयपरे ॥ दुसरे दीन निवेदन

दानआपनें रानीकों दीयो॥रानीनें सहस्रमोहोर आपके चरणारविंदमें भेट धरी॥ तव आपनें आज्ञा करी जोरानी तूँ आज विदाहोयजा, कल्हि हमारोहु कूचहोयगो, काहेते॥ जो सीतकालकेदीनहें सो संगकेलोग ऊतावल करेहें॥ सो ठिकानेसर विराजें तो सवकों सुख होय॥ तव रानी यह वचन सुनीकें वहूतकाय रविहेलह्वेगई॥ओर आपकेसामे आडीपरिजाय॥जो राज मेरीछातीपर रथचलायकें आपभले पधारो॥ वेसेतो में पधारिवेदेऊंगीनांहि॥जो यहनगर यहशहर सव आपकोहे॥ जो चाहे मोको राखो चाहे ओरको पून्य करिदेऊ॥ एसे रानीके प्रेमकेवचन सुनीके आप भक्तवत्सलहोते भए॥ तव कही जो रानी कायर मतिपरे जो हम तेरी प्रसन्नतासों अगारि पधारेंगे॥ ए वचनामृत सुनीके रानीके प्राण हरे होयगए॥ सो ताही समय रानीने मंत्रीनको हुकमकीनो जो नगरमें आछीआछी हवेली देखिकें साफ करावो॥फेरी आपसों

चीनती करी ॥ जोराजके जलघरीया जायकें जगे खासाकरें ॥ सोतव रानीको वीनतीप्रमान आपमनोरथ पूरण करतेभए ॥ रानीने आठप्रहरमें शैया-पलंग सिंघासन सवसिद्धि कराए ॥ओर गादीतकीया सव सामग्री हवेलीनमें सिद्धिहेगई ॥रानोकी तैयारी कछुलिखिवेमें आवेनांहि ॥ मानों आप अडेलमें घरमेंही विराजेंहे ॥ फेरि रानीने दुसरेदोन आपकी पधारिवेकी तैयारी करवांई ॥ सो नगरके दरवाजासों लेकें आपके विराजिवेकी हवेलीतांई तोरन, खंभ, वंधाए ॥ प्रजाननें द्वारद्वारपर नवीन नवीन वस्त्रसाजे --सिंगारे ॥ ओर ठामठाममें फूलनकेटोकरा भरायकें धरिदीए ॥ फेरि आप सवारिकरिके पधारे ता समयकी शोभा कछुलिखिवेमें न आवे ॥ ठामठाममें आपके आसपास फुलनकिवर्षा होतीजाय ठोरठोर जेजेकार होतोजाय ॥ एसीरीतिसों आपकों नगरमें पधराए॥ सो आप निजस्थानमें सव वालकनसहीत विराजे ॥

सो रानी आपकेदर्शनकों, चरणपरसकों नित्यआवे ॥ रानीके स्नेहकी सेवाकी वात कछु कही न जाय सो आप विराजे तवतांई सव राजवैभव आपके अर्पन करि कें मान्यो ॥ पाछे थोरे दीनमें सोमवतीअमावस आई ॥ सो आपके पूजनके लीए सव साज तैयार करी राख्यो सुवर्णको सिंघासन, छत्र, चंमर ॥ आपको सिंघासनपर पधराए तव रानीनें आपको अकसोआठ तो परिक्रमा करी ॥ सो सो ब्राह्मणतो वेदपढते जाय॥रानीपरिक्रमाकरतीजाय॥सोएकएक परिक्रमामें रानीनें एक एकगाम भेटकर्यो॥सो एकसोआठगाम रानीनें आपको भेटकीनें, सुंदरनएआभूपनपहेराए॥ कपूरकी आरतीऊतारी ॥ ओर विनतीकरी ॥ जो राज एकसो आठगाम आपकों परिक्रमामेंभेटकीएहें सो अपने आपसंभारो ॥ तव आपनेआज्ञाकरी जो तुमनेभेटकीएहें सो तो ठीकहें ॥ परि या सोमवतीकोतो हमारे एकडोरावी काम न आवे ॥ तव रानीनें सुनीकें वडोसो-

चकीयो जो राज मैंतो आपकीहों जो मेरेतो सबराज आपकोहे ॥ अब राज विचारो तारीतिसों अँगिकार-करो ॥ तब आपनेंएकसोआठगामतो ज्ञातिकेभट्टनकों एकएकगाम दिवायदीयो ॥ ओर सुवर्ण हतो सो ब्राह्मणनकोंदिवायदीयो ॥ आपको एसोत्यागदेखिकें राजसभा सब चक्रतहेगई ॥ एसो प्रताप अतुलित श्रीविट्ठलेशप्रभुनको हतो ॥ फेरि रानीनेंविचारी जो यारीतिसोंतो आपअँगिकारनकीए ॥ सो ईच्छा आ-पकी॥ तब रानीनें ओर मनोरथऊठायो जो आप दूसरो विवाह अँगिकारकरो ॥ तब आपने आज्ञाकरी जो छे लालजी ओर चारिबेटीजी तो विराजेहें ॥ सो लोकवत् सुखतो सबकरि चुकेहें॥ अब फेरिकहाकरनों ॥ तब रानीकोमनमान्योनाँहि ॥ तब श्रीगोकुलना-थजी, श्रीरघुनाथजीसों विनतीकरिकें कहेवाए ॥ जो आप पहेले व्याहकरो तो हमभैयाव्याहकरेंगे ॥नातर

१ आ गाममी उपजो हाल पण तैलंगा ब्राह्मणोज लेछे

हमहु विवाह नाँहि करेंगे ॥ एसें तीन्योभैयाननें बहू-
तहीवीनतीकरी ॥ ओर अडिपकरिलीनी ॥ फेरि आपके-
संगमें जो भट्टजीहते तिनकेसंगमें श्रीपद्मावती वहुजी
साक्षात् दूसरोस्वरुप श्रीस्वामिनीजीको अवतार हतो
॥ उहीकारन जानिकें दुर्गावती रानीको अतिकरुणा-
सों मनोरथपूर्णकीयो ॥ संवत १६२० कीसाल अक्ष-
यत्रतियाकेदीना श्रीपद्मावती वहुजीकोविवाह अँगि-
कारकीयो ॥ रानीनें विवाहमें मनोरथकोद्रव्य एसो
खरच्यो, सो कछुलिखिवेमेंआवेनाँहि ॥ आपकों तथा
श्री पद्मावती वहुजीकों भारी भारी आभरन अमो-
लधराए ॥ ओर छेओ वालकनकों तथा सव वहूबे-
टिनको सवनकों भारीभारी आभरन धराए ॥ तास-
मयकेसुखको कछूलिखिवेमेंआवेनाँहि ॥ फेरि रानीनें
युगलस्वरुपकों तथा सववालकनकोंअपने महलमेंप-
धराए ॥ तासमयकीशोभा कछूवर्नेनमें आवेनाँहि ॥
ठामठाम तोरन पल्लव ओर पुष्पनकीवर्षाहोतीजाय ॥

यारीतिसों आपकोंपधराए ॥ फेरि ऊरलेदरवजिसोंले-
कें आपकेमहलताँई मखमलकेपेंडाविछाय दुंदुभी शंख
सेहेनाँई गोप गंधर्व गाँनकरे ॥ सो कहेतेपारआवेनां-
हि ॥ एसो रीतिसों दोऊस्वरुपनकों आपके हाथसों
सेहेराधराए ॥ सो व्याहउत्सवकोमनोरथ परमानंद
सोंकरे ॥ वहूतसे आभरन वस्त्र भेटकरे ॥ ओर द्रव्य-
वहूतसो भेटकीयो ॥ कपूरकीआरती ऊतारी वहूत-
सीन्योछावरकीनी ॥ फेरि आपकों आनंदपूर्वक नि-
जस्थानमें पधराए ॥ फेरि कोईदीनपीछेंआपनें रानीसों
आज्ञाकरी जो तुमारो मनोरथ सव सिद्धिभयो अव
हमकोंविदाकरो ॥ यहसुनीकें रानीपरिजाय ॥ काय-
रहोयजाय ॥ रानीको मनोरथ एसो जो नित्य मेरे-
माँथेविराजो ॥ ओर आपकों तो सव भक्तनकोंसुख
देनोहें ॥ ओर सवव्रजमंडलको सनाथकरनोहें ॥ फेरि
लीलाकरनीहे ॥ ताकारनसों आपऊहाँसोंविजयकीए॥
तासमय रानीकोंवहूतखेद भयो ॥ पाछें रानी आप-

कीसीमताँई पाँवनसों पोहोंचावनआई ॥ तब आप-
कीइच्छा श्रीमथुराजीमेंबिराजिवेकीभई ॥ सो रानीनें
द्रव्यखरचिकें आपकी वेठकन्यारी ओर सब भैयान-
कीवेंठकन्यारी सो एसी रीतिसों सात घर बनवाए
॥ सो तातें सतघराबाज्यो ॥ पाछें कोईकालपीछें रानी
शत्रूकेसंग युद्धकरि लरी ॥ सो एकवेरतो पराजयकरि
॥ रानीके तीरको घावलाग्यो सो वा घावमें तीर पार-
नेकसिगयो ॥ फेरि कमरि बाँधिकें शत्रूको रानीनें
राजयकीयो पाछेंरानी फोजलेकें नगरमेंआई ॥ पाछें
ा घावसों सातमेंदीन रानी आपकें चरणारविंदमें
ासिभई ॥ सो कडामेंतो देहछोडी ओर सवारे आ-
कीवेठकमेंआयके चरणपरस करती सब वैष्णवननें
खी ॥ एसो अलौकिकसंबंध दुर्गावतीरानीको आ-
नें दीखायो ॥ पाछें पांचमेदीन दूतननें आयकें आ-
कों खबरिदीनी ॥ सो सुनीकें एकमुहूर्त्तलों रानी

१ श्री मथुराजीमां श्री नाथजीनो सतघरो कहेवाय छे
ारणी दुर्गावतीनो बंधावेलो छे.

विरह अँगिकारकीए ॥ ओर सब वैष्णवननें आपने दुर्गावतीरानीकों धन्यधन्यकहे ॥ ओर दुर्गावतीरानीकी असवारीको हाथी जीनको नाम "गुरदार" हतो ॥ सो वानेंहु तीनदीन ताँईं अनजलनखायो ॥ ओर नेत्रनमेंसो जलको प्रवाह वहेतो रह्यो ॥ चोथेदीन हाथीनेंहु देहछोडीदीनी ॥ यद्यपि पशुहतो तोऊ वानें स्नेहकोस्वरुपजान्यो ॥ तातें वे हाथीकु धन्यहें ॥ ओर मनुष्यदेहधारिकें स्नेहकोस्वरुपनहीं जान्यो ॥ सो मनुष्य खरसोंहूं नीचजाननों ॥ तातें स्नेहकी वात एसी भारीहें ॥ सो दुर्गावतीरानी स्नेहसोंपूरणहती ॥ सो वाकेसंबंधसों हाथीमें हु स्नेहको आविर्भावहोय गयो ॥ तातें दुर्गावतीरानी महाभाग्यवान भगवद्भक्त हती प्रसंग संपूर्ण ॥

१ था परम भाग्यवान भगवदियनो घणु माहीतीवाळी वार्ता तथा तेना जीवननु, श्रीगुसाइजी तथा श्रीगोकुलनाथजी प्रत्ये तेना अपूर्व भक्ति भाव प्रीतीनुं वर्णन "श्रीगोकुलेशजीनुं जीवनचरित्र ए पुस्तकमां प्र. १२ मां" जोवु तथा "श्रीव्रजयात्रावर्णन" ए पुस्तक वांचो.

श्रीगुसाँईजीके सेवक रूपमुरारीदास तिनकी वार्ताको भाव

सो वे पृथ्वीपतिके जीवहिंसाकरनवारेनमें नोकं-रहते ॥ एकवेर पृथ्वीपति श्रीमथुराजीमेंआयो ॥ ताकेसंगमें वेहूआये ॥ सोश्रीमथुराजीकेप्रभावसों तथा आपकी कृपासोंवाकीमतिफिरी ॥ सो श्रीयमुनाजीमें विश्रांत घाटमें न्हाए तासमय चोवानसों पूछी जो एसो कोईमहात्मावतावो, जो मोकोंशरणलेकें मेरे-पापसों छुडावें ॥ सो चोवेननें विचारिकें कही जो याकालमें जगतुऊद्धारकश्रीविट्ठलनाथजी--श्रीगुसाँई-जीहें ॥ तुम ऊनकीशरणजाओ ॥ तुमारोकार्य सिद्धि होयगो ॥ ओर भगवद्में भक्तिहोयगी ॥ तब ईननें पूछी जो श्रीगुसाँईजी कहाँविराजेहें ॥ तब चोवेननें कही जो के तो श्रीगोवर्द्धन के श्रीगोकुलमें ॥ सो [illegible] आपके नीजधामहें ॥ एवात अपनेमनमेंधरि [illegible] [illegible]दास अपनें डेरानमेंआए ॥ फेरि मनुष्य

लपटायो तब मनुष्यननेखबरिकाढी, तहाँ सबननेंकही जो आपतो श्री गोवर्द्धनमेंविराजेहें॥ यहखबरी निश्चैं-करिकें भैयारुपमुरारिसों कही॥ सो वे पिछलीरात्रीकों चारिमनुष्य संगलेकें श्रीगोवर्द्धनकोंचले ॥ तहाँआ-यकेपूछी, तब व्रजवासिननेंकही जो आप गोविंदकुं-डन्हायवेकों पधारेहें ॥ सो रुपमुरारीहु गोविंदकुंडमें जायपोहोंचे ॥ प्रातःकाल गोविंदकुंडमेंन्हायकें विरा-जेहते ॥ सो छीतस्वामी, चतुर्भुजदास आदिभगवदीय आपके आसपासबेठेहतें ॥ सो ताही समय रुपमुरा-रीनें आपके सन्मुखआय साष्टांग दंडवत्करि ॥ ओर रुधिरकेभरे कपरा महामलिन पेहेरें ठाडोभयो ॥ ओर विनतिकरि जो महाराज में महाअपराधि हत्यारोहुं॥ वधिक, अहेडि, वासोंवि में अधिकहुं ॥ एसो मेंहुं ॥ ताको आप ऊद्धारकरोगे ॥ तब हँसिकें करुणादृष्टिसों आज्ञाकिनि, जो तेनें अपनिदिसाकंहि सो तो ठीकहे परन्तु ओरवि हत्याअपराध होय सो वोलिदे जो मनमें

राखियोमति ॥ ऊद्धारको कहापूंछो ऊद्धारतो तुमारो होय चूक्योहे ॥ दोहा ॥
॥ एक जीवके कारनें, मारे जीव अपार ॥
वधिक अधिकहूतें अधिक, सूनीए कृपा ऊदार ॥
यह सूनीकें करुणा करी, दीनें बंद छुडाय ॥
अति पुनित ततक्षन कीयो, लीयो आप अपंनाय ॥
॥ कवित ॥
महा पतित पावन श्री विट्ठलेश जगत गुरु,
ऐसा सूनोके नाम हों आयो हूं शरणकों ॥
केते तीर तरे जात गंग जो अनंत जीव,
देख्यो परचो प्रसिद्धि पाय पंचवरन को ॥
कुरूप मुरारीदास ताही कीये सुख रूप,
अभेपद दान दीए मेंट्यो दुःख मरनको ॥
देखेही देखे वसन सव रुधीर भरे,
तेही क्षन ऊज्वल करे एसे पाप हरनकों ॥१॥
यारीतिसों आपके सन्मुख वीनंतिकरि ॥ तव

आपनें आज्ञाकरी ॥ जो कपरा लोहूके उतारि देऊ ॥ गोविंदकुंडमेंन्हायआओ ॥ सो वे न्हायकेंआए ॥ तव आपनें नई परदनीपहेरवेकों दीनी, ऊपरना दीनों ॥ सो पहेरिकें आपके सन्मुख आयबेठे ॥ ताही समय आपनें अष्टाक्षरमंत्रदीनों ॥ सो सुनतही सकलह-त्यानकों नाश होय गयो ॥ सोवे कपरा लोहूके धरे-हते सो देखते देखते विनाधोए ऊज्वल होय गये ॥ तव निश्चें मनमें दृढ आपकेचरणारविंदमेंहोतो भयो ॥ सो काहेते ॥ जो दोऊप्रतापपरचोदेख्यो प्रसिद्धि ॥ जेसें दिव्यदेहहेगई, तेसेंही लोहुकेभरेकपरादीव्य-हेगए ॥ फेरि आपके सन्मुख दोय मोहोर भेट करी साष्टांगदंडवत् करी ॥ फेरि आप ऊहाँसो श्रीनाथ-जीकेमंदीरमें पधारें ॥ तव रुपमुरारिदासको आज्ञा-

---

मैया रुपमुरारीदासने माथे श्रीगुसाइजीए कृपा करी "श्री मदनमोहनजी" नुं स्वरुप पधरावी आप्युं हतुं जे हाल मांडवी (कच्छ) मां श्रीगोस्वामी श्रीपन्नालालजी महाराजश्रीने माथे बिराजे छे.

करि जो आज तुम व्रतकरो, कालि तुमको श्रीनाथजीके सन्मुख आत्मनिवेदन करावेंगे ॥ एसें आज्ञा करिकें आपतो श्रीनाथजीके मंदीरमें पधारे ॥शंखनादकरी श्रीनाथजीकोंजगाये मंगल भोगधर्यो॥ जब मंगलाभोग सराय आरतीकरी ॥ तब रुपमुरारीदास दर्शन करिकें परमानंदकों प्राप्तभए ॥फेरि दुसरेदीन श्रीनाजीके सन्मुख रुपमुरारीदासकों निवेदन करवायो ॥ फेरि आप राजभोग आरतीकरी नीचेपधारि भोजनकीए ॥ फेरि आपने ईनकों झुंठिनकीपातरिधरि, सो झुंठिनमहाप्रसादलेकें इनको हृदय बहुतहीहरखमानभयो ॥ फेरिहु मोहोर भेटधरी ॥ फेरि विनतीकरी आपसों विदा होय मथुरांजीआए ॥ ओर आपको चित्र रुपमुरारीदासके माथे पधरायो ॥ सो वाकों नित्य भोगधरिकें देहनिर्वाह करते ॥ फेरि मुरारीदासनें बडीबडी दाढी केश उतरायदीए ॥ तिलक छापा करिवेलगे, गलेमें तुलसीकीमाला पहेरिवेलगे ॥ सो या

भेखसों अकवरशाहकी सभाजूरी हती सो तहाँ जायकें ठाडेभए ॥ सो अकवरकी महेरवानी ईनपरवहुतहती ॥ तासमय सव म्लेच्छनकी कचेरीजुरी हती॥ सो रुप मुरारीदासकों देखिकें म्लेच्छ वहुत जरे॥ मनमें द्वेष-करिवेलागे ॥ सवननें विचारी जो अकवरशाहसोंकहिकें सव इनकोधर्म छीनीलेइगें ॥ एसो ऊननें दगा विचार्यो ॥ दोहा ॥

जूरी कचहरी यवनकी, कीनो सव मिलि द्वेष ॥
देखतहीं अकवर कह्यो, यह कहा धार्यो भेष ॥१॥
रुप मुरारि अव भयो, सुनो अकवर शाह ॥
श्रीविठ्ठल शरणे लीए, भए दोष सव दाह ॥२॥
पृथ्वीपति सुनीकें कही, दई वहुत श्यावास ॥
अपनें दीलकी मोजतें, रह्यो मेरे पास ॥३॥
अतूल प्रताप निज नाथको, में कहा करुं वखान ॥
ऊभय लोक निर्भय कीए, वाजत प्रगट नीशाँन॥४॥

सो एसो आपको प्रतापके बलसों अकबरकी सभा जीतिकें आयो ॥ फेरि मनमें यह खटकारह्यो, जो मेनें ईतनेजीवमारे तिनकी कहागती भईहोयगी ॥ एसेंकरत रात्रमेंसोए ॥ कछूजागते कछूसोए ॥ एसेंमें एसो कोतिक देख्यो जो वे जीव सब मारेहते सो आयकें वे सब रुप मुरारीदासजीकी स्तुतिकरिवेलागे ॥ दोहा ॥

जीतनें मारे जीव सब तीन सब कही सुनाय ॥
हम सब ही महा मुक्ति भए तेरेहाथ विकाय ॥१॥

सो ईतनीसुनतेंही रुपमुरारीदास वेव्योहोय गयो ॥ सो प्रेमाँच रोमाँच गदगदकंठ होय गयो ॥ ओर आपकेस्वरुपको चिंतवनकरि साष्टांग दंडवत् एकसो आठ करतोभयो ॥ ओर अपने मुखसोंकही ॥ जो धन्य श्रीविट्ठलेशप्रभु धन्य श्रीविट्ठलेशप्रभु ॥ जिनके शरणको एसो प्रभावहे ॥ दोहा ॥

रोंम रोंम रसना रटूं धन्य श्री विठ्ठलदेव,
ऊलटेको सुलटो कीयो सहज वीरदकी टेव ॥१॥

फेरि तादीनसो अकवरशाह रुपमुरारीदासपें अतिहीदोस्ति करिवे लाग्यो ॥ओर असवारीके लीयें घोडा दीयो ॥ आठमनुष्य रुपमुरारीदासकी नोकरी में राखे ॥ ओर अकवरशाहने हूकमदीयो ॥ जो जहाँ हम जाय तहाँ हमारी सवारीमें रहो ॥ यही तुमारी नोकरीहें ॥ एकवेर अकवरशाह काबुलकोंगए ॥ रुप मुरारीदास संगमें हते ॥ सो काबुलमें खवरिनपरे, जो कोंन हिन्दुहे कोंन मुसलमांनहे॥सवको एकसो भेख, एकसोखानपान ॥ सो रुपमुरारीदासनें सामानलेवेकों वजारमें मनुष्यपठाए ॥ वासोंकही ॥ जो कोई हिन्दु-की दुकान होय, ताकेसों चाँवल, घो, लूण लेआओ ॥ सो भगवद्ईच्छासों वे [१]माधवदासजीकी दुकानपर

१ आ माधवदासनी वार्ता वसोवाधन वैष्णवनी वार्तामां ९ मी छे त्यां जोवं.

जायठाडेभए ॥ तव माधवदासनेंपूछी, जो तुम कोनकेमनुष्यहो॥ तव वे मनुष्यनें कही॥ जो हम रुपमुरारीदासके नोकरहें ॥ तव माधवदासनें कही ॥ जो रुप मुरारीदासका केसाचलनहें ॥ सो मनुष्यनेंकही॥ जो ऊनके सेवापुजावहूतहें ॥ ओर श्रीगोकुलके श्री गुसाँईजीके सेवक हें ॥ ओर हमकोवी आपके शिष्य कराए हें॥यहसुनीकें माधवदास दुकान वंधकरिकें ईनकेसंगगए॥ सो जायकें हाथजोरिकें रुपमुरारीदाससों मिले ॥ ओर नेत्रनमेसों आँसूनकी धाराचली॥गदगदकंठ होयगए ॥ छातीसों छाती लगायमिले, ओर कही॥जो आज प्रभुननें मो पर अत्यंत कृपाकीनी ॥ मोको अपनो जान्यो, आज तुमारे दर्शनपाये ॥ तव विनती करी जो भाई घरपधारो ॥ तवमुरारीदासनें नाँहि करी ॥ तव वहूतहीं रोयवेलागे ॥ सो माधवदासको वैष्णव भाव कछुलिखिवेमें आवेनाँहि ॥ सो मुरारीदास माधवदासजीके प्रेमवसहोयकें घरगए ॥

घरमेंजायकेंदेखे तो प्रभुसाक्षात् विराजेहैं ॥ एसो प्र-
भावछायरह्योहैं ॥ फेरि मुरारीदास उहाँ सामग्रीसि-
द्धिकरे, भोगधरि माधवदासजीकेसंग महाप्रसादली-
यो, पाछें माधवदासनें पूछी ॥ जो भाईजी तुम आ-
पकीशरण केसेंआए ॥ तव रुपमुरारीदासनेंकही जो
भाईजी तुम हमारी कृतितो पूछोमति ॥ जो हमतो
पृथ्वीपतिके यहाँ जोवहिंसामेंहते ॥ सो आपके शरण
आयवेकी व्यवस्था सव माधवदाससों कही ॥ जो
एसें मोकोंशरणलेकें परमपुनितकीयो ॥ तव माधव-
दासबोले, जो श्रीविठ्ठलनाथ प्रभुनको एसोप्रतापहैं
॥ फेरि दोऊजनें भगवद्वार्ता करिवेलागें ॥ असे में
उत्थापनको समय भयो सो माधवदासजी ठाडेहो-
यकें अँचलकरिवे लागें ॥ तव रुपमुरारीदासनें पूछी
॥जो भाईजि यह कहा लीलाकरोहो ॥ तव कही॥ जो
श्रीनाथजी वनमेंसों पधारेहें, सो भैयाजीमें श्रीअंगकी
रज झारुंहे ॥ तव कही ॥ जो जंगाली वागोहे॥ जं-

गाली पागहे॥ ओर श्रीमस्तकपर मोरचंद्रिकाहे॥ ओर श्रीवालकृष्णजीको शृंगारहे॥ सो रुपमुरारीदास ऋहदीन, ऋहमहिना, अपने कागदमें लीखीलीयो॥ तब कछूकदीनमें व्रजमें आए॥ सोआपके दर्शन कीए॥ फेरि रामदासजी भीतरीयामिले॥ तिनसों महिना; दीन पूछ्यो॥ जो वादीना कहाशृंगारहतो॥ ओर कोंन वालकनें धरायो॥ तब शृंगारकीपुस्तक मुखीयाजीनें काढी॥ तामें, जंगालीवस्त्र, श्रीवालकृष्णजीको शृंगार बाच्यो॥ सो सुनीकें वहूतही आनंद भयो॥ ओर कही॥ जो धन्यमाधवदासजी॥ जिन पर श्रीगुसाँईजीकी एसीकृपा॥ फेरि श्रीगुसाँईजीकें आगे काबुलके माधवदासजीको वार्ता भई सो तब विनती करी॥ तब आपनें आज्ञाकरी जो भगवदीयनकों देशदोप, कालदोप बाधा न करे॥ भीतर आशय भक्तिदृढ चहिए॥ तब रुपमुरारीदासनें विनती

कहाविचारीहे ॥ तव आपनें आज्ञाकरी जो तुमारी निरुपाधि ईच्छा आपपूरनकरेंगे ॥ एसें आप वा समय करुणामृतसों दानकरिवेलागे ॥ तादीनसों मुरारिदासकों साक्षात् संवंधहोयवे लाग्यो ॥ सो कछुकदीन देशाधिपतिकी चाकरी करी ॥ फेरि ज्योंज्यों सुखसंवंध आपको हृदयमें विराज्यो ॥ सो लौकिक क्रिया सव छुटिगईहे॥ व्यसनी अवस्थाहे गईहे॥ तव अकवरसों सवननें कही जो ईनसों नोकरी नहीं होतीहे ॥ यह दीमाँना (गांडाजेसा) सा डोलताहे ॥ तव रुपमुरारीदासकों अकवरशाहनें वुलायो ॥ जो तुम कोंन जोगमें हो ॥ तव रुपमुरारीदासनें कही ॥ जो में श्री गोकुलके कन्हैयाके जोगमेंहों ॥ तव अकवरने कही जो तुम जाओ गोकुलमें कन्हैयाजीकी मोजमें रहो ॥ जो तुमसों नोकरी नहींहोतीहे ॥ सो वाही समय ए विदाहोयकें श्रीगोकुलकों चलेआए ॥ खजानेमेंसों जो खरच चढयो सो लेआए॥ओर घोडा

वेचीडार्यो ॥ फेरि श्रीगोकुल आयकें आपकों साष्टां-
गदंडवत् करी ।। जो द्रव्यपास हतो सो आपके चर-
णारविंदमें भेटकरिदीयो ।। तव आपनें आज्ञाकरी जो
एसें क्यों करोहो ॥ तव विनती करी ॥ जो राजकी
ईच्छासों मायामें रह्यो जो अव मायासों छुडावो ॥
तव आपनें आज्ञा करी ॥ जो जाओ न्हाय आवो,
झूंठिनिकी पातरि धरी हैं सो लेऊ ।। सो रुपमुरारी-
दास आपको स्वरुप हृदयमें धरिकें रमणरेतीके वीचमें
घनामें निकसीगए ।। सो एकएक व्रक्षलतासों मिले
ओर रुदनकरेहें ।। तव एसें करत करत रात्रीह्वेगई ॥
तव रात्रके समय साक्षात्‌लीलाके दर्शनभए ॥ सो र-
मणरेतीनके टीलानपर प्रभु भक्तन सहित रमणकरे हैं
।। सो रात्रभरि ईनकोंदर्शन भए ॥ सवारे प्रातःकाल
आपकी वीयोगाग्नि हृदयमें प्रगटी ॥ तव वा विर-
हमें साक्षात् तत्काल लीलामें प्राप्तिभए ॥ फेरि श्री-
गुसाँईजीनें राजभोग समय खवरिमँगाई ॥ सो कहूं

पायेनँमहि तव आप प्रभु जानिगए जो ए मनोरथ करी आएहते ॥ सो वाको मनोरथ सिद्धिभयोहे ॥ फेरि रात्रमें खवसिँगाई ॥ घाट तीरपेंसों कछू पायोनाँहि ॥ फेरि आपपोढे, सवारे आप जागे ॥ तव आपनें आज्ञाकरी जो महावन रमणरेतीमाँऊदेखो ॥ जो ऊहाँ पावेंगे ॥ तव दोयमनुष्य ढूंढिवेकों आए ॥ सो गोपकूआपें रमणरेतीके वीचमें सोयेपाए ॥ देखेतो देहमात्रहे ॥ जो प्राण नाँहिहे ॥ ओर देह एसीदेखी सो जामें कछू त्रास मृत्युको चिन्ह दीसेनाँहि ॥ जो नेत्र खुले रमणरेतोमाँऊ चाहिरहे ॥ सवननें यह जान्यो जो यह देखिरह्योहे ॥ तव वुलाए सो वोलेनाँहि ॥ तव जानी जो यह कहा कारनहें ॥ सो दोऊजनेननें ऊठायो सो प्राणकी श्वासनाँहि ॥ ओर मुख एसोदीसे जो माँनो अवीवोलेगो ॥ सो एक मनुष्य पासरह्यो, एकने श्रीगुसाँइजीसों वीनतीकीनी ॥ जो राज मुरारीदासजीकीतो यहदीसाहे ॥ तव आज्ञा

करी जो मुरारीदासतो दसमी अवस्थाको पोहोंचि गए॥ दोयचारि मनुष्यजायकें लौकिकसंस्कार करि देऊ ॥ एसें सवननें जायकें पांचलकरीसों संस्कारकोयो ॥ सो वाकीदेह अग्निसें एसीसमाई जो द्रोयघरिमें राखहेगई ॥ तव आयकें श्रीगुसाँईजीसों वीनती करी ॥ तव आपनें आज्ञाकरी ॥ जो वाकेभीतर पहेलेंसे एसीअग्नि उठी जो भीतर दाह हेगयो ॥ जो देखिवेमें देह हती ॥ एसी आपनें मुरारीदासको बहूतसराहनाकरी ओर सववैष्णवननें धन्यधन्य कह्यो ॥ सो उनमुरारीदासकी एसी एसी कितनीक वार्ताहें॥ सो कहाँताँई लीखियें ॥ प्रसंग संपूर्ण ॥

अथ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी निजवार्ता लीख्यते.

॥ सो एकसमय श्रीमहाप्रभुजी थानेश्वर, कुरुक्षेत्र, सींहनंद पधारे सो या स्थलको आपनें सनाथकोयो ॥ ओर रामानुज, जगतानंद आदिसवनको आपनें शरण लीए ॥ फेरि आप स्वाँमी विजयकीन ॥ सो

ईच्छाविचारोके दोल्लीमें निगंबोधघाटपें न्हायकें आप·तो व्रजको पधारेंसो वा समय आपके संगमें रामानुज पंडित, जगतानंद पंडित, वासुदेवदासछकडा, पूरन·मल्लक्षत्री, अंबालयके त्रिपुरदास, यादवेन्द्रदास, आदि भगवदीयनको समाजलेकें दोल्लीकोंपधारे ॥ सोयह·वात म्लेच्छनने सुनीकें हुमायुसों जायके अरज करी, जो साहव पहेले जंत्र जो दील्लीमें मथुरा दरवाजेपर लगाएहते ॥ सो कितनेक हिन्दु होय गएहते ॥ सोई फ·कीरसाहव पधारेहें ॥ सो न जाने कहाहोनहारहे ॥ एसो दील्लीमें भारीशोरभयो ओर अपनेदीनके गाममेंहते, सो फकीरसाहवकों आए जानीकें सव भाजिगए ॥ कोई काजीरह्योनाँहि ॥ सो अव हजरत आप वचावोतो वचेंगे ॥ नातर सव हिन्दु हो जाताहे ॥ दोहा ॥

नागे पॉयन पाँम पडि, कीने गुन्हा सव माप ॥
हेत हिमायु लिखि गयो, देख्यो अतूल प्रताप ॥१॥
श्री वल्लभ आचार्य गुरु, गोकुल गाम गुसाँई ॥
अकवर ईष्ट राखियो, तेरे सदा सहाई ॥ २ ॥

फेरि हुमायुने यह सब बातसुनी, तब दोयवजीर हिन्दु, सोनेकी सुखपाल, चमर, छत्र, लेकें आपको पधरायवेकों पठाए ॥ सो एकमजल सामने आए, सो ऊनवजीरननें आयकें हुमायुकी आडोकी विनतीकरी ओर कितनीक भेटकरीकें ॥ सुखपालमें आपकों पधराए ॥ ओर वीनती करी, जो आज्ञाहोय तहांताई आपके सामने हजरतसाहव लिवायवेकों आवें ॥ तब आपनें आज्ञाकरो, जो लिवायवेको कछूकामनांहि ॥ जो हम निगंवोधघाटपें न्हायवेकों पधारेंगे ॥ ऊहाँ आयकें दर्शन करे ॥ सो यह हलकारानें आयकें अरजकरी ॥ सो हुमायुनें ऊहाँताँई हलकारानकी डाक बाँधीदीनी, सो घरीघरीमें खबरी मंगावे ॥ ओर दीलीमें तो सुनीकें म्लेच्छ एसे भयभीतभए, सो तीन दीनताँई कोई घरसों वाहिरनीकस्योनाँहि ॥ सो वा समय लालकिल्लासोंलेकें निगंवोध घाटताँई हिन्दुही हिन्दु दिखिवेमें आवे ॥ सो मानों कोई पांडवनको

आपही विगरीजाओगे ॥ फेरि हुमायुसों कछू जुवाव आयोनाँहि ॥ ओर हमारी मथुरामें तुमारेकाजीनें ऊपद्रवकरिराख्योहें, सो देवकेमंदीरमें झालरि, घंटा. शंख, वजिवे नहीदेयहे ओर दीवा जोडन नहीदेयहें ॥ वाको तुम ऊहाँ हूकमपठावो ॥ तव हम यहाँसोकूच करेंगे ॥ नहीतो तुमारेऊहाँ मसीद कवर जेसें ऊननें कीया तेसें हमकरेंगे ॥ फेरि कहोगे तुम, के तुमने यहवात हमसों कहीनहीं ॥ फेर एसाहोगा के हमारा देव एसी करामात दिखावेगा, के तुम सवलोग यहाँ नही रहेंनपावोगे ॥ एसा कामकरो तो ॥ यह सुनीके हिमायू वहुत कंपायमानभए ॥ फेरि कछू जुवाव आयोनाँहि ॥ फेरि वाहीसमय हूकमदीयो के वा काजीकों सजाहोई ॥ ओर मथुरामें पहेलें जेसें झालरि घंटा सव वाजते, तेसेंहीवजे ॥ यहहूकम मथुरांजीमें आठ प्रहरमेंपहोंच्यो ॥ तव मथुरांजीमें वडोआनंद भयो ॥ सो सव मथुरीयाचोवे आपकी जे मनावत-

भए ॥ ओर श्रीमथुरांजीको शोभा पहेलेही ॥ तासों अधिकी भई ॥ सो यह परमाँना मथुराजीसों हिमायुपासपोहोंच्यो ॥ सो परमाँना हिमायुने सूनायो ॥ तव आप ऊहाँसो विजय कीए ॥ सो हिमायुको आडिसों पालखी छत्र भेट कर्यों, ओर विनतो करो ॥ जो फकोरसाहव जा जा देशमें पधारो तहाँतहाँ यामें वेठिकें पधारो ॥ तव आपनें आज्ञाकरी ॥ जो हम व्रजके सिमाँनेताँई लेजायकें फेरि पठायदेंईगे ॥ फेरि आप निगंवोधस्नानकरिकें हिमायुकोभेटकोमोहोरहतो, सो व्राह्मणनकों वाँटिदीनो ॥ ओर आप सुखपालमेंविराजोकें लालकिल्लाके नीचेहोयकेंपधारे ॥ सो हिमायुने दर्शन कोये ॥ ओर कोऊ म्लेच्छ भयकेमारे निकस्योनाँहि ॥ फेरि अगारि व्रजकों पधारे, सो व्रजके सिमाँने पें सों पात्साहको सव लाजमाँ फेरि दीयो ॥ सो यह आज्ञाकीनी, जो जव हम मँगावे, तव लाईयो ॥

प्रसंग द्वितीय.

फेरि आप प्रथम श्रीमथुरांजीपधारे ॥ सो सब मथुरीयाब्राह्मण चोबे आपकों लिवायवेकोंआए, सामने ॥ जे जे बोलत पधरायलेगये ॥ सो वा समय एसीशोभा होतीभई जो मानों कंसकोमारि विश्रांतिपें पधारे ॥ सबमथुरामें महामंगलशब्द होतोभयो ॥ सबननेंबोनतीकरी जो मधुपुरीकों फेरि आपनेंसनाथ करी ॥ सो यह धर्म सब आपनेंराख्यो ॥ यह एसो अवतार आपको जुगजुगमें होऊ ॥ सो एसो सबचोबेननें आशिरवाददीयो॥ फेरि आप तहाँते श्रीगोकुलपधारे॥ फेरि कछूकदीनपाछें दील्लीपति हिमायुकीदेहछूटी, तापाछेंअकबर तखतपरबेठे ॥ पहेलें हिमायुके वखतके लिखे किताबके कायदा चलिवेलागे॥ सो जा किताबमें श्रीमहाप्रभुजीको उत्कर्ष चरीत्र-बांच्यो ॥ ओर हिमायुने जो दोहा लिख्यो सो बाँच्यो ॥ फेरि मनमें यह चटपटोलागी जो श्रीगोकुल

जायकें आपकेदर्शनकरुं तो मेरोराज कायम वरकरार रहे ॥ ताकेलीये राजाटोडरमल, वीरभाँन, सूरजशास्त्री, कानकुवज, कविराजभाट ईन चारोंनकों श्रीगोकुलपठाये ॥ ओर वीनतीकराई॥जो राजके दर्शनको मेंआऊ ॥ तव ईननें श्रीगोकुलआयकें आपसों वीनतीकीनी, तव आपने आज्ञाकीनी॥जो जेसे हिमायु निगंवोध घाटपें आयो॥ता रीतिसों दर्शन करीजाय ॥ यह आज्ञा चारोंजनेननें जायकें अकवरसोकही ॥ तव अकवर वाहीरीतिसो आपकेदर्शनको श्रीगोकुल आयो॥कोई म्लेच्छ संग नॉहि लायो॥ जो प्रातःकाल आप ठकुरानी घाट ऊपर विराजेहते ॥सो पहेलेआपको खवरिकराई ॥ जो राजके दर्शनकों अकवरआवेहें ॥ तव आपनेंकही ठीकहें॥ सो चारि वजराकीसाहवी संगलेकेंआयो ॥ ओर कछुनही लायो ॥संगमें सवमनुष्य धर्मज्ञलायो ॥ सो आपकेसामनें साष्टांगदंडवत्करिकेंगियों ॥ मानों अक्रुरजीकी नाँई वं-

दनाकरतभयो ॥ अपनें जन्मकों ओर राजकों धन्य धन्य कहेतोभयो ॥ जो हिमायु तो हतोही परि अकवरकी भावभक्ति कछु कहीनजाय फेरि सहस्रावधिमोहोर आपकेअगारि भेटधरि वीनतीकरी॥ जो मुजे एसी द्वा दो जो राजके कदमोंमें मनलगारहे ॥ तव आपने श्रीमुखसों आज्ञाकरी ॥ जो तथास्तु॥सो वा समय आपको एसो दर्शनभयो,के अक्रुरजीकों वृन्दावनमेंभयो ॥ ओर एक चीतेराकों हूकमकीयो जो आपकी तसवीर ऊतारीकें मेरे पास ले आईयो ॥ ओर अकवरकों यह निश्चेंभयो जो अव मोको गलीमकोडर नहीरह्यो ॥ एसें वहूत प्रणिपथ करिकें आगरेगए ॥ ओर अपनी कीतावमें सवकायदा लिखि ले गए ॥ फेरि वह चीतेरा श्रीगोकुलमेंरह्यो ॥ सो छे महीना रह्यो ॥ सो तोऊ कलमपेंचित्र लिख्यो नाँहिजाय ॥ जो अकवरकेयहाँसों वेरवेर खवरिआवे ॥ जो चित्र वेगीलावो ॥ सो चीतेरा घवरायो ॥ जो चित्र न ऊत-

रेगो तोया वातमें मेरो जीव जायगो ॥ सोतव चितेरानें आयकें साष्टांगदंडवत्करी ॥ ओर वीनतीकरी, जो राज मोकों आपकेचित्र ऊतारिवेकी अकव्ररकहिगयो हे ॥ सो छे महिनाभए चित्र कलमपर आवेनाँहि ॥ सो राज में जायकें कहा मोहोंडोदीखाऊं ॥ मेरी राजने कहा विचारीहें॥सो आज्ञाकरें ॥ तव वाहीसमय करुणादृष्टिसों आप वाकेसामेचितये ॥ तव आज्ञाकरी ॥ जो कपराऊतारि श्रीयमुनाजीमेंन्हायआऊ ॥ तव न्हायकें आपके सन्मुखवेठ्यो ॥ तव आपनें नामश्रवणकरायो ॥ जो आपनो स्वरुप वाकेहृदयमें स्थापन कीयो ॥ वाहीसमय आपनें आज्ञाकीनी ॥ जो अव तूं चित्रऊतारि ॥ सो स्वरुपतो आपने महान् अलौकिक रीतिसों दर्शनदीयो ॥ सो स्वरुप तो वानें हृदयमें पधरायो ॥ ओर जो स्वरुप जगत्प्रसिद्धि दर्शनदेयहें ॥ सो वा रीतिसों वानें चित्रऊतार्यो ॥ सो वा चित्रमें ईतनी विलक्षणता भारी होतीभई ॥ जो भावीकहते

तिनको भावात्मक दर्शनहोतो, चित्र आपको ऊतारि कें रोंमरोममें आपकोस्वरुप वाकें भरिगयो ॥ फेरि एसी प्रतिज्ञाकरी ॥ जो आजपीछें कोई जीव मात्रको चित्र ऊतारनोंनाँहि ॥ फेरि आपकों दंडवत्करि विदा-होयकें अकवर पास आयो ॥ तव अकवरनेपूछी ॥ जो ईतनेरोज तुमनें क्यों लगाए ॥ फेरि चितेरेनें दसवीस चित्र कलमसोंऊतारे हते सो दीखाये ॥ ओर कही ॥ जो मेनें अपनीवुद्धिकाजोर वहूतकीया ॥ मोसों चित्र ऊतर्यानहीं ॥ जो कोई मनुष्यहोई, ताको चित्र ऊ-तारुं ॥ ए तो साक्षात् गोकुलकेकन्हैयाहें ॥ ए कृपा-करे ॥ तव ईनकी तसवीरऊतारीजाय ॥ तातें मोकों ईतनेरोज रहेनोपर्यो ॥ सो यह चित्र अकवरकेहाथमें दोए ॥ तव अकवरकों वा चित्रकोमहान् अलौकिक-दर्शनभयो ॥ तव अकवर दर्शनकरतेंही स्वरुपाशक्ति वहूतही हेगयो ॥ ओर चीतेरासों प्रसन्नहोयकें कह्यो, जो तूँ कछू ईनाममाँगि ॥ तवईननें कही ॥ जो हज-

१. आ चित्रनी वार्ता माटे वांचो "८४ वैष्णवनी वार्ता" "श्री सूरदासजीनुं जीवन चरित्र" ए ग्रंथो

रत या चित्रसिवाय ओरजीवका चित्र न ऊतारुं ॥ यह आपसों माँगताहूं ॥ सो अकबर जानिगयो जो ईनपर आपकोकृपाभई हे॥फेरि अकबरनें अपने पहेरवेके कडे जडावके वक्षीसमेंदीए॥ ओर हूकमदीया जो गोकुलके कन्हैयाकी लीलाकी तसवीर लीखाकर ॥ ओर कछू मतिलीखीयो ॥सो वाकेहाथकें श्रीनाथजी, श्रीनवनीतप्रियाजी, श्रीगुसाँईजो, इनके सातलाल-जीके चित्र अवीकहुं कहुं विद्यमानहें ॥

श्री गुसाँईजीकेसवक ताजवीवीकी वार्ताको भाव

फेरि वह आपकोचित्र अपनेमहलमें स्थापनकी-यो ॥ सो नित्यपहेलें जागे तव आपकेदर्शनकरे॥ फेरि ओरके सामनें झांकतो एसो अकबरकें नेमहतो॥ फेरि वह चित्र ताजनें अपनेमहलमेंपधरायो ॥ सो अकवर ऊहाँ नित्यदर्शनकरिवेकोंजातो ॥ ताजकों वा चित्रमें स्वरुपासक्तिहेगई ॥ ओर ताजकों अकबरनें महलमें

बैठाई, ता दीनसों रायवृन्दावनदासकीबेटी ओर बी-
रबलकीबेटी शोभावती सो ईनको रातदीनसत्संग
..ाजकोरह्यो, फेरिएकदीन ताजनें शोभावतीसोंकह्यो
जो एसाजंत्र आपकेपासतेमँगादो, जो अकबर मेरे
वश होय जाय ॥ सो शोभावतीनें श्रीगुसँाइजीको
विनतिपत्रपठायो ॥ तामें ताजकी विनती लिखिपठा-
ई ॥ जो एसा जंत्रमुजेलिखिपठावो ॥ सो अकबर मेरे
.शहोयजाय ॥ तब में आपकेचरणकोसेवाकरों ॥ सो
मुख्य मनोरथयहहें ॥ तब आपनें एक दोहा लिखि-
ठायो सो दोहा ॥

कँामन टोंमन टोटिका, ए सब डारो धोय ॥
पिया कहे सो किजिये आपहोते वश होय ॥१॥

या दोहाकों तुम सोनेकीचोकीमें मढायकें अ-
नेगरेमेंराखियो ॥ तरो सब मनोरथ पूरनहोयगो ॥
ा दीनसों वानें अपनेगरेमें जडायकें राख्यो ॥ ता
ोनसों आपकीकृपासों अकबर वाको गुलाम

आवतो ॥ फेरि ओर सोतिनकों दुःख भयो, तिननें अकवरसों चुगली खाई ॥ जो हजरतसाहव हम एसा सूनेहें ॥ जो ताजनें आपकेऊपर कँामनकीयाहे ॥ सो ताजके गरेमेंहे ॥ कवी आपकेंदीलकों वहजंत्र नकलीम करेगा ॥ जो वेर वेर आप वाकेपास जातेहो ॥ सो विचार नहींकरतेहो ॥ याके गरेकाजंत्र देखाचाहिए ॥ नहींतो फेरि आपकों वडादुःख होयगा॥ वाही समय अकवर ताजकेपासगयो ॥ जायकें वा जंत्रको हेवालपूछयो, ताजनेंकह्यो मेरे गरमें जंत्रहे अकवरनें कह्यो मोकों खोलिकेंदिखायदे ॥ तव ताजने वहूत नाँहि करी, तव अकवर हठ चढिगयो, वानें मँानीनाँहि ॥ फेरि वानें वाहीसमय तोरिकें वा जंत्रकों वँचायो ॥ तामें यहनिकस्यो ॥ दोहा ॥ कँामनटोंमन टोटिका, ए सव डारो धोय ॥ पिया कहे सो किजिये, आपही तें वश होय ॥१॥ सो अकवर वांचिकेवहूत प्रसन्नभयो, ताजकों धन्यधन्य कहेतोभयो, ओर कही जो एसा-

जंत्र कहाँसेमँगाया ॥ तव कहीं जो यहजंत्र श्रीदीक्षीतजीने भेजाहे ॥ अकवरसुनिकें आपकी वहूतस्तुति करि वेलाग्यो, जो मुजे आप एसाचाहतेहैं ॥ जेसा मुजे मेरा साहव चाहताहैं ॥ तिसें अधिकामुजे श्रीदीक्षीतजी चाहतेहैं ॥ ता दोनतें ओर हूं आपकेचरणारविंदमें विश्वासहोतोभयो ॥ तासों ताजसोंकही ॥ जो में तुमसों वहुतखुशहों ॥ जो तूं या समय मुजपेंमँागे सो देऊं ॥ तव ताजनें यह मँाग्यो॥ जो आप मोपें खुश हो तो यहदीजें ॥ जो श्री दीक्षीतजीकी द्वा ओर मंत्र लेऊं ॥ तव अकवरनें कह्यो ॥ जो में वहुतखुशहों, तूँ श्रीदीक्षीतजीकी द्वा मंत्र ले ॥ जो अपने दीनवाला मुजे कोई कछूकहिसकेगा नाँहि ॥ यहसुनिकें ताजनें मनमेंजानी ॥ जो प्रभुननें मेरो मनोरथ पूरनकीयो ॥ फेरि अकवरतो अपनी खासकचहरीमें गयो॥ओर ताजनें वीरवलकी वेटीकीमारफत वीनती पत्रपठायो ॥ तामें लिख्यो जो आपपधारिकें

मुजेशरण लीजें ॥ मेनें अकवरसों हूकम माँगिलियाहे आप या वातमें शंका संदेह करेंनाँहि ओर शोभावतीने जो व्यवस्थाभई हती, सो सव लिखिपठाई ॥सो पत्र वाँचि कछूकदीनमें आप पधारें॥सो श्रीयमुनाजीके तीरपें वीरवलको वाग हतो तामें आपनें जायकें डेरा कीए ॥ सो ताहीकी वरोवर ताजकोवागहतो ॥ सो यहख़वर अकवरकों भई ॥ तव अकवरने पंडितन कों वुलायकेंपुछो ॥ जो अपनेगुरु-पीरकेपास कहारीतिसों जानों ?॥तव पंडितननेकही ॥ जो देवका जहाँ मंदीरहोय, वा ठीकाने पहेले पोरिसों साष्टांगदंडवत्करि देवकेदर्शनकरने ॥ ओर गुरु अपने स्थापनपेंपधारे॥सो पहेले अपनेमहेलके दरवाजेसों साष्टांगदंडवत् करिकें अपनेनिजस्थानमेंपधरावने ॥ ओर अपने सामर्थ अनुसार भेटधरनी ॥ तव अकवरने वाहीरीतिसोंपधराये॥ सो काहू म्लेच्छ काजीकोचलो नाँहि॥ फेरि दुसरे दीन ताजको हुकमदीयो ॥ जो श्रीदीक्षीतजीपधारे-

हैं ॥ तरो मनोरथहोय, तो तूं शरण जा ॥ यहहुकम-
लेकें डोलामें बेठिकें अपनेवागमें आई ॥ फेरि वीर-
बलकेबागमें भीतरकेरस्ताहोयके आपके चरणारविंद
पासआई ॥ तब जायकें साष्टांगदंडवत्करिकें दर्शन-
कीए ॥ वा समय ताजकोस्नेह कछू लिखिवेमें आवे
नॉहि॥ याके शरीरमें अन्य संबंध अन्याश्रयको गंध-
बीनाँहि ॥ एसो सत्पात्रदेखिके आपने शरणलीनी॥
ओर आपनें वाको दासीभाव दान कर्यो॥ फेरि तन
मन धन आपकी भेटअरपणकर्यो ॥ ओर वीनतीक-
री ॥ जो राज अब मैं कहारीतिसो निर्वाह करुं॥
तब आपनें आज्ञाकरी ॥ जोश्रीमहाप्रभुजीको चित्र
तोविराजेहैं ॥ ताको दर्शन करियो॥ ओर शोभावती
ओर रायबृंदावनदासकीबेटीको सत्संगकरियो ॥ ईत-
नी आज्ञा ताज अपनेंमाँथेपें धारिकें अपनेमहलमेंगई
॥ सो ताजनें अपने दोयमहल न्यारेकरे ॥ एक मह-
लतो श्रीमहाप्रभुजीकेचित्रकों ओर सेवासत्संगको ॥

ओर दूसरेमहलमें अकवरआवे ॥ ओर श्रीनाथजी ताजकेसंग सतरंजखेलें ॥ फेरि निजमंदिरमेंपधारे ॥ तादिनसों श्रीगुसाँईजी श्रीनाथजीसोंपूछे, जो एसे नेत्र आरक्त आलस्यभरेहें ॥ सो रात्र कहाँरहे ॥ तव आज्ञाकरी ॥ जो आज रात्रकों ताजकेसंग सतरंजखेलें, तहाँरहे ॥ तासों नेत्र आरक्तहें ॥ ता दिनसों श्रीनाथजीके राजभोगमें सतरंज विछिवेलागी ॥ एसें श्रीनाथजी ताजऊपर कृपाकरते तव ताजनें श्रीनाथजीसों विनतीकीनी ॥ जो मेरे महलमें नित्यविराजो ॥ तव श्रीनाथजीनें आज्ञाकरी ॥ जो श्रीमहाप्रभुजीको चित्र विराजेहें ॥ सो मेरोही स्वरुपहे ॥ सो चित्र श्री महाप्रभुजीको ताजकेमाँथे विराजेहे ॥ तापीछें जहाँगीरशाह तथा शाहजहाँनने नेमपूर्वक दर्शनकरे ॥ पाछें केतेकदीन ॥ पोछें कृष्णगढके राजानें शाहजहांनको लडाईमें सहायता करी याके ईनाममें वह चित्र कृष्णगढकेराजाको मिल्यो सो आप पधरायलेगए ॥ सो कृष्ण गढके राजाकेमहलमें अजहुं आपकोस्वरुप विराजेहे ॥

कृष्ण लीयो अवतार ॥ २ ॥ एक वडाई आपकी, कहे तव आवे लाज ॥ यह सुनिकें अकवर कह्यो, धन्य धन्य सव राज ॥ ३ ॥ धन्य भाग्य मम या समें, पंडित करो विचार॥श्री वल्लभ वल्लभ सुवन, नव निधि कृष्ण अवतार ॥ ४॥ यारीतिसों अकवर अपनेराजकों धन्यमानतोभयो ॥ ताजकी वहूतकाँनि राखतो ॥ओर आगरेमें गोकुलपुरा ताजनेंवसायो॥ तामें सव भगवदीयरहिवेलागे॥ ओर कल्लूकदीन ताजनें [1]श्रीललित त्रिभंगीरायजीकी सेवाकीनी सो अपने महलमें पधराए ॥ सो शोभावती ओर रायवृन्दावनदासकी वेटी परचारगीमें रहेती ॥ तापाछें श्रीललितत्रिभंगीरायजी

१. आ श्रीललितत्रिभंगीरायजी-श्रीचंद्रमाजी श्री मथाद्दमां श्री गिरिधरलालजी सुरतवाळा महाराजने माथे विराजे छे. हुं आ (हाल श्री गोकुलमां विराजे छे) घरसे उदेपुर गयो हतो त्यां श्रीवृन्दावनचंदजी ठाकोर विराजे छे, त्यांना वैष्णवो कहे छे के आ स्वरुप ताजवीवीना श्रीठाकोरजी छे अने उदेपुर नरेश महाराणा श्री फतेसिंहजीने माथे विराजे छे. आ स्वरुपनो प्राचीन वार्ता तथा उदेपुरनां वीजां मंदिरोनु वर्णन माटे जुओ "तीर्थयात्रानो हेवाल" ए पुस्तकमां प्रकरण २० मां पुरी हकीकत आपी छे.

दंडोत धारमेंविराजे ॥ फेरि श्रीगुसाँईजीके घरपधारे ॥ एक समय फागुनकोमहिनाआयो॥ सो ताजकों बहूतही विरहऊलट्यो ॥ खानपानकीसुधिरही नाँहि ॥ फेरि आपकीकृपातें ताजकों ऊहाँई सकललीलासमेत श्रीठाकुरजीके होरीखेलके दर्शनभए ता समय ताजनें धमारिगाई राग नट॥बहुरि डफ वाजन लागे हेली तुम सुनीयो सकल सहेली ॥ ओर छेह्ली तुकमें यह गाई ॥ निर्तत आवत ताजकेप्रभु गावत होरी गीत॥ फेरि लीला विस्मरण भई, तव याकों अत्यंत विरह-ऊठ्यो ॥ तासमय रायवृन्दावनदासकी वेटी ओर शोभावतीपासहती ॥ तासमय ताजनें महाविरहमें चारिदोहाकहें दोहा॥प्रीतम वसत पहाडपें, हम यमुनाके तीर ॥ अवको मिलनों कठिनहें, पाँवन परी जंजीर ॥ १ ॥ अगर आगरो मो रह्यो गिरि पर वसे मो नाथ, तोरि जंजीर जोमसों, ओर में प्रीतम के पास ॥ २ ॥ ईतनीकही धरनी गिरि, जिन सखी उर

लाय ॥ प्राण प्रियाके प्रेमसों, सींची धीर धराय। ३॥
निसा अंत महा विरहमें, दरशन दीयो व्रजराय ॥ अ-
कवर शाह मथुराचले संगलीये तियताज॥४॥फेरि तीन
दीनतांई अकबरशाह ताजकी खबरलेंनकोआए॥ सो

पर मुकुटकाछनिकोशृंगारहतो ॥ ओर वाही ताजकी धमारकों कुंभनदासजी तथा गोविंदस्वामी आदि भगवदीय गायरहेहते ॥ एसो सुख समयको ताजकों दर्शनभयो ॥ सो वा समय श्रीनाथजीनें ताजके सन्मुख कटाक्षचलाए ॥ सो मिलिवेकों दोरि, सो मणिकोठाकी देहरीनपें चढिगई ॥ सो रायवृन्दावनदासकी वेटी तथा शोभावतीनें थाँभिलीनी ॥ सो ईनके प्राण अलौकिक देहधारिकें वा लीलामें प्राप्तिभए॥ ओर लौकिकदेहकों वे दोऊ जनी नीचेंलेआई ॥ सो दंडोतीसिलाकेपास गोदमेंसों ऊतारिकें वेठारी॥ सोवा समय शरीरमें कछू श्वासको अंसनाहि रह्यो ॥ जो खालि थिरदेह रहीगई ॥ फेरि ईनदोऊननें वहूत चेतनाकराई ॥ सो तव जीव होयतो चेतनाहोई, तव जानी जो अव जीव नाँहिहे ॥ तव सवननें यह जानी जो अकवर शाहसों ताजकी एसी मोहोवत्त हती ॥ सो वह सुनेगो तो कहाजानें कहाकहेगो ॥ तववाहो

समय अकबरकों खबरिभई ॥ जो ताज देवकेदर्शनको गई, सो दर्शन करती करती विकलहोय गई ॥ सो नीचें ले आए हे सो वाको जीव तो वा देवके कदमोमें जाय पोहोंच्यो हे॥ तव यह सुनीकें अकबरने कह्यो ॥ "जो जहांकीवस्तुहती सो तहँा पोहोंची" ॥ याही वास्ते ताज मुजे यहॅा लिवायकें ले आई ॥ सो अब मेनें बहूत सुखसें ताजका मरना जान्या ॥ सो एसें कहिकें अकबरनें ऊहाँसो कूचकीयो ॥ तव सबनको चेनभयो॥ सो ताजको जन्म एक नाम मात्र म्लेच्छकोहें ॥ सो शरणेआई ता दिनसों अपने महलमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करिवेलागी ॥ अंतमें श्रीनाथजीके चरणारविंदमें पोहोची सो एसी ताज आपकी महान्कृपापात्र भगवदीयहती ॥ सो याके चरित्र अनंतहें सो कहाँताँई लिखियें ॥

इतिश्री गुसांइजीको सेवक ताजबीबीकी वार्ता संपूर्ण॥

आ परम भाग्यवान ताज पंजाबी हिन्दु स्त्री हतां. महान् अकबर नरेशे तेने लावी पोतानी अर्धांगना करीने राख्यां. ताज पोतानी साहेलीओना सत्संगथी श्रीगुसांइजीने विज्ञप्ती करावी सेवक थई. अकबरशाह पण श्रीगुसांइजी परत्वे अत्यन्त प्रीति धरावतो. पोताना महेलमां श्रीकृष्णभगवान, श्रीमद् वल्लभाचार्यजी, श्रीगुसांइजी आदिनां चित्रो राखतो तेणे पण ताजनी इच्छाने आधीन थई श्री गुसांइजीना सेवक थवा आज्ञा आपी जेथी ताजने सर्वत्र सुख--शान्ती थई, सेवक थइ, श्री ललितत्रिभंगीरायजी–श्री चंद्रमाजी–श्रीस्वामिनीजी सहित युगल स्वरुपनी सेवा पधरावी. (आ स्वरुप अत्यारे श्री मुंबाइमां सुरतवाळा श्रीमद् गोस्वामी श्री गिरिधरलालजी महाराजने माथे भुलेश्वरमां विराजे छे. हालमां आ स्वरुपो श्री गोकुलमां विराजे छे.) प्रभु परायणजीवन गाळवा मांड्युं. जे नीचेनां कीर्तनो उपरथी जणाशे.

सुनो दिलजानी मेरे दिलकी कहानी तुम, इस्म की बिकानी वदनामी भी सहूँगी मैं, देवपूजा ठानी मैं निवाज हू भुलानी, तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहूंगी मैं, श्यामला सलोंना सिरनताज सिर कुल्हे- दार, तेरे नेह दागमें निदाघ ह्वे दहूंगी मैं, नन्द के कुमार कुरवान ताणी सूरत पें, ताँण ज्वाल प्यारे हिन्दुवानी ह्वे रहूंगी मैं.

छेला है छली है महावली महीपति है, जाको नाम लेत होत सफल जन्मारो है, चित्र है विचित्र है अनीत्र है न चित्र एसो, देखके व्रजांगनान अत्र तू तुम्हारो है, वाँको हैं त्रिभंगी है स्वयंभू है सना- तन है सव जीवजंत पशु पंछीको संम्हारो है, चोर है लवार है सुलंपट चटोकरी है, टेडी टांगवारो इष्ट दैवत हमारो है.

छेल जो छवीला सव रंगमें रंगीला, वडा चित्त का अडीला सव देवतासें न्यारा है, माल गले सोहे

नाक मोती श्वेत सोहे कान, कुंडल मन मोहे लाल मुकुट सीस धारा है; दुष्ट जन मारे संतजन रखवारे, ताज चित्त हितवारे प्रीत करन वारा है; नंदजूका प्यारा जिन कंसको पछारा, वह वृन्दावनवारा कृष्ण साहिव हमारा है ॥

वळी ताजने श्री ठाकोरजीनी होरी लीलानो साक्षात् अनुभव थयो तेज वखते पोते एक धमार गाई छे ते नीचे मुजव.

॥ राग नट ॥

वहोरी डफ वाजन लागे हेली। खेलत मोहन सांवरो हो, किहि मिस देखन जाय । सास नणद वैरिण भई, अव कीजे कौन उपाय ॥१॥ ओजत गागर डारिये, जमुना जलके काज। यह मिस वाहर निकस के, हम जाय मिले तजि लाज ॥२॥ आओ वछरा मेलिये वनको देहि विडार। वे देहे हमही पठे हम रहेंगी घरी द्वे चार ॥३॥ हाहारी हो जात हो मं

नाहिन परत रह्यो । तू तो सोचतही रही तें मान्यो न मेरो कह्यो ॥४॥ राग रंग गागड मच्यो नंदराय दरबार । गाय खेल हँस हँस लीजोये फाग बडो त्योहार ॥५॥ तिनमें मोहन अति बने नाचत सबे गुवाल। बाजे बहुविधं बाजही, रुंज मुरज डफ ताल ॥ ६ ॥ मुरली मुकुट विराजही कटिपट बांधे पीत ॥

आटलुं गातांज ताजे प्रभुनी दिव्य अनेरसात्मक–होरीलीला नित्यलीलामां प्रवेश कर्यो तेथी अधुरुं रहेलुं कीर्तन श्रीठाकोरजीए पूर्ण कर्युं.

नृत्यत आवत ताजके प्रभु गावत होरी गीत॥७॥

ताजे प्रभुलीलामां प्रवेश कर्यो तेथी तेना लौकिक पंच महाभूत प्रणित देहने तेमनी सखीओए श्रीगिरिराज उपरथी नीचे लावी अग्नी संस्कार कर्यो. बादशाह पोताने घेर आग्रा गयो. आ ताजनुं समाधि स्थान श्रीसुरभीकुंड उपर होवानुं मनाय छे.

[जुओ, " वैष्णवधर्मपताका " मासिक वर्ष २. अंक. १.]

समाप्त
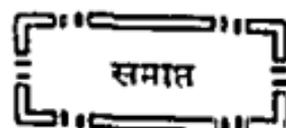
श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्योनमः ॥

॥ दीनता आश्रयके पद ॥

॥ मंगलाचरण ॥

नाश्रितोवल्लभाधीशो न च दृष्टा सुबोधिनी ।
नाराधिराधिकानाथो वृथा तज्जन्म भूतले ॥ १ ॥

माहात्म्यके पद

राग विलावल शरन प्रतिपाल गोपाल रति वर्धिनी ॥ देत पति पद प्रिय कंत सन्मुख करत अतुल करुणा मई नाथ अंग अर्धनी॥दीनजन जान रस-

पुंज कुंजेश्वरी रमत रस रास पियसंग निश शर्दनी॥ भक्तिदायक सकल भवसिंधु तारिणी करत विध्वंस जन अखिल अघ मर्दनी ॥ रहत नंदसूनु तट निकट निशदिन सदा गोप गोपी रमत मध्य रस कंदनी ॥ कृष्ण तन वरण गुण धर्म श्रीकृष्णके कृष्ण लीला मई कृष्ण सुखकंदनी ॥ पद्मजा पाय तुव संगही मुर-रिपु सकल सामर्थ्य भई पापकी खंडनी ॥ कृपारस पूर वैकुंठ पदकी सिढी जगत विख्यात शिव शेष सिर मंडनी ॥ पर्यो पदकमलतर और सव छांडके देख दृग करदया हास्य मुखमंदनी ॥उभय करजोर कृष्णदास विनती करे करो अव कृपा कलिंद गिरि नंदिनी॥१॥

कमल नयन कमलापति त्रिभुवनके नाथ ॥ एक प्रेमते सब जो मन होवे हाथ॥सकल लोककी संपदा जो आगे धरिये ॥ भक्ति विना माने नहि जो कोटिक करिये ॥ दास कहावन कठिन है जोलों चित्तमेंराग ॥ परमानंद प्रभु सांवरो पेयतवडभाग॥२॥

राग मालकोस वंदु चरणसरोज तिहारे॥ श्याम श्रीअंग कमलदललोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे ॥ जे पद पद्म सदाशिवको धन सिंधुसुता उरतें नहिं टारे ॥ जे पद पद्म परसि जलपावन सुरसरी दरस कटत अघ भारे ॥ जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नि नृग ओर व्याध पतित वहु तारे ॥ जे पद पद्म तात रिपु त्रासत मन कर्म वच प्रल्हाद सम्हारे जे पद पद्मरमित वृन्दावन अगनित प्रवल मह्ल वहुमारे॥ ॥ जे पद पद्म रसिक व्रज युवति सुतपति तन मन धाम विसारे ॥ जेपद पद्म भ्रमति पांडव दल सारथि व्हे सव काज सुधारे ॥ सूरदास तेई पद पंकज त्रिविध तापके हरन हमारे ॥३॥ राग सोरठ जापर कमलाकंत ढरें ॥ लकरी घासको वेचनहारो तासिर छत्रधरे ॥ विद्यानाथ अविद्या समरथ जोकछु चाहे सोई करें ॥ रीते भरे भरे पुन ढोरें जो चाहे तो फेर भरे॥सिद्ध पुरुष अविनाशी समरथ काहूते न डरे॥परमानंद दास यह संपति मनतें कवु न

श्रीवल्लभ चाहे सोई करे ॥ जो उनके पद दृढ करी पकरे महारस सिंधु भरे ॥ वेद पुराण सुघडता सुंदर ए वातन न सरे ॥ श्रीवल्लभके पदरज भजके भवसागरते तरे ॥ नाथके नाथ अनाथकेबंधु अवगुण चित्त ना धरे ॥ पद्मनाभकुं अपनो जानिके डूवत कर पकरे ॥५॥ साचा स्नेही नंदकुमार ॥ ओर नहीं कोई दुःखको बेली सबमतलबके यार ॥ मनुष्य जातिको नांही भरोंसो छिनु विहार छिनुपार ॥ चीत्त वचनको नहीं ठिकानो क्षण क्षण प्रथक् विचार ॥ मात पिता भगनी सुत दारा रतिन निभत एकतार॥ सदा एकरस तुमही नीभावो रसीकप्रीतम प्रतिपाल ॥६॥ प्रीतकर कोउ सुख ना लह्यो ॥ अलिसुत प्रीतकरी जलसुतसो संपुट मांज रह्यो ॥ पतंग प्रीतकरी दीपकसुं अपनो अंग दह्यो ॥सारंग प्रीतकरी नादनसुं सनमुख बाण सह्यो ॥ गोपीन प्रीतकरी गोविंदसुं चलत कछू न कह्यो ॥ सूरदास यह प्रीत

कठिन हे नेनन नीर वह्यो॥७॥ ॥अहो हरि दीनकेजु दयाल ॥ कब देखोगे दिशा हमारी ग्रसीतहुं कलिकाल ॥ कहा सुमरन करुं तिहारो पड्यो अति जंजाल ॥ सकल साधन रहित मोसम ओर नहीं गोपाल ॥ करत अति विपरीत साधन चलत चाल कुचाल॥ काढवेकुं नांही समरथ तुम विना नंदलाल ॥ तुमवीन आरे कोनसुं कहीये एहो हमारे हाल ॥ हसो कहाजु हरो आरत रसिक करो निहाल ॥८॥ अब हरि भूले नांही बने ॥ विपत विदारन तुम हो गिरिधर सुखमें मित्र घने ॥ अब में आधीन कछु नहीं जानत तुमवीन कोन सुने ॥ इतनी विनती सुनो पिय मेरी व्रजपति तुम सरने ॥९॥ हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे ॥ कमल नयन मन मोहन मुरति मन मन चित्र बनावे ॥ एकवार जाहि मिलत मया करि सोकेसें विसरावे ॥ मुख मुसिकानि वंक अवलोकनि चाल मनोहर भावे ॥ कबहुक निविड तिमिर आलिंगन

कबहूक पिक सुरगावे ॥ कबहुक संभ्रम कासि कासि कही संगही उठि उठि धावे ॥ कबहुक नेनमुदि अंतरगति मणिमाला पहिरावे ॥ परमानंद प्रभु श्याम ध्यान करि एसे विरह गमावे ॥ १० ॥ राग कान्हरो उत्तम कुल अवतार कहा जो श्रीवल्लभ राज कुमार न जान्यो ॥ चरचा न कीनी वर वल्लभकी रचि पाखंड कियो वहु वानो ॥ रसिक कथा सुनी नहिं श्रवणन रह्यो विषय रसही लपटानो ॥ शोच मिट्यो नहिं उर अंतरको समझ समझ लाग्यो पछतानो ॥ गिरि गोवर्धन व्रज वृंदावन कवहु न नयनन निरखि सिरानो ॥ कृष्णदास प्रभुको गुण महिमा अगम निगमनहिंजात वखान्यो ॥१॥ नाहिन रह्यो मनमें ठोर॥नंद नंदन विनु केसे आनिये उर ओर ॥चलत चितवत द्योस जागत स्वप्न सोवत रात ॥ हृदयते यह मदन मूरति छिनु न इतउत जात ॥ कहत कथा अनेक उधो लोक
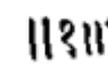
लोभ दिखाय ॥ कहा करों चित्त प्रेम पूरण घट न सिंधु समाय ॥ श्याम गात्र सरोज आनन ललित गति मृदुहास ॥ सूर एसे दरसको यह मरत लोचन प्यास ॥२॥ यह मांगों यशोदा नंदन ॥ चरण कमल मेरो मन मधुकर या छवि नेंनन पाऊं दर्शन ॥ चरण कमलकी सेवा दीजे दोउ तन राजत विद्युलता घन ॥ नंद नंदन वृषभाननंदिनी मेरे सरवस प्राण जीवनधन ॥ व्रजवसिवो यमुनाजल अचवो श्रीवल्लभ को दास यहे पन ॥ महाप्रसाद पाऊं हरिगुण गाऊं परमानंद दास दासीजन॥३॥ जे कोई श्री यमुना नाम संभारे ॥ ताको दरस परस कोउ करही ताही-को वे तारे ॥ भक्तकी महीमा कहां लगी वरनो यस हा हा कही हारे ॥ चत्रभुजप्रभु गिरिधरन लालको नित्यप्रति वदन निहारे ॥४॥ व्रजभूमि मोहनी में जानी ॥मोहन कान्ह मोहन श्रीवृंदावन मोहन श्रीयमुना महारानी ॥ मोहन नार गोकुलकी

ठाडी बोलत अमृत वानी ॥ मोहन सूरदासको ठाकुर मोहन श्रीराधेरानी ॥५॥ यह छवि मोपें जात न वरनी ॥ श्री गोवर्धनकी आसपासते खिल रही सब अरनी ॥मदनमोहन पिय खेलन निकसे संग राधे मन हरनी ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर धन्य धन्य व्रजकी धरनी ॥ ६ ॥ उधो एसो भक्त मोहि भावे ॥ सबतज आश निरंतर मेरी जन्म कर्म गुन गावे ॥ कथनी कथत निरंतर मेरी सेवामें चितलावे ॥मृदु हास नेन जलधारा करतल तालवजावे॥ जहां जहां भक्त मेरो चरन धरत हे तहां तिरथ चली आवे ॥ वे रज ले में अंग लगाउं कोटी ब्रह्मांड सुख पावे ॥ मेरी मूरत उनके हृदयमें वे मेरेउर आवे ॥ वल वल जाऊं श्रीमुख वाणी सूरदास जस गावे ॥ ॥७॥ निज वैष्णवजन मेरो अंग॥ छांड कुटुंब ओर सकल पदारथ सेवाकरे फिरकरे सतसंग ॥ ध्यान धरे मेरो गुण गावे नई उपजावे तानतरंग ॥ निश्चय

चित होय दृढकर बेठे कथा सुने मन अतिही उमंग ॥ मम गुण सुन सुख सिंधु बढे उर प्रेमनीर वहे मानो गंग ॥ प्रेम पुंजमें मग्न होयके निशदिनही वरसावत रंग॥मीन न छांडे जलकु जेसे उनके मेरे ऐसे प्रसंग ॥ सूरदास मलीन महाजल गंगा मिले होय जातहे गंग ॥८॥ मनकी बात कोनसुं कहिये ॥ हरि सुमरन क्षणभर नहि होही कहो कोनपें जईये॥ मिलते सबे अपने स्वारथके तहांहुं सुख न लहिये॥ दुर्लभ मिलनो परम परमारथ तिनपें दोष मिटाइये करि निरधार देख जिय अपने हरिजनके संग रहिये॥ रसिकदास जिनकरो शंका भक्तजन संग कछु पइये ॥९॥ हम भक्तनके भक्त हमारे ॥ सुन अरजुन प्रतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे ॥ भक्तन काज लाज हों छांडो पाउं प्यादे धाउं ॥ जहां जहां भीर परे भक्तनको तहां तहां जाई छुडाउं ॥ जोई जोई वेर करे भक्तनसों सो वैरी निज मेरो ॥ देख विचार

भक्तनके तातें रथ हांकतहुं तेरो॥ भक्तनके जीते ही जीतुं भक्तनहारे हारुं ॥ सूरदास जो भक्त विरोधी सो चक्र सुदर्शन मारुं ॥१०॥ श्रीमदाचार्यके चरण नख चिन्हको ध्यान उरमें सदा रहत जिनके॥ कटत सब तिमिर महादुष्ट कलिकालके भक्तिरस गूढ दृढ होत तिनके ॥ जंत्र ओर मंत्र महातंत्र बहुभांतिके असुर ओर सुरनको डर न जिनके॥ रहत निरपेक्ष अपेक्ष नहि काहूकी भजन आनंदमें गिने न किनके ॥ छांड इनको सदा ओरको जे भजे ते परे संसार मांझ भिमके ॥ धारमन एक श्रीवल्लभाधीशपद करन मन कामना होत जिनके ॥ मत्त उनमत्त सो फिरत अभिमानमें जन्म खोयो वृक्षा रातदिनके॥ कहत श्रुति सार निरधार निश्चय करि सर्वदा शरण रघुनाथ जिनके ॥११॥ हरिजन संग छिनक जो होई॥ कोटि स्वर्ग सुख कोटि मोक्ष सुख तिहि सम लहे न कोई ॥ भूरि भाग्य पुण्य संचित फल कृष्ण कृपा व्हे जाको

॥ सूरदास हरिजन पद महिमा कोकहो शके ताको ॥१२॥ जादिन संत पाहुने आवत ॥ तिरथ कोटि स्नान करन फल एसो दर्शन पावत ॥ प्रफुल्लित वदन रहत निशदिन प्रति चरण कमल चित्त लावत ॥ मन-कर्म वचन ओर नहि जाचत सुमरत ओर सुमरावत॥ मिथ्यावाद उपाधि रहित व्हे विमल विमल जस गावत ॥ सूरदास प्रीतिकर तिनसों हरिकि सुरत करावत ॥१३॥ हरिको भक्त माने डर काके॥ जाके करजोरे ब्रह्मादिक देव सबे दंडोती जाके॥ संघ सखा कर ग्रामवसावे यह विपरीत सुनी नही देखी ॥ हाथी चढे कुकरकी शंका यहधो कोन पुराणन लेखी ॥ सुगम लोग अरु विगम मूढमति कृपासिंधु समरथ सव लायक ॥ परमानंददासको ठाकुर दीनानाथ अभय-पद दायक ॥१४॥ कोन रसिक हे इन वातनको ॥ नंदनंदन विनु कासो कहिये सुनीरी सखी मेरे दुख या तनको ॥ कहां वे यमुना पुलिन मनोहर कहां वे

चंद शरद रातिनको ॥ कहांवे मंद सुगंध अनिलरस कहांवे पट्पद जल जातिनको ॥ कहां वे सेज पोढिवो वनको फूल विछोना मृदु पातनको ॥ कहां वे दरस परस परमानंद कमल नयन कोमल गातनको ॥१५॥ माइरीको मिलवे नंदकिशोरे ॥ एकवार को नेन दिखावे मेरे मनके चोरे ॥ जागत जाम गिनत नही खूटत क्यों पाउंगी भोरें ॥ सुनिरी सखी अव केसें जीजे सुनि तमचर खग रोरे ॥ जो यह प्रीत सत्य अंतर गति जिनि काहू वनिहोरे ॥ परमानंद प्रभु आन मिलेगें सखी शीश जिनि फोरे ॥१६॥ यह मागों गोपीजन वल्लभ ॥ मनुष्य जन्म ओर हरिसेवा व्रज वसवो दीजे मोहि सुलभ ॥ श्रीवल्लभ कुलको हों चेरो वैष्णव जनको दास कहाउं ॥ श्रीयमुना जल नित्य प्रति न्हाउं मनवच कर्म कृष्ण गुणगाउं ॥ श्रीमद् भागवत श्रवण सुनों नित इनतजि चित कहूं अनत न लाउं ॥ परमानंद दास इह मागत नित नि-

रखों कबहू न अघाऊं ॥१७॥ राग केदारो
चकईरी चल चरण सरोवर जहां नहिं प्रेम वियोग॥ जहांभ्रम निशा होत नहिं कवहूं सो सायर सुखयोग ॥ सनकसे हंस मीन शिव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकाश॥ प्रफुलित कमल निमिश नहिं शशीडर गुंजत निगम सुवास॥जिहिंसर सुभग मुक्ति मुक्ताफल विमल सुकृत जल पीजे॥ सोसर छांड क्यों कवुद्धि विहंगम इहां रही कहा कीजे ॥ जहां श्रीसहस्र सहित हरि क्रीडत शोभित सूरजदास॥अव न सुहाय विषय रस छिल्लर वह समुद्रकी आस॥१॥ भृंगीरी भज श्याम कमलपद जहां नहि निशिको त्रास॥ जहां विधुभानु समान प्रभानख सो वारिज सुखरास॥ जहां किंजल्क भक्ति नव लक्षण ज्ञानकर्म रसएक ॥ निगम सनक शुक शारद नारद मुनिजन भृंग अनेक॥ शिव विरंचि खंजन मनरंजन छिन छिन करत प्रवेश॥ अखिल लोक तिहिंवास सुकृत जल प्रकटित स्याम दीनेश ॥ सुन

मधुकर भ्रमत्यज कुमुदिनिगण राजीव वरकी आस॥
सूर प्रेम सिंधुमें प्रफुलित जहांचल करें निवास ॥२॥
ललित व्रजदेश गिरिराज राजे ॥ घोप सीमंतनी संग गिरिवरधरन करत नित्य केली तहां काम लाजे ॥ ललित ॥ त्रिविध पवन संचरे सुखद झरनां झरे ललित सौरभ सरस मधुप गाजे ॥ ललित तरु फूल फल फलित खटऋतु सदा चतुर्भुजदास गिरिधर समाजे ॥ ललित ॥३॥ नमुं श्रीवल्लभाधीश स्वामी ॥ अखंड अवतार जुगधार लीलाकरी आसुरी जीव सत्र मोह पामी ॥ नमुं० ॥ निगम करजोरके करत स्तुति सदा सनक शुक व्यास नहीं पारपामी ॥ शेप अज रुद्र सुर तेतीस ध्यावत सदा रटत हे मुनि सकल दीवस जामी ॥ नमुं० ॥ देखके दीनपर अतुल करुनाकरी भाग्य निधी प्रगट भये गरुडागामी ॥ नंदगृह प्रकट भुव भक्त आरत हरो तैलंग कुल तिलक शिरछत्र छामी ॥ नमुं० ॥ वेदमथ सकल सिद्धान्त

नवनीतरस दैवीजन दुरकिये हृदय श्रामी ॥ कपट कली दंड सवग्रंथ खंडन कीये व्यासनंदन वचन पार ग्रामी ॥ कोटी ब्रह्मान्ड तन रोमही रोम प्रति जगत आधार धर धीर धामी ॥ पुष्टिपथ प्रकट कर नाम नौका करी पार संसार जे सरन आमी ॥ कोउ कहे विप्र कोउ विविध पंडित कहे कोउकहे अंश कोउ आत्मारामी॥ स्वकीय जन एक निर्धार निश्चेकीये वस्तुतः कृष्णजो वंधे दामी ॥ कोन गुण कही शके अखिल व्रजइशके दीन व्हे चरनतर शीश नामी॥ शरन वल्लभगही भाग्यको पार नही भजो कृष्णदास प्रभु अंतरजामी ॥ नमुं० ॥४॥ आशरो एक दृढ श्रीवल्लभाधीशको ॥ मानसी रीतकी मुख्य सेवा व्यसन लोकवैदिक त्याग शरन गोपीशको ॥आशरो॥दीनताभाव उद्बोध गुणगानसो घोषत्रिय भावना उभयजाने ॥ श्रीकृष्णनाम स्फूरे पलन आज्ञाटरे कृति वचन विश्वास दृढ चित्त आने॥आशरो॥भगवदी जान स०

अनुसरे । ना देखे दोष अरु सत्य भाखे ॥ पुष्टिपथ-मर्म दश धर्म यह विधी कहे। सदा चित्तमें द्वारकेश राखे ॥ आशरो ॥५॥ भूल जिन जाय मन अनत मेरो ॥ रहो निश दिवस श्रीवल्लभाधीश पद कमलसों लाग विनामोलको चेरो ॥ भूल॥ अन्यसंबंधतें अधिक डरपत रहो। सकल साधनहुते कर निवेरो ॥ देह निज गेह यहलोक परलोक लों भजो सितलचरण छांड उरझेरो ॥ भूल ॥ इतनी मागत महाराज करजोरके । जेसो हु तेसो कहाउ तेरो॥ रसीकशिरकर धरो। भव दुःख परहरो ।करो करुणा मोहे राखी नेरो ॥भूल॥६॥ कृष्ण श्रीकृष्ण शरणं मम उचरे।।रेन दिन नित्यप्रति सदा पल छीन घरी। करत विध्वंस जन अखिल अघ परहरे ॥कृष्ण॥ होत हरिरूप व्रजभूप भावे सदा पुष्टि लीला सकल सार उरमें धरे ॥ रहत निश दीवस आनंद उरमें भयों अगम भवसिंधुको विना साधन-तरे ॥ कृष्ण ॥ रमा शिव शेष सनकादि शुक सारदा

व्यास नारद रटे पलक मुखनाटरे ॥ नाम गिरिधरन महिमा अतुल जगमगे शरन कृष्णदास कीर्तन निगम नित्य करे ॥ कृष्ण ॥७॥ श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण मनमें गती जानीये ॥ देह इंद्रिय प्राण दारागारादि वित्त आत्मा सकल श्रीकृष्णके मानीये ॥श्रीकृष्ण॥ कृष्ण मम स्वामी हुं दासमनवचन कर्म कृष्ण करता सकल विश्वके जानोये ॥ कृष्णदासनि नाथ लाल गिरिवरधरन चरन रज वल्लभाधीश शिर सानीये ॥ श्रीकृष्ण ॥८॥ जय श्रीवल्लभ चरन कमल शीर नाइए ॥ परम आनंद साकार शशी शरदमुख मधुर वानी भक्त जनन संग मिल गाइए ॥जय॥ राज तम छांड मध्यसत्वके संग व्हे राखि विश्वास प्रेम पंथको धाइए॥ कहे व्रजाधीश व्रंदाविपिन दंपति ध्यान धर धर हिये दगन शीराइए ॥ जय ॥९॥ विनंतिके पद

हरि यह कोन रीति ठटी ॥ दास दुखी सुख होत विमुखन वडी लाज घटी ॥ वेद पंथ श्रीभाग-

वतकी बांधी मेंड कटी ॥ देख यह विधि सबनकी मति भजनतें उचटी ॥ तज कुसंग करु सुसंग जातें विषय जाय कटी ॥ कुमति पावक कुप जलतें आवत हे उ-वटी ॥ करण वारे कहा भूमो जात गति न हटी ॥ फलको चिट्ठी सबनकी कहा एकहिबेर फटी ॥ चरण पर जे रहत तिनकी होत मति उलटी ॥ कहा गीता भागवतमें कही वात नटी ॥ हमारी यह वेर मनसा दानहूते हटी ॥ रसिक कहिकहि जीभ तुमसों छुलत छुलत छटी ॥११॥ नाथ हाहा मोही दरस दीजे ॥ सहज करुणा करो दोष जिन जिय धरो विना सा-धन मोहे दास कीजे ॥ नाथ० ॥ दुःखित तन होत तो दरस देखे विना रेन दिन तपत कहो केसे जीजे ॥ कहो धिरज हिये राखीए कोनविध रहत नहीं चेन तन छेह दीजे ॥ नाथ० ॥ लेत जब स्वास उरमां न समात जबलों निश्चीत दृगभर न पीजे ॥ रूप लावण्य अमृत रसिक पीवत सदा विना पान तन केसे भीजे

॥ नाथ ॥१२॥ सदाराख गोपाल तुव चरण शरणं ॥ ब्रह्मा शंकर उमा शेष नारद रमा सनक शुकशारदा ध्यान धरणं ॥ सदा॥ गोप गोपांगना मंडली मध्यमें शकत वृंदावनं वन विहरणं ॥ गोपिका कठिन कुच अग्र ललिता ललित राधीकारवनजुं भवन अनुसरणं ॥ सदा राख ॥ चटक मटक मुकुट निपट लटपटी मणीनी कांति जग तिमर हरणं ॥ तत थेई तत थेई धीधकट धीमिकट कुलट पट उलट मान भरणं ॥ सदा राख ॥ धन्य सोमन धरत चित्त ठरत अमृत झरत करत सुख हरत दुख जन्म मरणं ॥ यह छवि सदा सर्वदा मम मन वसो दास गोपाल भवसिंधु तरणं ॥ सदा राख ॥१३॥ राग कल्याण गये पाप ताप दूर, देखत दरस परस चरन ॥ हो तो एक पतित तिहारो पतित पावन बिरद हो तुमजगतके उद्धरन ॥ गये॥१॥ स्तुति शेष करन सके सकल कला गुण निधान ॥ जानतहो तिहारी सब विधि अनुसरण ॥ छीतस्वामी गिरिवरधर तेसेई श्रीविठ्ठलेश होतो तिहारी

जन्म जन्म शरन ॥गये॥२॥ अमृत रस श्रवयो श्रीवल्लभ मुख माधुरी ताहि पियो श्रीविठ्ठलेश अतिहि अघायके ॥ कृपाकरी रंच दियो दैवी जीवनको करहो अनुपान प्रपंचतें वचायके ॥ औषधि न आन ऐसी भवसागर तरवेको कीनीहे अनेक भांत विधि सो वनायके॥ विष्णुदास निसवासर भजो श्रीवल्लभपद चिंता मतकरो धनो श्रीविठ्ठलेशपायके ॥३॥ सदामन श्रीगोकुलमें रहीये॥ गोविंदघाट छोकरकी छैयां वेठक दरसन पैये ॥ सदा ॥ यमुना पुलिन सुभग वृंदावन गिरि गोवर्धन जइए ॥ घेर घेर भक्ति भागवत सेवा तनमन प्राण विकैये ॥ सदा ॥ श्रीविठ्ठलनाथ विराजत निशदिन चरन कमल चित्त लइए ॥ श्रीवल्लभ पद कमल कृपातें इनके दास कहेये ॥ सदामन ॥४॥ निजदास दास दासनमें मोहे कव करहो ॥ जुगल चरन अरुन कमल मेरे सीर धरहो ॥ निज ॥ सुघटितं मणी पाद स्पर्श कर अलंकृत करहो ॥ भवन

गमन समय जाणी आगे ले धरहो ॥ निज० ॥ अरुन वदन तंबोल रस वीरी मुख देहो ॥ डारत अब शेश पीक अंजुली भर लेहो ॥ निजदास० ॥ सुभग सेज दूध फेन पोढीए यदुनाथ ॥ चरन हुं चांपत रहुं गाउ गुन गाथ ॥ निजदास० ॥ सिधु सुता जब आय रहे श्रीजगन्नाथ पास ॥ माथ नाई तबही उठी चले माधोदास ॥ निजदास० ॥५॥ राग गोरी गोपी प्रेमकी ध्वजा ॥ जिने गोपाल कियो अपनेवश उरधर श्याम भुजा ॥ शुक मुनि व्यास प्रसंशा कीनी ऊधो संत सराही ॥ भुरि भाग्य गोकुलको वनिता अति पुनीत भवमांही ॥ कहा भयो जो विप्र कुल जन्म्यो जो हरि सेवा नांही ॥ सोई कुलीन दास परमानंद जोहरि सन्मुख धाई ॥१॥ राग टोडी जाके हृदय हरि धर्मनांही ॥ ताके तजे को टोपनहिं वशिये नहि उनमांही ॥ मात पीता गुरुबंधन तजके संग न पानी पीजे ॥ जाके हृदय

ताको कह्यो न कीजे ॥ जन प्रल्हाद पिता पन मेट्यो वलि गुरु कह्यो न कीनो ॥ भरत वचन परहरत मातके राज त्याग तपकीनो ॥ अतिही दुष्ट देख हरि द्रोही तज्यो विभीषण भाई ॥ छत्र चमर ढूराय शिशपर कीयो लंकाको राई ॥ वेद मर्याद मेट व्रजवनिता पति तजी हरिपें आई ॥ सुर पूनित भई वे गोपी वासुदेव विमल जश गाई ॥१॥ अवमें नाच्यो वहूत गोपाल ॥ काम क्रोधको पहर चोलना कंठ विपयकी माल ॥ अवमें ॥ मायाको शिर फेंटा वांध्यो लोभ तिलक दीयो भाल ॥ दंभ मोहके नुपुर पेहेरे कुसंगत चल्यो चाल ॥ अवमें ॥ भ्रम मोह मन भयो पखावज नाना विधकी ताल ॥ तृष्णा नाद करे घट भीतर निंदा शब्द रसाल ॥ अवमें ॥ लख चोरासी भेख वनाये शुकर श्वान शियाल ॥ सूरदासकी सवे अविद्या दूर करो नंदलाल ॥ अवमें ॥२॥ राग धन्याश्री

उधो धन्य तुमारो व्यवहार ॥ धन्य वे ठाकुर धन्य वे

सेवक धन्य तुम वर्तनहार ॥आंवकु काट वबुर लगा- वत चंदनकी कर वार ॥ शाहकुं पकर चोरकु छोडत चुगलनको इतबार ॥ हमकुं जोग भोग कुवजाकुं एसे समुझन हार ॥ सूरदासए केसे निभेगी अंधधुंध सर- कार ॥१॥ राग सारंग जोपें चोंप मिल- नको होय ॥ तो क्यों रह्यो परे विनुदेखे लाख करो जो कोय ॥ जोपें विरह परस्पर व्यापे तो कछू जीय बने ॥ लोक लाज कुलकी मर्यादा एको चित न गिने ॥ कुंभनदास प्रभु जाहितन लागी ओरन कछू सुहाई ॥ गिरिधरलाल ताहि विनुदेखे छिनु छिनु कल्प विहाई ॥१॥ केते दिन व्हेजु गये विनुं देखे ॥ तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछूक उठत मुख रेखें ॥ वह सौभाग्य वह कांति वदनकी कोटिक चंद्र विशेखे ॥ वह चितवनि वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेखें ॥ श्याम सुंदर मिलि संग खेलनकी आवत जीय अपेखें ॥ कुंभनदास लाल गिरिधर विनु जीवन जन्म अलेखें

॥ २ ॥ राग विहाग मोहीं वलहें दोउ ठोरको ॥ एक वलमोहे हरिभक्तनको दुजो नंदकीशोरको ॥ मनसा वाचा ओर कर्मणा नहीं भरोंसो ओरको ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल श्रीवल्लभकुल शिर मोरको ॥१॥ सुखनिधि श्रीगोकुलको वसवो ॥ छिन छिन वारंवार सखीरी श्रीवल्लभ सुत निरख हूलसवो॥ ग्रहन ग्रहन प्रति कुंजन कुंजन पियसंग केलि परस्पर हसवो ॥ एसी कनक कसोटी उपर सुभग प्रेम वलित तन कसवो ॥ यमुनातीर महागजसो मिल भावें अंगो अंग परसवो ॥ दंपति रूप रासि सुखसीमा माधोदास यहे रंग रसवो ॥२॥ ताहीको सिरनाइये जो श्री वल्लभसुत पदरज रतिहोय ॥ कीजे कहा आन उंचेपद तिनसो कहा सगाई मोय ॥ जाके मनमें उग्र भरम हे श्रीविट्ठल श्रीगिरिधर दोय ॥ताको संग विषम विषहूंतें भूले चतुर करो जिनकोय ॥ सारासार विचार मतोकर श्रुतिवच गोधन लियो हे निचोय ॥ तहां

नवनीत प्रकट पुरुपोत्तम सहज हि गोरस लियो है विलोय ॥ उग्रप्रताप देख अपने चक्ष अस्मसार जेसे भिदे न तोय ॥ कृष्णदास असुर भये सुरतें असुरतें सुरभये चरणन छोय ॥३॥ जीन श्रीवल्लभ रूप न जान्यो ॥ जननी उदर आय कहा कीनो जन्म अकारज मान्यो ॥ सकल वेद विधि सकल धर्म निधी करत ज्यों वेद वखान्यो ॥ कहाभयो जो सकल शास्त्र पढ्यो नाहक फाट्यो पान्यो ॥ अग्निरूप प्रभु सकल शिरोमणी देत अभय पद दान्यो ॥ रसिक प्रीतमके चरण भजत जे सकल पदारथ जान्यो ॥४॥ जबलग यमुना गाय गोवर्धन जबलग गोकुल गाम गुसांई ॥ जब लगी श्रीभागवत कथारस तबलग कलिमें कलियुग नाही ॥ जबलग हें सेवा रस जगमें नंद नंदनसो प्रीति बढाई ॥ परमानंद तासो हरि क्रीडत श्रीवल्लभ चरणरेणु जिनपाइ ॥५॥ मधुर व्रज देश बस मधुर कीनो ॥ मधुर गोकुल गाम मधुर व-

छभनाम मधुर विट्ठल भजन दान दीनो ॥ मधुर गिरिधर आदि सप्त तनु वेणु नाद सप्त रंध्रन मधुर रूप लीनो ॥ मधुर फल फलित अति ललित पद्मनाभप्रभु मधुर अलि गावत सरस रंग भीनो ॥६॥ श्रीविट्ठलनाथ वसत जिय जाके ताको रीत प्रीत छवि न्यारी ॥ प्रफुल्लित वदन कान्ति करुणा मय नयननमें झलके गिरिधारी ॥ उग्रस्वभाव परम परमारथ स्वारथ लेश नहीं संसारी ॥ आनंदरूप करत एकछिनमें हरिजुको कथा कहत विस्तारी ॥ मनक्रम वचन ताहीको संग करिये पैयत व्रजयुवतिन सुखकारी ॥ कृष्णदास प्रभु रसिक मुकुट मणि गुणनिधान श्रीगोवर्धन धारी ॥७॥ जाकेमन वसे श्यामघन माधो ॥ सो सुंदर सो धनी दक्षसोई सोई कुलीन सोई साधो ॥ सो पंडित सो गुणपुंज सोई जो गोपाल कहि गावे ॥ कोटि प्रकार धन्य सोई नर जो नहिं हरि विसरावे ॥ सो नर सूर वेदविद्यारत सो भूपति सोई ज्ञानी ॥

परमानंद धन्य सोई समरथ लाल चरन रति मानी ॥८॥ जाकुं नेक कृष्णको वानो ताके निकट न जाय जन कोऊ कहारंक कहा रानो.॥जाकु॥१॥ माला कंठ तोलक विराजत अरु चंदन लपटानो ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजत सो कहा रहेगो छानो ॥ जाकु ॥२॥ रविसुत कहत पुकार पूकारी सुनके दुत अकुलानो ॥ सूरदास कहत यह हितको समज सोच जियजानो ॥जाकुं ॥३॥९ उधो जोजन मोही संभारे ताकुं विसारुं न पलक घरीरे ॥ काटुं कठिन कर्मके संकट राखुं सुख आनंद भरीरे ॥ उधो ॥ जो मोही भजे भजु हुं ताकुं एही प्रतिज्ञा मोहे आयपरीरे ॥ सदा समीप रहुं ताहीके गुपत हतो सो प्रकट क-

मेरो भक्त सही ॥प्रथम॥ शत्रु मित्रको सम करीजाने मनकी तृष्णा गई ॥ सदा वैराग्य रहे उर अंतर कादूसुं हांसी करत नहीं ॥प्रथम॥ विषय वासना रहत न जाके एह विचार रहत महीं ॥ सूरदास हुं वसु हृदेमें आनंद सागर रहत मही॥प्रथम ॥११॥ हरिजन संग छिनक जो होही ॥ कोटी स्वर्ग सुख कोटि मुक्ति सुख एसम लहे न कोई ॥ महद भाग्य पून्य संचित फल कृष्ण कृपा व्हे जाके ॥ सूरदास हरिजन पद महिमा कहत भागवत ताके ॥ हरिजन ॥१२॥ प्रभु जनपर प्रसन्न जव होही ॥ तव वैष्णव जन दरसन पावे पाप रहे नहि कोई ॥ प्रभु ॥ हरि लीला उर आवे ताके सकल वासना नासे ॥ सूरदास निश्चे विचार करी हरि स्वरूप जव भासे ॥ प्रभु ॥१३॥ गिरिधर जव अपनो करी जाने ॥ ताकोमन भक्तनकी सेवा भक्त चरन रज सदा लुभाने ॥ गिरिधर ॥ भक्तनमें मति भक्तनसुं गति हरिजन

हरीएक करी माने ॥ कृष्णदास मन वचन कर्मकरि हरिजन संगे हरि उर आने ॥ गिरिधर ॥१४॥ वडोधन हरिजनकुं हरिनाम ॥ विन रखवारे चोर नहिं चोरे सोवत हे सुखधाम ॥ वडो ॥ दिन दिन वढत सवायो दुनो घटत नहिं कछु दाम ॥ सूरदास हरिसेवा जाके पारसको कहाकाम ॥ वडोधन ॥ १५ ॥ हरि भजनमें कहा चहियतहे नेन श्रवन रसना पद पान ॥ एसी संपत आन मिली हे जो न भजे ताकुं वडी हान ॥ हरि ॥ पूरव पुन्य सुकृतनको फल अति दुर्लभ मानुष अवतार॥ पाप पून्य जातें जान्यों परतहे उपजत हे ब्रह्मज्ञान ॥हरि॥ गुरु कर्णधार पोत पद अंबुज भवसागर तरवेके हेत ॥ प्रेरक पवन कृपा केशवकी परमानंद चित चेत ॥ हरि ॥१६॥ कलिजुग सब जुगतें अधिकाई॥ जा जुगमें प्रगटे जग सीतल श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ कलिजुग ॥ जो कोउ शरन जाय हें अपनी ताको करत सहाई ॥ दासश-

रन हरि वागधीशकी चरण रेणु निधि पाई ॥ कलि-
जुग ॥१७॥ कलि कीर्तन परमान रे मन कलि
कीर्तन परमान ॥ हरिभक्ति संतकी सेवा और धरम
नहि आन ॥ रेमन ॥ कहा भयो जो जपतप कीनो
कहा भयो दीने दान॥ तीरथ व्रत वहोत कछु कीनो
नहिं हरिनाम समान ॥ रेमन ॥ सुंदरश्याम मनोरथ
पूरन अधम उद्धारन जान ॥ सूरदास प्रभु रसिक शि-
रोमणि संतनके धनवान ॥ रेमन ॥१८॥ कीयो
गोपालको सब होय ॥ जोमाने अपनो पुरषारथ अ-
तिशे जूठो होय ॥ कीयो ॥ सुख दुःख लाभ अलाभ
सहज गत कहांलो मरीये रोय ॥ जो कछु लेख ल-
ख्यो नंदनंदन मेट शके नहि कोय ॥ जंत्र मंत्र ओ-
खदको वातें ए सब डारो धोय॥ सूरदास प्रभु सुखके
सागर चरन कमल चीत प्रोय॥ कीयो॥१९॥
जे कोई श्रीगोकुल रस चाखे ॥ ताको चित्त अनत
न भटके लोभ दिखावे लाखे ॥ जेकोई ॥ पर्यो रहे

छोंकरकी छैयां निरखत तरुवर साखे॥श्रीयमुना जल पानकरत नित्य श्रीवल्लभ मुख भाखे॥जेकोई ॥ सात स्वरूप आदिले गिरिधर ध्यान हृदेमें राखे ॥ रसीक प्रितमकी वानक उपर विश्व वारने नाखे ॥ जेकोई ॥२०॥ प्रकट व्हे मारग रीत दिखाई॥ परमानंद स्वरूप कृपानिधी श्रीवल्लभ सुखदाइ ॥ प्रकट ॥ कर सिंगार गिरिधरनलालको जब कर वेणु ग्रहाई ॥ ले दरपन सनमुख ठाडे व्हे निरख निरख मुसकाई॥ प्रकट ॥ विविध भांत सामग्री हरिको करी मनुहार लेवाई ॥ जल अचवाय सुगंध सहित मुख वोरी पान खवाई ॥ प्रकट ॥ कर आरती अनोसर पट दे बेठे निजग्रह आई ॥ भोजन कर विश्राम छीनकले निज मंडलीजु बुलाई ॥प्रकट॥ करत कृपा निज दैवी जीवनपर श्रीमुख वचन सुनाई ॥ वेणुगीत पुनि युगलगीतकी रस वरखा वरखाई ॥ प्रकट ॥ सेवा रीत प्रीत व्रजजनकी जन हित जग प्रकटाई ॥ दास शरण हरि

वागधीशको चरन रेणु निधी पाई ॥ प्रकट ॥ २१ ॥ हमतो श्रीविट्ठलनाथ उपासी ॥ सदा सेवुं श्री वल्लभनंदन कहाकरुं जइकाशी ॥हमतो॥ इनकुं छां ओरकुं धावे सो कहीए असुरासी ॥ छीतस्वामी गि रिधरन श्रीविट्ठल लीला निगम प्रकाशी ॥ हमतो ॥ २२॥ जगत गुरु विट्ठलनाथ गुसांई ॥ ओरगु- सांई काहेके कहावत उदर भरनके तांई॥जगतगुरु॥ धर्म आदि चार्यों पुरुपारथ सो इनके करमांही ॥ छीत- स्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल भक्तनके सुखदाई ॥ जगत गुरु ॥२३॥ भलो यह हरिभक्तनसुं हेत॥ हरि भक्तनके निकट वसत हे हरिभक्तनमें चेत (चित्त)। भलोयह ॥ हरिभक्तनकी महीमा जानत हरिभक्त सुख देत ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल हरिभक्त नकी सेत॥ भलो यह ॥२४॥ हों वारीइन व छभीयन पर॥मेरेतनको करुं वीछोना शीशधरुं इनके चरनन तर ॥१॥ भावभरी देखुं मेरी अखीयन मंडल

मध्य विराजत गिरिधर ॥ वेतो मेरे प्रान जीवन धन दान दीये हे श्रीवल्लभवर ॥ २ ॥ पुष्टिमार्ग प्रकट करवेकुं प्रकटे श्रीविठ्ठल द्विजवपुधर ॥ दास रसीक वलैया लेले वल्लभीयनकी चरनरज अनुसर ॥३॥ २५ लगे जो श्रीवृंदावनको रंग ॥ देह अभीमान सवे मीट जेहें अरु विषईनको संग ॥ लगे जो ॥ मनको मेल सवे छूट जेहें मनसा होय अपंग ॥ श्रीराधावर सेवत समरत उपजत भाव तरंग ॥ लगे जो ॥ सखी भाव सहेजे होय मनमें पुरुष भाव होय भग ॥ परमानंद स्वामीके उपर वारु कोटी अनंग ॥ लगे जो ॥ २६ जप तप तीरथ नेम धर्मव्रत मेरे तो श्रीवल्लभ प्रभुजीको नाम (टेक) समरो मन सदा सुखकारी दुष्कृत कटे सुधरे सब काम ॥ हृदे वसे यशोदासुत हितकर लीला सहित सकल सुखधाम ॥ रसिकन यह निरधार कीयो हे साधन त्यज भज आठोजाम ॥ जपतप ॥ २७ पोकारे ठाडो ही धर्मराज ॥

फांसी प्रभु धरोजु भंडारे भवन नहीं कछु काज ॥
पोकारे ॥ श्रीविट्ठल वल्लभजूके नंदन दशधा भक्ति
प्रकाशो ॥ अधम उद्धार कीयो कलियुगमें कोउ न
परे जम फांसी॥ पोकारे॥ घर घर भजन भागवतकी
सेवा निशदीन हरि गुणगावे ॥ श्रीकृष्णनाम एही
वचनकुं श्रीहरि आप सिखावे॥ जहां जहां दूतजाय
हे मेरो तांहां तांहां ते फेर पोछो आवे॥ प्रबल प्रताप
वढ्यो द्विजवरको कहु झांखन नहि पावे ॥ पोकारे ॥
आजुग मांहीं प्रगट होयके जो इनकुं नही जानें ॥
सूरकहे वे नरक निवासी अन्य भजनको आने ॥ पो-
कारे ॥ २८ सबतें श्रीवल्लभनाम नाम भलो ॥
लीजे लीजे लीजे नांतर कलिजुग करत छलो ॥ स-
वतें ॥ सदतीरथ एक सघन श्यामघन तीरथ वृथाही
चलो ॥ श्री विट्ठल गिरिधरन कृपानिधी रिद्धि सिद्धि
प्रबलो ॥ सवतें ॥ २९ ओर कोऊ समझे सो
समझे हमकों इतनी समज भली ॥ ठाकुर नंदकिशोर

हमारे ठकुरानी वृषभानलली॥श्रीदामा आदि सखा श्यामके श्यामासंग ललितादि अली ॥ व्रजपुरवास शैल वन विहरत कुंजन कुंजन रंगरली ॥ इनके लाड चाहु सुखसेवा भाववेल रस फलन फली ॥ कहि भगवान हित रामराय प्रभु सवनतें इनकी कृपा वली ॥ ३० श्रीविट्ठलके चरण कमलपर सदारहे मनमेरो ॥ सीतल सुभग सदासुखदायक भवसागरको वेरो ॥ रसना रटत रहो निसवासर प्रभुपावन यशतेरो । सगुणदास इतनी मागतहों भृत्य भृत्यको चेरो ॥ ३१ वृंदावन एक पलक जो रहिये ॥ जन्म जन्मके पाप कटत हे कृष्ण कृष्ण मुख कहिये ॥ महाप्रसाद ओर जल यमुनाको तनक तनक भर लइये ॥ सूरदास वेकुंठ मधुपुरी भाग्यविना कहांतें पैये ॥३२ हु सेवुं श्रीगिरिधरन छवीलो श्रीमोहनलाल रंगीलो श्याम ॥ ओर अनेक अवतार धरतहे वासों नही मेरे कछू काम ॥१॥ पिता नंद जाके जननी ज-

सोदा वडो भैया जाको वलराम ॥ जाकी त्रिया वृषभाननंदनी श्रीराधाप्यारी वाकोनाम ॥ जाके गिरिगोवर्धन मथुरा नगरी व्रज वृंदावन श्रीगोकुल गाम ॥ मानिकचंदको एही कृपाफल नित्यप्रति दरसन व्रजमें ठाम॥ ३३ भरोंसो श्रीवल्लभजीको भारी । काहेकुरे मन भटकत डोलत जो चाहे फलकारी ॥ भरोंसो ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधर सववालक जगत कीयो हे उद्धार ॥ पुरुपोत्तम प्रभु नाममंत्र दे । चरन कमल शिरधारी ॥ भरोंसो ॥ ३४ भरोंसो दृढ इन चरनन केरो ॥ श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा विन सव जगमांझ अंधेरो ॥ भरोंसो ॥ साधन ओर नहिं या कलिमें जासुं होत निवेरो ॥ सूर कहा कहे द्विविध आंधरो विना मोलको चेरो ॥ भरोंसो॥ ३५ मन श्री वल्लभ वल्लभ रटरे ॥ कलियुग जीवउद्धार कीये हे धर द्विज रूप सुभटरे ॥ मन श्री ॥ मायावाद कीये प्रभु खंडन । भक्ति मारग भूआठठरे ॥ पुरुपोत्तम प्रभुकी

छवी निरखत । इनकी चरन रज अटरे ॥ मन श्री ॥ ३६ कलीमें प्रकट भयेजु कल्यान ॥ सकल अमंगल दूर कीये हे । नासत तिमिर उदेभयो भान ॥ भये मनोरथ सब भक्तनके। पायो पद नीरवाण ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल । वारुं तन मन प्रान ॥ कलीमें ॥ ३७ श्री विट्ठलनाथ चंद उग्यो जगमें भक्त चांदनो फेल रहीरी ॥श्रीवल्लभघर प्रगट भयेहे रस बरखत चहुंदीश सहीरी ॥मायावाद कीये प्रभु खंडन शुकमुनी व्यास परम सुख पाई ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल नीत्य नीत्य लीला होत नईरी ॥ श्रीविट्ठलनाथ ॥ ३८ जेजन श्रीगोकुल गुन गावे ॥ श्रीगिरिधर जीय बसत निरंतर मन वांछित फल पावे ॥ जेजन ॥ श्रीवल्लभ पद पद्म महाफल दरस हीयो हुलसावे ॥ व्रजपति व्रजरस रास रसिकके लीलामें चितलावे ॥ जेजन ॥ ३९ श्रीपति दुखित भक्त अपराधे ॥ जो भक्तनको द्रोह-

करत हे सकल सिद्धहीते मोही आराधे ॥ श्रीपति ॥ सवसुनो वैकुंठके वासी सत्य कहुं मन पावत खेद ॥ तीनपर कृपा करुं केसीविध पायकु पूजे कंठकु छेद॥ श्रीपति ॥ भक्तसुं वेर भाव मोहीते मेरो नाम निरंतर लेहे ॥ सूरदास भगवंत वदत हे ॥ मोहे भजे पण जमपुर जेहें ॥ श्रीपति ॥ ४० देखरी एक अ- द्भुत रूप॥ एक अंवुज मध्य देखियत वीस दधीसुत युथ॥ देखरी॥ एक अवली दोउ जलचर उभय अरक अनुप॥ पाच वारिज ढीग शोभत कहो कोन स्वरूप ॥ देखरी ॥ शिशुगतमें भई शोभा देखो चित्त विचार ॥ सूर श्रीगोपालकी छव राखीए उरधार ॥ देखरी ॥ ४१ हरिके जनकी अति ठकुराई ॥ देवराज ऋ- पिराज महामुनी देखत रहे लजाई ॥ दृढ विश्वास कीयो सिंहासन तापर वेठे भूप ॥ हरि गुण विमल छत्रसीर राजत शोभा परम अनूप॥ निरपृहा देशको ज करे ताको लोक परम उछाहा ॥ कामक्रोध मद

लोभ मोह त्यां भये चोरते शाहा ॥ वने विवेक विचित्र पोरीया ओसर कोउ न पावे ॥ अरथ कामत्यां रहत दूर दूर मोक्ष धर्म शिरनावे ॥ अष्टसिद्धि नवनिधी द्वारे ठाडे कर जोरे उरलीनी ॥ छडीदार वैराग्य विनोदी झटकी वाहर कोनी ॥ हरिपदपंकज प्रेम परम रुची ताहीसो रंग राते ॥ मंत्री ज्ञान ओसर नहीं पावत करत वात सकुचाते ॥ माया खल व्यापे नहीं कवहु जो या रीते जाने ॥ सूरदास यह नरतन पायो गुरु प्रसाद पेहेचाने ॥ ४२ विराजे श्रीवल्लभ महाराज श्रीगोकुल गाम ॥ विराजे श्रीगोपीनाथ श्रीविठ्ठल भक्तजन पूरण काम ॥ श्रीगिरिधर गोविद श्रीवालकृष्ण गोकुलनाथ अभिराम ॥ श्रीरघुपति यदुपति घनसामल पुरुषोत्तम प्रभु नाम ॥ ४३ व्रजमें श्रीविट्टलनाथ विराजे ॥ जीनको परम मनोहर श्रीमुख देखतही अघ भाजे ॥ जीनके पद प्रतापतें निवहे सेवक जन सव गाजे ॥ छीतस्वामी

श्रीविट्ठल प्रकटे भक्त हित काजे ॥ ४४ चरण शरण व्रजराज कुंवरके॥ हम विधि अविधि कछू नाहीं समजत रहत भरोसे श्रीमुरलीधरके ॥ रहत आशरे व्रजमंडलमें भुजा छांह श्रीगिरिवरधरके ॥ प्रभु मुकुंद माधो सुखदाई हाथ विकाने श्रीराधावरके॥ ४५ श्रीवल्लभ वरनुं कहा वडाई ॥ जाके रोम रोम प्रति प्रकटित कोटी गोवर्धनराई ॥ वाके युथभये न्यारे न्यारे वरनत वरन न जाई॥ रामदास कमलासी दासी सो घर छांड वसाई ॥४६ गुरुजी विन एसी कोन करे ॥ माला तिलक मनोहर वानो शीरपर छत्र धरे ॥ भवसागरतें बूडत राखे दीपक जोत जरे ॥ सूरदास एसे गुरु समरथ चाहे सोई करे ॥ ४७ सुखमें गोविंद कोन संभारे ॥ अपनी मोह मायाके कारण चलत पंथनही हारे ॥ एक तनके पोषणके कारण कोटिक जीवको मारे ॥ भूमी पड्यो तव शोचन लाग्यो गद गद कंठ अतीभारे ॥ सूरदास जम-

दृतने घेर्यो निकसत जीव हठ हारे ॥४८ ज-
नम सब बातन बीतगयो ॥ दसबरस खेल्यो लरकाई
पीछे कामनी मोहरह्यो ॥ त्रीस भयो मायाके पीछे
देशविदेश छयो ॥ चालीस बरसमें राज्यजु पाये उप-
जत लोभ लह्यो ॥ सूकी त्वचा कमर भये टेडे ए सब
ठाठभयो ॥ लरिका बहु कह्यो नहीं माने बुह्वो शठजु
भयों ॥ नहीं हरिभजन गुरुकी सेवा नहीं कछु दान
दीयो ॥ सूरदास मिथ्या तन वित्यो जमने खेंच ली-
यो ॥ ४९ एसो भक्त तरे ओर तारे ॥ परम कृपाल
परम दीनबंधु शरन ग्रहे वाको दुःख निवारे ॥ सबसु
मैत्री शत्रु नहीं कोई वाद विवाद सबनसुं हारे ॥ हरिको
नाम जपे निशवासर संशय शोक संताप निवारे ॥ काम
क्रोध ममता मद मत्सर माया मान मोह भ्रम टारे ॥
निरलोभी निरवैरी निरंतर कृष्ण रूप जब वदन विचारे ॥
हरिको नाम सुने अरु गावे कृष्ण भजन करी दुःखहि
दुरावे ॥ सूरदास हरिरूप मग्नभये गुन ओगुन कोपर

नव आवे॥ ५० मोहे श्री वल्लभजीको भरोंसो॥ अन्य देवको जानुं न मानुं इनको आशरो खरोसो॥ कछूक विचार समज मनमेरे वार वार कहुं तोसों॥ रसिक सुधा सागरको त्यजके क्यों पीवत जल ओ-सो॥ ५१ गायो न गोपाल मन लायो न रसाल लीला, सुनि न सुबोधिनी न साधु संग पायो है॥ सेव्यो नहि स्वाद करी घरी आधी घरी हरि कवहुं न कृष्ण नाम रसना रटायो हे॥ श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठलेश प्रभुको शरण जाय दीन होय मति हीन शीश न नमायो हे॥ रसिक कहे वार वार लाजहु न आवे तोहि मनुष्य जन्म पाय मूढ कहा तु कमायो हे ॥ ५२ अरे मन श्रीवल्लभ गुण गाय॥वृथा काल काहेको खोवत वेद पुराण पढाय ॥ श्रीगिरिराजधरण पैवेको नाहिन ओर उपाय ॥ रसिक सदा अनन्य होयके चित इत उत न डुलाय॥ ५३ सवदिन होत न एक समान ॥ प्रकटतहे पूर्वकी करणी तज मन शोच अ-

ज्ञान ॥ कवहुक राजा हरिश्चंद्र गृह संपत्ति मेरु समान ॥ कवहुक दास श्वपच गृह व्हेके अंवर हरतमशान ॥ कवहुक युधिष्टिर राज्य सिंघासन अनुचर श्रीभगवान ॥ कवहुक द्रुपद सुता कौरव वश केश दुशासन तान ॥ कवहुक राम सहित जानकी विचरत पुष्प विमान ॥ कवहुक रुदन करत फिरत हे ॥ महाविपिनउद्यान कवहुक दूलहे वन्यो वराति चहुंदिश मंगल गान ॥ कवहुक आप मृतक व्हे जातहें कर लंवे पदपान ॥ जननी जठर जन्यो जा दिनतें लिख्यो लाभ अरुहान ॥ सूरदास यतन सवजूठे विधिके अंक प्रमान ॥ ५४ ☞ देखो दुर्मती यह संसारकी ॥ हरिसो हीरा छांड हाथतें वांधत पोट विकारकी ॥ झूठे सुखमें भूल रहे हें सुध विसरी कीरतारकी ॥ नाना विधके कर्म कमाये खवर नहिं शिरभारकी ॥ कोउ खेती कोउ वणज चाकरी कोउ आशा हथीयारकी ॥ अंधाधुंध फिरत दशोदिश फूटी आंख गमारकी ॥ नर्कजानके मारगचालें सुन

सुन विप्र कवारकी ॥ अपने हाथ गलेमें डारत फांसी माया जारकी ॥ वार वार पुकार कहत हो सुनहो सज्जन हारकी ॥ सूरदास यह विनस जायगी देह छिनकमें छारकी ॥ ५५ ॥ ॥ अथ शिक्षाके पद ॥ आये मेरे नंदनंदनके प्यारे ॥ माला तिलक मनोहरवानो ॥त्रिभुवनके उजीयारे॥१॥आये॥ प्रेम सहित वसत उर मोहन ॥ नेकहुं टरत न टारे॥ हृदयकमलके मध्य विराजत ॥ श्री वृषभान दुलारे ॥ २ ॥ आये॥ कहाजानो कहा पुन्य प्रकट भयो ॥ मेरे घरजु पधारे ॥ परमानंद करत न्योच्छावर वारंवार हुं वारे॥ आये ॥ ५६ भजन विन जीवत जेसे प्रेत ॥ मलीन मन घर घर डोलत हे उदर भरनके हेत॥ कवहू पावत पापको पैसा गाड धूडमें देत॥ मुख कटू वचन करत पर निदा संतनकुं दुःख देत ॥ सेवा नहिं गोविंदचंदकी भवन गलीनको खेत ॥ सूरदास वहुत कहा कहुं डूवे कुटुंव समेत ॥५७॥

हरिरस तबहीतो जाय पैये ॥ स्वाद विवाद हर्ष आतुरता इतनो दंडजो सहिये ॥ कोमल वचन दीनता सबसों सदा प्रफुल्लित रहिये ॥ गये नहि शोच आए नहि आनंद ते मारग क्यों वहिये ॥ ऐसी जो आवे जियमांही ताके भाग्यकी कहाकहिये ॥ अष्ट सिद्धि सब सूरश्यामपें जो चहिये सो लहिये ॥ ५८

रेमन चिंता ना कर पेटकी ॥ हलन चलन यामें कछु नाहिंन कलम लिखी जो ठेठकी ॥ जीवजंतु जेते जल थलके तिन निधि कहा समेटकी ॥ समें पाय सबहिनकुं पोहोंचे कहा बाप कहा बेटकी ॥ जाको जितनो लिख्यो विधाता ताको पोहोचे तेटकी ॥ सूरदास ताहे क्यों न सुमरे जोहे एसो चेटकी ॥५९

त्यजमन हरि विमुखनको संग ॥ जाके संग ते कुबुद्धि उपजत परत भजममें भंग ॥ कोगाकुं कहा कपुर चुगावत श्वान न्हवावत गंग ॥ खरकुं कहा अरगजा लेपन मर्कट भूपण अंग ॥ कहाभयो पयपान करावत

विप नहि तजत भुजंग ॥ सूरदास प्रभु कारो कामरीयां चढत न दूजो रंग ॥ ६० मनरेतुं वृक्षनको मत ले ॥ काटे वापें क्रोध न करहें सिंचे नाहीं सनेह॥ जो कोउ वापें पत्थर चलावे ताहीकों फल दे ॥ धुप सहें शिर आपनें ओरनकों सुख दे ॥ धन धन जड ए परम पदारथ वृथा मनुष्यकी देह ॥सूरदास मनकर्म वचन करी भक्तनको मत एह ॥ ६१ कोन मात तात कोन कहा को तू सुतवंधु। ज्योंलों यह देह त्योंलों नेहनातो कीनो हे ॥ नारीहु निराली होत नारीहुतें न्यारो होत तोहु अनाडी नारी नारी मुख जपत हें ॥ श्रीपुरुपोत्तम जीय विचार देख यह संसार सुख सोवतको सुपनो हे ॥रसिक कहे वार वार लाजहू न आवे तोहे हाथले कुल्हार पाव मारत अपनो हे ॥ ६२ मनतें भक्तिस्वाद नहींपायो ॥ ताहीतें तुं तुच्छ पदारथ विपय विपे उरझायो ॥ मनतें ॥ नंदनसुवन व्रजराज लाड़ीलो सो उरमें नहीं

लायो ॥ सुतदारा सुपनेको संपत तीनके संग भरमायो ॥ मनतें ॥ गिरिधरलाल रंगीलेके गुन प्रेमधरी नहो गायो ॥ इंद्रिय विषय परायन डोले मूरख जन्म गमायो ॥ मनतें ॥ भक्त जननके संग बेठके थोर ना मन अटकायो ॥ ग्रहजंजाल पोठ शीर लीनी छूटत नहीं छुडायो ॥ मनतें ॥ मनुषा जन्म पाये अब दुर्लभ ले गजराज चढायो ॥ धिक मतिमंद चढन अब खर हे केतीक वार पढायो ॥ मनतें ॥ श्रीवल्लभप्रभु श्रीविट्ठलके शरणागत नहीं आयो ॥ कहे हरिदास मूढमति वोरे अंत समय पछतायो ॥मनतें॥ ६३

गायो न गोपाल मन लायो न निवार लाज पायो न प्रसाद साधु मंडली में जायके ॥ धायो न धमक वृन्दाविपिनकी कुंजनमें रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश रायके ॥ श्री नाथजीको देखके छक्यो न छबीली छब सिंघपोर पर्योनांही शीशहु नवायके ॥ कहे हरिदास तोहि लाजहुं न आई अज मानस जन्म पायके कमा-

वांध्यो हेत ॥ मंझार रूपी काल डोले या घडी तोहे लेत ॥ मनतुं ॥ काम क्रोधको वोझवांध्यो उतर सायर सेत ॥ सूर हरिको भजन करीले गुरु वताई देत॥ मनतुं ॥ ६७ मनतुं समज सोच विचार॥ भक्ति विना भगवान दुर्लभ कहत निगम पोकार ॥ मनतुं ॥ साधु संगत डार पासा फेर रसना सार॥ दाव अवके पर्यो पुरो उतर पेलेपार ॥ मनतुं ॥ वायक सतरे सुन अढारे पंचहीको मार ॥ दूरतें तज तीन काने चमकचोक विचार ॥ मनतुं ॥ काम क्रोध जंजाल भुल्यो ठग्यो ठगनीनार ॥ सूर हरिके पद भजन विन चल्यो दोउकर झार ॥ मनतुं ॥ ६८ निशदीन लेतुं गोविंदगाय ॥ काम क्रोध ओर लोभ माया काल अचानक गहाय ॥ निशदीन ॥ पलकमें जल बुद्बुद उठत देखतही मीटजाय ॥ जनम जुठो देह गंदी श्वान काग न खाय ॥ निशदीन॥ करम कागद फेर वांचो लीख्यो मिट नही जाय ॥ कोटीखान ब्रह्मांड खोजो

यो कहा आयके ॥ ६४ भरोंसो श्रीवल्लभजीको राखों ॥ सघरे काज सरेंगे छिनमें इनहीके गुणभाखो निशदिन संगकरो भक्तनको असमर्पित नहीं चाखो ॥ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ पदरज विन ओर तत्त्व सबनासो ॥ ६५ मनतुं समर हरि हरि हरि ॥ कोटी यज्ञ नहि नाम सरवर पतीज करी करी करी ॥ मनतुं ॥ चरनामृत रस बुद्धि भाजन ले तुभरी भरी भरी ॥ गीध गुनका व्याधके अघ गये टरी टरी टरी ॥ मनतुं ॥ करण दुर्योधन दुशासन ओर शकुनी अरी अरी अरी ॥ कुंती सुतके विघन जेते गये टरी टरी टरी ॥ मनतुं ॥ चार फलके दानदाता रहे फली फली फली ॥ सूर श्रीगोपालकी छब राख हरदे धरी ॥ मनतुं ॥६६ मनतुं कर गोपालसुं हेत ॥ कृष्ण नामकी वार करले तो बचे तेरो खेत ॥ मनतुं ॥ पांच हरन पचीस हरनी खुंद खायो तेरो खेत ॥ सार सघरो काढ लीनो कशलणेगो रेत ॥ मनतुं ॥ मन सुवा तन पींजरा हे तासुं

वांध्यो हेत ॥ मंझार रूपी काल डोले या घडी तोहे लेत ॥ मनतुं ॥ काम क्रोधको बोझवांध्यो उतर सायर सेत ॥ सूर हरिको भजन करीले गुरु बताई देत॥ मनतुं ॥ ६७ मनतुं समज सोच विचार॥ भक्ति विना भगवान दुर्लभ कहत निगम पोकार ॥ मनतुं ॥ साधु संगत डार पासा फेर रसना सार॥ दाव अवके पर्यो पुरो उतर पेलेपार ॥ मनतुं ॥ वायक सतरे सुन अढारे पंचहीको मार ॥ दूरतें तज तीन काने चमकचोक विचार ॥ मनतुं ॥ काम क्रोध जंजाल भुल्यो ठग्यो ठगनीनार ॥ सूर हरिके पद भजन विन चल्यो दोउकर झार ॥ मनतुं ॥ ६८ निशदीन लेतुं गोविदगाय ॥ काम क्रोध ओर लोभ माया काल अचानक गहाय ॥ निशदीन ॥ पलकमें जल बुद् बुद उठत देखतही मीटजाय ॥ जनम जुठो देह गंदी श्वान काग न खाय ॥ निशदीन॥ करम कागद फेर वांचो लीख्यो मिट नही जाय ॥ कोटीखान ब्रह्मांड खोजो

तेरे मन प्रतीताय ॥ निशदीन ॥ कायाके दश द्वार रुंधे अवध पहोती आय ॥ सूरहरिको भजन करते पुनरजन्म न थाय ॥ निशदीन ॥ ६९ चलो पिय वे सरोवर जाय ॥ वे सरोवर कमला कमली रवी वीना पीक छांह ॥ चलो ॥ हंस पंगत महा उज्वल संग मील मील नहाय ॥ मुक्तिसे मुक्ताफल मोती सवे चुन चुन खाय ॥ चलो ॥ छांड छील्लर छल छली समजले मन मांह ॥ सूरप्यारे एसे उडो वहोर उडनो नांह ॥ चलो ॥ ७० भजीए श्रीवल्लभवर चरन ॥ मकल पतीत उद्धारन कारन प्रकट कीयो अवतरन ॥ भजीए ॥ गूढ श्रीभागवत प्रतिपद अरथ प्रकट करन ॥ अखिल लीला प्रेम संयुत देखाये गिरिधरन ॥ भजीए ॥ आशरो करी रहे जेजन मिटे जनम ओर मरन ॥ कहत हे हरिदास हमकुं ओर नाहीन शरन ॥ भजीए ॥ ७१ ॥ भज सखी भाव भाविक देव ॥ कोटी साधन करो कोऊ तोउ न माने सेव ॥ भज ॥

धूमकेतु कुमार माग्यो कोन मारग रीति ॥ पुरुषतें तिय भाव उपज्यो सबही उलटी रीति ॥भज॥ वसन भूषन पलट पहेरे भावते संजोय ॥ उलटी मुद्रा दई अंकन वरन सुधे होय ॥भज॥ वेद विधीको नेम नाही प्रेमकी पहेचान ॥ व्रजवधु वश कीये मोहन सूर चतुरसुजान ॥भज॥ ७२ दोउनमें एको न भई ॥ न हरि भज्या न गृहे सुख लीनो व्रथा वही ए गई ॥ दोउनमें ॥ ज्यों सुवा सेमर फल लगके लालच देहदही ॥ पस्तानो जब चांच गुदानी नीकसत तूल मही ॥ दोउनमें ॥ पद विमुख रहे चंद चकोर ज्यों भखत अंगात महो ॥ द्राक्ष कहांते खाय सूरप्रभु बोये बंबुर सही ॥ दोउनमे॥ ७३ संतोष हाकेम जब आवे तब यह काया नगर सुखपावे ॥ज्ञान वैरागकी चढ-गई फोजा अज्ञानकुं मार भजावे ॥ क्षमा कोटवाल बेठा चोतरे कुबुध कहांते आवे ॥ सांच ढंढोरा फिरत नगरमें जुठ चोर भजिजावे ॥ धर्मको झुंडा गड्यो

खेतमें निर्भय राज कमावे ॥सूरदास अज्ञानी हाकम बाधे जमपुर जावे ॥७४ भजमन दधिसुतापति चरण ॥ देवगुरुको अवनि सुतही सदा चाहे करण ॥ खेचरी जिय जानी मनमें जात जातक मरण ॥ शक्रवाहनकेजु भूषण टूट भुविपर परण ॥ हंससुत रिपु सुतके सुतकी जठर रक्षा करण ॥ सत्य सुत सुत सुतन पतनी परम चिताहरण ॥ दक्षसुता पति शापतें अश्म तनु उद्धरण ॥ सूरके प्रभुसदा सहायक विश्व पोषण भरण ॥ ७५ कृपातो लालनजुकी चहिये ॥ इने करी करे सो आछी अपने शिरपर सहिये ॥ दोष अपनो विचार सखीरी उनसों कछू न कहिये ॥ सूर अवकछू कहवेकी नांही स्याम शरण व्हे रहिये ॥७६ बोलो भैया गोविंद कृष्ण हरि ॥ माल दाम कछू नहीं वेटत छूटत नहिं गठडी ॥ यह काया कागदकी पुतरी छिनमें जात जरी ॥ जामुख सूरप्रभु नांहि उचरत तामुख धूर परी ॥ ७७ हरि भक्तनसुं

गरव न करनो ॥ यह अपराध परम पढहुते उतर नरकमें परनो ॥ हुं कुलिन धनवान यह भिक्षुक ईसनो मनमें नांही न धरनो ॥ राज सिंहासन अश्व पालखी तासुं भवसागरनहीं तरनो॥खान पान बनाये भलेजु वदन पसार फेरहू मरनो॥सूरदासयह सत्यकहतहों हरिभक्तनके संग उबरनो ७८ ✿ जीयरा कोन निंदकर सोयो ॥टेक॥ भूल गयो विषयासुखमें शठ जन्म अकारज खोयो॥जीयरा॥१॥ करत दगा तामें हितमाने, मर्म विचारी न जोयो ॥ घर दारा मानत करमेरे, मिथ्या तापर मोह्यो ॥ जीयरा ॥२॥ संकट समे नहिं कोई तेरो जेसें नीर विलोयो॥ सूरहरिको सुमरन करके मिलजा जातें विछोयो ॥ जीयरा ॥३॥ ७९ ✿ रेमन मुरख जन्म गमायो ॥टेक॥ कर परपंच विषय रस कीधो श्याम शरण नहि आयो ॥ रे मन ॥ यह संसार फूल सेंवरको, सुंदर देख लोभायो ॥ चाखन लाग्यो रुई उडी गई। हाथ कछु नहिं आयो

॥ रे मन ॥ कहा भयो अवके पछताने पेहेले पाप कमायो ॥ कहत सूर श्रीकृष्ण नाम विना, शिर धुनी धुनी पछतायो ॥ रेमन॥ ८० अवसर वेर वेर नहि आवे ॥टेक॥ जो जाने तो करले भलाई, जन्म जन्म सुख पावे ॥ अवसर ॥ सुत दारा अंजलीको पानी, घटत वेर नहि लागे ॥ छूट्यो तन धन कोन कामको, करपन कहाजु कहावे ॥अवसर ॥ जाको मन लाग्यो श्रीकृष्णसुं, ताकुं अन्य न भावे ॥ सूरदास प्रभु आनंद सागर, प्रेम धरी क्यों न गावे ॥अवसर॥ ८१ अचंभो ईन लोगनको आवे ॥ छांड गोपाल अमित रस अमृत, माया विख रस खावे ॥१॥ निंदत मूढ मलय चंदनकों कपिके अंग लगावे ॥ मान सरोवर त्यजी हंस सर काक सरोवर न्हावे ॥२॥ पगतर जरत न जानत मुरख पर घर जाय बुझावे ॥ सूरदास तव कहत सवनकुं, हरि जस काहे न गावे ॥३॥ मन तुं भुल्यो भक्ति विसारी (टेक) काल

सदा शिरपर सर साधत जीती वाजी हारी ॥मनतुं॥ वालपनो खेलनमें खायो तरुन गयो संगनारी ॥ वृद्ध भयो तव आलस आयो, सरवस हार्यो जुवारी ॥ मनतुं ॥ जव लगी जरा रोग नहिं व्याप्यो तवलग भजले मुरारी ॥ सूर कहे अव चेत सवेरो अंतकाल हे भारो ॥ मनतुं ॥ ८३ मन तोहे केई विरीयां समजायो ॥ कमलनेनकी सेवा चूक्यो वहोत दीनां दुःख पायो ॥ मन ॥ भज्यो नहीं भगवान भलेमन परदारा चितलायो ॥ परनिंदा परद्रोह पें रीझ्यो परम विषय विप खायो ॥ मन ॥ उदर भर्यो सव अपने कुटुंवको हरिजन कोउ न जीमायो ॥ जव यमदूतन मार मचाई ओटे कोउ न आयो ॥मन॥ नेनां थाके चेनहूं थाके शीशहुं कंपन आयो ॥ लाठीले जव चालन लाग्यो तृष्णा तोउ न वुझायो ॥ मन ॥ कीये करम सव मनके भाये दुःखको अंत न आयो ॥ सूरदास भगवंत भजन विना उंधेमुख लटकायो ॥मन॥

८४ भजन विन वेल विराने वेहो ॥ चार पांव द्वे सिंग गुंगमुख तब गुन केसे गेहो ॥भजन विन ॥ चार पहर दीन फरत चरत वन तोउ न पेट भरेहो॥ सीत घाम ओर धाम विविध घन भारतरे मरजेंहों ॥ भजन विन ॥ लादत जोत तडेगा पेहो तब मुढ कहां दूरे हो ॥ त्रुटी खांध फूटी नाके तब घास कहां चरे हो ॥ भजन विन ॥ साधु संतको कह्यो न कीनो अपनी करनी पेहों॥ सूरदास भगवंत भजन विन मिथ्या जन्म गमेहो ॥ भजन विन ॥ ८५ निशदीन आनंद मंगलमें रहीये॥ गुरुप्रताप भई सत संगत यातें ओर कहा चहीये ॥ निशदीन ॥ निशवासर सोवत अरु जागत कृष्ण कृष्ण मुख कहीये ॥ परम कृपाल गोपाललाल भज सूर परम पद पैये ॥ निशदीन ॥ ८६ माइरी श्रीगिरिधरके गुन गाउं ॥ मेरेतो व्रत एही निरंतर ओर न रुचि उपजाउं ॥ माइरी ॥ खेलनके मिस आयो लाडीलो एही विधि दरसन पाउं॥

परमानंद हिलगकी वातें काहुको न सुनाउं ॥माइरी॥ ८७ तरहटी श्रीगोवर्धनकी रहीए ॥ नित्यप्रति मदन गोपाललालके चरन कमल चित लहीए॥ तर-हटी ॥ तन पुलकित व्रजरजमें लोटत गोविंद कुंडमें नहीए ॥ रसिक प्रितम हित चितकी वातें श्रीगिर-धारीजीसुं कहीए ॥ तरहटी ॥ ८८ विना गो-पाल नहीं कोई अपनो ॥ कोन मात तात सुत घरुनी ए सव जगत रेनको सपनो ॥ विना ॥धन कारन नर भटकत निशदीन वृथा जनम याहीतें खपनो ॥ अंते साथ नहिं कोउ तेरो निश्चय काल अग्निमें झपनो ॥ विना ॥ सवत्यज हरिभज युगल कमल पद मोह निगढ चरणतें कपनो ॥ कहे हरिदास वल्लभ श्रीविठ्ठल श्रीगिरिधर रसना अहरनिश जपनो॥ विना॥ ८९ जो हरि चरन सरोज विमुख भये विप्र जनमतें कहाजु सर्यो ॥ जोकोउ सुपच भजत भगवंते कहो अव ताको कहा विगर्यो ॥ वेदव्यास सरखे अधिकारी अशंकला

पछतात ॥ मनुष जनम पाय नीरमल जसगाय हीयोले आधार ध्यान स्याम गात ॥ जो यह लोक परलोक सुख चाहत तो इन चरण ग्रहे दीन रात ॥ परमानंद दास चहीये एसो आश राखी लाज अपनी पास भवजल वह जात ॥ ९३ भई अब गिरिधरसों पेहेचान ॥ कपटरूप व्हे छलवे आयो पुरुषोत्तम नहीं जान ॥ छोटो वडो कछु नहीं समज्यो छायरह्यो अज्ञान ॥ छीतस्वामी देखत अपनायो श्रीविठ्ठल कृपानिधान ॥ ९४ कृष्ण सुमर पिंजरके सुवा ॥ अजहुं चेत मुढ वहावरा धंधाकरत सकल जग मुवा ॥ कृष्ण ॥ अजहुं नेज पांच पनीहारी घटे न करम जल कुवा ॥ सूरदास जो हरिजस गावे तीनहोके मन अमृत चुवा ॥ कृष्ण ॥ ९५ यामें कहा घटेगो तेरो ॥ नंदनंदन कर अपनो ठाकुर आपही होय रहे चेरो ॥ यामें ॥ सुख संपत आनंद वढ्यो हे वहोत कीयो घर घेरो ॥ कहुं हरिकथा कहुं हरिसेवा कहुं भक्तनको

डेरो ॥ यामें ॥ सुतदारा परिवार वढ्यो हे हेगयो जुथ घनेरो ॥ सवही समरपे तुं सूरश्यामकुं येही हे मत मेरो ॥ यामें ॥ ९६ श्रीयमुना पान करतही रहीये ॥ व्रजवसवो नीको लागत हे लोक लाज दुःख सहीये ॥ श्रीयमुना ॥ श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल गिरिधर गावत सवसुख पैये ॥ व्रजपति मुख अवलोक महासुख दरसत द्रग न अघैये ॥ श्रीयमुना ॥ ९७ अरेमन गोविदके होयरहीये ॥ सुख दुख जे सव भाग्य आपुने आनपरे सो सहीये ॥ अरेमन ॥ अगम अगोचर अकथ कहानी काहुतें नव कहीये ॥ सूरदास प्रभु प्रेम भजनवीना आन कछु नव लहीये ॥ अरे मन ॥ ९८ जन्म पदारथ वह्यो जातरी ॥ समरन भजन करो केशवको जवलग यह नहिं गलत गातरी ॥जन्म॥ ये संगी सव चार दीवसके धन दारा सुत पिता मातरी ॥ वीछुरे वहोर मीलन नहीं पावे ज्यों तरवरके खरत पातरी ॥ जन्म ॥ काल कराल

फिरत शिर उपर आय अचानक करत घातरी ॥ समजत नांही मूढ वावरे तज अमृतफल विखही खातरी ॥ जन्म ॥ तव हरीनाम केसे मुख आवे सीथिल तन कफ रुंधत वातरी ॥ रसिक कहेत तुं सर्व छांडके गोपालके गुन क्यों न गातरी ॥जन्म॥ ९९ हरि न भजे तिनके मुख कारे ॥ विषय रसको पीवत प्रेमसो नामसुधारस लागत खारे ॥ श्री भागवत सुन्यो नहिं श्रवनन कोटि जन्म पापके मारे ॥ सूरदास ऐसे पतितनको सदा यमदूत वटोरत हारे ॥१०० जीवन एसे जो वनी आवे ॥ श्रीवल्लभ श्रीविट्ठलप्रभुकि शरणागति जो पावे ॥ जीवन ॥ द्वादश तीलक सहित मुद्राधर तुलसी कंठ धरावे ॥ प्रेम सहित जे नंदनंदनके जन्म कर्म गुण गावे ॥ जीवन ॥ श्रीभागवत मुख्यरस टीका अपने श्रवन सुनावे ॥ भूपन वसन विचित्र वहुत रंग प्रभुकुं लाड लडावे ॥ जीवन ॥ भली भांत सामग्री करके प्रभुकुं भोग लगावे ॥ प्रभुके भ-

दया सबे जीवनपर लोकवासना त्यागी॥ ओर बात मनमें नहि आवे हरिसुं लगनो लागी ॥ दासकी विनति हरिपद पंकज पकरत सोई सुहागी ॥ १०६ मनरे तुं अवहुं चेत सवेरो॥अनेक जन्मतें भटकत डोलत क्योंहूं स्वास्थ्य नहितेरो ॥ पशुयोनिमें पेट भरत तुं टरत नहिं भव फेरो ॥ ज्ञान सहित मनुपादेह पायो ।करिले यतन घनेरो ॥ येहो जनमतें पार पडेगो प्रभुसन्मुखजा नेरो॥ दासकी विनती अव मानीले (श्री) वल्लभ चरण ग्रहेरो॥ १०७ जग सव स्वारथकेजु सनेहो ॥ सगे सहोदरे प्रेम करत हे जवलग नीकी देही ॥ अपनो अपनो काम काढवे प्यार करत सव येही ॥ अंतकालमें साह्य न कोउ देखके दूर भगेही ॥काल आयके घेर लियो तव देख काय कंपेही ॥ दासकी विनति (श्री) वल्लभ शरणे जासों पार परेही॥१०८ मन तुंछांडदे मिथ्या ग्मान ॥ तुं जानत मो सम नहीं कोउ जगमें मेरो

मान ॥ ए सब अंतेकाम न आवे वहुत वढ्यो अज्ञान ॥ धन धाम ओर कुटुंब कवीलो ताको वढ्यो अभिमान ॥ ए सब तेरे संगी न कोउ निश्चय मेरी सान ॥ जहां लगी जरा रोग नहिं व्याप्यो तहांलग भय भगवान ॥ दासकी विनती श्री वल्लभ शरणे जातें मिटें सव हान॥ १०९ मुरख सघरी वात विगारी ॥ नर तन पाय हरि नहीं सेव्या जननी भारे मारी ॥ गर्भवासमें दुःखपावत जव तव समर्या गिरिधारी ॥ यह संकट तें जवही निकासो तवही भजुं मुरारी ॥ वहार आयकें कहा करत हे सोतुं शोच विचारी ॥ भूलगयो मायाके आगे हार्यो सवही जुवारी ॥ धन दोलत ओर कुटुंब कवीलो पुत्र मित्र ओर नारी॥ए सवकी जंजाल फस्यो तुं पेहेली वात विसारी ॥ चेत चेत तूं अवही समोहे अंतकाल हे भारी ॥ दासकी विनती हरिकी सेवा कर उतर भव पारी॥११० विनंतिके पद. प्रभुमें सव पतितन-

कोटीको ॥ और पतित सब द्योसचारके मैंतो जन्म-तहीको ॥ वधिक अजामिल गणिका तारी और पुतनाहीको॥मोहि छांडी तुम और उद्धारे मिटे शूल केसे जीको ॥ कोउ न समर्थ शुद्ध करनको खेंचि कहत हों लीको॥मरीयत लाज सूर पतितनमें कहत सबे मोहि निको ॥ १११ तुम तजि और कोनपें जाउं ॥ काके द्वार जाय शिर नाउं परहथ कहां वि-काउं ॥ एसो को दाता हे समरथ जाके दिये अघाउं ॥ अंतकाल तुमरे सुमरण विन और कहुं नहि ठांउं ॥ रंक सुदामा कियो अयाची दियो अभेपद ठांउं॥ कामधेनु चिंतामणि दीनी कल्पवृक्षतर छांउं ॥ भव-समुद्र अति देखि भयानक मनमे अधिक डराउं॥ कीजे कृपा महाप्रभु मोपर सूरदास बलिजाउं ॥११२ विनती करत मरतहुं लाज ॥ नखसिखलों मेरी यह देही हे पापकी जहाज॥ और पतित आवत न आंखनतर देखत अपनो साज॥तीनोपन भरवार नि-

चाहे तोउ न आयो बाज ॥ पाछें भयो न आगे व्हेहें सब पतितन सिरताज ॥ नर्कहि भजे नाम सुन मेरो पीठ दई यमराज ॥ अबलो में सुने जे तारे ते सब वृथा अकाज॥ सांचो विरद सूरके तारे लोकनि लोक अवाज ॥ ११३ तिहारे चरन कमलको मधुकर मोही कबजु करोगे ॥ कृपावंत श्रीविठ्ठल गुसांई विनतीजु चित्त धरोगे ॥ तिहारे ॥ सीतल आतपत्रकी छैयां कर अंबुज सकुमार ॥ पद्म प्रवाल नेन अति नीके कृपा कटाक्ष मुरार ॥ तिहारे ॥ परमानंददास रस लोभी भाग्य विना नहिं पावे॥ जापर कृपा करे नंदनंदन ताही सब बनी आवे॥ तिहारे॥ ११४ गोविंद राखो लाज हमारी ॥ भवसिंधुमें आन पर्यो हुं लही पोट सीर भारी ॥ गोविंद ॥ जमके त्रासते अति डरपतहूं आयो सरन तिहारो ॥ अनेक पतीत तुम आगे तारे मोहे तारो गिरिधारी॥गोविंद॥ ११५ श्रीवल्लभ वेगही दरशन दीजे ॥ जादीनतेंतुमतें

हम विछुरे तादीनतें तन सीझे ॥ श्रीवल्लभ ॥ निश-दिन भुख प्यास नहीं लागे नेन निरंतर भीजे ॥ गोविंद ॥ यह निश्चयकर मनमें कहो प्रभु केसे जीजे ॥ श्रीवल्लभ ॥ ११६ श्रीवल्लभ लीजे मोहे बुलाय॥वहोत दीना वीते वीनदेखे तातें जीय अकुलाय॥ श्रीवल्लभ ॥ निशदीन यह तन क्षीण होत हे सुध बुध गइ विसराय ॥ गोविंद प्रभु श्रीवल्लभ विनदेखे पल-भर कल्प वहाय ॥ श्रीवल्लभ॥ ११७ श्रीवल्लभ चरन लाग्यो चित्त मेरो ॥ इन वीन ओर कछु नहीं भावे इनहीको हुं चेरो ॥ श्रीवल्लभ ॥ इन तजी ओर ज्ञानकु धावे सो मति मूढ घनेरो॥ गोविंदप्रभु निश्चे-कर मनमें एही ज्ञान भलेरो ॥ श्रीवल्लभ॥११८ श्रीवल्लभलीजे मोहे उगारी ॥ आ संसार सव अग्नि जरत हे श्रीमुख ललित विचारी ॥ श्रीवल्लभ॥कोन डाकनी लगी अविद्या कोन शकेगो उतारी॥भूत लाग्यो अभीमान महादुःख दाहत देह पसारी ॥श्रीवल्लभ॥

काम क्रोध मद लोभ कुटिलता मोह जाल है भारी ॥ भजन रत्न क्षीण कर डार्यो हरदो देत बिगारी॥ श्रीवल्लभ ॥ विषय वासना वसत निरंतर एह विचार विचारी॥ रसिक कहे निज जान वचावो अपनी ओर निहारी ॥ श्रीवल्लभ ॥ ११९ श्रीवल्लभ अवकी वेर उगारो॥सव पतितनमें विख्यात पतितहुं पावन नाम तिहारो ॥ श्री वल्लभ ॥ ओर पतित नांही मेरे सम अजामिल कोन विचारो ॥ भाज्यो नरक नाम सुनी मेरो जम दीयो हडतालो ॥ श्री वल्लभ ॥ कृपासिंधु करुणा निधी केशव अव न करोगे उधारो ॥ सूर अधमको कहुं ठोरनही विना शरनजु तमारो ॥ श्री वल्लभ ॥ १२० श्रीवल्लभ तुम शरणांगत आयो ॥ सव दुःख दूर गये तुम देखत सुखको पार न पायो ॥ श्रीवल्लभ ॥ आज्ञातें श्रीगोवर्धनधरकी ब्रह्मसंवंध करायो ॥अखिल लीला प्रकट दिखाई सेवा सुखही वतायो ॥ श्रीवल्लभ ॥श्रीभागवत सुधारस मथके अ-

पनो पंथ जतायो ॥ एसे उग्र श्रीलक्ष्मननंदन रसिकनके मन भायो ॥ श्रीवल्लभ ॥ १२१ अनुग्रह तो जानु गोविंद ॥ छिनु छिनु चरन कमल देखावो श्रीवृंदावन चंद ॥ अनुग्रह ॥ तुमनीके सेवक नीके हे सुनो प्रभु आनंदकंद ॥ पतितकुं देत प्रसाद कृपाकरी सो ठाकोर नंदनंद॥ अनुग्रह ॥ अपराधीकु नहीं को आदर अधम निच मतिमंद ॥ ताकु तुम प्रसिद्ध पुरुषोत्तम गावत परमानंद ॥ अनुग्रह ॥ १२२ श्रीवल्लभ कृपा कीजे मोय॥ ज्ञान भक्ति विवेक वलको आशरो नहिं कोय ॥ श्रीवल्लभ ॥ एक वलहुं एही विचारुं क्षणु दृष्टि भर जोय ॥ द्यो दरश हुं शरनके निजदासके दुःख खोय ॥ श्रीवल्लभ ॥ १२३ जेते गुन तेरे नाथ तेते अवगुन मेरे गिने नहीं जात गरुडगामी ॥ हुं अपराधी कहांलों वरनुं कपटी क्रुर कुटील चर कामी ॥ परम उदार सवे तुम जानत तुमसुं छिप्यो नहीं अंतरजामी ॥ कृपाकटाक्ष तरुं भवसा-

गर सूरपतित पतितनमें नामी ॥ १२४ श्रीवल्लभ सदा वसो मन मेरे॥ धरम करम कछू नाही समजत जेसे तेसे तेरे ॥ श्रीवल्लभ ॥ दान व्रतादिकते कछू नाहीं होत पुष्टिकी भक्ति॥ तिहारी कृपा कटाक्ष दृष्टितें होतहे हरिआशक्ति ॥श्रीवल्लभ॥ तुम विन तत्त्व कछू नही जगमें यह निश्चे मन कीनो॥ श्रीहरि वदन अनल आनंदनिधी वेद वखाने कीनो ॥ श्रीवल्लभ ॥ भटक भटक हूं हार्यो हाहा करुं पकरो मेरी वांह ॥ बुरो भलो हरिदास तीहारो राखो चरनन छांह ॥ श्रीवल्लभ ॥ १२५ दीनवंधु दीनानाथ तुमवीना कोनपें जाउं॥ तुमही मेरे मात तात तुमही मेरे गुरुजन तुमही मेरे प्रान जीवन नीरख नेनसीराउं॥ दीनवंधु॥ पुष्टि प्रवाह रससिंधु छांडके नदी शरन कीत जाउं ॥ रसिक प्रीतमकी इतनी विनति श्रीवल्लभके गुनगाउं ॥दीनवंधु॥ हुं श्रीवल्लभकी वलीहारी ॥ सवहीनकुं वचनामृत सींचत हे अंतर

श्री० ॥ नवनिंकुजमंदीरकी लीला नित्य विहार बि-
हारी॥ रसिक जनकी पूरी आशा सदाहुं दासो तिहारी
॥ हुंश्री०॥१२७ वाधो जन्म गयो विसराय॥ना
हरि भज्या ना गुरुकी सेवा मधुवन वस्यो न जाय
॥वाधो॥ श्रीभागत श्रवण नहीं कीनो कवहु न रुची उप
जाय॥ आदर करके हरि भक्तनके कवहु न धोये पाय॥
वाधो ॥ कवहुं श्रीगिरिधर रीझवे नहिं विमल विमल
जस गाय ॥ प्रेम सहित पग वांध घुंघरुं शक्यो न
अंग नचाय ॥ वाधो ॥ अवकी वेर मनुष देह धरके
कीयो न कछु उपाय ॥ भटकत फिरत मंजार श्वान
ज्यों तनक जूठनकी चाय ॥वाधो॥ कहां लगी कहुं
कृपानिधी मोहन वातें वहूत वनाय ॥ भवसागर
पद अंवुज नौका लीजे सूरचढाय ॥ वाधो ॥ १२८
जेसो हूं तेसो तिहारो श्रीवल्लभ अव जिन छांड
देहो मोहि करते ॥ वांह गहेको लाज मन धरहो
नाहिं भरोंसो मोहि साधन वलते ॥ तुम त्यज और

ठोर नहि मोको जासो जाय कहो दुःख भरते ॥ रसिक शिरोमणि श्रीवल्लभ प्रभु राखो मोहि चरण शरण भवडरतें ॥१२९॥ श्रीवल्लभ लीजे मोहि उवारी ॥ या कलिकाल कराल विषमतें लागतहे डर भारी ॥ तृष्णा तरंग उठत भव सिंधुतें डारत किते उछारी ॥ कर्म भंवर मद मत्सर मोकुं दावे देत पतारी ॥ काम क्रोध ओर लोभ मोह जल जंतु रहे मुखफारी ॥ चरणांबुज नोका नहि सूझत वीच अविद्या पहारी ॥ कहो कहां लग करुं विनती विधि न जाय विस्तारी ॥ चरण रेणु सेवकको सेवक कहत हे रसिक पुकारी ॥ १३० ॥ श्रीवल्लभ भले बुरे तोऊ तेरे॥ तुमही हमारी लाज वढाई विनती सुनो प्रभु मेरे ॥ अन्य देव सब रंक भिखारी देखे वहोत घनेरे ॥ हरिप्रताप वल गिनत न काहूं निडर भये सब चेरे ॥ सब त्यज तुम शरणांगत आयो दृढकर चरण गहेरे॥ सूरदास प्रभु तुमारे मिलनते पाये सुखजूघनेरे

॥१३१ राखो तेसे रहूं जेसे तुम राखो तेसे रहूं। जानतहो सुख दुःख सव जनके मुखकर कहाजुं कहूं॥ जेसे ॥ कवहुक भोजन देहो कृपाकर कवहुक भुख सहूं ॥ कवहुक तुरंग चढुं महागज कवहुक भार व॒ ॥जेसे तुम॥ कमल नयन घनश्याम मनोहर अनुच भयो रहूं॥ सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधी तुम्हारे चरन ग्रहु ॥ जेसे तुम ॥ १३२ भक्ति लजावन शरण पड्योरी ॥ (टेक) कह्यो कछु ओर नच्यो कछु ओर तातें तिहारे चित उतर्योरी ॥ १ ॥ उंचो मारग हरि भक्तिको,तामारगमें पाव न धर्योरी॥ इंद्रि नेन ना काके वश, जीव्हाके रस खिसल पर्योरी ॥ भक्ति॥ ओर पतित हुते वहोतेरे ताकी छाल लेई मोहे ए घर्योरि॥ सूरदास प्रभु पतित उधारन, विरदकी लाज करोतो करोरी ॥ भक्ति ३॥ १३३ मोसम कोन कुटिल खल कामी ॥ कहा छिपी तुमसें करुणानिध अवके अंतरयामी ॥ तुम तनु दियो तुह्मे विसराये

ऐसो लोन हरामी ॥ तिहारे चरन छोड विमुखनकी नित उठ करत गुलामी ॥ जहां सतसंग होत तहां आलस अधमन संग विश्रामी ॥ भरभर उदर विषय मद पीवत जेसे सूकर ग्रामी ॥ पापी पतित अधम परनिंदक सब पतितन शिर नामी ॥ सूर पतित तुम पतित उद्धारन सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ १३४ ॥

माधो यह प्रसाद हो पाउं ॥ तुव भृत्य भृत्य भक्त परिचारक दासको दास कहाउं ॥ यह परमारथ मोहि गुरु सिखायो श्यामा श्यामकी पूजा ॥ यह वासना वसोजिय मेरे देव न देखुं दूजा ॥ परमानंद दास तुम ठाकुर यह नातो जिन टूटो ॥ नंदकुमार यशोदा नंदन हिलमिल प्रीतन छूटो ॥ १३५ ॥

मनमेरो एक तामें आपदा अनेक हे रह्यो न विवेक टेक पर्यो ज्यों विपत्तमें ॥ इत गहे आन्यो एंच काम क्रोध रह्यो खेंच चिरियां चेंहेचाय जेसें वाजकी झपटतें ॥ केसे कर हरि भजु केसे ज्ञान ध्यान

सजु कैसे तेरो नाम लेउं त्रिविध तापकी तपतते ॥ सूर कहे वारवार अवहू करुं पोकार अवमोहे राखो लेहो मायाकी झपटतें ॥ १३६ दुर्वलसो जीव ताके शत्रु अनेक हे केसे रहे टेक कहो कहा कीजीये॥ सुन हो अनाथ नाथ विनती एक करत साथ जीवन सव वृथा जात रंकपर रीझीयें ॥ मनुष्या जन्म पाय श्रीवल्लभ गुन गायो न जाय कालतो योंहीजाय चरनसेवा दीजीये ॥ महाराज कृपाजान उरहुमें दया आन भलो वुरो रसिकको अपनो कर लीजीये ॥ १३७ ॥ श्रीवल्लभ अवतो निभावो मोही॥ वहुत काल भटकत भये मोकुं हाथ न पकरत कोई ॥ ओर जन्ममें पाप पुंजको संचय मेंने कयोंहो ॥ अवतो शरण लियो हे आपको जर जावेगें सोही ॥ वांह गहेकी लाज निभावो अपनो करल्यो मोही॥ दासकी विनती करुणासागर सद्यहि चित्त धरोही ॥ १३८ श्री वल्लभ शरण तुम्हारे आ·

यो ॥ तवतें सुखको सागर उमड्यो सवजग आनंद छायो ॥ वेदपुरान शास्त्र सव खोळये गूढ अर्थ प्रकटायो ॥ व्याससूत्रको करी विवेचन शुद्धाद्वैत वतायो॥ सेवा दीनी श्रीगिरिधरकी दैवी जीव अपनायो ॥ दासकी विनती मोसें पतितको सवही तिमिर नसायो ॥ १३९ ॥ श्रीवल्लभ जेसो हु तेसोई तेरो ॥ पेहेलेको भइ सवही विसारो होय काम तव मेरो ॥ में अपराधी वहुत जन्मको भयो दोषको ढेरो ॥ शरण पर्यो अव सवहि मिटावो राखी लेहो अव नेरो॥ करुणाकीजे करुणा सागर टारो भवको फेरो॥ दासकी विनती मोही निभावो(हूं)अधम आपको चेरो॥१४०॥

अथ विरह के पद ॥ राग विहाग चंद लग्यो दुःख देना ॥ पिया विन चंद लग्यो दुःख देना ॥ तारा गीनत गीनत हूं हारी पलक न लागे चेना॥ पिया विन ॥ कहां वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वे सुखकी रेना ॥ सूरदास प्रभु तीहारे दरस वीन वि-

रहनिकुं नहीं चेना ॥ पिया विन ॥ १४१ पिया विन नांहिन परत चित्त चेन ॥ जो पें लागी सोही जानत सांवरेकी सेन ॥पिया विन॥ हरि वीन कछू न सुहाय मेरी सजनी कल न पडे दीनरेन ॥ सूर श्री गोपाल चितवत चुभे मेरे नेन ॥ पिया विन॥ १४२ व्रजके विरही लोग विचारे ॥ विना गोपाल ठगे से ठाडे अति दूवल तन हारे ॥ व्रजके ॥ १ ॥ यह मथुरा काजरकी रेखा जो नीकसे सो कारे ॥ जो कोई कहान कहान कही बोलत अखियन वहत पनारे ॥ व्रजके ॥ २ ॥ मात जसोदा पंथ नोहारत निरखत सांझ सवारे ॥ परमानंद स्वामि विन एसे जेसे चंद्रविन तारे ॥ व्रजके ॥ ३ ॥ १४३ सखी मोये हरि दरसनको चाव॥ सांवरेसुं प्रीत जोरी लाखं लोग रीसाव ॥ सखी मोये हरि॥ श्याम सुंदर कमल लोचन अकल अगनित भाव ॥ सूरके प्रभु सदा राजत सीस रहो के जाव ॥ १४४ केसें

कीजे वेद कह्यो ॥ हरिमुख देखत विधिनिषेधको नाहि न ठोर रह्यो ॥ दुखको मूल सनेह सखीरी सो उर पैठ रह्यो ॥ परमानंद प्रेम सागरमें गिर्यो सो लीनभयो ॥ १४५ गोकुल सब गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधनके उधो सो सब बसत ईशपुर कासी ॥ यद्यपि हरि हम तजी अनाथकरी अब छांडत क्यो रतिकी प्यासी ॥ अपनी सीतलता नहीं छांडत यद्यपि विधुहे राहु ग्रासी ॥ किहि अपराध जोग लिखि पठयो प्रेमभजनतें करत उदासी ॥ परमानंद एसीको विरहिनी मांगे मुक्ति छांडि गुण रासी ॥ १४६ उधो श्याम सनेही काको ॥ हम कहापें कर पछतावे भयो न यशोदा माको ॥ दूध पाय कियो वड ढोटा गुन नही माने ताको ॥ सूरदास प्रभु हम कहा करहें भाग्य वडे कुबजाको ॥ १४७ वलि वलि वलि हो कुंवरि राधिका नंदसुवन जासो रति मानी ॥ वे चतुर तुम चतुर शिरो-

मणि प्रीतकरी केसे रही छानी ॥ वे जु धरत तन कनक पीत पट सो तो सवे तेरी गति ठानी ॥ ते पुनि श्याम सहज वे शोभा अंवर मिस अपने उर आनी ॥ पुलकित अंग अति व्हे आयो निरखि निरखि जिन देह सयानी ॥ सूर सुजान सखीको बूझत प्रेम प्रकास भयो विहसानी ॥ १४८ ॥

तुम गोपाल मोसों वहोत करी नरदेही समरणको दीनी, मों पापीसों कछु न सरी. तुम (१) गर्भवास अति त्रास उंधे मुख, ताहु तें मेरी सुद्ध वीसरी; जठराग्नी ज्वर तें राख्यो, कमलनसें मेरी देह घडी॥ तुम (२) कहा वरनो अपराधी जनमको, आदी अंत तुमसो वीगडी; सूरदास प्रभु पतित पावनहो, वीरदकी लाजग्रही ॥ तुम. (३)

समाप्त.

ब्रज–वृन्दावन निवासी, श्रीयुगल स्वरूपना प्रेमरस विरही भक्त महानुभवी "श्रीललित किशोरीजी"नां विरह भावनानां–दीनता आश्रयनां रस रसिक कीर्तनोनो संग्रह ॥

॥ राग भैरवी ॥ गुण औगुणको लेखो म्हारो लाडिली निहारोना ॥ जाणैंगे महाजन सारे खोखी खोटी कोठी म्हांकी जोपें थेंजी हुंडीपैं डारोगी सकारोना ॥१॥ साही बीच वट्टो लागे दासीपणे हांसी थाकी । ललीत कीशोरी भीणां राधेजो सम्हारोना ॥ खातो ब्योढो करि काछेजी ब्रज वसवाकी मुहरां दीजै हा हा म्हारी मानौ अरजी वाकीको विचारोना ॥२॥ १ राधा वल्लभ नैन अनीसों नैन हमारे अटके॥ अभिरिपरे हठि उमगि रहे ना रोकें घूंघट पटके ॥१॥ फंसी गये फंदन ललित किशोरी वारवार लट लटके ॥ देखोवीर सूरता इनकी विधत नैक ना मटके ॥२॥ २ प्यारीजू कौन तिहारी खोट । मोसौं

बनी न कछु वै स्वामिनि हो औगुनकी मोट ॥ श्रवन दरस दिखायके राधे, मेटो जियकी चोट ॥ ललित किशोरीको अपनावहुं गही तिहारी ओट ॥२॥ ३ बोलौ बन राधे सुख रासी ॥ मेरे औगुन कितेक लाडिली तुम अपार करुनाकी रासी ॥१॥ ललित किशोरी तजौ न मोको चहुं ओर व्है है तुंव हांसी ॥ व्है दासी तोरी श्रीस्वामिनि होत नही अब आन खवासी ॥२॥ ४ ॥ दोहा ॥ भृमरी व्हें कब डोलिहौं, श्रीवृंदावन गैल ॥ पदपकज मकरंदरस, पैहौं दोउ छैल ॥ १ ॥ दीनेयह सोच कहा व्है है कौंन मेरीगति ॥ जोपैं दीनबंधु होतो आपुही उवारियो ॥१॥ हों तो अजयान तुम रावरी सुजान मोहि, साधुहूं असाधु अंधकुपसो निकारिहो ॥२॥ हो तो निरंदुदभइ जानि लइ एकदिना ॥ ललित किशोरी दया द्रष्टिसो निहारी हों ॥ ३ ॥ द्वारेपें बुलायके तो तारेजी अनेक पर ॥ जानौगी सनेह जबें गेह आय

तारिहों ॥४॥ ५ जीला रहो प्रान कै जाउं सखी वृंदावन कुंजैं लेखैंगे ॥ येक न मानैं कहा किसीका नामरेख उर रेखैंगे ॥१॥ छके रहैं छवि ललित माधुरी लीला गुनन विशेषैंगे ॥ ललित किशोरी नेम यही द्रढ कुंजविहारी देखैंगे ॥२॥ ६ श्रीवृंदावन वास दीजीये यही हमारी आशा है ॥ जमुना कूलन छांह माधुरी जहां रसिकोंका वासा है ॥१॥ सेवा कुंज मनोहर सुंदर यकरस बारोंमासा है ॥ ललित किशोरीका दिल बेकल जुगुल रूपरस प्यासा है ॥२॥७ राग मालकोस भानकी दुलारी घूंघरारी पांति केश अलि ॥ सुंदर विहारी गलबांह लाय घेरियो ॥ वृंदावन क्यारी फुलवारी सुखकारी जहां ॥ तहांमोहि वास दैकै संकट निवेरियो ॥ १ ॥ भइहों भिखारी भीख मांगों यह दुखारी है ॥ सुनियो हमारी टेर अरजी न फेरीयो ॥ तोपें वलिहारी वारी ललित किशोरी प्यारी ॥ हा हा अवारी होत मेरी

ओर हेरियो ॥२॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुमन वाटिका विपिनमें व्है हों कवहुं फुल ॥ कोमल कर दोउ भामतें, धरिहैं वीनिदुकूल ॥ १ ॥ सुनियो श्यामा श्यामजु, चित दै मेरी टेर ॥ ललित किशोरी लाडिले, अवजिन करहुं अवेर ॥२॥ ९ राग देश अव विलंव जीनि करो लाडिली कृपा द्रष्टि टुक हेरो ॥ जमुना पुलिन गलिन गहिवरकी विचरो सांझ सवेरो ॥१॥ निशदिन निरखों जुगल माधुरी रसीकनतें भट भेरो ॥ ललित किशोरी तन मन अकुलित श्रीवन चहत वसेरो ॥२॥ १० गैल श्रीवृंदावनकी गहिये ॥ सेवाकुंज कौनेमें वैठे जुगुल लाल छवि लहिये ॥१॥ रसिकनके पग चांपि हुलसिये श्याम गौर मुख कहिये ॥ ललित किशोरी जाविधि राखैं ताही विधिमन रहिये ॥२॥ ११ कहो कभी उस मजलिसमें मेरी भीयाद होती हैं ॥ जीसमें राधा कृष्ण विराजैं सखीयन जगमग जोती हैं ॥१॥ ललित किशोरीसे कहीयो

कोइ पडो दुवारे रोतीहें ॥ कहती हैं वे देरस दासिकी मिट्टि वरवाद होती है ॥२॥ १२ कमल नयन मन मोहनकों कोइ आन मिलावैरी॥वोरकोसों दासीमें वाको तनकी तवत बुझावैरी ॥१॥ ललित किशोरी के गरवाहीं वंसी मधुर वजावैरी ॥ श्रीवृंदावन सघन कुंजतर अखियन सुख दरसावैरी ॥२॥ १३ जानत कोंन पराये मनकी ॥ लोग कहैं सखी भइ वावरी वह आशिक आनंद घनकी ॥१॥ छिरकी गुलाव जगावें मुरख हिय लगो चोट चितवनकी ॥ ललित किशोरी तजी कुलकानौं अलि डोलत भइ वन वनकी ॥२॥ १४ अधम उधारन धांक तिहारी ॥ पतितन वीच चक्रवर्ति हों पापिन मध्य हों तिलक धारी ॥१॥ सहजहि वन्यो वनाव भांति सव अव विलंव का क्यों प्यारी॥ करुना करी वनवास दीजीये ललितकिशोरी वलिहारी ॥२। १५ भक्तमालमें यह कथा काहु कपट चलाय ॥ वपुधार्यो हो भक्तको तैसोइ रखो

लजाय ॥ राधे राधेश्याम भज भज श्रीस्यामा स्याम ॥ वा रस छीन मन मगन रहुं निशिदिशी आठो जाम ॥ श्रीगुरुचरन संवार मन चित दै मेरी मान ॥ ललित लडैती लाल छवि निश्चै हियरे आन ॥१॥ १६ कृष्ण चंद्रमारूपको श्रीवृंदावन कुंज द्रगनविलोकै किनि सखी चलछवि आनंद पुंज ॥ कठिन कठिन अति कठिन है रंगभूमि रस प्रेम ॥ परैन पग पाछे भटू सुमरि जात निज नेम ॥ गोपीवल्लभ लालकी छिन छिन छवि द्रग देखि ॥ श्रीवृंदावन कुंज उर मूरति मधुरी पेखि ॥२॥ १७ श्रीवृंदावन रेणुको मरम न पावै कोय । मिलै रसिक युग चंद्रमा द्रढकर खोंजे जोय ॥ श्री वृंदावन रेनुका लुंढत रूरै मुख मांह । चल सखी वेग वटोरीये यह सुख निधुवन छांह ॥ श्री वृंदावन बैठके करे भावना चीत्त । सैंति सैंति मनमेधरे ज्यों दारिद्री वित्त । श्री वृंदावन रेनुंके छापे अंग न छाप ॥ कदम कुंजतर बैठके श्यामा श्याम अलाप । श्रीवन श्रीवन कहुं

सखी श्रीवन श्रीवन बोल॥श्रीवन श्रीवन सांच कहुं श्रीवन राख ठठोल। श्री वृंदावन कुंजमें राधा रम्मन लाल॥ यकटक नैनन हेरिये ललित त्रिभग गुपाल। श्री वृंदावन राधीका वंक विहारीलाल। चल सखी लख नैना झूके पुरे रेशम जाल॥ श्री वृंदावन वासकी आस करत मनमांह। गहत गैल प्रतिकुल चित कठिन कुंज द्रुमछांह॥ १८ अखीयनकी सखी तपत नसावौ॥ मूरख वैद मरम कहा जानै याको जमुना धार वहावौ॥ तवाखीर आदिक वतलावै ललित क्रिसोरी ख्याल न लावौ॥ इनको यही ईलाज विहारीके रूप सुधारस प्याले प्यावौ॥२॥१९ कवहु पुनि वृंदावन कुंजन लतान तरे॥ लाडिलीके सग स्याम नाचत सिहायकै॥१॥ थेईथेई ताधि लांग नूपुरको सोर होत॥मोहिलेत गोपिकान नैनन नचायकै॥ ललित किसोरीलाल करिकें त्रीभंग अंग॥ धरि अधरान तान माधुरी सुनायके॥ ऐसिहि वि-

तैहौ विन वंसीवट देखद्रग ॥ फेरिकै रिझैहौ कवौ वांसुरी वजायकै ॥३॥ २० जगमें कौंन आलसी मोसी ॥ विन सेवा मन साधु पुरावे करुनामय को तोसी ॥ १ ॥ सकुचन लागत पावत नोसदीन पातर नीत्त परोसी ॥ जनम जनमतें ललीत कीसोरी पद मकरंद सों पोपी ॥ २ ॥ २१ कवधौं कृपा लाडीली व्हे हैं श्रीवन मांहि वसौंरी ॥ श्यामाश्याम महा छवी अनुपम इन नैनन निरखौंरि ॥१॥ दैगल वांह जुगुलवर राजें हों यह सुखै लहौंरी ॥ सुनियो देर कृपानिधि राधे पुनिपुनि विनै कहौंरी ॥ २ ॥ २२ अखियां रुप सुधा मद माती ॥ टेक ॥ विन देखे वह जुगुल सुघर छवी वहुआतुर अकुलाती ॥१॥ वानि परी रति चरनकमलकी अव कैसे सचुपाती ॥ ललित माधुरी दरसन दीजै वाहीको ललसातीं ॥ २ ॥ २३ हे स्वामिनि ! श्रीकुंज विहारिनी ! वेगि खवरि मेरी लीजें ॥ सेवा रीति कछू नहि जानों चुक छिमा

करी दीजै ॥१॥ अति आधीन दीन रटि टेरौं चित दै यह सुनि लीजै ॥ ललितकिसोरी कुंज निकुंजन रज अधिकारी कीजै ॥ १ ॥ २४ हे घनश्याम कुंवर सुंदरवर गौरांगो वृखभान किशोरी ॥जा छवी नीरखी नील नीरदवर विज्जुलता लज्जीत मुख मोरी ॥१॥ हौं चातक तुव कृपा स्वाति बुंद पुरवहु आसा मानि निहोरी ॥ श्रीवनवास वसैं हियमांही गौर श्याम सुंदरवर जोरी॥२॥ २५ सारंग कवलौं पतितन पांति जैयहै ॥ अब मिल रसीकन जाति मूढ मन सरवस विमुखन संग खोय है ॥१॥ मेरी मान जुगुलपग तलरज जो निकुंजके द्वार सेइ है॥ ललित किशोरी नित्य झरोखे मोर मुकुटकी झलक जोय है ॥२॥ २६ कवलौं पतितन मुकुट कहै है ॥ पद सरोज भज निसिदिन अवहुं कै मन याहू जन मन सैहै ॥१॥ श्रीवृंदावन पाय मूढमन ललित किशोरी जो भरमै है ॥ रतन अमोलक छांडि छली तौं काची

गुंजा को ललचैहै ॥२॥ २७ ललित गोरी प्यारी मुहीं दीजे श्रीवृंदावन वास ॥ छीन प्रती नव अनुराग वढत जहां भक्त प्रेम रस रास ॥१॥ अटिवन विथिन मगन रहों मन मिलन जुगुल द्रढ आस ॥ ललित माधुरी दरस सुधा विन मरत हैं लोचन प्यास ॥२॥ २८ जपों जुगुल नित नाम सुछिन पल वसों सदा वृंदावन खोरी॥ छापों छाप अंग व्रजरजकी भ्रमत रहों कुंजनकीओरी ॥१॥ आसरो आस वासन मेरे द्रढ करि मन यह ललित किशोरी ॥ रहो चैतन्य चंद्र चितामणी चरण चारुनख चंद्र चकोरी ॥१॥ २९ जेजेवंती येही मेरी विनय राधे लागै लगन वृंदावन वास दीजें येहोश्री लडैतीजु ॥ झारीवं करोमैं तेरो भोरतें अंगन ॥ ललितकिशोरी तेरी चेरिनकी चेरीहों जूठनको पाय नित रहो जु मगन । वसि रही लालमन भीनी नखचंद दुति हेरिवो करौं तेरे कंजसे पगन ॥२॥ ३० रा. काफी मिलन

वे महिबुब विहारि ॥ भोरभये वृंदावन कुंजे जाना होकर गली हमारी ॥१॥ मृदु मुसकन सानूदिल विच मोंदी झमक चलन नूपुर धुनि प्यारी ॥ ललित किशोरी सांवरी सुरति घुंघरी अलकों पर वलिहारी ॥२॥ ३१ हों पापिनमें भान सरन तुव चरनन ॥ मोंरे उदय होत सब अथये अधम पतित ससिहू तारागन ॥१॥ तपत रहत नित विषय वासना सीतल करो छिरक करुनाकन॥ ललित किसोरी मान निहोरी दीजे वास वेगि वृंदावन ॥२॥ ३२ वेगि कृपाकरी कुंवरी स्वामिनि वृंदाविपिन वसावो ॥१॥ राधाकुंड निकुंज मनोहर तहां दुउ सचुपावो ॥२॥ प्रीति विवस रसरितीसो पूरन नूतन नेह उपावो ॥३॥ नेक अधर मुसकाय माधुरी मोहन चितही चुरावो ॥४॥ लै वीरी प्रिय करही आपने लालन मुखहि खवावो ॥५॥ दोउभुज मेली मुकुर निहारो लोल कपोल मिलावो ॥६॥ अरस परस अधरामृत पीवत हास विलास

झुलना छांट राधाकृष्ण नामकी गठरी बांधे कहु कहां डटा ॥ अडा सत गुरुसंग नीकस चलनातो लुंटी जावैगा खडा खडा ॥१॥ ललित किसोरी श्रीवृंदावन दरसन वीन चित सोच बडा ॥ धौंसाकुंच बजारे मनुआं सोता क्या अलमस्त पडा ॥ २ ॥ ४१ पुरवी नैनन कबै निकुंज देखिहौं ॥ यकपग जावक लाल लगावत दुजे पगहो चित्र रेखिहौं ॥१॥ प्यारि अनखो झटकी प्यारेसों देत मोहि निज भाग पेखी हों ॥ ललित कीसोरी चरन चूमि हरिचिरियां करि-करि लेत लेखी हो ॥२॥ ४२ हाहा कृपा कीशोरी करिये ॥ निरमल करी अंतसपुर प्यारो मो दुरमती परि हरिये ॥ १ ॥ विपै मलीन छीन छीन छीन मन विपत्ति पर्यो ना मसकै ॥ देहु दंड द्रगनंक अन्तसो लोटपोट व्हैसिसकै ॥२॥ मृदु मुसक्यान सुधा दै पोपौ वलि वरदानै पावै ॥ ललित किसोरी लाल रसीक गुन अधमा वरनि सुनावै ॥ ३ ॥ ४३ ये अभि-

लाय लडैती मोरी ॥ तुम लालन संग मुदित विराजौ मोहि करौ मुखचंद चकोरी ॥१॥ देहु कृपा करि वेगि छबीली ललित किसोरी मान निहोरी ॥ निस दिन नित निकुंज भवनमें हाजर रहों वृखभान किसोरी ॥२॥४४ रा. परज जुगल छवी स्वांति चातकी अँखीयां ॥ वृंदाविपिन वदरियातें सखी वरसन कृपा परखीयां ॥१॥ गौर श्याम छवी रूपवुंद हित आतुर त्रपित विलखीयां ॥ ललित किसोरी फरफरात नीत आकुल पंख निमिखियां ॥२॥ ४५ श्री वृंदावन आन छवीली मोहन छवी उर लेखतहौं ॥ लता ल-तारस कुंज माधुरी ईन अखीयनसों पेखत हों ॥ १ ॥ कालिंदी पय पान करत रज नाम अंगअंग लेखत हों ॥ ललित किसोरी वनी सबै अब वाट रावरी देखत हों ॥ २ ॥ ४६ अहो विहारिनि ललित लडैती मम अपराध न मनमें धारो ॥ अपनी जानि मानि दासी वलि कृपाविलोकनि नेक निहारो ॥ १ ॥ श्री

वनकुंज कुटीर कोनेमें ललित किसोरी मोकों डारो ॥ करुनासिंधु अगाधे राधे विगरीको अव वेगि सम्हारो ॥२॥ ४७ अहो लडैत्ती प्राण पियारी श्रीवन कवै वसावोगी॥ रसिकराय पीतमसंग राधे मधुरीतान सुनावोगी ॥१॥ दोना ललित कदमके मांहीं दधि मेरे कर पावोगी ॥ ललित किसोरी लालन, मुख दै जुठन मुहूं खवावोगी ॥२॥ ४८ कोई गुरुजन

वोई करे नित कुकरसे पौर अरै ॥ ३ ॥ ललीत कि-
सोरी प्रीय प्रसादहुन पावैजें ॥ राम करै सारे ऐसे
सपनेन द्रष्टि परे ॥४॥ ५० खार छार फलफुल
पत्र द्रुम कदम करिल करि ढांख पलासा ॥ मरकट
भृंग मयूर पतंग अलि सूकर खर करि जमुनके पासा
॥१॥ कृपा भरी अखियन अवलोकहु अपनावहु जनि
करौं निरासा ॥ ललित किसोरी तृण अणु करिकैं
देहु विहारि निकुंज निवासा ॥ २ ॥ ५१ श्री
वृंदावन कुंजलता क्यों नैनोंको दरसाइये ना ॥ रास
विलास रंग कनि मेरे हियरेमें सरसाइये ना ॥ १ ॥
ललित किसोरी लाल विनति सुनिवेमें अरसाइये ना
॥ हाहा टुक मुसक्याय हेरिये जियराकों तरसाइये ना
॥२॥ ५२ राग. खीमटा--गोरनारी मनुआं
सोनेकी तज़ि घातैं ॥ जुगललाल गुन गाव नीरंतर
भोर भये क्या रातैं ॥ १ ॥ ललित किसोरी खोवै
गाजो वैस सदां अर सातैं ॥ अंत समय वृंदावन

घुसतैं खावैगा जम लातैं॥ २॥ ५३ सोय सोय सब काम वीगारा ॥ गौर श्याम रस रूप न चाखा जुगुल लाल अस नाम विसारा॥१॥ ललित किसोरी श्री वृंदावन सोधनहुं ना चित सम्हारा ॥ चेत चेत वे मूरख मनुआं जीती वाजी जाता हारा ॥ २ ॥ ५४ मलुवां सोने से ना हारा ॥ वाजी वैस हरी जो ललनहि नंदलालहिं न सिंगारा॥१॥ अजहूं कहा मानिले मेरा तुरत होत निस्तारा॥ ललित किशोरी चल वृंदावन पक्कोहैं पौवारा॥२॥ ५५ राग इमन राधा मोहन मोतन हेरो ॥ मति सकुचाव नैन मति सरमों चितवन चकितन फेरो ॥१॥ विसरी वतियन मुख नहिं धरिहों वृथाहिं करत अवसेरो॥ललित किशोरी देहु कृपा करि श्रीवन मांहि वसेरो ॥२॥ ५६ प्यारोजु मोतन हुं टुक हेरो ॥ टेक ॥ श्रीवन द्रुमन लतनके नीचे रसमय चहों गान गुन तेरो ॥१॥ आनुन जानो अन्य न मानो तोही कृपापद साधन मेरो

॥ ललित माधुरी आस पुरावो अब जीन करौं हहा अवसेरो ॥२॥ ५७ कृपा करो मोपर व्रजललना ॥ मन अली बीन अरविंद चरणरज धरत छीनहुं कलना ॥१॥ मुहिं विसरे कहु कहा सरैगी ऐसी न चित्त धरना ॥ ललित माधुरी आस दरस व्रत कैसीहुं नाटरना ॥ २ ॥ ५८ तेगकी धारतरे शिर धरिकै घोंटीकैं वेगि हलाहल पीजिये ॥ फांसी लाय कंठमें कसिकैं सांपके मुहडे आंगुरी दीजिये ॥ १ ॥ गिरिये गिरितें येरी भटु जल गंगमें बूडि हिवारे सीजिये ॥ ललित किशोरी लाल विरहमें कोटि जतन करि नाहिंने जीजिये ॥ २ ॥ ५९ नंदनंदन नित कुंज विहारी ॥ झारत रहत रेंनु पदपंकज भानु सुता सेवा अधिकारी ॥१॥ यदुवंशी बल मथुरा महीमां द्वारावती जीनहिं रुचिकारी ॥ तिनसों बुझ बावरी मेरे ललित कीशोरी प्रान अधारी ॥२॥ ६० कब इनद्रगन निकुंजन हेरौं ॥टेक॥ सखियन जूथ लाडि-

लीके संग नंदकिशोरे कुंजन घेरो ॥१॥ झटपत झपट लपट नागर नट देकर कूक स्वामिनी टेरौं ॥ ललित किशोरी तृण लालन मुख दै राधेके पायन गेरौं ॥२॥ ६१ राग विहाग विन देखे वृंदावन राधे कवलौं याही भांति वितै हौ॥ पैहौं वास पास वंसीवट कवधौं चीतवन कृपा चितै हौं ॥ १ ॥ गरवांही दै मोहनके संग मिल हौं कवकरि दया हितै हौं ॥ ललित किशोरी प्राण पथिक उत चलन चहत युत पिया चितै हौं ॥ २ ॥ ६२ माधुरी अधर वींव दामिनिदशन द्युत गौर श्याम अंगकी तरंग मनलहुरे ॥ वंसीवट तीरवीर सीतल समीर मंद राधिका गुविंद संग वृंदावन रहु रे ॥ रेशमकी डोरि द्रुम डारि हिंडोर दोउ झोंकके वढायवेको छोर तुहू गहुरे॥ ललित किशोरी सुन राधिका गुपाल धुनि जोपें सुख लूटो चाहे राधा कृष्ण कहुं रे ॥२॥ ६३ पढ पढ सव पानीमें वोरो ॥ जोपें जुगल

किशोरी रूप रस चूर चूर कर चितना घोरो ॥ १ ॥ चतुराइ अति धूर कूर अली जो निज प्रितम नाहिं निहोरो ॥ ललित किशोरी विन दिलदारे वीर अकारथ जोवन जोरो ॥२॥ ६४ सींच रूप रस नवल नवेलि ॥ फिरि संताप कामना अहैं सूखी गये पर आयुहु वेली ॥१॥ ललित किशोरी चतुराइ सो फूले फलै रहै अलबेली ॥ जुगुल नामकी वार रोंपकै घर वृंदावन धर सहेली ॥२॥ ६५ क्योंन मूढमति वेग संवारै ॥ जुगुल नाम पतवार वावरी मानस हाथ न द्रढ करि धारै ॥ १ ॥ ललित किशोरी सतगुरुसों मिलि रहु जो वुडत आन उवारे ॥ पानी चढत सीसतें सजनी फीरी को केवट नाव पुकारै ॥ २ ॥ ६६ जंगला प्यारीजु कवे निकुंज देखैहो ॥ अपने मोहन रसीक लालकी मृदु मुसिक्यान लखै हों ॥१॥ चांपत चरन छवीलो छलसों तुम हुं करि अनखै हो ॥ ललित किशोरी शरद रैनमें वलिवा रसै

चखे हौ ॥२॥ ६७ स्वामिनि मैं पतितन शिरमौर ॥टेक॥ समुझ वुझ तम कूप परतहौं मोसम नीच न और ॥१॥ चरणकमलकी आस त्रासवन देतकरौं जनिगौर ॥ललित किशोरी वेगिनिवाजौ विनती लग मो दौर ॥२॥ ६८ स्वामिनि हौं पतितन शिरताज ॥ तेरी जगत कहाय विमुख ज्यों डोलत लगत न लाज ॥१॥ श्रीवन वेगि वसाय उवारो नाहिन परम अकाज ॥ ललित किशोरी विषै सिंधु महं बूडत वैस जहाज ॥१॥ ६९ राग जीला श्रीवृंदावन रज दरसावै सोइ हितू हमारा है ॥टेक॥ राधामोहन छवी छकावै सोइ प्रीतम प्यारा है ॥ १ ॥ कालिंदी जल पान करावै सो उपकारी सारा है ॥ ललित किशोरी जुगुल मिलावै सो अखियोंका तारा है॥२॥ ७० बहुत दीवस वीते विन देखे अववियोग कैसिहु नहि सहि है ॥ भानुकुंवरि नंदलाल विना अलि कोटि जनत करी धीर न गहि है ॥१॥ अति अकुलात उड-

नको बैठो कछुक दिनाजो औरन लहि हैं ॥ ललित किशोरी तन पींजरा तें पक्षी प्रान न रोके रहि हैं ॥२॥ ७१ श्रीवनवासकी आसकरों वीश्वास करों जुगनामके माहीं ॥ संतनको सतसंग करों अंगरंग रंगो जीहिं जुगुल मिलाहीं ॥१॥ गौरस्याम मदमत्त रहों द्रगछीन छीन दरसनको ललचाहीं ॥ बालगुविंद छकों छविसों तब ललित कीसोरी नैन सिराहीं ॥ २॥ ७२ राग झींझोटी गोरीवर कमल नयन स्वामिनि सुनमोरी विहरतनित नवलकुंज अलिनी गुंजार करै ॥१॥ झुमी झुमो लता मुंज आई चहुं ओरी ॥ सुंदर नव तरुण श्याम चुडामणि कांती काम ॥ नागर नट कंठ भुजा मुसकन मुख थोरी ॥ कंजसे पगन पास दोजीये निवास अली ॥ करिकै उर आस यहै ललित नवकिशोरी ॥२॥ ७३ प्यारीलाल तुमपें मैं वलि जाउं । श्री वनमांहिं निरंतर वसिके तुमरोइ गुनगाउं ॥१॥ चरन निहोरि कहो करजोरो यह मांगें

होपाउं ॥ ललित माधुरी निरखि जुगल छवी मनकी साध पुराउं ॥२॥ ७४ पतितन तारवेकी घरी ॥टेक.॥ रहीन ठोर कुंजकी गलीयन पापिन भीर भरी ॥१॥ ललित किसोरी नींद विवस सब निसितें द्वार अरी ॥ पहिली नजर करें मो मुंजरा कलगी शीसधरी ॥२॥ राधा गोविंद पद सरोजरति लपटी धूरि परी ॥ अववकशीस इसमुहिंदीजें वृंदावन डगरी ॥३॥ ७५ राधा रमणचरण जो पाउं सुकसमान द्रढ करगहि राखौं । नलिनी सम दुलराउं ॥१॥ सौरभ जुत मकरंद कमलवर सीतलहीये लगाउं ॥ विरह जनितद्रग तपनि किशोरी सहजै निरखि नसाउं ॥२॥ ७६ मोसम कौंन अधम जग माहिं॥भ्रमत रहतनीत विपयवासना तजी निधुवन द्रुम वेलिनछांहीं ॥१॥ चिंतनकरत न ललित कीसोरी जुगुललाल दीन्हें गरवांही ॥ निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुटपर छांहीं ॥२॥ ७७

मन मधुकर व्है यह मतराख श्रीवनसर दंपति अंग अंबुज छवी मकरंदही चाख ॥१॥ नाना सुमन कुरंग कुगंधित जगसोंमतअभिलाख॥ ललित किशोरी मृदुधुनी राधा रसिक विहारी भाख ॥२॥ ७८ जानत आप सहस जुग जीहै ॥ अवतो चाखि लेहुं सुख लौकीक फेरि जुगुल छवि पीहैं ॥१॥ मानों वापकी धरी धरोहर हर जवचाहेलैलो हैं ॥ ललित किशोरी तार तार जवहो तव अंगीया सीहै ॥२॥ ७९ मोसम कौन अधरमी वीर ॥ मिहिलाल ललना की वातें भनत विरहकी उठत नपीर ॥१॥ अति कठोर डर ललीत कीशोरी नैन वैन जीमी लगत न तीर ॥ श्रवन परत वृंदावनवानी धिकधिक पुनि सुधि रहत शरीर ॥२॥ ८० मलार निरखें कवधों नैना मोर । कुह कत मोर घटा उनइ लखी नाचत तिन संग नवलकीशोर ॥१॥ गावत राग मलार लडैती मोहन करत वंसीकी घोर ॥ चटकन अंग नयनकी

मटकन ललित किशोरीकी चितचोर ॥२॥ ८१ राग. अल्हैया गइ दधि वेंचन आप विकानी। भइभेंट गोवर्धन ग्वैंडे श्यामसुंदर मुखदेखि लुभानी ॥१॥ भये नैन द्रग मोरचंद्रिका चितवत छवि पलकैं न दुरानी ॥ ललित किशोरी चित्र लिखीसी मोलतोल दधिदुध भुलानी ॥२॥ ८२ हों न भइ ब्रजमुर अलीरी ॥ गौरश्याम छवी द्रगभरिलेती परती पायन घूरिगलीरी ॥१॥ ललित किशोरी श्याम नामधुनि सुनती कानन पूरि भलीरी ॥ मुख पंकज चखरूप माधुरी रहिती छक चकचूर अलीरी ॥२॥ ८३ करौं वेगि वृंदावनवासी ।।टेक।। भालतिलक कंठोके नाते कृपा विचारो करुणा रासो ॥१॥ ललित किशोरी दुःख न देखौं मिलवौं संतन कुंज निवासी ॥ रुप मंजरी लाज तुमैं यह जानत जग चैतन्य उपासो ॥२॥ ८४ चेती गौरी गोखुर रेणु रमण रेतीकी उडिउडि मम अंग अंग रुरैगि । शोभाकुंज कुलका-

लीदि कालिदह रुन नैन फुरैगि ॥१॥ गहवर छांह भजनको बैठो लतावेलि द्रुम शिस ढुरैगि॥ललित किशोरि जुगुल रसीकवर निरखौं कब मम आस पुरैगि ॥२॥ ८५ जमुना पुलिन कुज गह्विरको कोकील व्हें द्रम कूक मचावौं ॥ पदपंकज प्रीयलाल मधुप व्हें मधुरी मधुरी गुंज सुनावौं ॥१॥ कूकरि व्हें वनविथीन डोलौं वचे सीथ रसीकनके पावौं ॥ ललित किशोरी आस यहे मम ब्रजरज तजी छिन अनत न जावौं ॥२॥ ८६ दोहा निधुवन द्रुम डारिन कवैं, व्हें हों पक्षीकोर ॥ राधा रम्मन लालको, रटि रटि होहुं अधीर ॥१॥ राग घाटौं अवतो वसी हृदै मो माही ब्रजरज नेह लगैये ॥ नाते नेह लोकके जे ते ते मझधार वहैये ॥१॥ अहो किशोरी कहौं निहोरी मोहूतन चित लैये ॥ ललित माधुरी येही चाहत हौं जुगुल चरण दरसैये ॥२॥ ८७ गुनकली भान कुंवरि अब जिनि वहिरैये ॥ चुक अचूक परी

मटकन ललित किशोरीकी चितचोर ॥२॥ ८१
राग. अल्हैया गइ दधि वेंचन आप विकानी।
भइभेंट गोवर्धन ग्वैंडे श्यामसुंदर मुखदेखि लुभानी
॥१॥ भये नैन द्रग मोरचंद्रिका चितवत छवि पलकैं
न दुरानी ॥ ललित किशोरी चित्र लिखीसी मोलतोल
दधिदुध भुलानी ॥२॥ ८२ हों न भइ व्रजमुर
अलीरी ॥ गौरश्याम छवी द्रगभरिलेती परती पायन
घूरिगलीरी ॥१॥ ललित किशोरी श्याम नामधुनि
सुनती कानन पूरि भलीरी ॥ मुख पंकज चखरूप
माधुरी रहिती छक चकचूर अलीरी ॥२॥ ८३
करौं वेगि वृंदावनवासी ॥टेक॥ भालतिलक कंठोके नाते
कृपा विचारो करुणा रासो ॥१॥ ललित किशोरी
दुःख न देखौं मिलवौं संतन कुंज निवासी ॥ रुप मंजरी
लाज तुमैं यह जानत जग चैतन्य उपासी ॥२॥ ८४
चेती गौरी गोखुर रेणु रमण रेतीकी
उडिउडि मम अंग अंग रुरैंगि । शोभाकुंज कुलका-

लींदि कालिदह रुन नैन फुरैंगि॥१॥ गहवर छांह भजनको बैठों लतावेलि द्रुम शिस ढुरैंगि॥ललित किशोरि जुगुल रसीकवर निरखौं कब मम आस पुरैंगि ॥२॥

८५ जमुना पुलिन कुंज गहिवरको कोकील व्हें द्रुम कूक मचावौं ॥ पदपंकज प्रीयलाल मधुप व्हें मधुरी मधुरी गुंज सुनावौं ।।१।। कूकरि व्हें वनविथीन डोलौं वचे सीथ रसीकनके पावौं ॥ ललित किशोरी आस यहै मम व्रजरज तजी छिन अनत न जावौं ।।२।।

८६ दोहा निधुवन द्रुम डारिन कवैं, व्हें हों पक्षीकोर ॥ राधा रम्मन लालको, रटि रटि होंहुं अधीर ।।१।। राग घाटों अवतो वसी हृदे मो माही व्रजरज नेह लगैये ॥ नाते नेह लोकके जे ते ते मझधार वहैये ।।१।। अहो किशोरी कहौं निहोरी मोहूतन चित लैये ॥ ललित माधुरी येही चाहत हों जुगुल चरण दरसैये ।।२।।

८७ गुनकली भान कुंवरि अव जिनि वहिरैये ॥ चुक अचूक परी

जोजनतें तापर दृष्टी कहा ठहिरैये ॥१॥ करुना करन सुन्यो हे तुव प्रण सो मत आन वान विसरैये ॥ दे कृपा करि ललित माधुरी श्रीवन आनंद लूटत रहिये ॥२॥ ८८ राग छाटों मानो आन पितर देवीकी जुगुल माधुरी लेहु निहारी ॥ सुतसौगंधकी कानी जानीके सुनो कथा श्यामा वनवारी ॥१॥ ललित किशोरी लालसों नेह । करो धरो उर सीख हमारी ॥ पत्नि इष्टकी सोंह तुमैं श्रीराधा कृष्ण कहो यक वारी ॥२॥ ८९ राग सोरठी राधे वहुत भइ अब माफ करो ॥टेक॥ श्रीवृंदावन सुख दरसा वहु उक चुक उरमें न धरो ॥१॥ अपनो करि जन नाहिं नीवारो ता प्रणतें अवहू न टरो ॥ ललित किशोरी गिनं न औगुन निज करुनाको टरनिटरो ॥२॥ ९० रेखता चकोरी चख हमारे हे तिहारे चांदसे मुखपें ॥ छुटे विखरेसे वालोंको संभालोगे तो क्य होगा ॥१॥ नहो कुछ हमको है शिकवा अगर तुम

प्रीती वीसराइ ॥ जरा टुक नैंन उंचे कर नीहारोगे तो क्या होगा ॥२॥ धरि शिर जल भरी गगरी छुटी सखी संगकी सगरी ॥ हमन ग्रीवा लचक मिहरि उतारोगे तो क्या होगा ॥३॥हमन घर दुरी जाना हौ झुकी घनघोर अंधियारी ॥ डगर डाबर भरे जलसों जो तारोगे तो क्या होगा ॥४॥ ९१ मारे सर्वस्त्र श्री वल्लभवर, हुं छुं एउनी दासीरे; वीहुं नहि हुं वीजा कोईथो, लोक करे कोन हांसीरे. मारे. (१) एउने चरणे प्रित वंधाणी, तोडावी नव तूटेरे; वांधेली ए पटोळे गांठी, छोडावी नव छुटेरे. मारे (२) लोपी लाज लोक कुळनी में, भली बुरी हुंतो एउनीरे; कहे हरिदास जे एउना, चरण रेणुं हुंतो एउनीरे. मारे (३) ९२ वैष्णवोने विनंती हमेशां रात्र घरकामथी परवारी, भगवद्र वार्ता यथाशक्य करी अने सुती वखते आ कीर्तन गावुं जोईए जय श्रीवल्लभ, जय श्रीविठ्ठल, जय श्री यमुना, श्री नाथजी, कलियुग-

ना तो जीव उद्धार्या, मस्तक धरिया हाथजी, वैष्णव जन पर कृपा करीने देजो व्रजमां वासजी, आगेपाछे गो विराजे, वीचमें मारो नाथजी, मोर मुकुट पिताम्बर सोहीये, मोरली सोहे हाथजी, मुखडे व्हालो वेन वजावे, ए छवि जोवा चालोजी. जयश्री गिरिधर. जयश्री गोविंद, जयश्री बालकृष्णजी, जयश्री गोकुलपति, जयश्री रघुपति, जयश्री यदुपति, घनश्यामजी, श्री गोकुलवारे नाथ,मेरी दोरी तुम्हारे हाथजी. जयश्री यमुना, श्री गोवर्धननाथ, श्रीमहाप्रभु श्री विट्ठलनाथ, जय जयश्री गोकुलेश, शेष ना रहे क्लेश, क्षणु क्षणु पळ पळ स्मरण कीजे, नाम निरंतर लीजेजी, चरण शरण राखे मारो व्हालो, श्रीगोकुलमां अवतरीयेजी. श्रीगोकुलमां तो वासो वसीये, संतसमागम करीएजी, श्री वल्लभ वल्लभ मुखथी कहीये, तो भवसागर तरीयेजी. नित्य प्रति रमण रेतीमां रहए, गुलावछडीनां दर्शन करीये, जेदर्शनब्रह्माने दु-

लेभ, ते अपने अंगेकरीये. श्रीवृन्दावन, गोवर्द्धनधाम, राधा माधव सुंदर श्याम, हरिदास हरिजनको सेवक, दर्शनदीजे आठो जाम. श्रीवल्लभ युग युग राज करो, श्रीवल्लभ विट्ठल, गोपीनाथ, देवकीनंदन, श्रीरघुनाथ, श्रीयशोदानंदन नंदकिशोर, श्रीमुरलीधर माखनचोर, सूरदास, कृष्णदासजू, परमानन्द, कुंभनदासजू, चत्रभुज, नंददास, छीतस्वामी गोविंद. श्रीवल्लभदेवको जे, प्राणप्यारेकी जय, श्रीगोवर्द्धननाथकी जय, श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी जय, श्रीविट्ठलनाथजीकीजय, साते वालककी जय, अपने अपने श्रीगुरुदेवकी जय, चोराशी वैष्णवकी जय, वसोवावन वैष्णवकी जय, सर्वे वैष्णवने जयश्रीकृष्ण आटलुं वोली पाठ करी, हाथ पग धोई, शुद्ध मने चरणामृत लेइ सुइ जवुं

ધી વીરવિજય પ્રીન્ટીંગ પ્રેસમાં શા મણીલાલ છગનલાલે છાપ્યું.
ઠે સાગરવી ખડકી · રતન પોળ · : અ મ દા વા દ